अलेखूं हिटलर

राजस्थांनी बातां री गुटकौ

विजय दांनदेथा

मूल्य रु 50.00
© विजय दान देथा
प्रथम संस्करण 1984

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्रा लि ,
8 नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली - 110002

मुद्रक
रुचिका प्रिण्टर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली

आवरण
चंचल

भुळावण
म्हारै पूठै
आखै राजस्थांन
बस्स, थारौ ई गुमान
थारै सपना—
आफळता
आस तोडजै मती
गरब गाळजै मती
आ इज भुळावण
औ इज काम
म्हारा शीन, काफ निजाम

— विज्जी
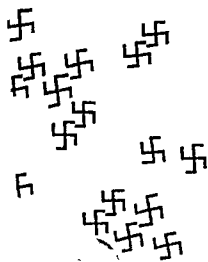
इण मुखड़ौ : संजोग री रामत

मुखडौ

संजोग री रांमत

बोरूंदौ / १६-१२-८३

प्रिय इरपिंदर,

देस, काळ, धरती, जात, धरम, कुळ अर पिरवार इत्याद सं सजोग रो अखाडो है। अनंत अर अमाठ अखाड़ो। जठै काल—आदू काल, आज अर भावी री मानखो कठपूतळिया रै उनमान संजोग री अदीठ आगळिया रामत रमी, रमै अर रमैला।

राजस्थान रै जोधाण जिलै, तहसील बिलाडै, गाव बोरुंदै देथा कुळ मे सबळदांनजी बेटा जुगतीदानजी री 'हवेली' म्हारो जलम ई सजोग रो परचो। म्हारा जीसा सबळदानजी फगत ठावकी कविता ई नी करता, वै कविता नै जीवता। बात-बंतळ मे कविता, हसी-ठिळोकड़ी मे कविता, सखरो जमानो पाकै, बिरखा बूठै के कुरराकाळ पड़ै तो कविता। बस्ती रा साहूकार धूळ-पांचू रमै तो कविता, लोग-बाग गावतरै सिधावै तो कविता, टाबर घरकूल्या माडै तो कविता, कैवण रो सार के वारो जीभ, वाणी बिचै ई कविता री काण बेसी मानतो। दादोसा ई बाजिन्दा कवि हा। जात में ठावा, रजवाडै चावा। वारै सारू कविता कमाई री कामधेण ही। मसा-परवाण साध पूरण वाळी। वित्त-नाणा खातर पावसी तो घणी ई पावमी। पण म्हैं कोई तेवड़नै इंछा-परवाण इण घर जलम थोडो ई लियो। निपट अजांण अचेत ई म्हारो जलम व्हियो। सनमन-सावा, चवरी-फेरा, माया री रात,

लाखीणी सेज अर कूख री आसा-वासा सें की संजोग रा बुदबुदा छै इरपिंदर। कठा लग वखाणू अर वखाणू ई क्यू, दूजी-तीजी रामाण मे धरयौ ई कांई—थारी-म्हारी सैंध-पिछाण ई संजोग रौ साम्हेळौ हौ के नी ??

'राजकमल प्रकाशन' सू हिन्दी अनुवाद मे 'दुविधा व अन्य कहानियां' रौ छपणौ, दीपक केजरीवाळ रै ओळावै उण पोथी रौ थारै हाथै लागणौ, 'दुहरी जिन्दगी' कथा माथै नाटक रै मसोवै गाव आवण रौ टाणौ सजणौ, नाटक रै सीगै सात-आठ दिना री वतळ, तठा उपरात नाटक 'बीजा-तीजा' त्यार-टच व्हिया म्हारौ दिल्ली आवणौ, थारै वासै ढवणौ, 'बीजा' रै चरित थारौ नवौ रूप देखणौ-समझणौ, बीज रा नवा चाद री गळाई तर-तर तनू ओळखाण रौ बधणौ—सजोग रा परवाडा नी है तौ कांई है ? जस, वित्त, सपत्त के नाणा रै पेटै म्हारी जूण, भागधारी दादीसा री भात, जोग-मजोग री जाण के अजाण अगै ई मेहर-मया नी रीवी। करम के भाग रौ पेटौ म्हारै लेखै वेमाता भरणौ ई भूलगी। पण रचनावा रै सिरजण सीगै म्हैं जाणै जित्तौ सभागियौ हू, हदभात सभागियौ। वगत रै झमकै म्हारी सिरजण-बाडी अचीता सजोग रा अमोलक मोती भपोभप ओसरता गिया। हाल ओसरै। नी तुठार, नी सेडौ।

बांच्यां अणूतौ इचरज व्हैला इरपिंदर के म्हैं सिरजण रौ सिरी-गणेस कवितावां सू करयौ। घणी ई कवितावा लिखी—तुका मे, छद मे, छूट मे। हजार सू बेसी। अेक बात सारू वळै अचूभौ व्हैला के म्है सन् १९६० ताईं हिन्दी मे लिखतौ। संजोग रै परचै १९४६ मे अणछक कवितावा अैडी छूटी के पाछौ तांतौ ई नी सध्यौ। अबै कविता लिखण सारू वळै मचमची आवै। ठेठ धुरापेड मू सावळ माडनै समझाया वेरौ पड़ैला। अर थनै समझावण रै मिस म्है आज पैली वळा खुद आपौ-आप ई समझणी चावू।

म्हारी जलम-तिथ री पकावट जाच म्हनै ई कोनी। सैं घरवाळा नै बूझ्या फगत इत्ती इज सोय व्ही के सं १९८२ रै चैत महीनै म्हारौ जलम व्हियौ। जलम रै दो-ढाई बरस उपरात री भोळी-अबूझ जूण किणी नै ई याद नी रैवै तौ म्हनै ई कोनी। पण पगा हालण रै समचै, ऊंडौ ई ऊडौ चितारया, इत्तौ ओळू तौ अवस उघडै के म्हारा जीसा आगळी झाल म्हनै बकरिया रै अेवाडै साथै ले जावता। 'मैं-मैं' री सासती रणकार काना झरणाट माचती। हिवडै धिरोळौ भवतौ। बकरिया रा आटीला तीखा-तच्च सीगडा, फर-फर हिलती पूछ, अेक सरीखी सावं ढळी मीगणिया अंत सुहाणी लागती। काळै-भवर जीवा री धोळी-धोळी सेड निरख्या इचरज मावतौ नी हौ। जीसा नै गाया रै उनमान बकरिया रौ अणूतौ चाव हौ। बकरिया रै गुणकारी दूध अर वारै सालस-सुभाव माथै वै चारेक डिगळ-गीत ई लिख्या। कोरणी कोरयोडी पीतळ री मोटी गिलास मे देसी खांड रळाय वै म्हनै गाया रौ सेडावू दूध पावता। कविता रै भेळमभेळ वानै वेदग रौ ई खासो-भलौ कोड हौ। वै मा नै केई वळा समझावता के टाबरा नै बारह बरस अन्न रै हेवा नीं करणौ। बारह-बरस दूध सबोड़योडो गोपाळ ताजिदगी निरोगौ रैवै। हडीव म्हे

ज्यूं उणरा हाड बधै । दूध रौ ई भारौ, दूध रौ ई जीमण अर दूध रौ ई ब्याळू । नित सिझ्या दूध रौ विडद बखाण वै दूहा-सोरठा सुणावता । गाय, बकरी, लरड़ी, कागला, चिड़ी अर ऊदरा री बाता सुणावता । बाता रै ओळावै कावड रै उनमान पछी-जिनावरा रा चितराम म्हारी आख्या साम्ही भावळा भरता । बारहखडी अर पाटी-पावडां रै सागै दूहा-सोरठा री जोडणी रा गुर ई बतावता । पण संजोग रा गुर राजा-महाराजा धुराधुर री बखड़ी मे नी आवै । किणी अेक बाळणजोगडी रात रै जाभरकै अचीता कूकारोळा री कानां जांणै सुरग धावड़ी । हळफळाय वैठौ व्हियौ । मा री ठौड सूनी पडी ही ! म्हैं ई रोवतौ-रीकतौ कूकारोळा रै सलबै ढूकौ । किणी नै ई रोवण टाळ दूजी-तीजी बात करण री ई सुध-बुध नी ही । काईं ठा कीकर घणा मोडा बावड व्हिया के साम्हलै गाव हरियाढाणै ठिकाणै खेतां री राड जीसा समेत तीन भाई रणखेत रह्या । सबसू छोटकिया भाई तेजदानजी अधगावळा लथपथ डील छेहला सास गिणै । पण संजोग रै खोळै वारौ छेहलौ सांस हाल पोतै वच्योड़ौ । रात माथै सैंस राता यू उलळिया करै ! पण सेवट री वाजी, सूरज ऊगै रौ ऊगै । तौ ई वौ विडरूप नजारौ भूल्योडौ नी भूलीजै । दादौसा रै घामला रौ कोई पार हो भलां ! पण डोकरिया री आख्यां जळजळी तकात नी व्ही । माय रा माय छानै-ओलै रोया व्है तौ भला ईं, पण लोगा री दीखती आख्या अेक आसू ई बारै नी आवण दियौ । बळवळता निस्कारा नैं रांम जाणै किण भाखसी कठै ऊडौ ई ऊंडौ ओटघोडौ राख्यौ के किणी रै काना भणक नी पडण दीवी । वा दिना रै सामंती सैंसकारा रौ पौरस ई निरवाळौ हौ । उणरौ पोत ई न्यारौ हौ । पगां हालता सैं पोतां नैं वैं आपरै साथै पोळ मे लेग्या । बेटां नैं खोळै रमावण वाळै सागै हाथां वैं मौत रौ काळौ पटियौ उघाडयौ । तीनू बेटा धूळ-आगणै वढघोडा सूता हा, अेक अैडी अतूट नीद में, जकौ रथी मे वळचां ईं उडण वाळी नी ही । तीनू भाई जलमिया तौ तीन-तीन बरस री लोड-बडाई मू, पण मरघा अेकण सागै । भला, मौत अैडी बेजां मिसखरी क्यू करै ? पण दादौसा री वजर-छाती मौत री उण काळी मिसखरी नैं मिसखरी रै उनमांन ई भेली । वै खाधियां नैं वरजण मे पाछ नी राखी के वारा बेटा अपटाऊ दूध-दही अर घी मठोठघोडा है, वारी लासा मसाणा वाळ क्यू अकाज करौ ? बिलाड़ै वाण-गंगा मे न्हाक्यां मछळियां रै चेपौ व्हैला । मरघा पूठै कैडी तीख, कैडौ नातौ ? पण अेक जणा री वैडी अजोगती बात घणां रै सांम्ही भरै नी पडी । दादौसा आडी देवता रह्या अर तीनू भाई खाधिया रै खाधै मसांण रै आदू-मारग बोला-बोला वहीर व्हैगा । मरघां उपरात नी बेटां रौ बस पूगौ अर नी बाप रौ ।

जीसा रै मूवां कुण आंगळी भाल बकरिया रै बाडै ले जावतौ, कुण देमी खाड रळाय सेडावू दूध पावतौ ? वांरै जीवता म्है कदै ई रोटी री कवौ नी तोड्यौ, पण वांरै देवलोक व्हियां रै दूजै दिन ई रोटी खावणी पड़ी । दूध रै फौकाम मार्ग-रोटी, सस्वादी तौ अवस लागी, पण जीसा री वा/ खिडगी/ जिणरौ थोड़ो-घणौ गिर-गिराटौ ई साल्हियौ ।

ओखांणो कथीजै के आज मरघो अर काले दूजो दिन। अेकर वळै ओ ओखांणो वाचजै, इरपिदर। आधी ओळी में महाकाव्य रो सत भरचोड़ो है के नी ? मरघा लारै मरीजै थोड़ो ई है, पण मूवा मिनख नै जीवता रै विखा री थोड़ी-घणी जाच व्है तो उणनै मरघां पैली हजार वळा सोचणो पड़ै। मौत आया पैली मरणो हाथ री बात कोनी, इणी खातर जीवण री लागडी पजै। जीवतो रह्या अमावस रो अंधारो ई दीसै, पूनम रो चाद अर सूरज रो उजास ई दीसै। होळै-होळै कैड़ा ई विखा री तळतळावण रेजलै पड़ण लागै। पण म्हारी तो उण वेळा बाळी ऊमर ही। सुख-दुख, जलम-मरण रो पूजतो ग्यान नी हो। तो ई मां रो सिंगार-विहूण *हीराकसी रो कूंधिया भेख अणूतो अपरोगो लखायो।* लाबै केमा री ठौड मोडा माथा रो डोळ अंत भूडो लागो।

जीसा रै समाया वडा भाई सुमेरदांनजी माथै घर रो सै भार उगळग्यो। वांरी भणाई रै ठवक लागी। इंटर पास करघां पैली विचाळै नौकरी करणी पडी। वा दिनां लोग-बाग भण्योडा कम हा अर नौकरियां वेसी ही। अरजी देवग रै समचै ई नौकरी लागगी। जैतारण फौजदारी मुंसी। नाव रै सीगै नी वतळाय सगळा मंछीजी-मछीजी कैवता। वरस डोढेक नौकरी करघा पूठै सुमेरजी वाभा नै भणाई री महातम समझ में आयो अर वै पूरमपूर तेवडनै गाव आया। म्हनै तो हाल ई खासो भलो इचरज व्है के सतरै रुपल्ली री चाकरी पेटै वै नैन्हा-मोटा सात आठेक भायां नै आपरी पौच भणावण रो कीकर मतो करघो ? सगा भाई म्हे तीन हां। म्हैं, हरदांनजी वाभा अर सुमेरजी वाभा। सूंक रा दोमण तो सगळा नै निगै आवै, पण उणरै गुणा रा कुण ई चवडै वखांण नी करै। अपारै अदेवाळिया मुलक हिन्दुस्तान में सूक टाळ अेक दिन ई धाको नी धकै। सूक-देव रो भगवांन विचै ई मोटो आसरो। भगवांन रो तो फगत नांव लांठो नै सूक-देव रो काम लाठो। सूक-*देव रा दीखता थाट-बाट नै बापड़ो निराकार भगवांन कद पूगै ! म्हैं जैडो-तैडो* भूडो-भलो लेखक हूं, वो सूक-देव रै परताप रो इज परचो। मित्तर किरोड री कळवळती आवादी मे म्हारै पोत रो म्हे अेकलो इज बावळो लेखक हूं। पाठका री इण मत रा दो-तीन कागद तो म्हैं थनै बंचाया ई है।

सुरंगी जाजम तण्योडी वैल पोळ साम्ही आई तो दादोसा बूझ्यो, 'सुमेरा, किण-किण नै सायै ले जावै ?'

सै भाया रै भेळमभेळ म्हारो नाव आयो तो दादोसा धाकल करनै कह्यो, '*विजिया नै हेटै उतार दै। ओ भणेला तो सगळां सू इदको, पण इणरी भणाई घर*-वाळां खातर गुणकारी नी व्हैला। म्हारो कैणो मान, मत लेजा इणनै, पिछता-वैला।'

पण दादोसा रै पालतां-पालतां वै म्हनै माडै लेयग्या। भायांणी म्हैं सगळां सू वेसी भण्यो अर हाल ई भणू। मार्चैली भणाई रो साव तो *अवै ई* जाण्यो है। यू साच मांनै इरपिदर के इम्तियाना रै डर म्हैं छठी वनाम उपरांत पाच मिनट खातर कदै ई नी भण्यो, पण सात-आठ वरस सू भणण री अेड़ी संवल्या लाग्योड़ी कै

धकली घडी कोई मोटौ इम्तियांन होवण वाळो है। जिणरौ परचौ म्हैं ई छांटूला अर जाचूला। म्है ई म्हनै पास-फेल करूला। औ घड़ी-घडी रोजीना रौ इम्तियान सगळा सू दोरौ अर आहंजौ है। लाखां-किरोडा में अेकाध पास व्है। पण म्हनैं निरी वळा इचरज व्है के म्हारा इण सुभाव री दादीसा नैं पचास बरस आगूच कीकर सोय व्ही ? औ सवाल तौ म्हारै हिवड़ै बारबार खदबदै पण जवाब रौ तातौ कठै ई नी लाधै। सवाल फगत छेहलौ सवाल बणनैं रैग्यौ। छेकड़ सवाल नैं सासतौ छोल्या ई इणरौ पड़ूत्तर उघड़ैला। केई सवाला रौ पड़ूत्तर न्यारौ नी होय वांरै भेळौ रळघोडौ व्है।

पैली वळा गांव सू आंतरै ढळयौ हौ, किणी अदीठ असैधै पथ। बैल जुत्योडा वळद आपरी ढांण वेवता हा। पूठचां वाळी गाडी आपरै चरडाट रूघोडी, गणमण-गणमण गुडकती ही। घर, गांव अर नाडी री घेर-घुमेर वड लारै छूटतौ जावै हौ। मगरा री ढळांत ढळयां गांव रा सैं निसांण-पतांण अलोप व्हैगा हा। अमेधा भाड-वांटका अर असेंधा ई रूख-बिरछ। नी म्हैं वांनै ओळखतौ अर नी वैं म्हनै पिछा-णता। नांव-मातर रा केर, खेजड़ियां अर भाड-बोरडियां ही पण निपट अजाण। म्हैं वारैं साम्ही तरसती आंख्या घणौ ई जोयौ पण वै थोबड़ौ सुजायोड़ा ई निगै आया। म्हारै साम्ही भाळ किणी रैं पांनां मुळक नी साचरी। सेंध-पिछाण वाळा इण गत ठूंठीज्योडा थोडा ई रैवै ! अपा अेक दूजा नैं माहौमाह जोवा तौ मुळकां के नी ? मतै ई चेता-परवारी मुळक खिवण लागै। पळाक-पळाक। फगत दाता री बत्तीसी रैं भरोमै आ मुळक नी साचरै। आखौ डील मुळकै। माय सू, बारा मू।

राम जाणें जैतारण नाव री उण अजाण वस्ती म्हांरी हवेली वाळी खिलापटी व्हैला के नी ? बकरिया री वैंडी मे-मे, वैंडा सीगडा अर वैंडी मीगणिया व्हैला के नी ? वैंडौ नौक, वैंडौ फळसौ, वैंडी नाडी अर वैंडौ घेर-घुमेर बडलौ व्हैला के नी ? वैंडौ चाद-मामौ, वैंड़ा नवलख तारा, वैंड़ौ परभळतौ सूरज अर वैंडी गुलाबी साभ व्हैला के नी ? किणी नैं ई आपरौ गांव, आपरा गळियारा अर आपरौ चोवटौ छोडण री क्यूं जरूरत पडै ? आज थनैं औ कागद लिखती वेळा सोचू तौ लागै के उण वेळा म्हारै याळ-मन अैड़ौ ई भीवगोटौ ऊठयौ व्हैला। नी ऊठयौ तौ इणी ढाळै ऊठणौ चाहीजतौ हौ।

जे म्हारी गवाडी उण गत अचीती पटकी नी पड़ती, जे तीनू भाई अेक ई कुवेळा देवलोक नी सिधाया व्हैता तौ सुमेरजी बाभा नैं वौ अचीतौ भार भवै ई नी भेलणौ पडतौ। जीसा म्हनैं बारह बरस ताई बारै नी तगड़ता। नित साकळै पीतळ री कोरणी कोरघोड़ी मोटी गिलास मे देसी खाड रळाय सेडावू दूध पावता। खुदोखुद आपरै हाथा बारहखडी अर पाटी-पावड़ा भणावता। दूहा-सोरठां री जोडणी सिखावता। जूनी बातां सुणावता। पण इर्रापदर, संजोग री धूस इण गत 'जे-के' री अगै ई गिनार नी करै। औ आपयापी संजोग तौ आपरै मतै रांमत रमैं ज्यू ई रमैं। नी किणी री काण राखै अर नी किणी सू ईमको पाळै। जाणू के थारै

अंतस म्हारी आ वेळ वात अंगै ई नी फरैला। म्हारै ई किसी फरती ? कुळ, खाप, जात, धरम रै गोरखधंधै फंदधोड़ा इण अजब देस हिन्दुस्तान मे संजोग री वात तौ न्यारी, भगवान तकात नै छूआछूत राखणी पडै। ऊच-नीच मानणी पडै, नीतर वौ ई जात-न्यात बारै। सजोग री पतग जात-धरम री डोर सू अतूट बध्योड़ी। तौ कांई देस, काळ, जात, धरम, गरीब, अमीर रा सजोग ई न्यारा-न्यारा व्है ? वानै ई जूंना सैंसकारा री तीख पाळणी पड़ै ? सजोग खुदौखुद जात, धरम अर लिछमी री हाजरी साजै ? वित्त, नांणा अर सत्ता मे ई सै सजोग ओटघोडा। पण आ इज तौ सजोग री लीला है। रांमत है। काळ, स्थान, जात-धरम इणरौ नेगम अखाडौ।

तिगू-मिगू री गुदळक वेळा जैतारण रै गोरवै पूगा। धरती री छाती मार्थ भणा रै उनमांन उपिमयोड़ा कच्चा-पक्का घर। ईंटा चुण्योडा, केल्हूडा छायोडा। केई हवेलियां दो-दो मजल री। हाट-बजार रौ फगत नांव ई नाव सुणतौ जकौ पैली वळा दीठौ। मिणियारां री हाट, किराणा री हाट। कदोई री दुकान अर मालणिया रा ओडा। गिराक आवै, मोल भाव करै, पईसा रै पेटै मोदी-सूत वपराय पाछा घरै ढूकै। अेकण ठौड भेळा व्हियोडा इत्ता मिनख म्हैं पैली वळा ई देख्या। मेळौ मंडघोडौ। माहोमाह अेक दूजा नै ओळखता तौ व्हैला इज ? इत्ता उणियारा अर इत्ता नाव कीकर याद रैवता व्हैला ? ओळखांण में अवस घादौ पजतौ व्हैला ?

गाव री भात उठै ई सूरज आथमियौ। सिझ्या व्ही पण वैडी गुलाबी नी। कदास सकतौ म्हारा सू पडदौ के चोज राखै ? सूरज आयमिया अधारौ तौ व्हैणौ इज हौ, अणगिण तारा खिवणा इज हा। पण नी अेक ई तारौ म्हनै ओळखतौ अर नी अेक ई तारौ म्हनै सैंधौ लखायौ। नी अंधारौ सैंधौ हौ अर नी रात सैंधी ही। भिडतां ई कुण किणनै ओळखै ? होळै-होळै सै ओळख-पिछाण व्है जावैला। गाढ़ी अर अतूट। मिनखा री समझ रौ औ इज धारौ है।

सूरज री उगाळी उठै ई अधारौ अलोप व्हियौ, रात विणसी, अणगिण तारा अेकण सागै बडा व्हिया। पण औ सूरज नाडी रै वडला की कूट नी ऊगनै दूजी कान्ही ऊगियौ। नी वैड़ी किरणां लखाई अर नी वैडौ उजास। निपट अमैंधौ अर अजाण। फगत वासदौ रौ कूडाळियौ। गाव रौ सूरज तौ म्हारौ रू-रू ओळखतौ हौ। म्हारा सू रांम-रांम करतौ हौ। चिडकोल्या री मधरी वांणी म्हनै वतळावतौ हौ।

झीणी-झीणी मुळक मत ना, यूं नी मांनै तौ म्हैं ई किसो मानू के उण वेळा साचमाच आं इज बाता रा बुडबुडिया म्हारै अंतस ऊठया। पण आज ऊमर री ढळती ढाळ किणी अदीठ कामण रै परचै पाछौ मागै ई बाळ-रूप अंगेजू तौ म्हनै अंडौ ई की भरम व्है। हां, लिखण री हटोटी रौ ढाकण ई कूडौ वात कोनी। है तौ है। म्हारौ दूजौ वस ई तौ नी पूगै।

माटी रा दीवा री ठौड़ काच वाळै गोळा री लालटेन पैली वळा देखी, अणूतौ इचरज व्हियौ। फुलडी घुमावण रै समचै बाती ऊंची-नीची व्है ! तो बांरै चांद-

सूरज नै ई कोई इणी भात भुपावतौ व्हैला ? ऊंचौ-नीचौ करतौ व्हैला ? अेकर वै घुमावता हाथ दीस जावै तौ कैड़ौ मजौ आवै ! थूं किसी साच मानै इरपिंदर, केई बरसा उपरात इण छेहलै खोळयै पाछौ वौ इज बाळ-कोड पांगरण लागौ के सूरज-चाद अर नवलख तारा भुपावता वा अदीठ हाथां नै सांप्रत जोवू। अैडी कळ-कूची किण रै हाथ, जकौ सूनै आभै दळ-बादळी रा चित्रांम कोरै; बीजळियां रा सळावा भरै ? नित हमेस परभात अर साफ री वेळा धवसां-धवसा गुलाल उछाळै। अलेखू फूला अेकण सागै भात-भात रौ रग भरै। पान-पांन में हरियाळी घोळै। आ किण री अदीठ कूंची जकौ मिनख रै काळै केसां धोळौ रंग भरै अर बेरौ तकात नी पडण दै ? रूप-जोवन री छिलती पसम नै खखर खोळयै भीर-भीर कर दै। आ किण री कळा अर किण री कूंची ? अै किण रा हाथ ?

ऊन्हाळा री आकरी रुत ही। दिनूगा ई हाथ-पग धोय, मूंडौ उजाळ सुमेर जी बाभा रै सागै भायां री हेड़ स्कूल भरती होवण सारू वहीर व्ही। म्हैं साव कोरौ हौ। पैली क्लास मे भरती व्हियौ। रजिस्टर में हाजरी सारू नाव मंडियौ। दूजा भाई, गांव, बाणियावटी भण्योड़ा हा। बारहखडीअरगुरणी घोख्योडी ही। कोई दूजी क्लास में भरती व्हियौ; कोई तीजी में अर कोई चौथी में। जिण रौ जिण गत भणाई रौ डोळ, उणी परवाणै हेड माट सा'ब सगळा नै भरती कर लीन्हा।

म्हारै तौ पाटी-बरता सू ई काम सरग्यौ, पण दूजा भाया खातर पावडां री आडी पोथिया, सीसा पेंसला, दवात, कॉपिया अर तिरछी कटघोड़ी कलमां मोला-ईजी। गिणिया बरस भणाई संपूरण व्हियां नौकरी लागैला। राज मे पायौ जमैला। फतै रा डंका घुरैला। धड़िग-धड़िग। भणियौ-गुणियौ मिनख अपरबळी व्हे। भणाई टाळ नी मास्टर वणीजै, नी हाकम अर नी थाणेदार। हाकम, थाणेदार अर गरूजी सू तौ भगवांन रा ई थरणा कापता व्हैला। वै तेवडै तौ भगवांन तकात नै सजा बोल दे। मार्चै चाढ दै। कान मठोठ तावड़ै ऊभाण दै, मुरगौ बणाय दै, इस्केल सू ठोला ई ठोला ठपकार दै। बापड़ा जम रौ ई अैंड़ौ जबर ठरकौ नी व्हैतौ व्हैला।

वां दिना भणाई री सिरै गुर हौ—मार। उघाड़ माथै ठोलां रै घोदा टाळ चापळियोडी अकल चुळती ई नी ही। घणकरा गरू यू. पी. धकला हा। खड़ी बोली छमकता। मारवाड़ी सूं अणूती चिड ही। चिड़ सू ई वत्ती सूग ही। म्हारी जीभ मायडभासा भिल्योडी ही। हिन्दी री आट घणी दोरी आई। स्कूल रै ठिकाणै मार-वाड़ी बोलणौ जाणै जुलम व्है। म्हारी निसरड़ी जीभ हाचळां दूध सागै चूस्योडी मायड-भासा घणी दोरी छिटकाई। सीख्योडी वाणी नै भुलावण खातर म्हे घणी ई सजा भुगती। कदास इणी खातर बरसा उपरांत मायड़-भासा रौ हेज पाछौ इण गत पावस्यौ। क्यूं इरपिंदर ? कोई तौ लारलै भव रा वदळा ई नी छोडै, तद म्हैं इण जलम रौ अैंड़ौ वदळौ भलां कीकर भूलतौ ! मांय रौ माय उकळतौ भाळ-मुखी परवत कठा लग दटघोड़ौ रैवतौ !

अंतस म्हारी आ वेळ बात अंगै ई नीं भरैला। म्हारै ई किसी भरती ? कुळ, साप, जात, धरम रै गोरखधंधै फंदघोडा इण अजब देस हिन्दुस्तान मे संजोग री बात तो न्यारी, भगवान तकात नै छूआछूत राखणी पड़ै। ऊंच-नीच मानणी पडै, नीतर वो ई जात-न्यात बारै। संजोग री पतग जात-धरम री डोर सू अतूट बध्योडी। तो काई देस, काळ, जात, धरम, गरीब, अमीर रा संजोग ई न्यारा-न्यारा व्है ? वानै ई जूना सँसकारा री तीख पाळणी पड़ै ? संजोग खुदोखुद जात, धरम अर लिछमी री हाजरी साजै ? वित्त, नांणा अर सत्ता में ई सै संजोग ओटघोडा। पण आ इज तो संजोग री लीला है। रांमत है। काळ, स्थांन, जात-धरम डणरो नेगम अखाडो।

तिगू-मिगू री गुदळक वैळा जैतारण रै गोरवै पुगा। धरती री छाती मार्थ भणा रै उनमांन उपिसयोड़ा कच्चा-पक्का घर। ईंटां चुण्योड़ा, केलूड़ा छायोडा। केई हवेलियां दो-दो मजल री। हाट-बजार री फगत नाव ई नाव सुणतो जको पैली वळा दीठो। मिणियारां री हाट, किराणा री हाट। कदोई री दुकान अर मालणिया रा ओडा। गिराक आवै, मोल भाव करै, पईसा रै पेटै मोदी-सूत वपराय पाछा घरै ढूकै। अेकण ठौड़ भेळा व्हियोडा इत्ता मिनख म्है पैली वळा ई देख्या। मेळो मडघोडो। माहौमाह अेक दूजा नै ओळखता तो व्हैला इज ? इत्ता उणियारा अर इत्ता नांव कीकर याद रैवता व्हैला ? ओळखाण मे अवस धादो पजतो व्हैला ?

गांव री भात उठै ई सूरज आथमियो। सिझ्या व्ही पण वैडी गुलावी नी। कदास सकतो म्हारा सू पड़दो के चोज राखै ? सूरज आथमियां अधारो तो व्हैणो इज हो, अणगिण तारा खिवणा इज हा। पण नी अेक ई तारो म्हनै ओळखतो अ नी अेक ई तारो म्हनै मैंधो लखायो। नी अधारो सैंधो हो अर नी रात सैंधी ही भिडतां ई कुण किणनै ओळखै ? होळै-होळै सै ओळख-पिछाण व्है जावैला गाढी अर अतूट। मिनखा री समझ रो ओ इज धारो है।

सूरज री उगाळी उठै ई अधारो अलोप व्हियो, रात विणसी, अणगिण तारा अेकण मार्गै बडा व्हिया। पण ओ सूरज नाडी रै बड़ला की कूट नी ऊगनै दूजी कान्ही ऊगियो। नी वैड़ी किरणा लखाई अर नी वैडो उजास। निपट अमैंधो अर अजाण। फगत वासदी री कूडाळियो। गाव री सूरज तो म्हारो रू-रू ओळखतो हो। म्हारा सू राम-रांम करतो हो। चिड़कोल्यां री मधरी वांणी म्हनै बतळावतो हो।

झीणी-झीणी मुळक मत ना, थूं नी मांनै तो म्हैं ई किसो मानू के उण वेळा साचमाच आ इज बातां रा बुडबुडिया म्हारै अंतस ऊठया। पण आज ऊमर री ढळती ढाळ किणी अदीठ कामण रै परचै पाछो मार्गै ई बाळ-रूप अंगेजू तो म्हनै अैड़ो ई की भरम व्है। हां, लिखण री हटोटी रो ढाकण ई कूड़ी बात कोनी। है तो है। म्हारो दूजो बस ई तो नी पूगै।

माटी रा दीवा री ठौड़ काच वाळै गोळा री लालटेन पैली वळा देखी, अणूतो इचरज व्हियो। फुलडी घुमावण रै समचै बाती ऊंची-नीची व्है ! तो काई पांर-

सूरज नै ई कोई इणी भात भुपावतौ व्हैला ? ऊंचौ-नीचौ करतौ व्हैला ? अेकर वै घुमावता हाथ दीस जावैं तौ कैड़ौ मजौ आवैं ! थू किसी साच मानै इरपिंदर, केई बरसां उपरात इण छेहलैं खोळचैं पाछौ वौ इज बाळ-कोड पागरण लागौ के सूरज-चाद अर नवलख तारा भुपावता वा अदीठ हाथा नै सांप्रत जोवू । अैडी कळ-कूची किण रै हाथ, जकौ सूनै आभैं दळ-बादळी रा चित्रांम कोरैं; बीजळिया रा सळावा भरै ? नित हमेस परभात अर सांझ री वेळा धवसा-धबसा गुलाल उछाळै । अलेखू फूलां अेकण सागै भात-भांत रौ रग भरै । पान-पांन में हरियाळी घोळै । आ किण री अदीठ कूंची जकौ मिनख रै काळै केसा धोळौ रंग भरै अर बेरौ तकात नी पडण दै ? रूप-जोवन री छिलती पसम नै खखर खोळचैं भीर-भीर कर दै । आ किण री कळा अर किण री कूंची ? अै किण रा हाथ ?

ऊन्हाळा री आकरी रुत ही । दिनूगा ईं हाथ-पग धोय, मूडौ उजाळ सुमेर जी बाभा रै सागै भाया री हेड स्कूल भरती होवण सारू वहीर व्ही । म्है साव कोरौ हौ । पैली क्लास मे भरती व्हियौ । रजिस्टर मे हाजरी सारू नाव मंडियौ । दूजा भाई, गाव, वाणियावटी भण्योड़ा हा । बारहखड़ी अर गुरणी घोख्योड़ी ही । कोई दूजी क्लास में भरती व्हियौ; कोई तीजी में अर कोई चौथी मे । जिण रौ जिण गत भणाई री डोळ, उणी परवाणै हेड माट सा'ब सगळा नै भरती कर लीन्हा ।

म्हारै तौ पाटी-बरता सू ईं कांम सरग्यौ, पण दूजा भाया खातर पावडां री आडी पोथिया, सीसा पेंसला, दवात, कॉपिया अर तिरछी कटघोडी कलमां मोला-ईजी । गिणियां वरस भणाई संपूरण व्हियां नौकरी लागैला । राज मे पायौ जमैला । फतै रा डंका गुरैला । धड़िंग-धड़िंग । भणियौ-गुणियौ मिनख अपरबळी व्है । भणाई टाळ नी मास्टर बणीजै, नी हाकम अर नी थाणेदार । हाकम, थाणेदार अर गरूजी सू तौ भगवांन रा ई थरणा कांपता व्हैला । वै तेवड़ै तौ भगवांन तकात नै सजा बोल दे । माचै चाढ़ दै । कान मठोठ तावड़ै ऊभाण दै, मुरगौ बणाय दै, इस्केल सू ठोला ई ठोला ठपकार दै । बापड़ा जम रौ ई अैडौ जबर ठरकौ नी व्हैतौ व्हैला ।

वां दिनां भणाई रौ सिरै गुर हौ—मार । उघाड़ माथै ठोला रै घोवा टाळ चापळियोडी अकल चुळती ई नी ही । घणकरा गरू यू पी. धकला हा । खड़ी बोली छमकता । मारवाडी सूं अणूती चिड़ ही । चिड़ सू ईं वत्ती सूग ही । म्हारी जीभ मायडभासा भिल्योड़ी ही । हिन्दी री आंट घणी दोरी आई । स्कूल रै ठिकाणै मार-वाडी बोलणौ जाणै जुलम व्है । म्हारी निसरड़ी जीभ हाचळां दूध सागै चूस्योड़ी मायड़-भासा घणी दोरी छिटकाई । सीख्योडी वाणी नै भुलावण खातर म्हैं घणी ई सजा भुगती । कदास इणी खातर बरसां उपरात मायड-भासा रौ हेज पाछौ इण गत पावस्यौ । क्यू इरपिंदर ? कोई तौ लारलै भव रा बदळा ई नी छोडै, तद म्है इण जलम रौ अैड़ौ बदळौ भला कीकर भूलतौ ! माय रौ माय उकळतौ झाळ-मुखी परबत कठा लग दटघोड़ौ रैवतौ !

अंतस म्हारी आ वेळ बात अंगै ई नी भरैला। म्हारै ई किसी भरली ? कुळ, खाप, जात, धरम रै गोरखधंधै फंदचोड़ा इण अजब देस हिन्दुस्तांन मे सजोग री बात तौ न्यारी, भगवान तकात मैं छूआछूत राखणी पड़ै। ऊच-नीच मानणी पड़ै, नीतर वौ ई जात-न्यात बारै। संजोग री पतग जात-धरम री डोर सू अतूट बंध्योड़ी। तौ काईं देस, काळ, जात, धरम, गरीब, अमीर रा सजोग ई न्यारा-न्यारा व्हे ? वानैं ई जूना सैंसकारा री लीख पाळणी पडै ? सजोग खुदोखुद जात, धरम अर लिछमी री हाजरी माजै ? वित्त, नांणा अर सत्ता मे ई सैं सजोग ओटचोड़ा। पण आ इज तौ सजोग री लीला है। रामत है। काळ, स्थान, जात-धरम इणरौ नेगम अखाडौ।

तिगू-मिगू री गुदळक वेळा जैतारण रै गोरवै पूगा। धरती री छाती मार्थ भणा रै उनमांन उपसियोडा कच्चा-पक्का घर। ईंटां चुण्योडा, केलूडां छायोड़ा। केई हवेलियां दो-दो मजल री। हाट-वजार रौ फगत नांव ई नाव सुणतौ जकौ पैली वळा दीठौ। मिणियारां री हाट, किराणा री हाट। कंदोई री दुकान अर मालणिया रा ओडा। गिराक आवै, मोल भाव करै, पईसां रै पेटै सोदौ-सूत वपराय पाछा घरै ढूकै। अेकण ठौड़ भेळा व्हियोडा इत्ता मिनख म्हैं पैली वळा ई देख्या। मेळौ मंडचोड़ौ। माहोमाह अेक दूजा नैं ओळखता तौ व्हैला इज ? इत्ता उणियारा अर इत्ता नाव कीकर याद रैवता व्हैला ? ओळखाण मे अवस घाटौ पजतौ व्हैला ?

गाव री भात उठै ई सूरज आथमियौ। सिझ्या म्हो पण वैड़ी गुलाबी नी। कदास संकती म्हारा सू पडदौ के चोज राखै ? सूरज आथमिया अधारौ तौ व्हैणौ इज हो, अणगिण तारा खिवणा इज हा। पण नी अेक ई तारौ म्हनैं ओळखतौ अर नी अेक ई तारौ म्हनै सैंधौ लखायौ। नी अधारौ सैंधौ हो अर नी रात सैंधी ही। भिडतां ई कुण किणनै ओळखै ? होळै-होळै मैं ओळख-पिछांण व्है जावैला। गाढी अर अतूट। मिनखा री समभ रौ औ इज धारौ है।

सूरज री उगाळी उठै ई अधारौ अलोप व्हियौ, रात विणसी, अणगिण तारा अेकण सागै बडा व्हिया। पण औ सूरज नाडी रै बड़ला की कूट नी ऊगनै दूजी कान्ही ऊगियौ। नी वैडी किरणां लखाई अर नीं वैडौ उजास। निपट अमैंधौ अर अजाण। फगत वासदी रौ कूडाळियौ। गाव रौ सूरज तौ म्हारौ रूं-रूं ओळखतौ हो। म्हारा सू रांम-राम करतौ हो। चिडकोल्यां री मधरी वाणी म्हनै बतळावती ही।

भीणी-भीणी मुळक मत ना, थू नी मांनैं तौ म्है ई किसौ मानू के उण वेळा माचमाच आं इज वातां रा बुडबुडिया म्हारै अंतस उठ्या। पण आज ऊमर री ढळनी ढाळ किणी अदीठ कामण रै परचै पाछौ मागै ई बाळ-रूप अंगेजू तौ म्हनै अेड़ौ ई की भरम व्है। हां, लिखण री हटोटी रौ ढाकण ई कूडी यात कोनी। है तौ है। म्हारौ दूजौ वम ई तौ नी पूगै।

माटी रा दीवा री ठौड़ काच वाळै गोळा री लालटेन पैली वळा देखी, अणूतौ इचरज व्हियौ। फुलडी घुमावण रै समचै वाती ऊपी-नीची व्है ! तौ काईं चांद-

सूरज नै ई कोई इणी भात फुपावतौ व्हैला ? ऊंचौ-नीचौ करतौ व्हैला ? अेकर वै घुमावता हाथ दीस जावै तौ कैडौ मजौ आवै ! थू किसी साच मानै इरपिंदर, केई बरसा उपरांत इण छेहलै खोळचै पाछौ वौ इज बाळ-कोड पागरण लागौ के सूरज-चाद अर नवलख तारा फुपावता वा अदीठ हाथां नै सांप्रत जोवू। अैडी कळ-कूची किण रै हाथ, जकौ सूनै आभै दळ-बादळी रा चित्रांम कोरै; बीजळियां रा सळावा भरै ? नित हमेस परभात अर सांझ री वेळा धवसा-धबसां गुलाल उछाळै। अलेखू फूला अेकण सागै भांत-भाल रौ रंग भरै। पांन-पांन में हरियाळी घोळै। आ किण री अदीठ कूची जकौ मिनख रै काळै केसां घोळौ रंग भरै अर बेरौ तकात नी पडण दै ? रूप-जोबन री छिलती पसम नै नखर खोळचै भीर-भीर कर दै। आ किण री कळा अर किण री कूची ? अै किण रा हाथ ?

ऊन्हाळा री आकरी रुत ही। दिनूगा ईं हाथ-पग धोय, मूंडौ उजाळ सुमेर जी वाभा रै सागै भायां री हेड़ स्कूल भरती होवण सारू वहीर व्ही। म्है साव कोरौ हौ। पैली क्लास में भरती व्हियौ। रजिस्टर में हाजरी सारू नाव मंडियौ। दूजा भाई, गाव, वाणियावटी भण्योड़ा हा। बारहखडी अर गुरणी घोख्योडी ही। कोई दूजी क्लास मे भरती व्हियौ; कोई तीजी मे अर कोई चौथी मे। जिण रौ जिण गत भणाई री डोळ, उणी परवाणै हेड माट सा'ब सगळा नै भरती कर लीन्हा।

म्हारै तौ पाटी-बरता सू ई कांम सरग्यौ, पण दूजा भायां खातर पावडा री आडी पोथियां, सीसा पेंसलां, दवात, कॉपियां अर तिरछी कटघोड़ी कलमां मोला-ईजी। गिणियां बरस भणाई संपूरण व्हिया नौकरी लागैला। राज में पायौ जमैला। फतै रा डंका घुरैला। धड़िग-धड़िग। भणियौ-गुणियौ मिनख अपरबळी व्है। भणाई टाळ नी मास्टर बणीजै, नी हाकम अर नी थांणैदार। हाकम, थाणैदार अर गरूजी सू तौ भगवान रा ई थरणा कापता व्हैला। वै तेवड़ै तौ भगवान तकात नै सजा बोल दे। माचै चाढ दै। कान मठोठ तावडै ऊभांण दै, मुरगौ बणाय दै, इस्केल सू ठोला ई ठोला ठपकार दै। वापडा जम रौ ई अंडौ जबर ठरकौ नी व्हैतौ व्हैला।

वां दिना भणाई रौ सिरै गुर हौ—मार। उघाड माथै ठोला रै घोदा टाळ चापळियोड़ी अकल चुळती ई नी ही। घणकरा गरू यू. पी. धकला हा। खड़ी बोली छमकता। मारवाडी सू अणूती चिड ही। चिड़ सू ईं वत्ती सूग ही। म्हारी जीभ मायडभासा भिल्योडी ही। हिन्दी री आट घणी दोरी आई। स्कूल रै ठिकाणै मार-वाडी बोलणौ जांणै जुलम व्है। म्हारी निसरड़ी जीभ हाचळा दूध सागै चूस्योडी मायड-भासा घणी दोरी छिटकाई। सीख्योडी वाणी नै भुलावण खातर म्है घणी ई सजा भुगती। कदास इणी खातर बरसां उपरात मायड़-भासा री हेज पाछौ इण गत पावस्यौ। क्यू इरपिंदर ? कोई तौ लारलै भव रा बदळा ई नी छोडै, तद म्हैं इण जलम रौ अैडौ बदळौ भला कीकर भूलतौ ! माय रौ माय उकळतौ झळ-मुखी परवत कठा लग दटघोड़ो रैवतौ !

सांवळी पाटी माथै बारहखड़ी रा धोळा आखर क, ख, ग, घ, ङ, अंडा रूपाळा लागता जाणै आभै तूटयोड़ा तारा पाटी रो आसरो झेल्यो व्है। मार खाया ई अंडॉ आणद भरै पड़ै तो घणो सूघो। अणूतै कोड भणतो, पाटी माडतो, बारहखड़ी घोखतो। की चूक नी व्हैती तो ई माट सा'ब भारणी उतारघां टाळ नी मानता। वांनै तो किणी ओळावै, कूटण री बाण पोखणी ही; हाथा री बट काढणो हो। कूटघा टाळ कदास बारो हाजमो ई काम नी करतो। पावडां रा गरू दूलीचदजी अर बारहखडी रा गरू सिवराज बहादुरजी मे मनाग्याना कूटण री जाणै होड मच्योडी। नित नवी-नवी तजवीजा विचारनै आवता। समझ नी पड़ै, मुरग-नरक के किणी देवलोक मे कूटधा टाळ वांनै कीकर रजत व्हैती व्हैला ?

ओळख-पिछाण बध्या बाळ-गोठिया री टोळी जुड़ती गी। स्कूल री कार लोप्या खत्ता-दडी, धुन्ना, अटा अर लट्टू रमण री बाण अंडी पडी के दूजी की बात आछी नी लागती। रोटी खावती वेळा मन खत्ता-दडी भेळो गुड़कण लाग जातो; भणती वेळा धुन्ना रै ठुळियां मन रळ जातो। धुन्ना री जीत मे कोई गोचां री जीत थोडी ई व्हैती, गढ़-किलां री जीत व्हैती ! जीत्योडा अटा रै ओळावै, जाणै तारा, खूजिया तालकै व्हैता। लट्टू री गरणाटी रै आगै मायलो अतस ई तो चकारा देवतो हो। जागती आख्या जीत्योडा गोचा अर अटा तो ठाणै रैवता, पण नींद मे जीत्योडो राज जागण रै समचै ई पाछो खुस जावतो। सपनै गम्योडा अटा अर ठुळियां रो साचमाच रा खजाना विचै वत्तो सोच व्हैतो।

दिन भाखर सू ढळघा नीझरणा रै वेग ढळता हा। रात--दिन सू धकै मलापती ही अर दिन—रात सू आगै फाळा सांधतो हो। समझ नी पड़ै के आज अटा, धुन्ना अर लट्टू रमिया टाळ दिन कीकर आथमै अर रात कीकर ढळै ? वा दिना तो इण बात सारू भगवान रै कह्या रो ई पतियारो नी करतो। पण आज तो वा बाता नै बरस पचास बीतग्या। घोड़ा री किसी जिनात वा बीत्योडी बातां नै तो रॉकेट ई नी म्हावड़ै। कदेई-कदेई तो मन मे भरम उपजै के लारली सगळी ब्यात म्हारै जमारै ई बीती के किणी दूजा रै ? वो टाबर म्हैं इज हो के नी ? जे साचाणी म्हैं इज हो तो म्हारै इणी सागै खोळयै वै अणगिण डोळ कठै बिलायगा ? वो बाळ-रूप कठै चापळग्यो ? वो रळकतो जोबन कठी रमग्यो ? वा दिना तो अंडो लखावतो के धुन्ना, खत्ता-दड़ी अर अटा रमण टाळ मिनख दूजा काम करै ई क्यू है ? क्यू अठी-उठी भीकै अर क्यू झक मारै ? क्यू चाकरी करै, क्यू विणज-बैपार करै, क्यू खेती करै ? पण आज मुदोमुद म्हनै ई धुन्ना, खत्ता-दडी, अटा अर लट्टू रमिया नै जुग बीतग्या ! वदै ई पाछी हूर नी आई। फगत आज थनै ओ हरडो लिखती वेळा हीयै ओटघोडी अै जूनी बाता उकराळोजी। म्हारो—म्हारा मू इं अंडो अलंघ आतरो कीकर पड्यो ? क्यू पड्यो ? थारै ओळावै म्है आपो-आप नै अै सवाल बूझू ! बीत्योड़ी आग्यो जमारो ई अेक मोटो सवाल बणग्यो। जिणरो जवाब देवणो तेवड़ू तो ई दिरीजै कठै ? अर म्हनै पू इं जवाबां मू भणूनी चिढ है। इग्तियाना रै डर ई जवाब देवण रो अगै ई मन नी करतो। मिनख गुद

अेक भारी-भरकम अर छेहलौ सवाल है। सवाला-दर-सवाला गूथ्योड़ौ, जिणरौ कठै ई की पड़ूत्तर कोनी। थोड़ी ताळ सारू थावस रै भरम जवाब मिळै, पण न्यावेक वारा उपरात वौ जबाब ई खुद सवाल बण फूफाडा भरण लागै !

बात कीं अळूफगी, पाछौ धूम मारग आवू। तौ गरुवा रै ठोलां-घुम्मां रौ अेड़ौ परताप व्हियौ इरपिंदर के म्है बरस वीत्यां पैली-पैली कोरी पाटी माथै धन्नाट लिखण लागौ, छप्योड़ी पोथी दाछंट बाचण लागौ। अेड़ौ लखावतौ जाणै उण भणाई रै लेखै म्हैं कुदरत रौ अगम भेद उघाड़ू। पाटी मंडघा आखर आख्यां साम्ही नाचता। आख्यां री जोत हिवड़ै उतरघा आखर धूमर री धमरोळ मचावता।

दूजी क्लास पास करनै तीजी में आयौ। अगरेजी राज री आंण-दुहाई गांव-गाव फिरयोड़ी ही। गरुवा रौ जीव ई अगरेजी सिखावण सारू ताखड़ा तोड़तौ हौ। पण रांम जाणै क्यू म्हारै अंगरेजी री अेड़ी धबक बैठोड़ी के घोख्या पैली भूल जावतौ। अंगरेजी री अे, बी, सी, डी तौ म्हारी सीढ़ी इज काढती। घणी मार खायां इण मळेछ भासा सू अेड़ी ओक्या बैठी के हाल ई अलेखू पोथ्यां बांचण रै उपरात ई नी पूजती अगरेजी बोलीजै अर नी लिखीजै। सदावंत इण सू कांनौ लेवण रा सेवट अै परवाड़ा उघड्या ! अबै ई किणी हिन्दुस्तानी नै फरराट अगरेजी बोलतां सुणू तौ अेड़ौ लखावै के सरकस रौ चात्रंग बादरौ के बांदरी गिट-पिट-गिटपिट नकल उतारै। के कोई पारगत मिट्ठू घोख्योड़ी उकाळी छाडै।

अंगरेजी री वा दिना फगत औ ई म्यांनौ समझतौ के आ मार खावण री विद्या है। जद अंगरेज ई गुलांमा माथै जुलम करण खातर पाछ नी राखी तौ वांरी भासा क्यू दुभांत पाळैला ?

अेक दिहाड़ै समाजोग री वात अेड़ी बणी के अंगरेजी रा गरू आनंदी लालजी म्हनै अंगरेजी रै किणी सबद री स्पेलिंग बूझी। आधी-दूधी जाणतौ जकौ ई पांतर-ग्यौ। बूक री सांनी रै समचै अपूठो मुड़नै प्याऊ में बडग्यौ। हाथै ई पांणी पीवण लागौ तौ लारौ करता माट सा'ब रै तणै झाळ ऊठी। वै फगत नाव रा इज आनंदी लालजी हा, पण अेक दुखदाई मे घाटौ नी हौ। कान मठोठ आवेस धरेळियौ—लाता, घुम्मा अर ठोला। पासळी रै किणी अेक घुम्मै म्हनै बूझ आयगी। विद्या सीखण खातर मार जरूरी व्हेतां थका ई म्हनै वेड़ी कुजरवी मार री सपनै ही आस नी ही। चेतौ वावड़ता ई रीस तौ अेड़ी आवटी के गरूजी री चटणी बाट न्हाकूं; पण की पसवाड़ौ नी फिरघौ। तौ ई थाकोड़ै डील जम वड़घां उपरांत म्हारा सू निरात नी व्ही। गरूजी री 'दिखणा' मटकियां नै चुकाई। अेक-अेक ठोकर रै समचै तमाम मटकिया रौ खळिदौ व्हैगौ। वौ तौ साप्रत जमराज नै वका-रणौ हौ। पछै आनंदी लालजी कूटण रै आनंद क्यू कोताई करता ? सड़ाक-मड़ाक लचकांणी वेंत सूं ठौड-कुठौड़ आखौ डील सुरड़ न्हावयौ। लीली चम लीलां री कोरणी उपड़गी। सुरसत देवी रौ महा-प्रसाद इण मापै ई मिळतौ। म्हारै रूं-रूं अंगरेजी री ओक्या घुळगी। पण सजोग री अेड़ी बेजां कुलग व्ही इरपिंदर के

लारला पंतीस के छतीस बरसा सू अंगरेजी बाचण टाळ गुड़कौ ई नी लागै। नित-नेम ज्यूं अंगरेजी पोथ्यां रौ पाठ करणौ पड़ै, पण उण धवक रै आकस अजै ताई नी तौ अगरेजी बोलीजै अर नी लिखीजै। जाणै औ कोई चेत-अचेन अकरम व्है। बाचण री इण लागडी पेटै अंगरेजी भासा री की इदकाई कोनी। 'विलायत' री ठौड़ अपां फ्रास के जरमनी रा गुलाम व्हैता तौ फ्रेंच के जरमन सीखणी पडती। अगरेजां रै पैली उडदू रौ इणी ढाळै अडदू हौ। गुलांम सपनै ई आजादी रौ साव कद जाणै ! इण पूजनीक देस री धरती नैं परदेसियां रै पगफेरा रौ उछाव अंत इज घणौ है। आजादी रा अै छत्तीस बरस ई पवीत गगा-जमना सारू अळखावणा व्हैगा। गुलामी री हर खुरखुरिया सावनी लखावै !

चाकरी करण वाळा चाकर रौ अेक पग घर मे तौ दूजौ गळियारै। सुमेरजी बाभा री पलटी बाड़मेर व्ही तौ म्हनै ई भणण सारू बाडमेर जावणौ पड्यौ। सेवट री बाजी टळता-टळता म्हे तीन जणा बाकी बच्या। जैतारण मिडल स्कूल नी ही। इण वास्तै कुबेरजी बाभा नैं पाचवी क्लास पूठै बिलाडै मिधावणौ पड्यौ। म्हैं अर खूमदानजी जैतारण री जमपुरी सू टी मीं कटवाई। वै म्हारा सू अेक क्लास धकै हा।

जोधपुर रै बडै टेमण पैली वळा रेल रै अंजण री भूभाडी सुण्यौ। सावळ जाव नी पडी के वौ भूभाडौ अगरेजी में हौ, हिन्दी मे के मारवाडी मे ? गोरा री कळ-कूची ठायोड़ा अंजण कदास अंगरेजी मे ई भूभाडा देवता व्हैला। सास रै समचै काळा-धिराक धूवा रा गोट ई गोट ! भक्ख-भक्ख करतौ लोह रै पहीला रपटै। डाकी-डैण रै उनमान विडरूप डोळ ! जबर डरावणौ, जाणैं लारलै भौ अंगरेजी रौ अध्यापक व्हे।

लाबी-लडाक रेल रै डिब्बा अजण जुत्यौ। डकरेल सईस, अेक फुरणी सू काळौ धूवौ छोडै अर दूजी फुरणी सू उकळती भाप ! अेक फुरणी माथा माथै अर दूजोडी पगा तळै। म्हारी आखया चकन-वकन ! मायौ आव-बाक ! गोरा री कळा रौ कोई तूमार है भला ! आखी दुनिया माथै ई राज करै तौ थोडौ।

गाव री तमाम वस्ती मावै जित्ती लांठी गाडी। डिब्बा ई डिब्बा। नी बळद जुत्योड़ा, नी घोड़ा ! किण विध हकैला ? आ गाडी तौ दस हाथिया सू ई दोरी खंचीजै। गारड-बाबू री दूजी के तीजी सीटी समचै अजण जोर सू डाढ़यौ अर भू-भू चिचाइनौ धकै रपटण लागौ। हाड-हाड खोळा पड़ग्या व्हैला ! माहोमाह फंदपोड़ा डिब्बा ई आपरौ ठायौ छोड कुरळाट मचावता गुड़कण लागा। रेल तौ मासाणी वहीर व्हैगी ! अदै किणी रै डाब्या थोड़ी ई डवै ! तर-तर वेग वधण लागौ। खड़िग-खड़िग रै डाकै। जाणै कोई तोफान पहीलां-पहीलां भरणाटै भाजै।

रेल नैं भापण सारू अेकोअेक रूख-बाटका गेरौ करण लागा, पण जिणरौ नांव रेल, बिणां सू नी अपड़ाई। टेमण आया मन-मतै डबनी तौ डबनी, नीतर हरडाट होकारां पाड़ती भाज्यां जावै ही। जे मनाजोग पहीनां सू पिलळगी तौ

धरती री पिडचां-पिड़चां उखेल न्हाकैला ! अै इज बातां म्हनै सोचणी चाहीजै तौ अवस अै इज सोची व्हैला।

खासी ताळ उपरांत आपरै सासता खडिदां री ढाळ रेलगाडी किण गत रौ हालरियौ उगेरयौ के हदभात इचरज रै उमाव थका ई म्हारी आंख्या मींचीजगी अर म्हैं हेजळी ऊंघ रै खोळै अचेत व्हैगौ।

सुमेरजी बाभा रै झिंझोडया म्हैं आंख्या खोली। कुळी दबादब सेमान उतारता हा। म्हारै अचेत ई हाका-धाका बाड़मेर टेसण आयग्यौ ! तौ कांई बादीली रेल म्हारै चेता-परबारी आपरी धत उडती जावै ही ! थाकेलौ उतारण रै मिस वा सूसाड मचावती ही। भाजतां-भाजतां सेवट हांफणी चढै तौ इण मे नवादी बात किसी। सूरज सू ई मोडी, घणी मोडी—घड़ी डोढ-घड़ी उपरात म्हारी आंख खुली।

असैंधौ टेसण। असैंधौ मानखौ। असैंधौ हाट-वजार। असैंधौ मारग। असैंधा घर। असैंधा रूंख। असैंधा गिडक अर असैंधा कागला। पण सैंधी चाव-चांव। जांणै म्हारा पग-फेरा नै हरख बधावै ! रोम-जांणै वां कागला नै किण-विध इत्ती आगूच सोय व्ही के अगरेजी में निपट ठोठ बाळक वगत आया संजोग रै परचै मायड-भासा राजस्थांनी रै पाठकां रौ लाडकौ कथा-नवीस वणैला ! इण पोथी री भूमिका पेटै म्हारी इणीज जातरा सारू थू इत्तौ कोड दरसायौ ! साचांणी, थारै धोदायां, म्हैं ई पाछल फोर पैली वळा, चेतै उतरधोड़ी इण जातरा रै खोजा भाळचौ। कदै ई नी तेवडी ही के आखरां रै सिरजण टाळ म्हनै वारी कूख रौ लेखौ समझावणौ पडैला ! जापै कस्टीज्योडी मां सारू टावर नै जलम देवणौ तौ अणूतौ दोरौ है, पण उण सू ई दोरौ काम है उण जलम री विगत नै आखरा दरसावणौ। म्हा मे ई आज वैडी री वैडी आटी पजी।

दूजै दिन म्है अर खूमजी बाभा स्कूल मे भरती होवण खातर हाब-गाब वहीर व्हिया तौ मारग मे सिपाहियां रै जोडै हथकडी अर बेडी फिल्योड़ा सात-आठेक कैदी मिळया। वां दिनां म्हनै कैदिया रौ डर कुजरबौ लागतौ। चोर, धाड़ायती अर हिरयारा ! देखतां ई कापणी छूटती। रू-रू ऊभौ व्है जातौ। वांनै देखण रै समचै ई जैतारण री अेक ओळू रौ हिवडै चटीडौ साल्हियौ। खुलै चौक जाडी फरणा री टिगटी जमी में ऊडी गडयोडी। अेक कैदी रा हाथ पग, पूजता छीदा, उण टिगटी बंध्योडा। चौफेर मिनखां रौ भीडौ। खिलका रौ कोडायौ। वेता रौ हुकम छूटतां ई दो मेहतर पाणी मे तरबम कांटाळी झाटियां साभी। अेक जणौ कैदी री टिरती तैमल नै ऊपर कडिया बाधी। उणरा पूत पूरमपूर उघडग्या। म्हैं गिणती सिख्योड़ौ हौ। झाटिया रा सडिदा उडण लागा—अेक...दो...तीन...चार...! सड़िदै रै सड़िदै वौ कैदी इण गत भूडै ढाळै अरडायौ के म्हनै धूजणी छूटगी। कांना कळकळती राळ खळकीजी व्है। तौ ई गिणती करूं जित्तौ चेत हौ—पाच...छव.. सात...! मिनख रौ इण विध अरडावणौ पैली वळा ई सुण्यौ, पण आज दिन ताई चितारयां धड़धड़ी छूटै। लागै के उण कैदी रौ अरड़ावणौ हाल नी मिटयौ !

खिलकौ जोवता केई खेला बिचाळै हंसता जावता। आज सोचू कै हसण वाळा वै कस वत्ता जुलमी हा के वौ कैदी ?

पद्रै...सोळै...सतरै। गिणती मे अगै ई चूक नी व्ही। जाणै म्हारै डील उपडता सडिद थमग्या व्है। कैदी नै ई हथौकौ सोरौ सास तौ आयौ व्हैला ! गिणती रा आंक तौ हाल घणा घटै, पण सजा री माठ तौ सतरै वैंता उपरांत ई आयगी। हाकम री मया। कैदी रै पूनां लोई झरण लागौ। उण दिन रौ वौ बेजा विलाप बरसां लग म्हारी राळ पाडो। कैदी रौ उण गत अरडावणौ, कांटाळी वैंना रा सडिदा ! पूनां झरतौ लोही ! हाथ-पग बाधोडा ! भेळमभेळ डूजो घाल उणरौ मूडौ बांध देवता तौ अलबत सावळ हौ। रोटी खावती वेळा म्हनै सूग तौ नी आवती।

इरपिंदर, *आठ-दस बरस सू अेक सवाल म्हनै मासनौ राधै के जद नेता, मत्री,* वकील, जज, डॉक्टर, साहूकार, संपादक, पंडा-पुजारी, मौलवी, प्रोफेसर, पुलिस, लेखक, प्रकासक, आलोचक अर अफसर, इत्याद अै ऊजळ धोळघा अजगर जेळा सू बारै है तौ जेळां रै माय कुण है ?? क्यूं है ?? अै स्रीमत...अै सिरायत जेळा सूं बारै घूपटा उडावै तौ कांनून रै भरकम पोथा रौ म्यानौ काई ? आ जेळा री किसी मारथकता ? औ विरथा खरच-खातौ किण लेखै ? छाळी-नाहरा रै थथोपै अेवाडा कठा लग रुखाळीजैला ? जद जुलमिया रै खातै ई सिंघासण है तौ आनै कुण सजा सुणावै ? डडै जका नै तौ अै डंडै ? आनै कुण डंडै ? आज कालै अस्ट पौर अैडा सवाल म्हनै फफेडै। मथै। कठै ई माथौ तौ नी भंवग्यौ ? आं सवाला रौ पड्‌त्तर किसौ गरू जांणै ? फगत जांण्या काई व्है ? चवडै धूकण री हूंस चाहीजै। वा इण देस रै मांनखा सू अगै ई खूटगी। आजादी रौ छीकौ तूटघा वौ पूरमपूर गुलाम व्हैगौ। मिनखा रै खोळघै ढाणी-ढांणी, गाव-गाव अर नगर-नगर गिडक, चीता, नाहर, जरख, बीजू, म्याळ-मिन्ना, काळिंदर, अजगर, बाज, सिकरा अर काग घमरोळ मचावै। सालोमाल वधै ! अलेखू, अपरम्पार। वधता-वधता मित्तर किरोड रै लगैटगै नफरी ! जिनावरा री ओपमा दिया मिनख भूडौ मानैला के जिनावर ? *थनै काई लागै इरपिंदर ? थारौ पड्‌त्तर थाच्यां म्हनै खासी निरांत* व्हैला। हमेसा री भात मोडौ नी करनै वेगौ पड्‌त्तर दीजै।

आज री बात न्यारी है। उण दिन री बात अगै ई न्यारी ही। मागै इणी नाव सलाम में हाजरी देवतौ। अर आज ई उणी नांव ओळखीजू। पणकरा... घणकरा क्यूं...सै मित-गोठिया विजयदान देथा री ठौड बिज्जी रै नांव बतळावै। इण कोरी-मोरी अेकल बतळायण रै मीसै, काई म्है मदावत अेक ई जीव रह्यौ। आठ-दस बरसा रै बारै तौ छिण-छिण बदळूं। काले हौ सो आज कोनी। आज हूं सो परमै कोनी। जाझरकै हूं, सो परभात कोनीं। सिझ्या रा हूं, सो रात कोनी। रात रा हू जकौ जाझरकै कोनी। तौ ई नांव री बतळायण सदावत अेक ई रीवी। अरजण अर किसन भगवांन रै अनेक नांवां रौ मरम अबै जावतां गावळ पानै पड्यौ !

जैतारण वाळा कैंदी री घांण-मथाण म्हैं स्कूल पूगौ। मटिया नेकर, मटिया कमीज। पीळी टोपी। पिटाट व्है ज्यू थाकोडौ। तखतूळी रै उनमान पतळी टागां। आगळ डोढ़ेक रौ लिलाड़। कोजौ न्यारौ। खूमजी खासा-भला ओपता अर रूपाळा हा। स्कूल रा टाबर म्हारौ गसकौ जोयौ तौ उणी दिन सू चिडावण लागा। मन घणौ ई उगटियौ। पण जोर काई करतौ। निजोरी बात ही।

भरती व्हियां कोई पाच-सातेक दिन कीकर ई सोरा-दोरा ढळ्या। अेक दिन क्लास मे अंगरेजी भणावता माट सा'व म्हनै पाठ वाचण रौ आदेस करयौ। धूजती टांगां नीठ ऊभौ व्हियौ। अंगरेजी रै नाव फगत ताव इज नी चढ़्यौ। बोलू, पण जीभ उथलै ई नी। चेता-परबारौ नीठ दो-अेक आकडिया बाची के सगळी क्लास अेकण सागै ठहाकौ मार हसी। चार-पांचेक अैंडी इज बेजा चूक व्ही। रोयनै हेटै बैठग्यौ ! अंगरेजी सारू उण दिन बच्या-खुच्या कोड माथै ई पाळौ पडग्यौ। फांसी रा तख्ता बिचै ई म्हनै अंगरेजी रौ डर इदकौ लागतौ।

नी किणी दौड मे पारगत हौ अर नी किणी खेल मे। हिन्दी, गणित अर संस्क्रत मे खासौ तरराट हौ। पण अगरेजी में साव इज डबकौ। अर स्कूल मे खेल-कूद री होड़ व्हैती तौ मंगता री गळाई जीतण वाळा साम्ही भाळतौ। अठी अेक ई घर में खूमजी ओछी के लांबी दौड में अेक ई इनांम नी छोडता। जकी दौड़ में सोकड़ मनावता, उण मे अव्वल। इनाम ई इनाम भेळा करनै लावता। ओडी भरया। तेल री बोतल, काच, रेसमी रूमाल, गंजियां, तौल्या। म्हारै पाखती की न कांई। वौ ई स्कूल रौ बस्तौ अर वा ई पीळी टोपी। घणौ ई फीटौ पड़तौ। अनाप लाज आवती। आपौआप सू ई ओक्या होवण लागी। साचाणी अैड़ी लखावतौ के सूरज रौ उजास फगत खूमजी खातर परभ्ळै अर रात रौ काळौ-बोळौ अंधारौ फगत म्हारै खातै गोटीजै। पमवाडा पलटता-पलटता घणी मोड़ी नीदआवती। नीद रै सपनां ई सगळा सू ढगी रैवतौ। दौड़ता-दौडतां तागिया खाय धूळ भेळौ। नी जाग्यां सायत अर नी ऊंध्या निरात। आती आयोड़ौ हिन्दी, संस्क्रत अर गणित सू बाथेडौ करतौ। कदकाठी मे सगळा सू छोटौ अर पतळौ होवण री छूट लडकियां रै जोडै बैठतौ। लड़कियां रै साम्ही हेटी नी लागण री मनाग्याना केई अटकळां विचारतौ। किणी सीगै नामून करण सारू मन घणौ ई ताखड़ा तोडतौ। सेवट खपता-खपतां सस्क्रत अर हिन्दी म्हारी लाज राखी। संस्क्रत रा पिडतजी अेकर डिक्टेसण दियौ तौ अेक ई गलती नी। म्हैं संस्क्रत में सदावंत अव्वल रैवतौ अर हेड माट सा'व री बेटी दोयम। नाव हौ म्रिदुलता देवी। पण म्हे सगळा देवी रै नांव बतळावता। हिन्दी मे केई वळा म्हैं अव्वल रैवतौ अर केई वळा नरसिंघ राज-पुरोहित। म्हारौ सब सू जूनौ बाळ-गोठियौ। आज राजस्थानी साहित्य मे आपरी आफळ ओळखीजै। पण म्हैं हाल ई साहित्य रा कणूका बिचै दोस्ती री कांण वत्तौ राखूं।

संस्क्रत रा रूप म्हनै इण विध कंठां, जाणै लारलै जलम घोख्योडा व्है। च्यारूं लड़कियां म्हारा सू सस्क्रत भणती। मंस्क्रत रा पिडतजी बिरमचारी रै ठागै क्लास

टाळ लड़कियां सू अंगै ई वंतळ नी करता, इण खातर म्हारी तोजी जमगी। पण देवी सूं हेत-इकळास री बानगी इज निरवाळी ही। उणरै पालर उणियारै गुलाबी होठां खिवती मुळक देखता पाण म्हनै पीतळ री कोरणी कोरयोडी गिलास रा सेडावू झाग याद आवता। उणरी मुळक वैंडी इज अबोट अर पवीत ही। वळै किणी न किणी मीगै चावौ होवण खातर ताखडा तोडतौ, पण की तजबीज वैंठी नी। हिन्दी अर सस्क्रत रै नामून स्कूल मे होळै-होळै सुरपुर होवण लागी ही। दिन-दिन ओळखाण पसरण ढूकी। किणी दूजै सीगै ठसियौ नी भिडयौ तौ म्हे कुबदा अर कुलगा करण लागौ। हिन्दी, सस्कत सू ई दो बिमवा डंयाळ कुवदी रै नामून म्हारौ नाव मांय रौ माय चावौ होवण ढूकौ। कदै ई मताजोग हेड माट सा'व रै जचती जणा प्रारथना रै उपरात यू ई प्रस्नावू पूछ लेवता के स्कूल मे मिरै वदमास कुण है ?

इण सवाल रै गमचै ई म्हैं तो नीची धूण करनै बोतौ-योनौ ऊभ जातौ। म्हारै टाळ तमाम विद्यारथी अेकण सुर मे म्हारौ नाव उचारता। कदै ई कोई दूजौ नांव किणी री जीभ माथै नी आवतौ। पांन चवावता हेड माट सा'व मुळकनै हेलौ पाडता—इधर आ चोट्टे...!

म्हैं माथौ निवाय अबोलौ पाखती आय ऊभ जातौ। वै लाड सू कान झाल होळै-होळै दो-चारेक लपडां मेल पाछौ तगड देवता। वै मनाग्याना आही मोच मुळकता व्हैला के पिद्दी-सो डोळ अर हायी मू ई इदको नामून। साचाणी, मार खायां उपरांत ई म्हैं मांय रौ मांय मोदीजतौ, इरपिंदर। वा दिनां स्कूल आखी दुनिया सू कम नी लखावती। भूडौ व्हौ, भलां ई भलौ, नामून तौ म्हारौ उफणतौ इज गियौ। हेड माट सा'व पूछ्ता जित्ती वळा बदमासी रै पेटै म्हारौ अेकल नाव ई मगळां रै कठां गूजतौ। सोरी नीद आवण लागी। पाखा टाळ ई रात रै अधारै *अलघा री उडाण भरण लागौ।*

वां दिना म्हारी क्लास मे अेक अजब ई विसय हो—नेचरस्टडी। मूळचदजी माट सा'व भणावता। ओछौ नै घुगघुगौ डील, भरवौं गोळ मूडौ, कायरी आंख्या, ओछी गावड। भणावती वेळा वारी मीट घणकरी लडकिया रै उणियारै ई अळूझ्योड़ी रैवती। अबूझ टाबर व्हैता थका ई म्हैं वारै अतग मांतो लगाय लियौ हो। *माय रौ माय भुटतौ। नेचरस्टडी मे वै सदावत देवी नै सवगू मिरै नवर देवता।*

अेकर वै उणनै घरै भणण सारू बुलाई! अेकल-छडौ थांडौ मास्टर हौ। भणावण री नीन म्हारा सू अगै ई अछानी नी रीवी। तागौ रास देवी नै उठै जावण सारू घणी ई पाली; पण था भोळी अबूझ कन्यू नी मांनी गो नी मानी। सांम्ही म्हारौ इज माजनो पाड्यो के म्हैं विरथा वेम करूं, भणावण वाळा पूजनीक गरू अेडा मळीच थोडा ई व्है। साचांणी इरपिंदर, वा वैडा इज बाप री बीकरी हो, ज्यांरौ उणियारौ निरख्या तीन भव रा पाप विणसै। आज ई यांग वखांग करण सारू सपू तौ ई पार नी पड़ै। उण दिन रा पवीत विस्रांम नै आज री बगम पाछौ उखेरण खातर ई मन डिगूं-डिग्छू व्है।

सिरै कुबदी होवण रै नामून छोटी-मोटी टोळी रौ थापण व्हैगौ हौ। बेलियां नै अजेज अेकठ कीन्हा अर जुगत भिडाई। बरज्या उपरात ई देवी नी मांनी तौ म्हनै चेतौ करणौ पड्यौ। टूकिया री समचौ मिळता पाण म्है छव-सातेक मित मूळचंदजी माट सा'ब रै घर री पूठ चापळग्या। हाथा मे अगरेजी बांवळिया री भाटिया नेगम थाम्योड़ी ही। आकळ उडीक रै मसोवै मनचीती सुरपुर सुणीजी, 'माट सा'ब...माट सा'ब...म्है तौ...आपरी बेटी...रै उनमांन हूं। नी...माट सा'ब...नी !' जाणै चूकतौ आभौ धरती माथै उलळग्यौ व्है। म्हारौ रूं-रू बीजळी रै साचै ढळग्यौ। दबादब हत्यौ लाघ माय कूदघा। डरप्योड़ी हिरणी रै उनमान देवी धूजती मीट म्हारै साम्ही जोयौ। जाणै अचीता देव परगट व्हिया व्है। उणरी धूजणी नी मिटी जित्तै म्हे अधाधुध गरूजी नै काटाळी भाटिया मचकावण लागा सो ढब्या ई नी। गरूजी चेताचूक व्हियोड़ा दूजौ की जोर नी जतायौ। हाथा रौ पूजतौ वट काढ़ म्है आडौ उघाड़ देवी नै बारै लायौ। उणनै हाल विसवास नी व्हियौ के वा बारै आयगी अर म्हैं उणरै सागै हूं। उण कावळ आळ-जंजाळ सू अजै उणरौ पिंड नी छूटौ। साव अबूझ व्हैता थकां ई आ बात अजेज म्हारी समझ मे आयगी के म्हारौ कह्यौ नी मानण सारू ओळबौ देवण री आ वेळा नी है। दूजी-तीजी गांगरत नी गाय हेड माट सा'ब नै सगळौ रासौ सुणावण री बात दरसाई तौ वा लप मांनगी। गढ-किलौ जीतण रै जोह म्हे सगळा बेली देवी रै साथै नाळ चढधा। वैंता समेत। हेड माट सा'ब पांन चबावता नेठाव सू उड़क-धुडक सै खिलको सुण्यौ। की बोल्या नी कोई चाल्या। पांन री पीक जांणै हळाहळ विस गळै नीठ उतारचौ व्है। जगती आख्यां म्हारी पूठ थाप थैबासी दीवी। आज थनै लिखती वेळा अैडौ लखावै इरपिंदर के हेड माट सा'ब रौ अदीठ हाथ अबार ई म्हारी पूठ थापै।

देवी नाळ तांई म्हानै छोडण आई। उणरै अेक-अेक पगल्यै म्हारौ गुण मानण खातर भाखर हदौ भार लदूम्योड़ौ लखायौ। चार आंख्या में तीन भव रा अलेखू गीत अेकण सागै रणकार मचाई। उण मगळीक वेळा पुळ म्है दुनिया रौ सबसू सुखी जीव हौ।

चुटक्यां रै समचै रात ढळी। हजार-हजार उजास परभळतौ सूरज ऊग्यौ। तखतूळी रै उनमांन म्हारा पिंटाटिया डोळ में उमाव मावतौ नी हौ। रोजीना री गळाई प्रारथना रौ नितनेम व्हियौ। हेड माट सा'ब खुद आपरै हाथां पेटी-बाजौ बजायौ। च्यारू लड़कियां हमेसां री भांत आगै-आगै प्रारथना गाई। उण दिन म्हारौ सुर म्हारै अजांण आपै ई तीखौ व्हैगौ हौ। हेड माट सा'ब री आंख्यां में भैरूं जागै हा।

प्रारथना संपूरण व्हैतां ई हेड माट सा'ब सू अंगै ई धीजौ नी व्हियौ। मूळचदजी नै रेकारै बतळाय, हाथ रौ झालौ देय धड़ूक्या, 'कमीण कुत्ता, अठी बळ !'

म्हनै सपनै ई विसवास नी हौ के हेड माट सा'ब खचाखच भरी सभा, सगळां रै सांम्ही खुदोखुद रै मूडै वौ मळीच अकरम दरसावैला। देवी अेकर ई म्हारै

साम्ही नी भाळयो। नीची धूण करया पग रै अगूठै धूळ कुचरती रीवी। हाल चितारण सारू खपू तो याद नी पड़ै के वा डावै अंगूठै धूळ कुचरती ही के जीमणै। हेड माट सा'ब निसंक चवड़ै-धाडै मूळचद-पुरांण सुणाय म्हनै भालो देय हेलो मारयो अर सगळां रै सांम्ही वळै म्हारी पूठ थापी। पान चबावतां-चबावतां भरी सभा में म्हारो गुण मांन कह्यो, 'औ बदमास 'खोखो' म्हारी बेटी री लाज बचाई।'

अत थाकोडो होवण सू सगळा विद्यारथी म्हनै 'खोखा' रै नांव बतळावता। पण इरपिंदर, उण वेळा बीस गामा व्हैता तो ई म्हैं नी धारतो। अेक-अेक नै इण विध पिछाटतो जिणरो नाव। साचांणी अैडो ई की जोह-करार म्हारै डील भळा-भळ सळावा भरण लागो के आज ऊमर री ढळती ढाळ ई जिणरी बांनगी रो स्वाद नी भूल्यो।

वा दिनां जोधपुर रजवाडै सै विभागां रा सिरै मुकउदम अगरेज ई व्हैता। सिक्सा विभाग रो निदेसक अे. पी. कॉक्स नाव रो अंगरेज हो। घण हेताळू, घण वाल्हो। म्हारा हेड माट सा'ब रो अणूतो मांन राखतो। कॉक्स सा'ब केई वळा आपरी चौमासणी स्कूल वारी पलटी करण सारू आदेस करयो, पण बाडमेर री जनता वानै अेकर ई नी जावण दिया। आखो बजार बन्द। सै काम-काज ठप्प। कॉक्स सा'ब जनता री मरजाद अेकर ई नी खिडण दीवी। तार माथै तार खड-खीड्या वो तार सू पलटी रो आदेस रद्द कर देवतो। आजादी रै उपरांत अैडा की टाळका अमली 'सा'ब' हिन्दुस्तान में अपां खटाय लेता तो घणो सावळहो। खरा अर निरमळ हेज रो पूतळो हो' मरयो जित्तै न्यूजीलेण्ड सूं उणरा कागद जोधपुर आवता ! बता इरपिंदर वो सौ-टच निकेवळो सोनो हो के नी ? हेड माट सा'ब मळीच मूळचदजी नै अजेज मोकूब करनै कॉक्स सा'ब रै नांव दस्ती कागद भेज्यो तो वो बिना जाच-पड़ताल तुरत मांनग्यो। थारो कह्यो लोपणो तो साच अर न्याव रो कह्यो लोपणो हो। अैडा हा गरब-गुमेज जोग म्हारा हेड माट सा'ब। देवी रा पूजनीक बाबल।

उण दिन वाळी प्रारथना जांणै म्हारै खातर ई व्ही। म्हनै अैडो जबर मोद व्हियो इरपिंदर के काई बतावू ! सिप्पो जमण मे पाछ नी रीवी। तठा उपरांत हेड माट सा'ब तो सिरै बदमास रो नाव जाणण सारू कदै ई सवास नी बूझ्यो, पण म्हारै ऊडै अंतस ओटपोड़ो कोड उण सवाल सारू फड़फड़ावतो हो, इण मे की मीन-मेख नी। आज थारै सांम्ही पोज राख्यां अबोट साच री मरजाद पटैला के नी ? जे उण दिन हेड माट सा'ब आपरै मूडै मूळचदजी री बात चवडै नीं करता तो लिखनी वेळा म्हनै ई दो वळा सोचणो पड़तो। पण वो दुपणी रो जायो बाप होय उण दिन ई जद बेटी रै भूडा-भला रो अगं ई विचार नी करनै निरभै-निसक सगळा रै सांम्ही ढाकाढूमो नी राख्यो तो आज किण नै किसो जोखम ! जोखम हो तो उण दिन हो। पण साच री टेक राखणिया कोई ओवड़गा जलमै तो है ! गुणां के धरती बीज नीं धोरै; पण इरपिंदर साच मानै तो धरनी ई धोरां रै परम

चोरटी होवण लागी। म्हनै तौ लखावै के अपारी धरती साच री बीज मुळगौ ई खूट जावैला। बाळू-प्रीत रै हेत-इकळास म्है मसोवा रै उडण-खटोळै राजकवर री गळाई चकारा देवण लागौ। 'खोखा' री वतळावण म्हारै हीयै हाल ई चटोड़ा पाडती ही। अैडौ कांई खगडौ करूं के लोग-बाग म्हारौ नांव आदरै। नांव लेवतां मूडौ भरीजै।

सनीचर री अेकठ सभा में घोख्योड़ा सवैया, मनहर अर कवित्त तौ सुणावतौ ई हौ। ताळियां रा तटकारा उडण लागा हा। सेवट आळोच-पळोच री राधण अेक अटकळ सूझी के दूजा री कविता नी सुणाय खुद कविता बणावू तौ वत्तौ धाक जमैला। हीमत री चाळचोळ नरसिंघ राजपुरोहित सू सलासूत विचारी। नरसिंघ तौ जाणै इण सुझाव री वाट ई न्हाळतौ व्है। झट मानग्यौ। साधुवा रै भेख बैरागियै नाळै तीन चोरां वाळी वात माथै दोनूं भेळा बैठ कविता ठावण लागा। अेक-अेक आंकड़ी संपूरण व्हियां जांणै इंदरलोक रौ राज हाथै आवतौ। स्कूल मे वगत मिळतौ तौ स्कूल मे अर बोरडिंग मे वगत मिळतौ तौ बोरडिंग मे नरसिंघ रै पासती उमायौ-उमायौ उडतौ। सिकंदर नै ई आपरी जीत रै डका रौ अैडौ आणंद तौ कांई आयौ व्हैला, जित्तौ म्हांनै वा पैलडी कविता सपूरण करयां व्हियौ। आखी स्कूल धूंसौ वाजग्यौ के म्हैं अर नरसिंघ कविता लिखी कविता। जांणै धरती माथै कोई नवौ चांद उतारयौ व्हां। वा दिना कविता रौ की अैडौ इज दबदबौ हौ। केई गरूजी तकात पूछताछ कीवी तौ म्हां गुमेज सूं हांमळ भरी। पछै तौ म्हैं आट-आंट मे सस्कत रा चार-पाचेक स्लोक ई बणाया। पिडतजी आखी स्कूल रै सांम्ही म्हारौ जोह वंधायौ। इत्ता जोर सू म्हारा मोर थापलिया के झरणाट मचग्यौ। पीड़ री ठौड आख्या हरख रा मोती डबडबाया। उण दिन री भविस्य-वाणी आज ज्यू याद है के म्है पिडतजी रौ सपूत वेटौ वगत आया आखै देस नांव करूंला। गाडी हेटै बेवता गिडक री गळाई म्हारै अंतस ई गुमान रौ भरम थावा मारण लागौ के स्कूल रौ गाडौ म्हारै पांण ई चालै। स्कूल रै *हत्था मे ई आखी दुनिया समायोडी* ही।

नित कविता करणौ तौ हाथ री वात नी ही, पण नित कुवदां करणौ तौ हाथ री वात ही। नामून रौ चास-वास पूरमपूर पतवाण्योडौ हौ। घोख्योड़ी कवितावा रै जोड़ै *म्हारी कवितावा माड़ी लागती। पण कुलगां मे म्हारी होड़ करणियौ कोई* नी हौ। नामून रौ कोड उणो सींगं तर-तर वत्तौ पोखीजण लागौ। लायण देवी समझावण री आफळ करती; पण समझावणौ की भरै पडतौ नी। समझ तौ आपरी व्है जकौ इज काम आवै, इरपिंदर। साजी री सीख फळसा ताईं। वा केई वळा रिसाणौ करती, पण कुवदा रौ सवाद म्हारा सू नी छूटौ। कविता री हटोटी अजै अलंघ आंतरै ही। उण मे वाजिदौ होवण सारू बरसां—बरसा लग अतूट धीजौ चाहीजतौ। कुलगां रै सतोख रौ परचौ तौ हाथौहाथ मिळतौ।

म्हारा परिवार में कुबेरजी बाभा नै कवितावां लिखण री खासी-भली लकब ही। भणाई अर खेलकूद री चेंट ई कम नी ही। बिलाड़ा सूं सातवी पास करनै

धकै भणण सारू वै जोवनेर भरती व्हिया। म्हारा मू मनचीती कवितावा नी ठाईजी तो म्हे वारी कवितावा याद करनै सुणावण लागो। सुणण वाळा री आंख्या ऊची लिलाड़ चढ़ जाती। पण मन मू छांनो तो चोरी नी ही, इर्सपदर। म्हैं तो म्हारो पोत जांणतो। वैडी कवितावा रचणी म्हारै वस री वात नी ही। अेकर तो सनीचर री सभा मे अैडो धूसो वाज्यो के काई बतावू ! पूरी कविता तो अबार पांतरै पडगी; पण उणरी छूटती झड हाल याद है :

अैडी अंगरेजी छोड, धारो अंग रेजी को

लावो कविता ही, सात-आठेक मनहर-छदां री। अगरेजी फैमन अर अंगरेजी भासा री भूड सू सराबोर। म्हारो मन भावतो वदळो। अैडी मालजादी अंगरेजी छोड मगळा देसवासी अंग रेजी धारो। रेजी कैवै हाथा काती-वुणी मोटी खादीनै। महातमा गाधी री लाडल खादी। पछै कांई पाछ ! ताळियां माथै ताळिया। तीजी वळा सुण्यां लोगा रो जीव नीठ धाप्यो। हेड माटसा'ब हदभात हरख रै उमाव म्हनै छैबासी दीवी। देवी रै ई आणद रो छेह नी हो। अवस उण रात तारां रै भेळम भेळ झवूक्यो व्हेला उणरो अंतस। म्हैं ई थोडी ताळ वास्तै भरमीजग्यो के इण अथाग अजस रो दावेदार म्हैं इज हू। पण रात रै अधारै म्हारी आख्यां सुभट चानणो व्हैगो के औ तो खराखरी चोरी रो जस है। कीकर अगेजू ? किणी अेक जणा नै माचो भेद बताया टाळ चित्त उपड़ जावैला। आखी रात नीद नी आई। पण तडकै सूरज रै हब्वाहोळ उजास सै की पाछो अधारै ओटीजग्यो। वगत सू घडी डोढ-घड़ी पैला स्कूल गियो, पण होठा जांणै खाम लागगी व्है। हेड माट सा'ब रो घर स्कूल रै साव अडोअड हो। मांय रो माय मन तो घणो ई फडफडीज्यो पण जिणनै भेद बतावणो हो सो नी बताईज्यो। आज पैली वळा चवड़ै करूं। मना-ग्याना गोटीज्योडो उण दिन सवाई कुबदां करी। पण सागै रै मागै औ डिड़ मंवळप लियो कै कुबेरजी वाभा जैड़ी कवितावा करनै ई माठ झेलूला। नीतर मिनख जमारै जलम लेय धूल खाधी। अैड़ा जीवण मे धिरकार है, इण बिचै तो मौत घणी सातरी।

पैला ई कह्यो के राज रै अैलकार रो अेक पग दफ्तर तो दूजो पग गळियारै। सुमेरजी वाभा री पलटी जोधपुर व्हैगी। अैड़ो लखायो के बाडमेर छूटपा तो म्हारा प्राण ई छूट जावैला। इण गन री अेकमेक टोळी सू कीकर टळीजै ! विजोग रै धामलै वाळगोठिया री प्रीत रो कूतो व्हियो। वै कोई मित थोडा ई हा : तारा रो झूमको हो झूमको—नरसिंघ, आसूलाल, रांम जीवण, रामेस्वर, गिरधारी सिंघ, हमीर सिंघ, मेघ सिंघ इत्याद...इत्याद ! नांवां रै आगै इत्याद-इत्याद री आगळ जड़यां असरै जांणू के थारी मुळक नी ढवै। भवै ई नीं ढवै। पण वौ नाव कलम री काळम उघाड़यां अचोट प्रीत री मरजाद पटैला। पालर पांणी शाडो रळैला। बीजळी रै पवीन मळावा काजळ री कूंची पुतैला। अैडो लखायो जांणै फूमां भवनी फूदी री पांख्यां कतरीजगी व्है। फूदी मे पांखां टाळ बाकी बचै ई

कांई ??

नरसिंघ वाळी बोरडिंग भरती होय उठै ई भणण सारू सुमेरजी बाभा रै साम्ही डरतां-डरता मंसा दरसाई, पण पार नी पडी। सजोग तौ आपरी रामत रमै ज्यूं ई रमै। जित्तो 'अंजळ' हो, उत्तो सपनो जोय लियो। सपना रौ कितोक गाढ़ ! तूटै रौ तूटै। आख खुलण रै समचै ई सै सभागियो सपनो खिडग्यो। अेकण सागै। मसोवां रै वादळ-मैल रौ खळिदौ व्हैता आ जेज लागी, इरपिंदर !

सगळा बेली बाथ घाल-घाल घणा ई रूना, पण जावण वाळा सारू ढबणौ तौ हाथ री बात नी ही। क्यू तौ बाळण जोगड़ी रेल इत्ती अळगी भाय लाय आवेस पिछाटचो अर क्यूं भ्करकीज्योडा पिंड नै पाछौ ले जावै ? प्रीत रा घरकूल्या चीथ्या इणरै कांई हाथ आयो ? पण जिणरै निसास काळो धूवो नीसरै, उण सू की आस राखणी इज बिरथा ही। घणकरा बेल्यां रा तौ नाव ई आज चितारचा याद नी पड़ै। पण उण दिन विजोग री तळतळावण रौ छेह नी हो। वैंडा घण हेताळू मित लारै छूटग्या अर म्है अेकलो जीवता मडा री भात अधभदरै चेत आज ई गाडी हकण रै समचै वहीर व्हैगो ! उण वेळा नरसिंघ जाळी रै डोरा गूथ्योडी अेक थैली अर पैन म्हनै संभळायो। कोड-मोद सू। वा थैली उणरै हाथा गूथ्योडी ही। च्यार आख्यां सूं अेकण साचै ढळचा मोती भ्करा-भ्करा ढुळकण लागा। पण लांबो-लड़ाक अजगर फूफाड़ा भरतो आपरी ओजरी तालकै करचा उपरात धकै रपटतो ई गियो। रपटतो ई गियो। काळजा नै मसळतो। चूथतो। इत्याद-इत्याद बातां रै उठै ई मूचो लागग्यो। वसोला री तीखी-तच्च धार वढ़्या काची केळ रा टुकड़ा पाछा कद जुड़ै ? पलटी री सुणावणी सुण्या किणी अेक जणा सू मिळण खातर म्हारी तौ हीमत इज नी व्ही। वौ तौ आपोआप सू आपरौ इज विजोग हो, इरपिंदर ! किण री जांमण अजमो खायो सो भ्केलै ? कीकर भ्केलै ? जीवण अर मौत रौ विजोग तौ समभ्क मे आवै, पण मौत सू मौत रौ विजोग तौ वेमाता ई नी तौ जाणै अर नी समभ्कै। चार-पाच दिन ताई किण विध छिपला खाया सो आज विसवास ई नी व्है। वैंड़ा सूरापणा बिचै कायरपणो लाख-लाख सिरै। आज दिन ताई पाछौ साम्हेळो नी व्हियो ! उण दिन रौ 'खोखो' अर आज रौ 'बिज्जी' अेक इज है कांई ? म्हनै तौ अेक नी लागै। अर नी दो मानण सारू मन कह्यो करै !

कैंडी हेजळी व्है संजोग री रामत !!
कैंडी निरमम व्है संजोग री रांमत !!

जोधाण नगर बाडमेर सू घणो लाठो नै निरवाळो। दरबार हाईस्कूल बाडमेर री मिडल स्कूल सू घणी ठसका वाळी। हेडमास्टर सिंघल सा'ब रै नांव रा भाटा तिरता। नगर री टाळवी स्कूल ही। वैंडा ई वाजिंदा गरू अर वैंडा ई ओपता चेला। घेड़ रौ डेडरियो जाणै लांठै सरवर फदाक मारी। केई दिनां लग तौ हाबगाब रह्यो। जाणै खुदोखुद रै ठाणै खुद ई गमग्यो व्हूं। किणी भांत रौ की संपट नी

जुड़ग्यो । जगली रोफ़ वस्ती मे आयां चेताचूक व्है, सागै न वागै वाही गित व्ही म्हारी। पण होळै-होळै कविता रै कांमण थोड़ो-घणो थावस बंधण ढूको । खिलाड़ी अर दौड़ण वाळां री तीख घणी वत्ती ही । खूमजी तौ आतां ईं आपरी धाक जमायली । अैड़ा ई उम्दा फुटबॉल रमता । सौ गज री दौड मे दात भीच दौड़ता तौ पैंलै नंबर, नीतर दूजै नंबर । पण म्हैं तौ खेल-कूद में घापनैं पोचौ हो । नामून री भूख हड़बचा मारै ही । की तौ कविता बाजी राखी अर की डिबेट री लकब । पण बदमासी, कुबद अर कुलगां रौ पायो हाल ई भारी हो । छठो पास करनैं सातवी मे आयो जित्तै-जित्तै खासौ खांतीलो बणग्यो । आज तौ भासण के इटरव्यू रै नाव काळजो फड़कां चढ़ै पण वां दिना मच रै परस सांम्ही ऊभतां ई अणभै री उपजती । पैल फटकारैं ई ताळियां रै धूसैं स्कूल रौ सभापति चुणीजग्यौ । छंदां री जोडणी ई बस में आवण लागी ही । कवितावां रौ पोत ई ऊमर अर समझ परवांण फोरो नी हो। *आज भला ईं वै कवितावां घापनैं पोची लागै, पण वां दिना किणी नैं नी धारतौ।* पण बाडमेर री मथवाय हाल मिटी नी ही । जूनी ओळूं घटोड़ा पाड़ै ही । नामून रैं हिडकियैं लाळां झरती ही । भचकैं वाजिन्दौ होवण री लाळसा पोखण सारू परचा चोरतौ, नकलां करतौ । क्लास रैं मॉनीटर रौ मास्टरां रैं सगंटगै ठरको हो। जोरावर टोळी रैं परताप मॉनीटर बण्यां ईं नामून री अखूट तिसणा नी मिटी । अलबत मॉनीटरी रैं ठांगै परचा चोरण में अर नकलां करण मे मनचीती मदत मिळी। नी नी व्है जैंडा करतब अर अेक-अेक सूं डयाळ वातां लिखण सारू म्हैं तौ अंगै ई संको नी खावूं, पण दूजां री मरजाद खातर माडै चोज राखणो पड़ै । किणी उपन्यास रैं ओळावैं मन री वायड काढूंला। धारा सूं ढाकाडूमो रासू तौ अैडो लखावैं इरपिंदर के म्हैं, म्हारा सू इज चोज राखूं । नी नी, आ आंकडी की अवळी लिखीजगी। खुदोखुद सू केई वळा चोज राख्यो । राखणो पड़ै । पण रांम जांणै क्यू थारै साम्ही किणी गत रौ की चोज नी राखीजै । काच रैं निरमळ पांणी जिणरो जैड़ो डोळ व्है, उणी ढाळै प्रतम मतै प्रगटै । नी प्रगटै तौ भीत रैं सोगैं नी प्रगटै । परतख मूंढै-मूंड केई बाना बताइज हूं, जको खुदोखुद सू लुकाई ही । पण अबार काळै आखरां लिखण खातर होडो सगायां ढाळ नी सरै । लाख फड़फड़ी खावू तौ ई रूसो री खोड़ नी छुडाईजै । ओळूं-दोळूं जैंडी आध्यां व्है, वारो थोड़ो-घणो तौ काण राखणी पड़ै । धरती रैं आपांण मुजब ई उणरी कूख फळै; वनापाती पाकै । पाठका री पोळघ परवांण ई लेखक रा आखर पूंटीजै । पांणी रैं तुठार चावळ अर गुळवाड री मासा बद फळै ! *डोकरिया टॉलस्टॉय रौ अेक* गुणको वगत सर नामी याद आयो के लुगायां कूड बोलै, पण आपरा कूड माथै पतियारो नी करै। रूसो कूड बोल्यो अर आपरा कूड माथै पतियारो करयो। डोकरिया री तौ बाना इज निरवाळी। अेक 'ओटाळ' मे घाटो नी हो। वर्णाण मारू सबद पूरा नी पड़ै तौ हेजळी गाळ काढ़णा सरै।

नामून रैं बळा रा सेवट परजाड़ा उपड़णा हा जको ई उपड़ग्या । नवमी क्लास फटाफटा परचा री चोरी पकड़ै व्हैगी । मिषन मा'ब री अड़ग नैं घणो दोरो उक-

राम लाधो। केई दिनां सू वट खावता हा। अेक कावळ कुलत ही वां मे—छोराबाजी री। अेकाध बेलिया नै बचावण रै रीभट वांरा सू खसणो पड्यो। समदर मे रैय मगरमच्छ सूं बैर रो बदळो तो मोडो-वेगो मिळणो इज हो। सिरै-आम दूजी वेंत सरड़ाकवण रै ताखै वेंत खोस न्हाटो जको पाछो लारै मुडनै ई नी भाळ्यो।

दरबार स्कूल री कुबदां रो खरड़ो घणो ई लाठो है, पण ओछी वाढू। भूमिका रा पांना साकड़ै आवता दीसै। हाल तो मण मे पाव ई नी पीसीज्यो। सिंघल सा'ब रै नीठ भरै पडी ही, पछै क्यू पाछ राखता। अंडो बेजा सरटीफिकेट दियो के राजस्थान री किणी स्कूल साम्ही मूडो ई नी कर सकतो। चरित्र रै खानै पूजतो काळस पोतती वेळा वांनै आपरै चरित्र रो अगं ई चेतो नी व्हियो व्हैला। आपो-आप सू अंतरै उछरघां टाळ अंडो ठागो नी राखीजै। आपरै खातर आपनै आंधो-बोळो व्हियां ई सरै ! म्हारै चात्रणपणा लेखै ओ अेक प्रमाण ई उवरतो पड्यो के घरै सगळी गीता रो भणकारो ई नी पडण दियो। नी बाड़मेर अर नी दरबार स्कूल।

पिलांणी स्कूल रा हदभात बखांण करघां सुमेरजी बाभा उठै भणण री दवायती दे दी। सिरै सरटीफिकेट रै छोगै भरती व्हैगो। कीकर ई कूड़ा सरटीफिकेट री तोजी विठायली। पण दूजै ई पखवाड़ै उठै ई रेस्टीगेट व्हैणो पड्यो। नकला खातर तो वळै ई सोरी-दोरी माफी मिळ जाती, पण हॉस्टल रा प्रोक्टर रै ऊजळै पेंट, बिना मिरचां री विस्वादी दाळ उछाळघां माफी मिळण रो सपनै ई सरतन नी हो। बेजां बीती। घर ई छूट्यो, घाट ई छूट्यो। सेवट माथो पचावतां-पचावतां जोबनेर जावण रो मतो करचो। कुबेरजी बाभा रै जस म्हारै चेपचाप व्है जावैला।

वा दिना जोबनेर टेसण नी हो। किणी अेक पाखती रै टेसण उतर ऊंट भाड़ै करघो। लागतै चौमासा रो जबर आडग हो। गाभा-पोथ्या रो अेक इज काळो बगस हो। ऊंट चढघो जूनी ओळू रै वतूळियै गरणाटी खावतो हो। अेक आंख मे बाड़मेर रा भावळा तिरता हा अर दूजोडी आंख मे दरबार स्कूल रा। छवकाळी कावड़ रो कठै ई की सेड़ो नी हो। पण अणछक मारग रै विचाळै जातरा रो सेड़ो आयग्यो। चारूं दिस भुरजाळा वादळ लूय-लूय पडता दीस्या। आवेस जोर बीजळी किड़की। हरडाट करती रो मेह ओसरियो। पळ-पेंपरळा। पळ-पेंपरळा। देखतादेखता मारग में ऊंट रै गोडा तणो पांणी बहण लागो। कठै ई ओलै ढवण री ठौड़ नी ही, तो ई मारग छोड अेक धड़ै ऊंट ढावणो पड्यो। आखी वरसात माथै ओसरी। पूरा बरस रो आगूच सपाडो व्हैगो। भीज्या कावळ भारी व्है, उणी गत भीज्यां ओळू ई तर-त्तर भारी व्हैती गी। बोभ सभाळणो अणूंतो आहंजो काम हो, तो ई ओळू छिटकावण रो अगं ई मन नी व्हियो। ओळू रो दुख ई निरवाळो व्है, सुख ई निरवाळो व्है।

सेवट बादळ फाट्या ई विरखा ठमी। पण धरती रो पाणी हाल खूटो नी हो। घडी डोढ़-घड़ी उपरांत म्हारै पोदाया ओठी धकै चालण सारू नीठ मान्यो। ओळूं खातर वेंडो उकरास मळै कद लाधतो ? च्यारूं दिस सून्याड़। धायोड़ी धरती।

घुप्पोड़ो आभो। मछरां करती खेजडिया।

झेकता ऊट रैं अरडाट ओळू रो तांतो तूटो। हॉस्टल रैं बारणै केई विद्यारथी कोडाया भेळा व्हैगा हा। बूझ्या नाव-धाम बतायो। कुबेरजी बाभा रो गनो बता-वता ई सै अछन-अछन करता म्हारै ओळू-दोळू ऊभग्या। कोई वगस उचायो। कोई भाड़ो चुकायो। कोई गाभा पलटण री ताकीद कीवी। अैडो हेज अर कोड नी तो सुण्यो अर नी साभळ्यो। कुबेरजी बाभा नै वा स्कूल छोडया बरस तीन व्हैगा तो ई वारी कीरत हाल अलूट ही। रसोडा री लांगरां अणूतै उमाव भर-भरता वटिया पुरस्या। दाळ छमकी।

बातां-बाता मे रात विलायगी। तडकै दसवी क्लास में भरती होवण सारू चूकतो वगस फिरोळियो, पण मरटीफिकेट कठै ई नी लाधो। अणछक चेता रैं सळावै माथा मे जाणै सुरग छूटी। तणी टिरता कुडता रो खूजियो संभाळियो। लुगदी व्हियोडा सरटीफिकेट रा अेकोअेक आखर धुपग्या हा। रू-रूं ओळूवा री घिरोळ माची। हेड माट सा'व धुराधुर धावस बंधायो के कागद रैं समचै दूजो मरटीफिकेट आय वाजैला, इण मे चिंता री किसी बात ! पण म्हारी चिंता री जाच तो म्हनै ही। म्है तो पकावट जांणतो के सरटीफिकेट जाळी है। सिघल सा'व रा दसखत जाळी है। पण आता अळूझ्योडी बात किण आगै दरसावतो ? दूजै दिन ई चोज राख सागै मारग सिधावणो पडयो। कुबेरजी वाभा रैं जस री मरजाद खिडावण खातर मन नी मान्यो सो नी मान्यो।

तीन सो पैंसठ दिना रो वरस बचावण रैं लोभ पंजाब मैट्रिक करण टाळ दूजो की उपाव नी हो। रामत रैं अदीठ निवतै सोजती गेट रैं बारै पीलू बाबूजी री कोचिंग इन्स्टीट्यूट में भरती होवण रो जोग भला कीकर टळतो ? उण मगळीक वेळा-पुळ ई म्हारी जूण सजोग री नवी लीला रचीजी। लागै के मरघा पूठै ई आ लीला सपूरण नी व्हैणी। किणी दूजी इन्स्टीट्यूट रैं आगरै लेखक री ठौड राम जांणै म्हैं काई व्हैतो इरपिंदर—धाडैत, हिरयारो के खातीलो चोर। पीलू बाबूजी बंगाली हा। वारी स्कूल लड़कां री कलास न्यारी ही। पाच-सातेक लड़कियां री क्लास न्यारी ही। मीरा उणी क्लास मे ईं तो भणती ! सिरैपोत भाकी रैं समचै ई काया रो सरूप बदळनो लखायो।

पीलू बाबूजी रो बेटो प्रफुल संकर सेन म्हारै भेळो भणतो। म्हे उणनै संकर रैं नाव बतळावता। बाता लिखण री उणनै सांतरी हटोटी ही। 'माया' धुराधुर में उणरी तीन-चार कथावा छपी। धकै मांनीतो लेखक बणण सारू उण सूं नांमी गिरी-गणेस काई व्हैतो ! लिखण रैं गुण आपै ई उणरै मायै हेत-इकळाम बधण लागो। उणरी सगत बगाली परिवारां आव-जाव वध्यो। रवीन्द्रनाथ टाकुर अर सरतचद्र चटरजी रो नाव तो सुण्योड़ो हो, पण पैंली वळा वारी पोथ्यां मीरा रैं घरै दीठी। उण वेळा बगाली मे बाचणो नो घाट सारू भागळिया भरणो ही। मीरा रैं बगान या दोनू भींव-लेखका री पोथ्या हिन्दी में बाचण रो समाग पळ्यो। जांणै कोई गडयोड़ो खजानो हाथै लागो व्है। अमोलक अर अखूट। देवदास री पारो

फगत देवदास नैं ई मार नेहचौ नो करघौ; वा केई जणा नैं मारघा। वां अलेखू मरण वालां पेटैं म्हे हाल जीवतौ बच्योडौ हूं।

सरत-बाबू री पोथ्यां रैं परताप प्रीत रौ अेक नवौ ई मरम उघडचौ। प्रीत री पोथ्या रैं पसाव होवण वाळी प्रीत, पैंला वाळी अबूझ प्रीत सू अंगै ई न्यारी ही। जिणनैं दरसावण खातर खपू तौ सात समद री मसि अर धरती रौ कागद ई कम पड़ैला। कित्ता ई लावा वास रैं पाण बादळ छेक पांणी बरसाईजै तौ वा प्रीत म्हारी कलम दरसाईजै। पछै बिरथा आफळघां सार ई काई ! पण थनैं तौ केई वळा मांडनैं विगत वार अर केई वळा उडक-घुडक बतावण मे कद चोज राख्यौ ! हाल ई हद भांत इचरज व्है के सरत-बाबू नैं इत्ता बरस आगूच म्हारी प्रीत रौ बेरौ पडचौ तौ पड्यौ ई कीकर ? वै त्रिलोक-दरसी तौ नी हा ? इणी खातर अेकर बाच्यां वांरी पोथी सपूरण नी व्हैती। उणी मांयत पाछी बाचणी पडती। ठेठ सू। आखर आखर। जांणै वां आखरां म्हारैं इज अंतम रौ अगम भेद लुक्योड़ौ व्है ! अेक ई पोथी दिन में तीन-तीन के चार-चार वळा बांचतौ। रोवण रैं मगळीक टाणै आपै ई आंसू रळकण लागता। आखरां चापळयोडौ मरम धूधळौ पड़ जातौ। घडी-घडी आंख्यां पूछणी पड़ती। पूछ्यां पार नी पड़तौ तौ धोवणी पड़ती। सरत-बाबू री पोथी वांचती वेळा पांणी रौ रांम-झारी के लोटौ पाखती राखणौ पड़तौ। पूछता-पूछतां कुड़ता री चाळ आली व्है जाती। मोत्यां सूं ई मूघा हा वै आंसू। आज ई सरत-बाबू री पोथी वांच्यां म्हारी तौ वा इज गत व्है। आंख्यां हेवा व्हैगी दीसैं। लिखणौ-लिखणौ तौ सरत-बाबू रौ। गरुदेव रौ। नीतर बिरथा कलम घिसणी। 'आंख री किरकिर' खटकण रौ ठौड कित्ती सुहांणी लागती ! वांरी पोथ्यां रौ संजोग नी जुड़तौ तौ कदाम संकर री संगत वाळां लिखण सारू आफळ ई करतौ; पण पछै तौ हीमत इज नी व्ही। साम्ही कविता लिखण री बांण ई कभळावण ढूकी। वड़ला रौ घेर-घुमेर पसराव निरख्यां बापडौ मोथ्यौ कित्ती ई खमखरी खावै तौ काई गरज सरैं !

सरतबाबू रा वेद वांचतां-बांचतां, रोवतां-रोवतां कीकर ई पंजाब मैंट्रिक पास कीवी। उण पैला हिन्दी रौ कोई लेखक भूल सूं ई नी छूटचौ--देवकीनंदन खत्री, प्रेमचन्द, राहुल, प्रसाद, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, इलाचंद्र, महादेवी, बच्चन, पंत, निराला इत्याद-इत्याद। पोथ्यां बांचण टाळ कोई दूजौ कांम सिरैं नी लखावतौ। पण सरत-बाबू अर रवी-बाबू रौ स्वाद चाख्यां हिन्दी री पोथ्यां विस्वादी लागती। खीर पानैं नी पड़ी जित्तै छाछ सू धाकौ धकावणौ पडघौ।

कीकर ई नकल रैं परताप जमवंत कॉलिज में भरती व्हिया ई घणौ दोरौ विसवास व्हियौ के म्हैं साचाणी भरती व्हैगौ। कॉलेज मे भणण री तौ रगत ई न्यारी। संगत ई न्यारी। उछाव ई न्यारौ। इंदर-लोक री सैल करण रैं उनमांन। क्लास मे अेक, दो, तीन, चार, पांच नी...रेट तेरह लड़कियां भणती ही। अेक-अेक सू आगळी। लडकियां रौ तौ नांव ई वाल्हौ व्है। [illegible] गोरी लखावै। बाटकै राळघोडौ रातौ गाभौ ई सुहांणौ [illegible] लागती, [illegible] लुळती-

बोलती, हसती-मुळकती अपछरावां ही। किणी अदीठलोक सूं भणण खातर आवती अर मिझ्या पैली भण-भणाय पाछी अलोप व्है जाती। *क्लास में हाजरी लेवती वेळा* सगळां रा नांव बोलीजता अर वै साचांणी हांमळ भरती। जागतै नैणां रौ जंजाळ अैडौ इज व्है ! तद सोरै-सास कीकर विसवास व्हैतौ ! पण नित-हमेस मागै वौ इज आळ-जजाळ देख्यां विसवास करणौ पड़चौ के वौ सपनौ नी साच है। म्हैं खुद कॉलिज मे भणू अर म्हारै सागै अेक दो नी पूरी तेरह अपछरावां रौ झूलरौ भणै !! सै 'पारौ' री अवतार लखावती, पण देवदास कठै ई निगै नी आवतौ। जे भूलचूक सू निगै आवतौ तो मांनण सारू मन त्यार नी व्हैतौ। देवदास है तौ साजौ-सूरौ क्यू ? देवदास रौ महातम तौ मरण में है। दुख भोगण में है। देवदास तौ मरयां उपरांत जीवै !

भणाई-भणाई तौ कॉलिज री ! आवी ऊमर ई भण्यां जावौ ! नी जीव धापै अर नी तिरपणा छीजै। फगत इण बात री जूमळ आवती के इत्ती मोडी क्लासां चालू क्यू व्है ? इत्ती वैगी छुट्टी क्यू व्है ? छुट्टी वाळै दिन तौ जांणै करड़ी सजा भुगतणी पडती। पोथ्यां रा आखर धकेल-धकेल आंख्यां कायी व्है जाती ! कित्तौ ...कित्तौ मोडो दिन आयमतौ अर कित्ती मोड़ी रात ढळती ! साचाणी इरसिंदर, वां दिनां अैडौ लखावतौ के कॉलिज में नी भणै जका निरभागी जीवै ई क्यू ?अणूती दया आवती वापडां मार्थे ! आज म्हनै ई कॉलिज छोड्यां नै बरस बत्तीस के तैतीस बीतग्या ! तौ ई जीवतौ हूं। ठौरमठोर। म्हारै माथै ई किणी नै दया आवती व्हैला ! जांण कर-करनै घणौ ई फेल व्हियौ, पण सेवट दरजै-लाचार कॉलिज छोडणी ई पडी। सगळा सू पैली कॉलिज आवतौ अर सगळां सू पछै टळकतौ। अेकलौ ई बावळा री गळाई अठी-उठी चकारा देवतौ। छुट्टी रै दिन ई आंम सडक छोड गोतौ खाय कॉलिज मांयकर नीसरतौ। पग मतै ई आपरै मन-भावतै गेलै मुड़ जाता। कॉलिज रै बिछोव, छुट्टी रै काळै-बोळै दिवस, अघभदरै सेत कवितावां ई कवितावां लिखतौ। अेकर भिमरधोड़ौ आठ-पौर में छोटी-मोटी त्रेपन कवितावां लिखी। उण दिन तौ जांणै भाव-भरतारै ई गैळीज्योड़ौ व्हू। बांचण रै नांव फगत भरत-साहित्य बांचतौ। लिखण रै नांव फगत कवितावां लिखतौ। रात रा इणी नीयत सू सूवतौ के सूयां वैगी रात *ढळैला अर वैगौ कॉलिज रै चांनण-चौक पूगूंला।* वां दिनां तौ कॉलिज री धूळ, कॉलिज रा भाटा अर कॉलिज रा रूंख ई आछा लागता। पवीत करण वाळी आंख्यां रै परस वै पूरमपूर पवीत व्हियोड़ा हा।

इग्यारवी पास करण रै धांमनै अैडौ दुरग व्हियौ जांणै अेक सोजन-बरस लोटै पड़ग्यौ व्है। अेम. अे. पास करयां उपरांत कॉलिज छोडणी पड़ैला। नौकरी करणी पड़ैला। मळीच चाकरी खातर कॉलिज री भणाई रौ महातम थोड़ौ ई है। अबै तौ छव बरस री ठौड फगत पांच बरस घटै !

संजोग री रांमत रौ अैडौ हीडौ हाल्यौ इरसिंदर के सैकिंड इयर रै पैनरै दिन ई किणी अेक 'धरम-बैन' रौ 'धरम-भाई' किणी अेक दूजी मड़की नै पिछाणण खातर म्हनै घड़ी-घड़ी पोतायौ। ठेठ सू ई अंवळौ सुप ही म्हारी। म्हैं गांन्धी

उणरी धरम-व्हैन सूं ई छेड़खांनी कीवी। छेड़ण रै समचै ई वा चिड़ी तौ अेक नवौ ई आणद आयौ। पछै तौ वा घड़ी अर वौ दिन हौ के म्हे लड़कियां छेड़ण रौ कोई ताखौ नी चूकतौ। नी-नी व्है जैड़ी कोगता अर खमड़ोळां। कुबदी अर कुलगी रै मीगै पैला सू ई पारंगत है। नवा गुर की सीखण री जरूरत नी ही। लड़कियां रै भेळमभेळ प्रोफेसरा नै ई चिगावण री पाछ नी राखी। हिन्दी रै अेक प्राध्यापक रा परवाडा तौ इण गुटकै दरसाया ई हू—'ख्यात अेक प्रोफेसर री' कथा मे। अेक रै आगै म्हे सौ जणां री गरज सारतौ। अेकर सताजोग मांदौ पड्यौ तौ कॉलेज री सै लड़कियां म्हारै मरण सारू पूज बोली। पण वांरी दुरासीस हाल जीवतौ हू। माळा री गाळ रै छोगै वै म्हनै 'परवरटेड जीनियस' कैवती।

फगत अेक रासौ लिखनै माठ करूला। म्हारै भेळी भणती अेक अपछरा [नांव मिळ्यां वतावूला]—अेकर धोळी सिलवार, धोळौ कमीज अर खांधै लीलौ दुपट्टौ राळ नै आई। मगळचद गुलेच्छा म्हारौ घण हेताळू, गाढौ मित हौ। उणनै सुणाय जोर सू कह्यौ, 'देख रे मगळ, आ मूळी रौ बणाव करनै आई—हेटै धोळी, ऊपर लीली—कोई लूण लगाय डाचौ भर लियौ तौ...' वा रीस मे भळ-भट्ट होय पाछा दो थोक सुणाया। म्हनै कुत्ता रै जोड़ै दियौ। खासी ताळ कड़मड करयां। उणरै छोज्यां सांम्ही वत्तौ मजौ आयौ। चिडावणौ सुवयारथ व्हैगौ।

तठा उपरांत मूंडै-मूंड अैडी सळवळ उफणी के सिड्यां ताई जणा-जणा रै होठा उणरौ नांव चावौ व्हैगौ—मिस मूळी, मिस मूळी। उण दिन पछै वा कदै ई वौ बणाव नी करयौ।

दूजै दिन भिड़ता ईं अंगरेजी री क्लास ही। चंचू माट सा'व [औ सिरै नाव म्हे इज पाड्यौ] बारणै पग धरयौ तौ दवातां रै छेकलां अेकोअेक डेस्क मे मूळिया ई मूळिया निगै आई। हेटै गोड अर माथै लीला पांन। पैला तौ वै सिणफिण मुळक्या। पछै रांम जाणै कांईं सोच म्हनै इज बूझ्यौ, 'औ कांईं खिलकौ है?'

उपज तौ उवरती पड़ी ही। तुरंत पड़ूत्तर दियौ, 'आज म्हारौ जलम-दिवस छै गरूवर। इण खातर क्लास नै सजाई।'

'अै इज रंग-रूड़ा फूल मिळ्या?'

'वेजा कांई है? सूघा अर टिकावू।'

जणा-जणा री हंसी क्लास में उजास घुळग्यौ। पण अेक जणी री उणयारौ काळौ-मिट्ट पड़ग्यौ, जाणै अजण रौ धूवौ पुतग्यौ व्है। म्हारै हिवड़ै दुधारी कटार धसगी। तौ ई दांता लोही लाग्योड़ी कुबाण नी छूटी सो नी छूटी।

आठ के दस दिनां रै वारै क्लास मे डाकियौ उणरै नांव मुखमल री पारसल लायौ। खोली तौ मांय मूळिया। रीस री तरणाटी पारसल बारै वगाय दी। बासदी री भळ लारै मुड़नै वा म्हारै सांम्ही जोयौ। म्हैं सरतबाबू री पोथी बाचण में मगन हौ।

कोई मानै नी मानै, पण आज भेद री गत बतायां टाळ नेहचौ नी व्है दरपिदर के लड़कियां रै ओळावै म्हैं आपौ-आप नै छेडतौ हो। हदभांत नामून रौ

वळी मांय री मांय म्हारी राळ पाड़ती ही। साचांणी, वानैं छेड़ण रो दरद वांरैं विचैं ई म्हारैं होयैं वत्तो माल्हतो। रात रैं काजळियैं पडदैं अेकलो घणा ई आसूड़ा ढळकावतो। पण दिनूगा सूरज रैं उजास म्हारैं चेत-अचेत काळस ई काळस पाधर जातो। लडकियां अर प्रोफेसरां नैं खिभावण टाळ नामून रो कोई दूजो गुर नी जाणतो हो। कद लेखक बणू अर कद म्हारो नाव उजागर व्हैं, उत्ता धीजा रो होयैं गाढ नी हो। अर म्हैं नाव खातर तड़फा तोड़तो। जे म्हैं डीगो, रूपाळो के खिलाडी व्हैतो तो कदास उण भूड रैं मारग अेक पावंडो ई धकै नी बधतो। जे म्हैं लेखक नी व्हैतो तो रंगा-बिल्ला बणतो, कोई बैंक लूटतो, किणी मोटा नेता री के लाठा उद्योगपति री हित्या करतो। कैंडी ई बजरजोखम म्हनैं नामून तो करणो इज हो। आज जस रो मोड़ म्हारैं माथैं नी मजोग रैं माथैं बधणो चाहीजैं। बाइरन, मेलैं, पुस्किन, अलेक्जेंडर ब्लॉक कित्ता रूपाळा अर ओपता हा! सात समदर आंतरैं हेरण री किसी जम्रत, अपारा गरुदेव किमा कम रूपाळा हा! साख्यात कांमदेव रो इज अवतार। तो ई सिरजण रैं सीगैं किमी पाछ राखी! पण म्हैं तो फगत म्हारो भेद जांणू सो ई बनावू।

मूळा री पारसल भेज्या ई म्हारैं सतोख रो छेह नी आयो तो सकर रैं थापो दीवी के मिम मूळी रैं कथानक अेक ठावकी वात लिखैं। वो बात तो लिखी पण म्हारैं दाय नी आई। दूजी वळा लिखी, तीजी वळा लिखी तो ई वात बणी नी। सेवट आखी आम म्हैं मतो करयो। पैंल फटकारैं मिम मूळी खातर हीमत नी व्ही तो कलम माजण रैं मिस 'कुळी' नांव री कथा मू होयो खुलग्यो। सकर री छेवामी दूजैं दिन ई अणूतैं उमाव उणरैं घरैं उडियो। 'मिम मूळी' वाचण रैं समचैं ई वो तो चकन-चकन। उण दिन मू ई उणरैं अंडो धबक बैठी के आज दिन ताई कथावां लिखण खातर पाछो जोह नी बंध्यो। अर उण वेळा-पुळ म्हारी कवितावां छूटी सो आज दिन तांई छूटघोडी इज है। अवै पाछी बायड मुगवुगैं, देखू संजोग रैं परवाड़ा कैडा-कांई आक उधड़ै? 'मिम मूळी' मू पैला कित्ती कवितावां लिखी—'अंतर्ध्वनि', 'विश्व-मुंदरी', 'नाविक' अर 'ऊषा' माथैं न्यारी-न्यारी पोथ्या लिख्योडी। 'विश्व-मुंदरी' म्हैं मौत नैं मांनी। मौत-विहूण संमार जीवण-जोगो ई नी रैवै। जलम मू बेमी मौत रो महातम है। 'विश्व-मुंदरी' रैं बखाण मौत माथैं मौ-सवा मौ कवितावां लिखी। पण वांरी मौत रैं उनमान ई हूनफाळ व्हियो। वळै कदै ई बनावूला। आज बतावता काळजो फाटैं।

म्हारी क्लास मे 'ऊषा पाठक' नांव री अेक अपछरा भणती ही। आज रैं ढोळ रो तो म्हनैं ई बेरो कोनीं। मगत री कुषमाड अवस लेवडा भडण मागा व्हैला, पण वा दिनां उणियारा री पमम गुमान करतो हो। धारणी ओमरती ही। उणनैं चिड़ावण खातर उणरैं नाव अेक पोथी छपाय दी। परभात री ऊमा रा विध-विध बिडाम। बानगी मरूप अेक कड़ी याद है—'ऊषे! तेरी याद लिये नयनों मे रात बिना दूगा।' रात रो अपाग अंधारो विणम्या ई सूरज री उगाळो ऊमा दीमे। क्यूं दरसिदर, कुबदी तो म्हैं कैंडोक हो! माडकियां मो टच माथ केवतो—'परवर-

टेड जीनियस ।' नामून रै पलीत म्हारो की पसवाडो ई कठै फिरतो ? तर-तर आपो-आप सूं आतरै ई आंतरै उछरतो गियो । दो फाड़ा फटचोडो --विणास अर सिरजण रै फाड़ां । जोग-संजोग रै अदीठ डोरां बध्योडी कठपूतळी ! नचावै ज्यूं ई नाचणो पड़तो !

तो 'मिस-मूळी' री कथा वाचण रै कोड कॉलेज मे जणा-जणा रो मन खुर-मुरिया खावण लागो । हाथा लिख्योडी अेक इज फडद ही । हाथोहाथ घूमण लागी । नीवडा हेटै कोई अेक बेली जोर सू वांचतो अर ओळू-दोळू ऊभी भीड़ कान ढेर सुणती । हंसी रा छंवारा छूटता । नीब तळै जठै ई भीडो व्हैतो, सै मनाग्याना समभ जावता के 'मिस मूळी' रो पाठ व्हे । सताजोग री बात के हाथोहाथ घूमती वा बात कीकर ई मिस मूळी रा भाई रै हत्थै चढ़गी अर वो उणरा टुकडा-टुकडा करनै वाळ दी । सुण्या म्हारो काळजो साचाणी ठाडो व्हियो, पण बेलिया रै जोह बधाया तीन दिन अर तीन रात खमखरी खाय टिक्यो सो लाठो उपन्यास लिख मारचो । दो-ढाई सौ पानां रो । मंगळचद गुलेच्छा छापण री जोखम अगेजी तो अजेज अेक परचो काढ़चो . खुशखबरी---खुशखबरी / शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है / मिस मूळी / कॉलेज के रोमांटिक जीवन की अपूर्व कहानी / अपनी प्रति आरक्षित करवा लीजिए / लेखक : विजय बन्धु / प्रकाशक कोमल कोठारी ।

पेम्पलेट बाटचा ई नामून रै खईस रो मन नी पोख्यो तो सिनेमा री स्लाइडा बणवाई । पोस्टर चिपकाया । अेक वेली री तिकडम हवाई जहाज सू कॉलेज रै चांनण-चौक परचा री उछाळ रो ताखो सजग्यो । मिस मूळी री धमचक हाको फूट्यो पण फूटचो । उणरी तळतळावण रै भेळमभेळ म्हारी छीजत ई कम नी ही । साचाणी दुख अर पिछतावा रो पार नी हो । वां दिनां री उकळती घाण-मथांण फगत म्हैं इज जाणू; दरसाया कोई विसवास नी करैला के नामून रो वळो किण गत अपरवळो व्हे । कैड़ा ई बजर-माथा नै भंवता की जेज लागै नी । खुदोखुद रो खुद माथै ई की वस नी पूगो । म्हारा सू म्हारै अलघ छेती पडघोड़ी ही । पण जिणरै खळबळो माचणी हो, उण मे तो की कोर-कसर ई कठै रीवी ! अैड़ै ई किणी विखै मौत री ईछना व्हैती व्हैला ! क्यूं इरपिदर ? तो ई वा हीमत नी हारी । राम जाणै उणनै कोई सुमत सुझाई के मतै ई सूभी । अेक दिहाडै अचीता सपना री गळाई लडकियां रो झूलरो म्हारै ओळूं-दोळूं घिरग्यो । साप्रत बचाव रो अगं ई उकराम नी लाधो । उण सू आंख्या बचावण री आफळ कीवी पण वा ई पार नी पडी । माम्ही ऊभ वा म्हारै कानी जोयो---उणरै डाबर नैणा हजार-हजार हिरणियां रो मून दरद अरडावतो हो ! लुगाई री आंख्या इण दरद सारू नी वणी ! मून रा वै छिण तो कदाम मौन सू ई नी मिलता । तद दरजै-लाचार वा थोडी मुळकी---जाणै दातां अमाठ लाय लागी व्हे ! बळबळतो निमाम छोड मोमा री तीख वूझ्यो, 'आप कवि हो ?'

कैड़ा ई हित्यारा राकम रो हीयो पिघळ जातो, पण म्हैं तो उण वेळा आपरै ठांणै इज नीं हो । कांई ठा कुण हिटलर म्हारो मूडो परोट बोल्यो, 'इण में किसी

बळी मांय री माय म्हारी राळ पाडतो हो। साचाणी, वांनै छेडण री दरद वारै विचै ई म्हारै हीयै वत्तो सालहतो। रात रै काजळियै पडदै अेकलो घणा ई आसूडा ढळकावतो। पण दिनूगा सूरज रै उजास म्हारै चेत-अचेत काळस ई काळस पाथर जातो। लडकियां अर प्रोफेसरा नै खिभावण टाळ नामून री कोई दूजो गुर नी जांणतो हो। कद लेखक बणू अर कद म्हारो नाव उजागर व्है, उत्ता धीजा रो हीयै गाढ नी हो। अर म्हैं नाव खातर तडफा तोड़तो। जे म्हैं डीगो, रूपाळो के खिलाडी व्हैतो तो कदास उण भूड रै मारग अेक पावडो ई घर्कै नी वधतो। जे म्हैं लेखक नी व्हैतो तो रगा-बिल्ला बणतो, कोई बैंक लूटतो, किणी मोटा नेता री के नाठा उद्योगपति री हित्या करतो। कैंडी ई वजरजोखम म्हनै नामून तो करणो इज हो। आज जग रो मोड म्हारै माथै नी मजोग रै माथै वधणो चाहीजै। वाइरन, सेलै, पुस्किन, अलेक्जेंडर ब्लॉक कित्ता रूपाळा अर ओपता हा! सात समदर आतरै हेरण री किमी जरूरत, अपांरा गरुदेव किसा कम रूपाळा हा! साख्यात कांमदेव रो इज अवतार। तो ई सिरजण रै सीगै किसी पाछ राखी! पण म्हैं तो फगत म्हारो भेद जाणू सो ई बतावू।

मूळा री पारसल भेज्या ई म्हारै सतोख रो छेह नी आयो तो सकर रै थापी दोवी के मिस मूळी रै कथानक अेक ठावकी वात लिखै। वो बात तो लिखी पण म्हारै दाय नी आई। दूजी वळा लिखी, तीजी वळा लिखी तो ई वात बणी नी। सेवट आंती आय म्हैं मतो करयो। पैल फटकारै मिस मूळी खातर हीमत नी व्ही तो कलम माजण रै मिस 'कूळी' नांव री कथा सू हीयो सुलग्यो। सकर री छेवागी दूजै दिन ई अणूतै उमाव उणरै घरै उडियो। 'मिस मूळी' बांचण रै ममचै ई वो तो चकन-चकन। उण दिन सू ई उणरै अंडी धवक वैठी के आज दिन ताई कथावा लिखण खातर पाछो जोह नी बंध्यो। अर उण वेळा-पूळ म्हारी कवितावां छूटी सो आज दिन ताई छूटपोडी इज है। अबै पाछी बायड़ सुगवुगी, देसू मंजोग रै परवाडा कैडा-कांई आंक उघडै? 'मिस मूळी' सू पैला कित्ती कवितावा लिखी—'अनर्ध्वनि', 'विश्व-सुंदरी', 'नाविक' अर 'ऊपा' माथै न्यारी-न्यारी पोथ्यां लिखयोडी। 'विश्व-सुंदरी' म्हैं मौत नै मांनी। मौत-विहूण संसार जीवण-जोगो ई नी रैवै। जलम सू बेसी मौत रो महातम है। 'विश्व-सुदरी' रै बखाण मौत माथै सो-सवा सो कविनावा लिखी। पण वारो मौत रै उनमान ई हुनराळ व्हियो। वळै कदै ई बनायूला। आज बतावतां काळजो फाटै।

म्हारी बनाग मे 'ऊपा पाठक' नांव री अेक अपछरा भगनी ही। आज रै ढांळ री तो म्हनै ई थेरो कोनी। वगत री दुधमाद अवस लिवडा झड़ग सागा व्हैसा, पण वा दिनां उणियारा री पमम गुनाम फरतो हो। पादणी ओगरती ही। उणनै चिढावण खातर उणरै नांव अेक पोथी छपाय दी। परभात री ऊगा रा विध-विध चितास। वानगी सरूप अेक कडी याद है—'ऊपे! तेरी याद लिये नयनों मे रात बिना दूगा।' रात रो अमाग अधारो विगस्या ई सूरज री उगाळो ऊगा दीसै। बपू दरसिदर, दुवदी तो म्हैं कैंडोक हो! सहकियां सो टच माथ वैवती—"गरवर-

टेड जोनियस ।' नामून रै पलीत म्हारो की पसवाड़ौ ई कठै फिरतौ ? तर-तर आपो-आप सूं आंतरै ई आंतरै उछरतौ गियौ। दो फाडां फटचोड़ो—विणास अर सिरजण रै फाड़ा। जोग-संजोग रै अदीठ डोरां बंध्योड़ी कठपूतळी ! नचावै ज्यूं ई नाचणौ पड़तौ !

तौ 'मिस-मूळी' री कथा वाचण रै कोड कॉलेज में जणा-जणा रो मन खुर-मुरियां खावण लागो। हायां लिख्योड़ी अेक इज फडद ही। हाथोहाथ घूमण लागी। नीबडा हेटै कोई अेक वेली जोर सू बाचतौ अर ओळू-दोळू ऊभी भीड कान ढेर सुणती। हंसी रा छंवारा छूटता। नीव तळै जठै ई भीड़ो व्हैतौ, सै मनाग्याना समझ जावता के 'मिस मूळी' रौ पाठ व्है। मताजोग री वात के हाथोहाथ घूमती वा बात कीकर ई मिस मूळी रा भाई रै हत्यै चढ़गी अर वौ उणरा टुकडा-टुकडा करनै बाळ दी। सुण्या म्हारो काळजौ साचाणी ठाडो व्हियो, पण वेलियां रै जोह बंधाया तीन दिन अर तीन रात खमखरी खाय टिक्यो मो लांठौ उपन्यास लिख मारयौ। दो-ढाई सौ पाना रो। मगळचद गुलेच्छा छापण री जोखम अंगेजी तौ अजेज अेक परचो काढ़यौ. खुशखबरी—खुशखबरी / शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है / मिस मूळी / कॉलिज के रोमांटिक जीवन की अपूर्व कहानी / अपनी प्रति आरक्षित करवा लीजिए / लेखक . विजय बन्धु / प्रकाशक · कोमल कोठारी।

पेम्पलेट बाटयां ई नामून रै खईस रौ मन नी पोख्यौ तौ सिनेमा री स्लाइडा वणवाई। पोस्टर चिपकाया। अेक वेली री तिकडम हवाई जहाज सूं कॉलेज रै चांनण-चौक परचा री उछाळ रौ ताखो सजग्यौ। मिस मूळी री धमचक हाकौ फूटचौ पण फूटचौ। उणरी तळतळावण रै भेळमभेळ म्हारी छीजत ई कम नी ही। साचाणी दुख अर पिछतावा रौ पार नी हौ। वां दिनां री उकळती घांण-मथाण फगत म्हैं इज जाणू, दरसायां कोई विसवास नी करैला के नामून रौ वळौ किण गत अपरवळी व्हे। कैंड़ा ई बजर-माथा नै भवता की जेज लागै नी। खुदोखुद रौ खुद माथै ई की बस नी पूगौ। म्हारा सू म्हारै अलघ छेती पडयोड़ी ही। पण जिणरै खळबळो माचणी ही, उण मे तौ की कोर-कसर ई कठै रीवी ! अैड़ै ई किणी विखै मौत री ईछना व्हैती व्हैला ! क्यू इरपिदर ? तौ ई वा हीमत नी हारी। रांम जांणै उणनै कोई सुमत सुझाई के मतै ई सूझी। अेक दिहाड़ै अचीता सपना री गळाई लडकिया रौ झूलरो म्हारै ओळू-दोळू घिरग्यौ। साप्रत बचाव रो अगै ई उकरास नी लाधो। उण सू आख्या बचावण री आफळ कीवी पण वा ई पार नी पडी। साम्ही ऊभ वा म्हारै कांनी जोयो—उणरै डाबर नैणा हजार-हजार हिरणियां रौ मूंन दरद अरडावतो हौ। लुगाई री आख्या इण दरद सारू नी वणी ! मून रा वै छिण तौ कदास मौत सू ई नी भिलता। तद दरजै-लाचार वा थोडी मुळकी—जाणै दांतां अमाठ लाय लागी व्है। वळवळतौ निसास छोड मोसा री तीख बूझ्यौ, 'आप कवि हौ ?'

कैंड़ा ई हित्यारा राकस रौ हीयौ पिघळ जातौ, पण म्है तौ उण वेळा आपरै ठाणै इज नी हौ। कांई ठा कुण हिटलर म्हारो मूडौ परोट बोल्यौ, 'इण मे किसी

मीनमेख ! कवि तौ हूं इज । छानै री किसी बात ?'

मुळक री भाळ वा धकै बोली, 'तौ अवम कूतौ करघो म्होला के लारला अै पंद्रै दिन म्हारा कीकर बीत्या ?'

'जांणू ज्यू ई बीत्या व्हैला, पण 'बत्तमीज कुत्ता' सू अैडी आस राखणी इज नी चाहीजै ।'

तौ ई वा आपरी आस नी तजी । हदमाठ पिछतावा रै सुर माफी मांग कह्यौ, 'आ पोथी छप्यां म्हारौ जमारौ विगड जावैला; म्हैं नी चावू के आ पोथी छपै ।'

गुचळग्या खावतौ छेहली भांपळी मारी, 'प्रेस मे ढाई सौ रिपिया साई पेटै...।'

'वै म्हैं दे दूला ।'

साच मांनै इरपिंदर, इत्ती ताळ उपरांत म्हारै मूडै म्हारा इज बोल उछळ्या, 'चूक व्हैगी जकी तौ व्हैगी; अवै नी तौ आ पोथी छपैला अर नी आप सू कदै ई खमडोळ करूंला ।'

आज सोचू के सरत-साहित्य री अग ई कांण नी राख, साई पेटै ढाई सौ रिपिया रा दप-बोल म्हारै मूडै निकळ्या तौ निकळ्या ई कीकर ? के तौ वौ मूडौ म्हारौ नी हौ के वै बोल म्हारा नी हा ! म्हारै मूडै बोलण वाळौ वौ कुमाणस कोई दूजौ इज हौ, पकावट दूजौ इज हौ। म्हारा इण वेताछीला साच मार्थ आज कुण पतियारौ करैला, पण वा नेगम पतियारौ करघौ, जद इज तौ म्हारै कैतां पांण पाछल फोर मुडगी । किणी दूजा पतियारा री म्हनै अगै ई दरकार कोनी । वौ पतियारौ ई उबरतौ पड़घो । म्हारै सिरजण री काण रैगी ! सरत-बाबू नै बांचण री मरजाद रैगी !

वेली घणा ई कड़मड़ करघा, म्हारौ माजनौ पाड़घो अर म्हैं बोलो-बोलो सुणतौ रह्यौ । तठा उपरांत कॉलेज में भण्यो जितै आपरौ बचन निभायौ । उण सू म्हारी वा इज पैली अर छेहली भेंट ही । आधा नी हा, इण खातर दरसण सारु दरसण तौ व्हैता इज, पण पाछौ सपनै ई ओळखा जोग काम नी करघौ । पण दूजी लड़कियां नै छेड़ण री घाळचोळ तौ भण्यो जित्तै नी छूटी ।

थारै हिवडै फुफकारता इण सवाल री भणक म्हनै गांव बैठां ई सुमट सुणीजै के आज रै सिरजण री बांनगी रो थोडो-घणो तूमार व्हैता, म्हैं लड़कियां नै छेड़ण रो वो मळीच काम करतौ के नीं ? सरवोदयी नेता रै उनमांन पाखंडी व्हैयां टाळ म्हारा सू मरघा ई नीं नटीजै के म्हैं वांनै भवै ई नी छेड़तो । जे आज किणी जागता देव रै परचै म्हनै ठेठ सू पाछौ वो ई जमारौ जीवणो पड़ै तो साचांणी म्हारै आंगै व्हियोड़ो अेक ई काम नीं छोडूं । अै इज तौ असल पगल्या है ज्यांरै मोजां-मोजां म्हैं इण मजल पूगौ । औ सिरजण, वां तमाम खोटा-खरा करतबा रो इज परताप है । औ वरदांन, उणीज बीज अर रूंख रो फळ है । बीज माथै भटियां रो रूंख अर फळ खातर पैना नटीजै । इण फळ रै महातम वो बीज तो भोगणो ई पड़ैला । आपरी मीट आपरो काळो मून्ड देख्यां टाळ सिरजण रो उजास बद ई नीं पर-

ग्लै। ऊमर परवांण कुदरत रै ढाळै म्हारी मीट तौ अवस मोळी व्ही, पण दीठ री तासीर अंगै ई बदळगी, इरपिंदर। आज काल कवूडा मे काग, काग में कवूडौ, हिरण मे सिंघ, सिंघ मे हिरण, गांधी मे गोडसै अर गोडसै मे गाधी री छिब भांकती दीसै। म्हारी कथावां रै सै ऊजळा अर काळा मानखा सू सांम्हेळौ म्हारै अतस रै तोसाखानै ई व्हियौ। सै म्हारी काया रा इज अस है। खलनायक ई म्है हू। सिरै नायक ई म्है हूं। जे म्है कुवद-कुलगा रै खोजा इण मजल नी पूगतौ तौ सात ताळां जड्या म्हारा ततगड डोळ रा म्हनै कदै ई बावड नी व्हेता। आपौआप सू लुक्योडौ लेखक हजार-हजार मूघी-सूघी कलमां घिसै तौ भला ई, वौ सांतरौ लेखक नी वणै। खुदोखुद सू चोज राखणौ किणी कळावत नै नी पोसावै। आज ई म्है किणी सू माफी नी मांगणी चावू के म्है कोई कावळ काम करघौ। अलबत अेक तीखी सूळ ऊंडै अतस रड़कै के म्हारी रचनावा, म्हारै साथै भणती सै लड़कियां रै हाथ लागै अर वै आंनै कोड सू बांचै। अबै तौ वै ई म्हारी गळाई ऊमर री छेहली ढाळ पूगी। रूप, रूप रै ठांणै लोप्यौ। जवानी, जवानी री ढाळ ढळी। पण इण सिरजण सीगै म्है अेक-अेक रौ मारेळ हू। वारै परताप ई म्है इण पद पूगौ। हाल ई दुरामीस देवै तौ वांरी मरजी, म्है नी पालू। थू ई बता इरपिंदर, जे म्है अेक-अेक कुचमाद, मिस *मूळी री 'पड' ताई नी पूगतौ तौ कोमल सू नातौ कीकर घुळतौ?* अर कोमल सू इण जमारै हेत-इकळास नी व्हिया, नी म्हारी की गत ही अर नी उणरी। दोनू ई जीवता थका अगत जावता। मरचा पूठै री गत-अगत कुण जांणी? जे दरबार स्कूल री कुलगा रै परताप रेस्टीगेट होय पंजाब-मैट्रिक रै निमत पीलू बावूजी री कोचिंग इन्स्टीटच्यूट भरती होवण रौ वरदांन नी फळतौ तौ...अरे, आ बात तौ म्है पैला ई दरसाय दी, वळै दुसरायां कांई सार!

सैकिंड इयर मे दो वळा फेल होय तीजी वळा तेवडी तौ पास व्हैणौ इज हौ, नीतर कॉलेज छोडणी पडती। मौत आया पैली मरणौ पडतौ। तेरहवीं क्लास में आवतां ई मोटौ खगडौ करचौ, जिणरी मार कॉलेज रा चौभीता सू आंतरै ही, घणी आंतरै। आलोचना री अेक पोथी लिखण रै उमाव, कॉलेज रा अेक नीब तळै धूणी रमाई। सात दिन ताई जाणै समाध में गम्योड़ो व्हू। लडकिया रौ काळजौ धड़क्यौ के मूळी रै उपरांत किणी गाजर के सकरकंद रौ अथांणौ घालीजै दीसै। पण वौ अथाणौ हौ—'बच्चन', 'पंत' अर 'नरेन्द्र शर्मा' रौ। बापू री हित्या री दाभ ई नी ठरी उण पैला कविता री तीन पोथ्यां छपनै हाट-बजार बिकण खातर आयगी—'खादी के फूल', 'सूत की माला' अर 'रक्त-चदन'। आ सुगली गत-वायरी पोथ्या रै सिरजण-हार तीनू कविया नै म्है बापू रा हित्यारा ठाया। मत-वायरौ गोडसै तौ गाधीजी रा दीखता खोळचा नै गंगाजी घालण सारू निमत बण्यौ। पण बापू री छिव रै कांमण पोथ्यां रै मिस वांरी मौत रौ विणज करण वाळा ई तौ बापू रा असल कस है। इणी नीत सू पोथी रौ नांव राख्यौ—'बापू के तीन हत्यारे'। फगत अेक छप्योडी पोथी म्हारै पाखती नीठ ठाणै बची। अबकी जद-कद दिल्ली आयौ तौ म्हारी वा कुचमाद थनै बांचण खातर अवस बतावूला।

कामू, आंद्रेजिद, हार्डी, डिकेन्स, थेकेरे, अेच. जी वेल्स, बर्नार्ड शॉ, शिलर, नीत्शे, स्टेफिन ज्वाइग, थॉमस मान, हरमन हेस, काफ्का, पुश्किन, तुर्गनेव, टॉलस्टॉय, गोर्की, गोगोल, दॉस्तॉवस्की अर म्हारौ तीजौ द्रोणाचारज —अॅंटन चेखव ! सरत बाबू अर रवी बाबू रै उपरांत अॅंटन चेखव ! कोमल रै पावती अमेरिका अर यूरोप रै साहित्य री अणगिण पोथ्यां ही। नी वो देवण में कोनाई बरतौ अर नी म्है बाचण में। पछै सांम्यवादी विचारां री भुरकी —हिगेल, मार्क्स, अेंजल्स, लेनिन, स्टेलिन, मावो, क्रिस्टोफर कॉडवेल इत्याद लेखकां री कांमणगारी रचनावां ! किताक नांव गिणावू, नी लेखकां रौ छेडौ अर नी पोथ्यां रौ। कोमल रै परताप म्हारी तौ जूंण इज थाल सायगी।

मार्च १९५३ 'प्रेरणा' मासिक रै डाकै अॅंडौ जबर ढोल बाज्यौ के कोमल अर म्हारौ नाव हिन्दी में चावौ होवण लागौ। 'प्रेरणा' रै नौ अंकां तांई म्है काम करयौ जिण में दो विसेसांक हा। अेक विसेसांक हो —कालिदास रै मेघदूत रौ राजस्थांनी अनुवाद। अॅंडौ ठाककौ बण्यौ, जाणै कालिदास दूजी वळा जलम लेय राजस्थानी में मेघदूत री रचना कीवी। अनुवादक नारायण सिंघ भाटी विचै ई म्हांरी आपळ चौगणी वती ही। उणरी गागरत फेर कदै ई गावूला। दूजौ विसेसांक हो—'प्रेमचद के पात्र'। म्हा दोनां रै भेळमभेळ प्रयागराज मेहता रै संजोग उण विसेसांक रै पाण लागी। भाई अम्रितराय रौ कैवणौ के प्रेमचन्द जी माथै हाल हिन्दी में वैड़ौ कांम नी व्हियौ। 'प्रेरणा' रौ अंजळ खूटयां अेक अंक 'रूपम' रौ काढ्यौ। पछै 'परंपरा' नांव रै त्रैमासिक री जोत जगाई। जिणरौ पैलौ विसेसांक हो—'लोकगीत'। दूजौ —'गोरा हट जा'। तीन विसेसांक लग म्है अर कोमल पूरमपूर काम सभाळयौ। सपादक रै ठायै नांव जावतौ नारायण सिंघ भाटी रौ। पछै म्हांरै अणयणत व्ही तौ बेजां व्ही। के तौ अेक दांत रोटी तूटती अर आज अेक दूजा रौ मूडौ देख्यां घपळका ऊठै। म्हारौ संजोग नी जुडयां नारायण सिंघ भाटी साहित्य रै पथ पावंडौ ई नी भरतौ, पण आज 'तीडाराव' रौ अवतार मांनीजै। संजोग री रांमत भलां किण रौ आंरम मांनै ? आज पूछतौ म्हांनौ बतावू जित्ती पोळाई कोनी। नारायण सिंघ वाळा रासा रौ कुजोग वळै कदै ई विगतवार लिखूला। राजस्थानी साहित्य रै सीगै सागी-भली धूर ठईला। पण उण कुजोग रै परचै अेक वरदांन अैडौ फळयौ के म्हारै अंतस सीसा रै मारै आ बात जमगी के मायड भासा राजस्थांनी में लिख्यां टाळ लेखक रै सोळपै जीवतौ थकौ ई अगन जावूला। हिन्दी में लिखण री पूरमपूर हटोटी उपरांत, मायड-भासा में लिखण रौ रस, माथांणी आरथान रै उनमान हो। मां रै हांचळा चूंग्योडी वांणी री जैतारण रै मारग, सारै गांव छोड दी ही। घणै भणाई रै लेगै पाछौ मवेस ई नी जुड्यौ ! कविता-काव्य में तौ राजस्थांनी रै टरका-टसका री पाट ई निरवाळौ है, पण गद्य रै पेटै अंगै ई पूजी कोनी। तद आगी ऊमर हिंदी-अंगरेजी सू बाथेडौ करयां उपरांत, मायड-भासा रौ मोह किसीक भांत निभैला ! पण इणंगिदर, बात अैडी होयै जमी के पाछौ पग नीं डिरीज्यौ। अर आज मायड-भासा राजस्थांनी रै संजोग

उणरी आसीस इण मजल पूगो। बाबोसा गोवरधन लालजी काबरा रै सांम्ही मायड़-भासा में लिखण री बायड दरसाई। पैला तो वैं समझायो के म्है आ कालाई नी करू। वै म्हारा गाढ रो थाग टटोळणो चावता। पतियारो व्हियां आसीस रै समचै अेक इज छेहली भुळावण दीवी के म्है पाछो आपरै गांव ढळ जावू। उठै ई नेगम खूंटो गाढ राजस्थांनी मे लोक-कथावां लिखूं। मनचीती मजल सांम्ही आवैला। अर इरपिदर, बाबोसा री आसीस फळी तो अैडी फळी के 'वांणी' अर 'लोक-संस्कृति' मासिक-पत्रिकावां रै पांण 'वातां री फुलवाड़ी' री चवदै पाळयां भात-भात रा अजर फूल सरसै, मुळकै। नी वांरी सौरम खूटैला अर नीं वांरी आव। 'दुविधा' अर 'उलझन' मे तो फगत गुणचाळीस कथावां री वांनगी हिन्दी पाठकां रै पांनै पडी अर वैं म्हनै हद-माठ मोद गळै लगायो। गुणचोर नी हूं तो 'बाबोसा' रो गुण सपनै ई नी भूलू के वांरी सीख अर आसीस रै संजोग म्है गांव आय धूणी जगाई सो हाल जगमगै।

'वांणी' 'लोक-संस्कृति' अर 'वातां री फुलवाडी' रै पसाव लोक-कथावां तो घणी ई लिखी। हजार रै लगैटगै। म्हैं तो 'वातां री फुलवाडी' नै मौलिक कथावा बिचै ई इदक आदरू। किणी चित्रांम, भाव के कथानक नै अतस री रग-रग घोळ राखण रो नांव ई मौलिकता है। नीतर नवो-जूनो की नी व्है। पण 'दीठ' रै सपादक स्री तेजसिंघ जोधा घणो वाद करयो तो वांरी कांण राखण सारू 'अलेखू हिटलर', 'राजी नांवो' अर 'फाटक' तीन कथावां लिखी। पण म्हारी दीठ नवी-जूनी कथावां मे अंगै ई भेद कोनी। उण पैली म्है तो आदू लोक-कथावां नै नवै रूप सिरजण री लवल्या मे रूधोडो हो। देवलोक वासी सरवेस्वर दयाल सक्सेना रै घोदायां 'कमेडी अर सांप' नै दोय वळा पाछी लिखी। 'काग-मुनि' रो सिरजण वारै जोग ई फळयो। बाकी 'अलेखू हिटलर' पोथी री घणकरी कथावां राजकमल प्रकासण रै मोहन गुप्त री गाढी ओळखांण रो सजोग है। वांरी बात राखण रो तंत नी जुडतो तो म्है सन् १९४८-४९ रै आसरै साप्ताहिक 'ज्वाला' अर 'आग' रा झीर-झीर गळघोडा पांनां सपनै ई नी फिरोळतो। आदू लोक-कथावां री भात, म्हारै इज हाथा लिख्योडी जूनी-कथावां नै पाछी लिखी। दूजी वळा लिखतां म्हैं लेखक सागै नी रह्यो तो कथावां ई आवगी बदळगी। स्रीमती सारदा जैन रै सबदां कथानक सागै व्हैतां थकां ई कथावा न्यारी व्हैगी। इण मरम रै म्यांना सारू ई अंतरपुट [परिसिष्ट] मे तीन जूनी कथावां छापी। 'डायरी का पृष्ठ' नै 'कमेडी अर साप' रा दो लिखत। 'रोजनांमचो' 'डायरी का पृष्ठ' रो नवो रूप है; 'काग मुनि' 'कमेड़ी अर साप' रो। कथानक सारीसा व्हैतां थकां ई कथावां अेक कोनी। अेक ई बीज रा फळ इण भांत न्यारा-न्यारा परगट व्हिया। इण सीगै मोहन गुप्त अर सरवेस्वर भाई रो गुण कीकर भूलीजै। अंतरपुट मे वातां रै टेवै सगळी विगत मंडयोडी है के किण जूनी कथा रो किसो नवो रूप है। ध्यांन सूं वांचनै थारी राय लिखजै। 'कुळी' नांव री पैलमपोत कथा नै पाछी लिखण बैठो तो दोय सो पांनां री उपन्यास बणग्यो। वा कथा तो फगत सातेक पांनां री ही। इण

कामू, आंद्रेजिद, हार्डी, डिकेन्स, थैकेरे, अेच. जी वेल्स, बर्नड शॉ, शिलर, नीत्शे, स्टेफिन ज्वाइग, थॉमस मान, हरमन हेस, काफ्का, पुश्किन, तुर्गनेव, टॉल स्टॉय, गोर्की, गोगोल, दॉस्तॉवस्की अर म्हारौ तीजौ द्रोणाचारज—अेंटन चेखव ! सरत बाबू अर रवी बाबू रै उपरांत अेंटन चेखव ! कोमल रै पाखती अमेरिका अर यूरोप रै साहित्य री अणगिण पोथ्यां ही। नी वौ देवण मे कोताई वरती अर नी म्हैं बाचण मे। पछै साम्यवादी विचारा री भुरकी —हिगेल, मार्क्स, अेंजल्स, लेनिन, स्टेलिन, माओ, क्रिस्टोफर कॉडवेल इत्याद लेखका री कामणगारी रच-नावां ! किताक नाव गिणावूं, नी लेखकां री सेडौ अर नी पोथ्या री। कोमल रै परताप म्हारी तौ जूण इज थाल खायगी।

मार्च १९५३ 'प्रेरणा' मासिक रै डाकै अैडौ जबर ढोल बाज्यौ के कोमल अर म्हारौ नांव हिन्दी मे चावौ होवण लागौ। 'प्रेरणा' रै नौ अंका ताई म्हे कामकरयौ जिण मे दो विसेसांक हा। अेक विसेसांक हौ—कालिदास रै मेघदूत रौ राजस्थानी अनुवाद। अैडौ ठाकको वण्यौ, जाणै कालिदास दूजी वळा जलम लेय राजस्थानी में मेघदूत री रचना कीवी। अनुवादक नारायण सिंघ भाटी बिचै ई म्हांरी आफळ चौगणी वती ही। उणरी गागरत फेर कदै ई गावूंला। दूजो विसेसांक हो—'प्रेम-चद के पात्र'। म्हा दोना रै भेळमभेळ प्रयागराज मेहता रै सजोग उण विसेसांक रै पांण लागी। भाई अम्रितराय रौ कैवणौ के प्रेमचन्द जी माथै हाल हिन्दी में वैडौ कांम नी व्हियौ। 'प्रेरणा' री अंजळ खूटघा अेक अक 'रूपम' री काढयौ। पछै 'परंपरा' नाव रै त्रैमासिक री जोत जगाई। जिणरौ पैलौ विसेसांक हौ—'लोकगीत'। दूजौ—'गोरा हट जा'। तीन विसेसांक लग म्हैं अर कोमल पूरमपूर काम संभाळयौ। संपादक रै ठांगै नांव जावतौ नारायण सिंघ भाटी रौ। पछै म्हांरै अणबणत व्ही तौ वेजा व्ही। के तौ अेक दान रोटी तूटनी अर आज अेक दूजा रौ मूडौ देख्या घपळका ऊठै। म्हारौ संजोग नी जुड़यां नारायण सिंघ भाटी साहित्य रै पंथ पावडौ ई नी भरतौ, पण आज 'तीखराव' रौ अवतार मानीजै। संजोग री रांमत भला किण रौ आंकस मानै ? आज चूकतौ म्यांनौ बतावूं जित्ती पोळाई कोनी। नारायण सिंघ वाळा रासा रौ कुजोग वळै कदै ई विगत वार लिखूंला। राजस्थानी साहित्य रै सीगै खासी-भली धूर छंटैला। पण उण कुजोग रै परचै अेक वरदान अैडौ पळयौ के म्हारै अंतस मीना रै सारै आ बात जमगी के मायड भासा राजस्थानी मे लिख्या टाळ लेखक रै मोळपै जीवनौ थकौ ई अगन जावूंला। हिन्दी में लिखण री पूरमपूर हटोटी उपरांत, मायड-भासा में लिखण रौ मण, माचांणौ आपधान रै उनमान हौ। मां रै हांचळा चूंग्योडौ वांणी रौ जैता-रण रै मारग, सारै गांव छोड दी ही। घरै भणाई रै नेगै पाछौ सवनेम ई नीं जुड़यौ ! कविता-काव्य मे तौ राजस्थानी रै ठरका-ठमका रौ थाट ई निरवाळौ है, पण गद्य रै वेटै अंगे ई गूजी कोनी। तद आगी ऊमर हिंदी-अंगरेजी सू बाथेडौ करयां उपरांत, मायड-भासा रौ मोह बिनीज भांय निभैला ! पण इर्सादर, बात अैडी होयै जमी के पाछौ पग नी दिरीज्यौ। अर आज मायड-भासा राजस्थानी रै संजोग

उणरी आसीस इण मजल पूगौ। बावौसा गोवरधन लालजी कावरा रै सांम्ही मायड-भासा में लिखण री वायड दरसाई। पैला तौ वै समझायौ के म्हैं आ कालाई नी करूं। वै म्हारा गाढ रौ थाग टंटोळणी चावता। पतियारौ व्हियां आसीस रै समचै अेक इज छेहली भुळावण दीवी के म्हैं पाछौ आपरै गांव ढळ जावूं। उठै ई नेगम खूटौ गाढ राजस्थांनी मे लोक-कथावा लिखूं। मनचीती मजल सांम्ही आवैला। अर इरपिदर, बावौसा री आसीस फळी तौ अंडी फळी के 'वांणी' अर 'लोक-संस्कृति' मासिक-पत्रिकावां रै पांण 'बातां री फुलवाडी' री चवदै पाळघां भात-भांत रा अजर फूल सरसै, मुळकै। नी वांरी सौरम खूटैला अर नी वांरी आब। 'दुविधा' अर 'उलझन' में तौ फगत गुणचाळीस कथावां री बांनगी हिन्दी पाठकां रै पांनै पडी अर वै म्हनै हद-माठ मोद गळै लगायौ। गुणचोर नी हूं तौ 'बावौसा' रौ गुण सपनै ई नी भूलूं के वांरी सीख अर आसीस रै संजोग म्हैं गांव आय धूणी जगाई सो हाल जगमगै।

'वांणी' 'लोक-सस्कृति' अर 'बातां री फुलवाडी' रै पसाव लोक-कथावा तौ घणी ई लिखी। हजार रै लगैटगै। म्हैं तौ 'बातां री फुलवाडी' नै मौलिक कथावां बिचै ई इदक आदरूं। किणी चितांम, भाव के कथानक नै अंतस री रग-रग घोळ राखण रौ नांव ई मौलिकता है। नीतर नवौ-जूनौ की नी व्है। पण 'दीठ' रै सपादक स्री तेजसिंघ जोधा घणौ वाद करचौ तौ वांरी कांण राखण सारू 'अलेखू हिटलर', 'राजी नावौ' अर 'फाटक' तीन कथावां लिखी। पण म्हारी दीठ नवी-जूनी कथावां मे अंगै ई भेद कोनी। उण पैली म्हैं तौ आदू लोक-कथावां नै नवै रूप सिरजण री लवल्या मे रूधोडौ हौ। देवलोक वासी सरवेस्वर दयाल सक्सेना रै घोदायां 'कमेडी अर सांप' नै दोय वळा पाछी लिखी। 'काग-मुनि' रौ सिरजण वांरै जोग ई फळचौ। बाकी 'अलेखू हिटलर' पोथी री घणकरी कथावां राजकमल प्रकासण रै मोहन गुप्त री गाढी ओळखांण रौ सजोग है। वांरी बात राखण रौ तंत नी जुडतौ तौ म्हैं सन् १९४८-४९ रै आसरै साप्ताहिक 'ज्वाला' अर 'आग' रा झीर-झीर गळघोडा पानां सपनै ई नी फिरोळतौ। आदू लोक-कथावा री भांत, म्हारै इज हाथा लिख्योडी जूनी-कथावां नै पाछी लिखी। दूजी वळा लिखतां म्हैं लेखक सागै नी रह्यौ तौ कथावां ई आवगी बदळगी। स्रीमती सारदा जैन रै सबदा कथानक सागै व्हैतां थकां ई कथावा न्यारी व्हैगी। इण मरम रै म्याना सारू ई अंतरपुट [परिशिष्ट] मे तीन जूनी कथावां छापी। 'डायरी का पृष्ठ' नै 'कमेडी अर सांप' रा दो लिखत। 'रोजनामचौ' 'डायरी का पृष्ठ' रौ नवौ रूप है; 'काग मुनि' 'कमेडी अर सांप' रौ। कथानक सारीसा व्हैता थकां ई कथावां अेक कोनी। अेक ई बीज रा फळ इण भात न्यारा-न्यारा परगट व्हिया। इण सीगै मोहन गुप्त अर सरवेस्वर भाई रौ गुण कीकर भूलीजै। अंतरपुट में बाता रै टेवै सगळी विगत मंडघोडी है के किण जूनी कथा रौ किसौ नवौ रूप है। ध्यांन सूं बांचनै थारी राय लिखजै। 'कुळी' नांव री पैलमपोत कथा नै पाछी लिखण वैठौ तौ दोय सौ पांनां रौ उपन्यास बणग्यौ। वा कथा तौ फगत सातेक पांनां री ही। इण

नवा प्रयोग रै चांनणै अंडो जोह बंध्यो इरपिंदर के 'वातां री फुलवाडी' समेत तमाम जूंनी कथावां पाछी लिखणी चावू। अेकर तेवड्यां उपरांत नीची न्हाकू, अंडो सुभाव कोनी। देखां मजोग री रांमत, धकै कंडा-काई परवाडा उघडै। पेटा री अेक वात वळै थारै साम्ही चवडै करू के इत्ता वरस तो लिखण री हूंटोटी मिरजण रो अभ्यास करयो, मनचीता आखर तो अबै जड़ ला। सरत-बाबू, रवी बाबू, टॉलस्टॉय, दॉस्तॉवस्की अर अंटन चेखव जिण खोजा हाल्या, वांरी सुभट सोय म्हनै अबै जावता व्ही। सेवट री बाजी म्हनै म्हारा बावड़ व्हिया टाळ वां खोजा री भवै ई परख नी व्हैती। अर संजोग रै परचै म्हारा घण हेताळू सैण-मिता रै पसाव म्हारी लाज रैगी, नीतर कदै ई ढोळै बैठ जातो। जीवण तकात रा जांदा पड जाता, तद सिरजण री खेवट्या किण विध व्हैती ? म्हारी अेकल सरधा रो आपांण इज कितोक है ! फाळोफाळ सिळगती भट्टी रै मांय बारूद री पुडकी अजै तांई मावत बच्योडी, वा फगत म्हारै पाण नी, गाढा बेलिया रै परचै। वै नी जांणै तो काई, म्हैं तो जाणू हू। थारै ओळावै म्हारै पूजनीक पाठका ओ ममचो पुगावणी चावूं के जिण मूर्घ सनमांन वै म्हनै आदरै, उणरो पोतेदार म्हैं अकेलो इज नी हू। सैंस जणां रै सैंस पखै म्हैं आज इण जोग बण्यो।

मुखडा [भूमिका] रै मिस थारै नांव ओ कागद लिखती वेळा म्हारै ऊडै अतस अवार-अवार अेक खुडको जाग्यो के छेड़खांनी री वा कुबांण हाल अलोप नी व्ही। ओटघोडी जूनी भोभर मे हाल निवास पोतै है। थनै कांई लागै ? निसक जवाब दीजै। हा, इण गुढ भेद रो म्यानो म्हारै बतायां टाळ ई थू पकावट समझ जावैला के सुगाया खातर म्हारी फुलवाडी मे इण मापै अपरपार आव-आदर क्यू ओमरै ??

थारो
बिज्जी

पुटियौ काकौ

जगत-काका रै परवाड़ां रौ छांण काढ्यां ई इण मरम रौ सुभट अेलम व्है के माईत अर वडेरां टाळ ई मानखौ जुगान जुग आदू वनापाती, पंछी अर जिनावरां री ओळ ई ढूकै। दीखता-पाखता सुभट उणियार अर मळिया सुभाव रै अंयाळ-पंयाळां — आक-धतूरौ, केर-खेजडी, कबूत्र-कमेडी, सरप-नेवळा, नाहर-सुसिया के हाथी-ऊंदर इत्याद समसत चराचर रै किणी अदीठ ढाळै जणा-जणा री हलगत, अंतस री अगम पुड़दां ढळ्योडी व्है। इणी मापै रांम जांणै कीकर किण कूंट जगत-प्रसाद दाधीच खातर कैंडो कांई दिस्टात पूगौ के वांरौ खोळ्यौ, समझ वापरणा रै समचै पुटिया पंछी री खोड खुड़ावण लागौ। पुटिया रै भरम औ अधर आभौ उणरै परताप ई अजै तांई ऊंचो टिक्योडौ। अणगिण प्रांणियां रै बचाव खातर ई पुटियौ आपरा पंजा मदावंत आभै री सोय ऊंचा राखै।

बाळपणै नित-हमेस भखावटै पलकां उघड़णा रै समचै जगत-प्रसाद दाधीच नै सूरज री उजास निगै आवतौ अर पलकां मूंदणा रै समचै उणरी आंख्यां काळो-बोळौ अंधारौ पाथर जातौ। इण जोग-संजोग रै मिस नांव-परवांण जगत-प्रकास रै हीयै भरम रौ अैड़ो रेसौ सांचरण मंड्यौ जांणै उणरी पलकां रै परताप ई सूरज रौ उजास जगमगै अर अंधारौ पाथरै।

सातूं भतीजां रै मूंडै घडी-घडी जगत-काका री बतळावण सुण-सुण पाडौसियां रै टाबरां अैड़ी ई बांण पड़गी। पछै तौ छोटा न मोटा, बूढ़ा न ठाडा सैंध-पिछाण्या

मिनखां रै कंठां जगत-काका री वतळावण पूरमपूर रस बैठगी। मां अर परणी तकात रै होठां आ इज वतळावण अर ओ इज नांव। सासती ओळाड़्या जगत-काका नीठ आपरी जोड़ायत नै इण नांव रै हेवा कीवी। अबै तौ वा ई धणी नै निसंक जगत-काका रै नांव बतळावै अर जगत-काका रै कांना जणा-जणा रै मूंडै रणकती आ वतळावण अणूंती मोठी लखावै। भरम री वेल बिना पांणी पांगरै। पछै कैंडी माठ! जगत रौ काकौ परपीज्यां आखा जगत री साळ-संभाळ रौ भार अंगेज्यां ई सरै।

हाई-स्कूल रा हेड-मास्टर बणतां ई जगत-प्रकास दाधीच रै हीयै मतै ई अेक अैड़ौ चमक-चांनणौ भळक्यौ के उण दिन सूं ई वै पूरा नांव री ठौड़ 'जगत-काका' रै आंखरां दसखत करण मंड्या सो डिप्टी-डाइरेक्टर रै पद पूग्यां उपरांत ई 'जगल-काका' री छाप आपरा दसखत माडै। तर-तर सगळा रै मनाग्यांना जांण-अजांण आपोआप ई आ वांण झरती गी। राज रा मंत्री मिरै-मत्री धुराधुर वांनै कोड सूं जगत-काका रै नाव आदरै। सुण्यां वांनै ई जबर आणद आवै। फगत इण नांव सूं ई वांनै आपरै जीवता खोळ्या री अेलम व्हे। काया सूं ई वत्ती वांनै आपरै नाव सू मोह-परीत। नांव-नांव तौ जगत-काका रौ, नीतर फीकी-फच्च वतळावण। साच पूछौ तौ 'बापू' री बोल ई वांनै लुखधूकी लखावै।

बापू री गत-मत तौ बापू ई जांणै, पण जगत-काका नै लुगाई जात सू हदभांत लगाव। गोपियां रै झूलरै किसन-भगवान नै आणद तौ खराखरी आवतौ इज व्हेला, पण जगत-काका री तौ वात ई बीजी। मडवा रै उनमान कोरा-मोरा ठूंठ मरदां रै बिचाळै वांनै बात करण री अंगै ई साव नी आवै। जांणै डाढ़ा रै बिचाळै मीगणी पजगी व्हे। पण लुगायां रै थट्ट वंतळ करती वेळा वांरी जीभ रै गुरगी पांखां लागै। रूं-रूं मुगति री वरण करै। सूरज री उगाळी फून खिलै ज्यूं काम-णियां री मंडळी वांरी अंतस खुलै। अर खुदोखुद लुगायां नै ई जगत-काका रै ओळूं-दोळूं आपरी दुभांत रौ खासौ-भलौ मोद व्हे। संगत, वंतळ अर दीठ री मार सूं आगै, काई ठा, वांरी भावड़ नीं ही के हीमत नी ही के सरधा नी ही। वांनै लागतौ के दुनिया री सैंधी-असैंधी तमांम लुगायां नै फगत वांरा सूं ई प्रीत करणी चाहीजै। दूजां सूं प्रीत री सोम व्हियां वांनै अणूंती खारी लागती जांणै काळजै कटार आरमपार व्हैगी व्हे। मीट री मार सूं धकै वध्यां के दूजी चाळ-चोळ करणां तौ गिणती री लुगायां इज सज आवै, पण मन री अदीठ सेजा सौ अलेखूं अपछरावां सूं रळी पूरीजै। वांरा दरस रै परचै जगत-काका रौ मन ई डील बण जातौ अर डील मन बण जातौ। फगत नैणा रै परस ई वै डील रै आगै पूजतौ कांम सार लेता। वै मन 'रळपट' हा। नी किणी भांत री जोखम अर नी किणी गत री भूंड के हांण।

रमणियां री रंगत जगत-काका री रग-रग तासीर बदळती जावै। होळै-होळै वांरी आंख्यां मांग्ही चिळका रा मुधरा-मुधरा सांवळा तिरण लागै। ज्यां में आप सूं परवारी अेक न्यारी ई मोवनी छिब रौ गुरगो चित्रांम पळकतौ दीसै। अै भरम रा चित्रांम घणकरा मिनखां री मीट—धरम, ग्यात, प्रेम, ग्यान, संगत, परोपगार, हिंसा के नसा-पत्ता री वंधोकड़ी झांकता लखावै। परतख साच री पर-पूठ आ झिलमिल चित्रामां रै पांण ई वांरौ मन मोदीजै। आपरै मिनख-जमारा री

थापना सीसा रै गारै अवचळ अर अतूट थरपीज्योडी लागै। पण जगत-काका री दीठ, फगत लुगायां रै खिवतै उणियारा दूजी छिब रा वगत-परवांण न्यारा-न्यारा सरूप सांचरै। जिण भात अबूझ टावरा रौ मन ढ़ला-ढ़ली अर रमेकडां सूं बिलमै, उणी भात जगत-काका रौ अधबूढ मन अजै ताईं लुगायां रै सीगै बिलमै।

आज तौ चीकणी पळकती तांबा-वरणी टाट बिना जगत-काका रौ डोळ ई नी फबै, पण तैंतीसां ढळचा पैली वांरै माथै घूघरियै केसां रौ काळौ छतर तण्योडौ हौ। हाल ई जिणरौ बखांण करता जगत-काका री जीभ किणी भात रौ सको नी पाळै। पछै तौ वगत री कुचमाद काळा, कडबटीला अर धोळै बाळां री तरतर संकड़ीजती झालरौ। म्याळ-मिनका री गळाई कायरी आंख्यां। फीडौ नाक। गोळ सुघड़ बत्तीसी। छोटी मूफाड। ओछी गाबड़। कबांण-गट्टा खवा। सीना सूं ई सवाई धूद। सिरैपोत तौ लुगाया री असैंधी आख्यां जगत-काका रौ औ डोळ ताबै ई नी बैठै। पण होळै-होळै सैंगत व्हिया इण रुणझुणिया री ढग-ढाळौ पैला जित्तौ अप-रोगौ नी लागै।

अेकर दफ्तर में लुगायां रौ फूठरौ मजमौ जम्योडौ हौ। चारेक जणिया जगत-काका री खास मरजीदान ही। सुलोचना राय, प्रतिभा केलकर, गुल अडवांनी अर अनुराधा भंडारी। दूजी अध्यापिकावां हाल होळै होळै मूडै लागण री पांत में ऊभी ही। जगत-काका री आख्या, चिळका रै झांवळां आप सूं परबारी छिब रौ अेक चित्रांम कुरण वाळौ इज हौ के सताजोग री वात के अगरेजी रौ वरिस्ठ अध्यापक माय आयौ। नांव मुरळीधर पुरोहित। चिपतां ई जगत-काका री निजर उणरै माथा माथै पड़ी। केसा रौ काळौ मुगट वानै हौ जिण सूं ई दूणौ दीस्यौ। पूजती कद-काठी। साचै ढळचौ ओपतौ डोल। ओपता गाभा। जगत-काका रै चित्रांम. अचाणचक की भज पडग्यौ। नमस्कार झेल्यां उपरांत जगत-काका ठीमर सुर मे कह्यौ, 'अबार अेक जरूरी काम मे रूधोड़ौ हूं, जे खास अड़ाव नी व्है तौ काले पधारज्यौ।'

मुरळीधर पुरोहित रै नीं सुभाव में गळेटा अर नीं उणरी बो नी में लाग-लपेट। पेटा री वात सीधी होठां दरसाई, 'खास अड़ाव नी व्हियां बिरथा डाफा क्यूं खावतो...।'

वौ धकै ई की कैवणी चावतौ पण जगत-काका सूं नेठाव नी व्हियौ। बिचाळै ई मोसा री तीख मे बोल्या, 'म्हारै पाखती आवण नै बिरथा डाफा समझो तौ अठै पधारण री भूल ई क्यू कीवी?'

मुरळीधर मजमा कानी उडनी मीट उछेर लिलाड में सळ घालतौ बोल्यौ, 'की अँडी ई अवळी-आडी पजगी, जिण सू भाडै आवणौ पड़चौ नीतर सात बरसां में इण दफ्तर रै बारणै ई नी चढचौ।'

अँड़ा लूखा अर विस्वादा बोल जगत-काका इत्तै मान होय पैली वळा ई किणी रै मूडै सुण्या। कांनां झरणाट माची। माडै मुळक ढोळता कैंवण लागा, 'पण म्हैं तौ बिना काम मिळै-भेंटै उणरौ कायदौ वत्तो राख्।'

'आपरी दातारी किण सू छानी, पण म्हनै बिना कांम अठी-उठी झांकण री वेळा ई कठै! जे मा गठिया-वाय में नी झिलती तौ बदळी सारू अरजी ई नीं

देवतौ।'

आधी-दूधी अध्यापिकावां मुरळीधर रौ सुभाव ओळखती ही। सुलोचना राय रौ मन काबू में नी रह्यौ तौ उणनै बोलणौ ई पड्यौ, 'आंनै पोथ्यां बाचण रौ बेजां चस्कौ, मायौ ई ऊंचौ नी व्है।'

परतख आखरां तौ आ अेक छोटी-सीक जाणकारी ही, पण बोलण री लकब सूं जगत-काका रै कानां सुलोचना री बात खासी रडकी। वांनै आखरां रै तळ अजांण प्रीत रौ पुट लखायौ। दूणी जूंझळ मळकी। बरसां सूं हेवा व्हियोड़ै कानां सुलोचना री बोली कित्ती सुवावणी लागती। आज पैली वळा उणरौ सादौ सुर ई बेसुरौ चुभ्यौ। चीकणै केसां री ठौड उणरै माथै फगत काळौ-काळौ लूखौ रंग ई निगै आयौ। रूपाळौ उणियारौ कीं भंव्योडौ-भंव्योडौ दीस्यौ। पण पैला मुरळीधर सूं पड़पणौ जरूरी है। उणरै मूंडै गंठिया वाय अर बदळी री बात सुणतां ई वांरै माथा मे गरणाटौ माची। दराज सूं अेक लिफाफौ काढ्यौ अर मुरळीधर रै साम्ही करता बूझ्यौ, 'अै सोवन आखर आपरा इज है ?'

सवाल रौ म्यांनौ सावळ समझ मे नीं आयौ तौ मुरळीधर गताघम मे पजतौ थकौ कैवण लागौ, 'सोवन आखरा री मरम तौ आप जाणौ, औ पतौ म्हैं इज लिख्यौ।'

झूलरा रै साम्ही लिफाफौ बगावता जगत-काका इचरज रै लटकां कैवण लागा, 'सात बरसां सूं सिक्सा-विभाग में मास्टरी री गादी खूंदै अर पिंडां नै आही जाच कोनी के म्हारौ नाव कांई है ?'

केई बरसां उपरांत आपरै साचैला नाव री ओळखांण मांग्रत धकै पड़ी तौ जगत-काका री रग-रग सूतीजती लखाई। उपनिदेसक सिक्सा-विभाग, जोधपुर रै पदै सौ जगत-प्रसाद दाधीच रौ नांव बांच्या मजमा रै ई इचरज रौ पार नी रह्यौ। लिफाफा रै आखरां मीट गडाय अनुराधा भडारी बोली, 'जगत-काका, म्हानै तौ साचाणी आज ई आच पड़ी के आपरौ नाव जगत-प्रसाद दाधीच है। कैडा सिरै नाव रौ कैड़ौ पोलाळौ करयौ!'

वा तौ टिपळकी रै ओळावै जगत-काका नै छेड़णा चावती, पण जगत-काका तौ पैला सूं ई पूजता छिडयोडा हा। आखतै सुर बोल्या, 'जद इज तौ पनौ बांच्यां कालै सूं ई म्हारै झाळ-झाळ ऊठगी। रावळी बाट जोवतौ इज हो।'

'आप बाट जोई अर म्हैं हाजर व्हैगौ। पण म्हारा ठोठ मगज मे हाल ई आ बात नीं जमी के साचैला नांव सूं आपनै इत्ती चिड क्यूं ?'

जगत-काका पूड़त्तर देवण सारू तांथा-मारा करण लागा के गुल अडवानी मुरळीधर रै साम्ही देखती बोली, 'जणा-जणा रै मूंडै जडाव री जाग आ जगत-काका री बतळावण ई तौ आपरौ साचैलौ नाव है।'

'वाह-वाह!' जगत-काका कुरसी सूं थोडा उछळता कैवण लागा, 'थारै गळै कैड़ी मीठी राजस्थानी फबै। सुण्यां ई जावौ। वाह गुल वाह! यूं तौ अठा रा बासिंदा नै ई मात करै।'

जगत-काका आरमपार देखती मीट गडाय गुल अडवांनी रौ उणियारौ देखण लागा। बापडा गुलाब आं गालां री पगम नै कद पूगै! सांबी-सांबी मदछरी

आख्या । वाका भंवारा । जाडा भोपणा । पतळा गुलाबी होठ जांणै फगत बाव्या देवण सारू ई बण्या व्है । ठोडी री खाडो पाधरो काळजै ठीडो करै । जे आ तीखी नाक जगत-काका रै हाथै लाग जाती तो आखो डोळ सुधर जातो । पण समझवान लुगाया री इदकाई के वै रूप अर ऊमर री की खास गिनरत नी करै । मोटी बात है सुभाव ।

तठा उपरात जगत-काका रै राम जाणै काई जची सो दो-तीन वळा मूडो मस्कौर, 'जगत-प्रकास दाधीच, जगत-प्रकास दाधीच' री सूग उलाकता, लिफाफा रा टुकड़ा मसळ-मसळाय रद्दी री टोकरी तालकै करया ।

वात अर बात री नांव । कैड़ी अचीती धुरळियौ मच्यौ । लिफाफो फाड़्यो तो की कोनी, अरजी तो ठाणै इज व्हैला । वो नीठ अटकतो-अटकतो बोल्यौ, 'जे मां री अैड़ी मादगी मे ई सेवा नी करू तो आ नौकरी म्हारै काई भाव पड़ै !'

'तो छाड़दो नौकरी । किणी माथै किरियावर थोड़ो ई है !'

'किरियावर तो किण माथै करू, पण नौकरी छोड़ू जैड़ो म्हारो ठरको कोनी ।'

'ठरको कोनी के लोतर कोनी ?'

कुत्तो भुसै तो ई जगत-काका बुचकारनै ढावै, पण आज तो वै मुळगो ई चेतो बिसरग्या । पण मुरळीधर आपरै आपा में हो । निरांत सू बोल्यौ, 'आप म्हारा लोतर ई जाणणो चावो तो मोहनगढ़ रै चोखळै म्हारा विद्यारथियां नै बूझो ।'

'बूझूला, झख मारनै बूझूला । म्हारै दूजो काम ई काई, जको पाकिस्तान रै काठै धोरा री धूळ फाकण सारू गदका खावू । अर वै ई पिंडा रै लोतर री तपास खातर ! जे लातर री लवलेस ई व्हैतो तो आपनै इण बात री सुभट सोय व्हैती के म्हारा सू बदळी री चरचा खातर आ वेळा नी है ।'

'भूल व्हैगी । आपनै भूल व्हैगी । माफी बगसावो । सात बरसा में किणी दफ्तर रै गळाकर ई नी फरूक्यो । पछै कीकर सोय व्है ! आप चिपतां ई फरमाय देता तो इत्ती छोड़ नी व्हैती । काल वगत-परवांण ई आवूला ।'

लुळताई री अैड़ी चासणी देखी तो जगत-काका ई खोळा पड़ग्या । अपणायत रै सुर खरावता बोल्या, 'पण गरूजी, कान खोल सुभट सुण लीजो के अेक सौ आठ वळा पाना माथै जगत-काका रो नाव लिख्यां टाळ सुणवाई नी व्हैला ।'

पण वौ तो हामळ भरया बिना ई बहीर व्हैगो । अणूती अचेरी लागी, जांणै मूठी वांनी वारै माजनै उछाळ ढळची व्है ।

थोड़ी ताळ ताई तो साम्ही बैठी लुगाया रा उणियारा उड़क-धुड़क अेक-मेख व्हियोड़ा दीस्या । पछै होळै-होळै मीट निंतरया, खुदोखुद रै ई खोळ्या गोटी-ज्योड़ा, फदाक मारी तो वानै न्यारी-न्यारी लुगाया रा न्यारा-न्यारा उणियारा पाछा सुभट दीखण लागा । किणी सू नवी तो किणी सू जूनी ओळखांण । किणी री ओळख में को रांझो नी । आ सुलोचना राय । आ प्रतिभा केलकर । आ गुल अडवानी । आ अनुराधा भंडारी ।

'थारो नांव मा...माया पंवार इज है नी ?' जगत-काका पाधरै हाय सांनी करतां बूझ्यो ।

'हां।' संकती-संकती इत्ती दौरी हांमळ भरीजी, जांणै गळै फंसतो-फंसतो कोई मूळ निकळ्यो व्है।

'बावळी कठा री !' जगत-काका चोळ रै उछाव दोनूं हाथ पुरस रै सीगै लांबा पसार बोल्या, 'जगत-काका सू मिळण रो ओ ढग कोनी। अठै आवो जद झिझक, सकोच अर लाज सात ताळा घरै जड़नै आवो। आजादी, सतरै टका आजादी तो म्हारै आळू-दोळू घूमर रमै। समझो, इण सार बात नै समझो।'

इण अमोलक सीख रै बखाण जगत-काका री आजाद मीट न्यारा-न्यारा उणियारा रगदाळण लागी। नवा उणियारा रो तो महातम ई न्यारो। भेद...अछेही भेद चापळ्योड़ो व्है उणरै पडदै। अगम भेद रो भरम ई तो सिरै आणद है। नीं भगवान रै भेद रो पार, ना लुगाया रै भेद रो पार। जे परमेस्वर भूल-चूक सू मिनखा री दुनिया म लुगाई रो वरदान नी पूरतो तो ओ विरगो ससार जीवण जोगो ई नी रैवतो। लुगाया रा रूप लारै ई आ कुदरत रूपाळी लागै। नीतर चांदणी, बिरखा अर बापड़ा फूलां म धरयो ई कांई ! तद लुगाया री सगत अेक नाकुछ मास्टर री गिनरत करया जगत-काका नै छाजै भला। अणछक वा उणियारा रै कामण वानै अेक चिळको हवा मे तिरतो दीस्यो। अर दूजै ई छिण चिळका रै मांय अेक धूंधळो-धूंधळो चित्राम परगट व्हियो - सुथराई सू टाळ काढ़योडी। फूंदी-कट मूछ्या। काट रै साम्हीसाम्ह झबझबातो साथ्यो। जगत-काका रो जीव अजेज उण चित्राम म रमग्यो। हाठा जगमगतो मुळक सांचरी। कुरसी माथै उछळता जोर सू बोल्या, 'जे म्हैं हिटलर व्हैतो तो...!'

जूनी के नवी किणी महिला नै किणी भात रो इचरज नी व्हियो। मोटा मिनखा रै आगै पाखोजण रो सुभाव किणा सू छानो नी हो। आजादी री सीख रै बखाण माया पवार रो खासो-भलो सकाच मिटग्यो हो। मुळक मे इचरज रो भेळ छितरावती बोली, 'बापड़ा मुरळाधर री मौत तो अधरै ही। के तो गैस चेंबर मे के...!'

जगत-काका अणूती हूंस रै वधार विचाळै ई बोल्या, 'अेक बावळी में तो घाटो नी। जे म्हैं हिटलर व्हैतो तो मुरळा-फुरळी नै ओळखण रो तत ई कद जुड़तो। सावळ सोच-विचारनै छाण काढ़ो, जे म्हैं हिटलर व्हैतो...!

'तो म्हानै ओ सवाल सुणण रो सभाग ई कद सजतो ?' प्रतिमा केलकर री संका वाजब ही। पण सुलोचना राय नै उकराळपा टाळ रजत ई नी व्हैती। फगत उकराळण रो साखो सजणो चाहीजतो। पछै कागलो चूकै तो वा चूकती। लिलाड़ मे मळ घाल बोली, 'जगत-काका, जे आप हिटलर व्हैता तो रूस माथै मवै ई चढ़ाई नीं करता। आखी दुनिया री जीत अधरै ही।'

'ऊ हू।' कबूड़ा रा गुटरगू रै ढाळै जगत-काका भरपै गळै नटता सुलोचना साम्ही आधी पलका मीच जायो। दूणा रूपाळा अर मोवनी दीसी। मगनी-मगनी सांसनो घमम मे रगत री ठोड़ जाणै दारू पुळ्योड़ो। गळै तान सठा री कुदरती कठो मोरयां रा हार नै ई मात करै। हिरणां नै ई ईनको व्है अैड़ी हेमळो आख्यां। जगत-काका, छाटी मूफाड़ खोणी मुळक छितरावता कह्यो, 'जे म्है हिटलर व्हैतो तो दुनिया नै जुद्ध रै बदळै प्रेम सू जीततो। फगत प्रेम सू। बात री बात में साघू

जद्दूदियां रा प्रांण बच जाता।'

माई उफणती हंसी नै आवगै करार नीठ ढाबती सुलोचना मिळती मारी, 'आखो ईस्ट यूरोप रूसिया री खूनी डाढ सूं बचलो जको सवाय मे।'

आ तौ जमराज हिटलर रै ई बस परबारी बात ही, पछै जगत-काका री तौ ठरको ई काई। मोळा पड़ता थका होळै-सीक हांमळ भरी, 'हा, सो तो बचतौ ई।' पछै करम ठोकता सूग रै आखरां कैवण लागा, 'अैड़ा गधा-गोदा नै कुण मास्टर बणाय दिया ? तो म्हैं सिक्सा-मंत्री व्हैतो तो अैड़ा पत-बायरा मास्टरिया नै अेक ई झटकै मोकूफ कर देतो।'

'नी जगत-काका नी, हिटलर रै उपरांत सिक्सा-मंत्री रौ औ नाकुछ पद आपनै नी सोहै। गोळी मारो।' अनुराधा भंडारी हेजळो ओड़ो देवती बोली।

'धीमै। धीमै। गांधीजी री तस्वीर रै सुणतां गोळी-वोळी री बात मत करो।' जगत-काका आपरै होठां हाथ देय उणनै पालतां कह्यो।

अर उण दिन विना हित्या अर हिंसा रै, हिटलर वाळो मजमो प्रेम सू बिखर-ग्यो। पण जगत-काका तो मजमा रा इज पूतळा हा। वांनै लुगाया रै मजमा टाळ आवड़तो इज नी। जाणै अेकला आपोआप सू डरपै। खुदोखुद रै सांमना नै इण गत टाळता वांणै कोई फुळातरो वांरा सूं वंतळ करण री मंसा दरसाई व्है। इण खातर अदीतवार अर दूजी तातीला वांनै खारी आक लागती। जे किणी तातील मजमा री जुगत नी जुड़ती तो दिन धकावणो भाखर व्है जातो। के तो मजमो जुड़तो जठै वै भिळ जाता अर के आपरै घरै मजमो भेळो कर लेता। नींद रै सपनां ईं जे मजमा री जाजम नी जमती तो वांरी नींद उड जाती। पसवाड़ा दर पसवाड़ा बाळण जोगड़ी रात रो नीठ काळस छूटतो। मांय री मांय धुकती-छीजती मिड़कल घरवाळी सू वांनै ओक्या इज वैठगी। घरवाळी है तो घर सभाळै—फूस वाहीदो, बरतन-बासण, रसोई अर धोवा धावो।

दूजै दिन सागै ई मजमै अेक पजाबी निरीक्सिका री नांमी जोग सजग्यो। काता वहल। रूप-जोबन री अैड़ो निरवाळो मेळ जाणै आभै री बीज बादळां रो ठायो छोड उणरै अंगा आसरो मांग्यो। झाकी मिळतां ई जगत-काका कोड सू पूछ्यो, 'इत्ता दिन किसै अदीठ बनवास ढबणो पड़्यो ? पूरा अेक महीना सूं नित गैर-हाजरी मंडै।'

'गंगानगर मां अर भाई रै पाखती गी। केई महीनां सूं मिळणो नी व्हियो।'

'मां अर भाई रै गनै लाई जगत-काका री कुण गिनरत करै ! रगत विचै पांणी घणो पतळो व्है।'

'पण पाणी री गरज रगत सू फद सरै ?'

'वाह, वाह ! कैड़ी हाथोहाथ फारगती कीवी। जैड़ी ऊंडी समझ, जैड़ो अबोट रूप, वैड़ो ई माकूल पड़ूत्तर।'

'अबोट ! अबोट कीकर ? दो टाबर व्हियां ई इणरो रूप हाल अबोट है ?' गुल अडवांनी जगत-काका नै झनझनावण रै मिस कह्यो।

'हां अबोट ! पालर पांणी रै उनमांन अबोट। घणी बूझो तो सेडावू दूध रै उनमांन अबोट। लुगाई रो मन अर आतमा विटळै तो विटळै पण उणरी काया कदे

ई नीं विटळै। फगत मौत अर बूढ़ापा टाळ लुगाई रै डील रौ किणी रै हाथां बिगाड़ौ नी व्हे।'

जगत-काका री वेळ बातां री अंगै ई पत नी ही, इण खातर वांरै गचळकां रौ कोई भूंडौ नी मांनतौ। तौ ई सुलोचना राय रीस रौ दिखावटी स्वांग करतां कह्यौ, 'जद तौ आपरी निजर में पातर री काया ई अबोट है? रिपिया रै लोभ रूप रौ धंधौ करती फूटियां ई सेडावू दूध री भांत अबोट है? आप म्हांनै वां लाज बायरी लुगायां रै जोड़ै गिणौ? म्हां तौ आपरौ इत्तौ कांण-कायदौ राखां अर आप...!'

'कांन पकडूं। दोनूं कान पकडूं। मोटी भूल व्हैगी। नीतर लुगायां री देह तौ अळगी, वारी छीयां धुराधुर री मरजाद राखणियौ जगत-काका टाळ नी तौ जलमियौ अर नी जलमैला। हा, रिपियां रै लोभ तौ धकलौ जमारौ ई विटळै, पण प्रीत रै सीगै परण्योड़ी लुगाई तकात साचैला प्रेमी नै परसै तौ उणरी काया कदै ई नी विटळै। थे जांणौ के म्हैं मरचा ई झूठ नी बोलूं!'

'आ बात म्हे नी जांणा तौ दूजौ कुण जाणैला?' कांता बहल मुळकती थकी बोली, 'पण जगत-काका, अबार तौ म्हैं आपरै पाखती अेक जरूरी कांम आई।'

'तौ इण में संकोच री किसी बात! दस काम बतावौ। निसंक बतावौ। थांरा कांम सारू ई तौ म्हैं आ मळीच नौकरी करूं। बोलौ बोलौ, पैला कांम, पछै राम।'

'अेक चपडासी री ठौड़ खाली सुणी?'

'हां, हां, कैवौ जिणनै ई राख दूं।'

'अेक विधवा लुगाई नै आपरै भरोसै ई सायै लाई।'

'जरूर, जरूर। आज ई आदेस कर दूं। जगत-काका रै भरोसा री भैंस पाडौ नीं लावै।'

तद वा लारै मुडनै हेलौ मारयौ, 'रांमू री मां, रांमू री मां।'

चपडासी रै सागै रामू री मां कमरा में आई। उणियारै निजर पडणा रै समचै ई जगत-काका रै मूंडै अजांण्या बोल रळक पडया, 'अैड़ी जवांन अर विधवा! भगवांन आंधौ तौ नी व्हैगौ?'

'भगवान आंधौ व्हियौ तौ छौ व्हियौ। आपरी आंख्यां साजी-सूरी चाहीजै। बापडी विखा रा दिन सोरा-दोरा तोड लेवैला। म्हैं खुद समझावण में पाछ नी राखी, पण अेकाअेक बेटा री खातर आ दूजौ ब्याव ई नी करणौ चावै। नीतर इण री जात में दाछंट नाता व्हे।'

'जद तौ गजब री मरद-लुगाई है। अबार ई हाथोहाथ आदेस सूंपूं। जेज किण बात री। बैठ, कुरसी माथै बैठ।'

जगत-काका रौ अैड़ौ कोड अर अैड़ी अंतायळ देख चपडासी रै खळबळौ माच्यौ। खुणिया सूदा हाथ जोड़ कह्यौ, 'इण खाली ठौड़ सारू तौ आप म्हारा भाई नै धावस बधायौ।'

चपडासी रै याद दिरावतां ई पांनरै पड़योड़ी बात तुरंत याद आयगी। थोड़ा सचरांणा पड़ता थका कैवण लागा, 'धावस बंधायौ तौ नटू थोड़ौ ई हूं। पण थूं ई बता, जे थूं म्हारी ठौड़ व्हैतौ तौ जवांन विधवा माथै थोड़ी-घणी दया नीं विचारतौ?'

चपड़ासी नाक री डांडी माथै दो-तीन वळा आंगळी फेरतौ बोल्यौ, 'अैड़ी आस म्हैं नोज करूं। अै तौ पूरब-जलम रा करम आडा आवै। म्हारी अैड़ी पुन्याई कठै!'

'देख, भंडो नीं मानै तौ आज थनै लाख रिपियां री अेक बात समझावूं। थोड़ी ताळ वास्तै सोच तौ खरी, थू खुद खासौ समझदार है, जे इण भांत गाव-गांव सूं खेती री हलीली छिटकाय सगळा करसा राज री नौकरियां खातर राचण लागा तौ देस री वळबळती आबादी नै धान कुण पूरैला? सोचण री बात है।'

'गरीब-परवर, म्हारी अैडी ऊडी समझ कठै? पण म्हारा अेक भाई री खातर देस में धान रौ घाटौ पड़ै तौ जावण दौ। धणी रौ धणी कुण?'

'धणी! म्हैं तौ थां लोगां रौ चाकर हूं, चाकर! पण लाडी, थू किसौ नी जांणै के थोड़ौ-थोड़ौ करतां ईं लक लागै।' औ सिरै मतर सुणाय जगत-काका च्यारू मेर भाळ्यौ। जवान विधवा नै ऊभी देखी तौ वळै जोर देय कह्यौ, 'बैठ बैठ, कुरसी माथै बैठ। आजाद भारत मे सै बराबर है। कोई छोटौ-मोटौ कोनीं।'

पण रांमू री मां कुरसी माथै नीं बैठी। आजाद भारत सू उणनै कांईं तल्लौ-मल्लौ। सकती-सकती बोली, 'म्हैं तौ आज दिन तांईं कुरसी माथै बैठी इज कोनी। नामून थोड़ो ईं बधै!'

अजांण भोळप सूं छिटक्या आखर कुरसी माथै जम्योड़ी अध्यापिकावां नै खारा लाग्या। बैठण सारू जगत-काका रौ मिजळौ वाद ई वांनै नी सुहायौ। सगळी आंख्यां अेक सरीसी रगत साचरी। तद झूलरा री अछेरी मीट रौ झबको पड़तां ईं जगत-काका रौ माथौ ठणक्यौ। पछै उणनै कुरसी माथै बिठावण खातर मुळगौ ई याद नी करचौ। आमण-दूमणौ चपड़ासी कमरा रै बारै बैंच माथै बोलौ-बोलौ बैठग्यौ।

आज रा झूलरा में दो लुगायां वेसी ही। अेक तौ रांमू री मां अर दूजी कांता बहल। लुगायां तौ सदावंत बसी ई चाहीजै। पण बूढ़ी-ठाडी नी। जवान अर रूपाळी। नीतर जगत-काका रौ जोह चोळ-जोसा ईं नी चढ़ै। पद अर भणाई रै छोगा री मांनता नी व्है तौ वा नवी चपड़ासण दीखतै उणियारै किणी सूं माड़ी नी ही। जात, धरम, भणाई अर पद सू रूप-जोबन रौ कांईं वास्तौ! जगत-काका दो-तीन वळा चोर निजर विधवा री जवानी रौ तूमार जोय, साम्ही बैठा झूलरा रै उणियारां मीट घोळ दी। अर थोड़ी ताळ उपरांत वारी आख्यां साम्ही चिळका री अेक गोळ चकरियौ झबूकण लागौ—धोळी टोपी, धोळौ ई झब्बौ अर धोळी ई धोती। इकलंगी। उणी पलक सै म्यानौ समझ मे आयग्यौ। गेळीज्योड़ै सुर कैवण लागा, 'हिटलर बण्यां थारै डाफी चढ़ै तौ हिटलर लारै धूळ वगावूं। पण जे म्हैं राजस्थांन रौ मुख्यमत्री व्हैतौ तौ साचाणी इण सूखी धरतां रै थळ-धोरां री काया पलट कर देतौ। बिना अेक कोडौ खरचियां। हां, बिना अेक कोडौ खरचिया। बतावौ कीकर?'

कुण कांईं बतावतौ! पण जगत-काका रै घड़ी-घड़ी घोदायां प्रतिभा केलकर मूंडो मस्कोर कह्यौ, 'जद आप तेवड़ी हौ तौ आप ई बतावौ। म्हैं मुख्य-मंत्री बणू तौ

ई नी विटळै। फगत मौत अर बूढ़ापा टाळ लुगाई रै डील रौ किणी रै हाथां विगाड़ौ नी व्है।'

जगत-काका री वेळ बातां री अंगै ई पत नी ही, इण खातर वारै गचळकां री कोई भूंडो नी मानतौ। तौ ई सुलोचना राय रीस री दिखावटी स्वांग करता कह्यौ, 'जद तौ आपरी निजर में पातर री काया ई अबोट है? रिपियां रै लोभ रूप रौ धंधौ करतौ पूंदियां ई सेडावू दूध री भात अबोट है? आप म्हांनै वां लाज वायरी लुगायां रै जोड़ै गिणौ? म्हां तौ आपरौ इत्तौ कांण-कायदौ राखां अर आप...!'

'कांन पकड़ूं। दोनूं कांन पकड़ूं। मोटी भूल व्हैगी। नीतर लुगायां री देह तौ अळगी, वांरी छीयां घुराघुर री मरजाद राखणियौ जगत-काका टाळ नी तौ जलमियौ अर नी जलमैला। हां, रिपियां रै लोभ तौ धकलौ जमारौ ई विटळै, पण प्रीत रै सीगै परण्योड़ी लुगाई तकात साचैला प्रेमी नै परसै तौ उणरी काया कदै ई नी विटळै। थें जांणौ के म्हैं मरघां ई झूठ नी बोलूं!'

'आ बात म्हे नी जांणां तौ दूजौ कुण जांणैला?' कांता वहल मुळकती थकी बोली, 'पण जगत-काका, अबार तौ म्हैं आपरै पाखती अेक जरूरी कांम आई।'

'तौ इण मे संकोच री किसी बात! दस कांम बतावौ। निसंक बतावौ। थांरा कांम सारू ई तौ म्हैं आ मळोच नोकरी करूं। बोलौ बोलौ, पैला कांम, पछै रांम।'

'अेक चपडासी री ठौड़ खाली सुणी?'

'हां, हा. कैवौ जिणनै ई राख दूं।'

'अेक विधवा लुगाई नै आपरै भरोसै ई साथै लाई।'

'जरूर, जरूर। आज ई आदेस कर दूं। जगत-काका रै भरोसा री भेंस पाडौ नीं लावै।'

तद वा लारै मुड़नै हेलौ मारयौ, 'रांमू री मां, रांमू री मां।'

चपडासी रै सागै रांमू री मां कमरा मे आई। उणियारै निजर पडणा रै समचै ई जगत-काका रै मूंडै अजांण्या बोल रळक पड़्या, 'अैड़ी जवांन अर विधवा! भगवांन आंधौ तौ नी व्हैगौ?'

'भगवान आंधौ व्हियौ तौ छौ व्हियौ। आपरी आख्यां साजी-सूरी चाहीजै। बापडी विखा रा दिन सोरा-दोरा तोड लेवैला। म्हे खुद समझावण मे पाछ नी राखी, पण अेकाअेक बेटा री खातर आ दूजौ ब्याव ई नी करणौ चावै। नीतर इण री जात में दाछंट नाता व्है।'

'जद तौ गजब री मरद-लुगाई है। अबार ई हाथोहाथ आदेस सूंपूं। जेज किण बात री। बैठ, कुरसी माथै बैठ।'

जगत-काका री अैडो कोड अर अैडी अंतावळ देख चपडासी रै खळबळी माच्यौ। खुणिया सूदा हाथ जोड़ कह्यौ, 'इण खाली ठौड़ सारू तौ आप म्हारा भाई नै थावस बंधायौ।'

चपडासी रै याद दिरावतां ई पांतरै पड्योड़ी बात तुरंत याद आयगी। थोड़ा लचकाणा पड़ता थका कैवण लागा, 'थावस बंधायौ तौ नटूं थोडौ ई हूं। पण थूं ई बता, जे थूं म्हारी ठौड़ व्हैतौ तौ जवान विधवा माथै थोड़ी-घणी दया नी विचारतौ?'

चपड़ासी नाक री डांडी माथै दो-तीन वळा आंगळी फेरतौ बोल्यौ, 'अैड़ी आस म्हैं नोज करूं। अै तौ पूरब-जलम रा करम आडा आवै। म्हारी अैड़ी पुन्याई कठै!'

'देख, भूंडो नी मांनै तौ आज थनै लाख रिपियां री अेक बात समझावूं। थोड़ी ताळ वास्तै सोच तौ खरी, थूं खुद खासौ समझदार है, जे इण भांत गाव-गांव सूं खेती रौ हूलीलौ छिटकाय सगळा करसा राज री नौकरियां खातर रांचण लागा तौ देस री कळबळती आबादी नैं धान कुण पूरैला? सोचण री बात है।'

'गरीब-परवर, म्हारी अैडी ऊंडी समझ कठै? पण म्हारा अेक भाई री खातर देस मे धांन रौ घाटौ पड़ै तौ जावण दौ। धणी रौ धणी कुण?'

'धणी! म्हैं तौ थां लोगां रौ चाकर हूं, चाकर! पण लाडी, थूं किसौ नी जांणै के थोड़ो-थोड़ो करता ईं लंक लागै।' ओ सिरै मतर सुणाय जगत-काका च्यारूं मेर भाळचौ। जवांन विधवा नै ऊभी देखी तौ वळै जोर देय कह्यौ, 'बैठ बैठ, कुरसी माथै बैठ। आजाद भारत मे सै बराबर है। कोई छोटौ-मोटौ कोनी।'

पण रांमू री मां कुरसी माथै नी बैठी। आजाद भारत सूं उणनै काईं तल्लो-मल्लौ। सकती-सकती बोली, 'म्हैं तौ आज दिन ताईं कुरसी माथै बैठी इज कोनी। नामून थोड़ो ई बधै!'

अजाण भोळप सूं छिटक्या आखर कुरसी माथै जम्योड़ी अध्यापिकावां नै खारा लाग्या। बैठण सारू जगत-काका री मिजळी वाद ई वांनै नी सुहायी। सगळी आंख्यां अेक सरीसी रगत साचरी। तद झूलरा री अछेरी मीट रौ झबको पड़ता ईं जगत-काका रौ माथौ ठणक्यौ। पछै उणनै कुरसी माथै बिठावण खातर मुळगौ ई याद नी करचौ। आंमण-दूमणौ चपड़ासी कमरा रै बारै बैंच माथै बोलौ-बोलौ बैठग्यौ।

आज रा झूलरा में दो लुगायां वेसी ही। अेक तौ रांमू री मां अर दूजी कांता बहल। लुगायां तौ सदावंत बसी ई चाहीजै। पण बूढी-ठाडी नी। जवान अर रूपाळी। नीतर जगत-काका रौ जोह चोळ-जोसा ई नी चढ़ै। पद अर भणाई रै छोगा री मांनता नी व्है तौ वा नवी चपड़ासण दीखतै उणियारै किणी सूं माड़ी नी ही। जात, धरम, भणाई अर पद सूं रूप-जोबन रौ काईं वास्तौ! जगत-काका दो-तीन वळा चोर निजर विधवा री जवानी रौ तूमार जोय, साम्ही बैठा झूलरा रै उणियारां मीट घोळ दी। अर थोड़ी ताळ उपरात वारी आंख्यां साम्ही चिळका रौ अेक गोळ चकरियौ झबूकण लागौ—धोळी टोपी, धोळौ ई झब्बौ अर धोळी ई धोती। इकलंगी। उणी पलक सैं म्यानौ समझ मे आयग्यौ। गेळीज्योड़ै सुर कैंवण लागा, 'हिटलर बण्यां थारै डाफो चढ़ै तौ हिटलर लारै धूळ बगावूं। पण जे म्हैं राजस्थांन रौ मुख्यमत्री व्हैतौ तौ साचाणी इण सूखी धरती रै थळ-धोरां री काया पलट कर देतौ। बिना अेक कोडौ खरचियां। हां, बिना अेक कोडौ खरचियां। बतावौ कीकर?'

कुण काईं बतावती! पण जगत-काका रै घड़ी-घड़ी धोदायां प्रतिभा केलकर मूंढौ मसकौर कह्यौ, 'जद आप तेवड़ी हौ तौ आप ई बतावौ। म्हैं मुख्य-मंत्री बणूं तौ

म्हारै मन री वात बतावूं।'

'बता, जरूर बता, थनैं म्हारी सोगन। आ कोई वेजा वात कोनी। जे थूं मुख्य-मंत्री बणैं तौ सिरैपोत किसौ कांम करैला ?' जोर सूं ताळी बजाय, वैं हंसता थका बूझ्यौ।

सद वा नीची घूण करयां होठैं-सीक पड़ूत्तर दियौ, 'आपनैं हाका-धाका निदेसक रो पद सूंप देवूला।'

सूरज आडी वादळी आयां कमरा में उजास की मगसौ पड़चौ तौ ई किणी नैं की वेरौ नी पटचौ। सगळा ई आप-आपरै चांनणै रूंधोड़ा हा। पण जगत-काका नैं प्रतिभा-केलकर री मया सूं संतोख री ठौड़ सांम्ही अळखावणी लागी। काळजै चभीकौ ऊठचौ। वारी मातैती मे चाकरी करण वाळी तौ वणैं मुख्य-मंत्री अर वैं फगत निदेसक। नित इणरा तोख उठावणा कीकर झरै ! फाटोड़ी मीट उणरै सांम्ही जोयौ—रोजीना री गळाई अबार उत्ती फूठरी नीं लागी। पळकती पसम ई लूखी-लूखी निगैं आई। सुलोचना राय जगत-काका रै मन री वात तुरंत लखगी। अडौ-अड़ वैठी प्रतिभा केलकर नैं खुणी सूं घोदावती बोली, 'वस निदेसक वणायां ई नेहचौ व्है जावैला। जे म्हैं राजस्थान री मुख्य-मंत्री बणूं तो जगत-काका नैं दूजै ई दिन सबसूं पैली सिवसा-मंत्री री सपथ दिरावूं।'

'ओ मूडो अर मसूर री दाळ। नी नौ मण तेल व्है अर नीं राधा नाचैं।' कांता बहल होठ मुळमुळावती डोढ़ फेंकी।

जगत-काका दो-तीन वळा मोडक हिलाय कह्यौ, 'आं हां, नौ मण तेल री किसी वात ! आज-काल तो राधा रै नाचण सारू आधौ पळी तेल ई उबरतौ पड़चौ। मुख्य-मंत्री बणणौ कोई मोटी वात कोनी। देखता-देखतां केई मुख्य-मंत्री पलटग्या। मोटी बात है जमाऊ कांम करणौ। जिण सूं पैल-फटकारै धोरां री छिब ई वदळ जावै। फगत न्यावेक निजर खुली राख्यां सैं की सूझै।'

तीन चार वळा चिमटचां बजाय रूपाळी विधवा रै सांम्ही भाळ वैं धकै कैवण लागा, 'काती महीनैं, तीसूं तारीख, नित जांझरकै, गांव-गांव री लुगायां पीपळ सीचै। बिना किणी रै हुकम आदेस। पीढ़चां सूं। धणी बरजै तौ ई नी मांनै। क्यूं मांनै ? खुदोखुद रै सागैं धरती नैं सिणगारण वाळी वयू किणी री गिनार करै। वा तौ धरती रै बणाव-सिंगार सारू ई अवतरी। जे राजस्थान री अेक-अेक लिछमी रै अतस छत बारू मास बिरछ सीचण रा चम चाळ्या व्है तौ वैं किणरै पाली ढबै ! खेत, गळियारा, मारग, सड़क अर आबादी टाळ राजस्थान में सगळै रूंख ई रूंख झूमता लाधैला। जठी निजर दूकै उठी रूख अर विरछ ! विरछ अर रूंख ! सूखी धरती रै इण वढ़ब नजारा रौ कूतौ तौ करौ !'

अणछक बिजळी बद व्हिया घरर-घरर चालतौ पंखौ मतै ई ढबग्यौ। जगत-काका ऊंचौ भाळता कैवण लागा, 'राजस्थांन री सूखी धरती रै पांच-पांच पावंडै बिरछ व्हियां मेह-पांणी रौ कांई तुटार ! अलंघां री खड़चोड़ी बिरखा बूठैला—घरर...घरर...! नी राजस्थान नहर रौ पंपाळ अर नी वेरा-बावड़ियां रौ पराळ-कूटौ। नी बिजळी री लायपाय अर नीं पांणत रौ धयौ। रूखा री ठाडी छीया रै मौड़ै नी इत्ती तपत व्हैला अर नी पंखां री हुवा रै भरोसै परबस होवण री

लाचारी।'

माड़ै आंसू तो नी ढबै पण हंसी नै माड़ै ढावणी पड़ी। मातेती री लाचारी ई खासी माटी लाचारी है। मातेत ह्वियां ईं जाच पड़ै।

राजस्थान री कायापलट रै यावस जगत-काका मुख्य-मंत्री टाळ वळै किणी दूजी चावना सारू मन नी डुळायौ। वारै भावै तो कुररा-काळ रै नेगम विखा री सैं तळतळावण मिट-मिटाय, गांव-गाव अर ढांणी-ढपाणी नव-निध व्हैगा हा। धोरा री धरती रौ जायौ-जलम्यौ, धांन-चून अर धीणा-धापा री मोकळ रै हीडै हरख रै झाटा हीडतौ हो।

पावड़ो सुजायाड़ो चपड़ासी जद जगत-काका रै हाथ मुरळीधर पुरोहित रै नांव री परचो झलाई तो वै नाक मे सळ घाल ऊपरला मन सू हेलौ मारचौ, 'पधारौ, गरूजी माय पधारौ।'

सगळां सू जुहार करचा उपरात मुरळीधर जाणै काल रै रीझट रौ पिछतावौ करतौ व्है ज्यू बाल्यो, 'आज तो मिळण री वळा ई आयो ?'

जगत-काका रा मन म ईं काल रै धुराळया रो थोड़ौ-घणौ गिरगिराटौ हो। अबार आपरै हाथा राजस्थान री कायापलट ह्विया पूरी नेहचो धारघोड़ा हा। मनाग्याना मुरळाधर रै ढग-ढाळा रो पोत उकराळचो। चळा रै सिंधिया री भात पट्टा छटचोड़ा। छाजळ गट्टा। लारै चवड़ा अर धकै सांकड़ा। खीज अर भोपा-डफरो सू वख म आवाणयो ओ काटी नी। ओ तो जाणै आपरै इज दद-फद मे अळू-झियाड़ो। आपरै इज गोरखधन्धै गम्योड़ो। लुळताई राख्यां ईं नीठ परोटीजै तो तो परोटीजै। स्वारथी अर लोभी मिनख नै कवटणौ कित्तो सारो ! जगत-काका सुर मे मिठास घाळता बोल्या, 'काल री गुस हाल मिटी कानी दीसै ? अरे बाबा, जगत-काका सू मिळण म राड किसी तो वळा अर किसी कुवेळा ! जद मरजी व्है मिळ सको।'

पछै उणरै सांम्ही हाथ धकै करतां बूझ्यौ, 'लाया, अेक सौ आठ वळा लिखनै वो पानो लाया ?'

गावड़ री सांनी रै ओळावै उणरै नटतां ईं वारी सिग्या रै जाणै वांण इज वैगी। पावडै-पावडै रूख-बिरछा सू भरचौ-तरचौ वाल्हौ राजस्थान अक ई झोलै उजड़ग्यौ। हावगाव होय वळै बूझ्यौ, 'इत्तो खरावा उपरात ई भूलग्या ?'

'भूल्यौ तो कानी, पण मजाक री बात जाण म्हैं की यारै नी कीवी।'

'मजाक ! इण कुरसी माथै बैठो, म्है अेक मास्टर सू मजाक करूला ! लिखो, म्हारै साम्ही लिखो। अक सो आठ वळा--जगत-काका, जगत-काका।'

मुरळोधर नै तो ई पतियारौ नी ह्वियो। पतियारो करै जैड़ी बात ई नी ही। आपरै मपोर्ण ई वो सै मिनखा री परख करतो। अभरोसा अर इचरज रै पुट कंवण लागो, 'आप ई कंड़ी मोळी बाता करो, म्है तो सात साल सू बारै काळो-पाणी भुगतू अर आपनै फगत आपरै नाव री इज लवल्या लाग्योड़ी !'

सेवट जगत-काका नै आपरै खोळया री कार लापणी इज पड़ी। तांत्रिक जोगी रै रोस आखरा काढ़ता बोल्या, 'बारै ! धारै कठै ? हिन्दुस्तांन सू बारै ? सैं हिन्दुस्तानिया रौ अेक ई देस है—भारत ! मोटपार-काटो हौ, थोड़ी-घणी तो

जिम्मेवारी समझो।'

'पण आ जिम्मेवारी म्हारै अेकला रै इज पांती क्यूं आवै ? वळै ई चार बरस चूंकारो नी करतो, जे मा री अैड़ी कुजरबी मादगी...!'

'मादगी, मा री मादगी ! जे सगळा आप-आपरी मावां सारू इण विध कूकण लाग्या तो भारत-मां रा काई दीन व्हेला ! थारै भेळमभेळ म्हारो वगत क्यूं विगाड़ो? दूजा केई जरूरी काम है। रावळी मा खातर माथो पचावण री म्हनै वेळा ई कठै ! अै मादगियां-फादगियां रा धूतर दूजां नै बताजो।'

'आप जाणो के म्हैं झूठ बोलूं ?'

'आप नोज झूठ बोलो। झूठ-झूठ तो फगत म्हारै पांती आयो। म्हैं हळाहळ झूठ बोलूं।'

इण झूठ-साच रो भला काई निवेड़ो व्हैतो ! मुरळीधर अर उणरी मां रा करम इज माड़ा। नीतर जगत-काका रै मांणक-मूडै अैड़ा थोक सुणण री जरूरत ई किसी ही ! वो निरभागी तो वळै काल री भात नमस्कार करनै बोलो-बोलो वहीर व्हैगो। अबै आफरो झाड़ै तो ई किण माथै ? वळै लिलाड़ ठपकार वो ई छेहलो मतर सुणायो, 'ओ सिक्सा-विभाग ई अजब-गजब जंतुवां रो बाड़ो है !'

थोड़ी ताळ उपरात कमरा री हवा की तावै आई तो सुलोचना हीमत करनै बोली, 'आप भूंडो नी मांनो तो अेक बात कैवूं।'

'म्हे कदै ई किणी बात रो भूंडो नी मानूं। बोलो, निसंक बोलो। म्हारा सूं कैड़ो सकोच ?'

'इणरी मां साचाणी गंठिया-बाय में झिल्योड़ी है। अेकाअेक बेटो सात बरस सूं मोहनगढ़ धूळ फाकै। पड़ोसी रै नातै म्हैं थाड़ी-घणी तो सभाळ करू, पण मां रो जीव बेटा बिना नी धापै।'

'तो आपरी लुगाई नै मा रै पाखती राखै।'

'लुगाई ! लुगाई है किण ठालाभूला रै। परणीज्योड़ो व्हैतो तो की राझो नी हो। इणरी मा माथै थोड़ी दया विचारो।'

'म्हैं तो सेवट दया विचारूला ई, पण पानो लिखतां इणनै मौत क्यूं आवै ?'

मौत रै नांव सुलोचना रै आखै डील धूजणी वड़गी, तो ई बारै किणी भात रो भणकारो नी पड़ण दियो। होठ चाबतो हौळै-सीक बोली, 'म्हैं निरात सूं सावळ समझावूला।'

'तो इणरी बदळी जोधपुर खरी।'

'आप मोटा हो, मोटी विचारो।' कांता बहल डिगतां भरम रै थोगो लगायो।

'इण सूं मोटी वळै काई विचारू !' जगत-काका री लाचारी ई छोटी नीं ही।

दूजै अर तीजै दिन ई मुरळीधर रो लिख्योड़ो पानो जगत-काका रै हाथ मे नी आयो जित्तै वा इज उडीक अर वा इज तळतळावण। जाणै गंठिया-बाय री मांदगी वारै जोड़ा चापळगी व्है। नी व्हैती पीड़ रा चमीका हालण ढूका। लुगायां री सगत रो पूजतो आणंद भरै नी पड़तो। वांरो रूप-जोबन निरख्यां पैला जैड़ी सळवळ

नीं सांचरती। वै इज आंख्यां ही अर वौ इज रूप-जोबन हौ। अबै आ खांमी कीकर पूरीजै !

अेक-अेक दिन रिगसता, जगत-काका सारू आखौ पखवाड़ौ ई सूखौ निकळग्यौ। पण आज सागेड़ी बिरखा वूठी। कांता बहल रै डागळै उणरी बरस-गांठ रौ ठावकौ मजमौ जम्योड़ौ हौ। नवी चपडासण बध-बधनै कोड सूं सै कांम निवेड़ती ही। जगत-काका उणरै कांम सू जांणै जित्ता राजी हा। ऊंचै आभै सातम रा चांद रै ओळू-दोळू अणगिण तारा घेरौ घाल्योडा हा। हेटै धरती माथै दुनिया रै किणी अेक डागळै जगत-काका रै च्यारूंमेर महिलावां रै झूलरै घेरौ घाल्योड़ौ हौ। दोनूं ठौड़ हरख री चांदणी मावती नीं ही। पण तौ ई जगत-काका नैं चांदणी अणूंती दूमनी अर माद पिलांदरी निगै आयी। ऊंडै काळजै किणी तीखी सूळ रौ रड़क साल्हती ही। अठी-उठी री बातां-विगतां रै ओळावै जगत-काका सेवट सुलोचना राय नै बूझ्यौ, 'कांई वौ वादीलौ ढोलौ हाल ई नी मांन्यौ ?'

'आधौ-दूधौ तौ मांनग्यौ। कळाप करचां आधौ-दूधौ वळै मांन जावैला।'

'कद मांन जावैला ? मां रै मरचां मांन जावैला।'

साचैला ताजणा सूं ई सबदां रौ सटीड अणूंतौ बेजां व्है। जगत-काका रौ इत्तौ कैवणौ व्हियौ अर सुलोचना री दोनूं आंख्यां जांणै खीरा इज वणगी। अेकर तौ जगत-काका रौ काळजौ ई फड़का चढग्यौ। पण दूजै ई छिण आपौ संभाळता उणनै वत्ती चिगावण खातर बोल्या, 'उणनै मनावणौ ई है तौ इण नाकुछ काम सारू कांई मनावै, थनै परणीजण सारू ई क्यू नी मनावै ?'

जगत-काका रै हाथां औ फटाको तौ कावळ छूटौ। कुण जांणै आ बात किण नाकै ढूकैला ! पण उणरौ पड़ूत्तर सुण्यां किणी रै ई इचरज अर ईसका रौ पार नीं रह्यौ। वा तौ इण भांत बेखटकै बोली जांणै आपौआप सूं वंतळ करती व्है। जगत-काका री आंख्यां में मीट गडाय कह्यौ, 'म्है तौ समझावण मे कीं खांमी राखी नीं, पण वौ वादीलौ ढोलौ मांनै जद ! नीं व्है तौ अेकर आप उणनै समझावौ। कदास आपरै समझायां वौ मांन जावै।'

जगत-काका रै आखै डील धड़धड़ी छूटी। जांणै अणगिण कुळातरा वारै वारै-मांय टळवळै। अटकता-अटकता नीठ बूझ्यौ, 'कुण, म्हैं समझावूं ? म्हैं समझावूं ? हा, थू कैवैला तौ समझावूंला। जरूर समझावूंला।'

जगत-काका री इण हांमळ रै आखर-आखर नाकारौ भरचौ हौ, तौ ई तमांम झूलरौ अेकण सागै ताळियां बजावतौ बोल्यौ, 'जगत-काका रै समझायां तौ कैड़ा ई मूरख नैं मांनणौ पड़ै। दस किलो मिठाई सूं कम मे सोदौ नीं पटैला।'

'मिठाई री तौ ना कोनी, पण वौ मूरख अंगै ई नी है। म्हनै तौ उणरी जोड़ रौ दूजौ समझवांन मिनख ई निगै नीं आयौ।' आ आखरां रै ओळावै सुलोचना तौ जांणै आपरौ काळजौ सगळां रै सांम्हौ चौड़ै कर दियौ व्है।

अनुराधा डोढ मे बोली, 'परणीज्यां पैली इत्ता बखांण ! निजर रौ मादळियौ मंतरायलै।'

सायणियां री खिखर-खमडोळ में जगत-काका री गत मांय री मांय भूंडी बिगड़ी। कोई सैंधी के असैंधी लुगाई वांरै टाळ किणी दूजा सूं प्रीत करै, सपनै ई

आ बात वांरै हीयै झरै जैडी नीं ही। इण उपरांत सुलोचना री तौ वांनै जांणै जित्तौ पतियारौ हौ। पण अबार तौ वांरै सांम्ही उणनै मूंडै-मूंड कबूल करतां अगै ई हैंप नी आई। पण जगत-काका तौ सुणनां पांण लातरग्या। रू-रू मे राद चभीका मारण लागी। मैंण रौ सिघ नी पिघळै जित्तै ई सिघ री गरज सारै। अबै किणी दूजा खोळचा री सरण नी झाल्यां तौ चालतौ सांस ई थम जावैला। वानै जद-कद *चिळका अर विश्राम री चावना व्हैतौ तौ नीं दिन आडौ आवतौ अर नी रात।* सातम री चादणी रै पडदै अणछक अेक भळभळातौ चिळकौ पायरघो। गोळ-गोळ भरणाटी खावता उण चकरिया मे अेक छिब दीसी। धूंधळी, धूधळी। ओळखतां ईं चालू वंतळ रै अजेज मूचौ देय वै भारी गळ मे बूझ्यौ, 'जे म्हैं नाथूरांम विनायक गोडसै व्हैतौ...!'

हेवा व्हैता थकां ईं किणी रै कांनां जगत-काका री आ अचीती अपरोगी मंसा नी झरी। सुणतां ईं अंडौ लखायौ जांणै चादणी मे ठौड-ठौड धूंवा रा गोट उठया व्है। कांता बहल छाती माथै हाथ धरती बोली, 'तौ काईं आपरै हाथां बापू री हित्या व्हैती ?'

'आ इज तौ बात है ! जे म्हैं नाथूरांम गोडसै म्हैतौ तौ बापू री ठौड़ किणी दूजा रौ भख लेवतौ। वतावौ किणरौ ?'

धडाधड केई मोटा-मोटा नांव होठां उछळ्या। मुरळीधर रौ नाव ई भेळम-भेळ गांथीज्यौ। पण जगत-काका किणी नांव सारू हांमळ नी भरी। घड़ी-घडी पळकतौ भोडक हिलावता नटता इज गिया, 'आं हां, आं हां।' सेवट री वाजी आंती आय वानै ई आडी सुळझावणी पडी, 'जे म्हैं नाथूराम गोडसै व्हैतौ तौ ओटाळ

[illegible]

विचाळै बोली, 'जगत-काका, देस रौ बटवाडौ नी व्हियो, आं रूपाळी अपछरावां री अठै तंत कीकर जुडतौ ? नी अै आपनै ओळखती अर नी आप आंनै ओळखता। कित्तौ काईं गबडोळौ व्हैतौ !'

वै तुरत गुचळकी खाई, 'अरे, म्हैं तौ यूं ई थांनै डरावण खातर चालू बात कीवी। जगत-काका रै हाथां, जिन्ना तौ मोटी बात, अेक नाकुछ कीडौ ई नी किच-रीजै। पण साचांणी, जे म्हैं नाथूराम विनायक गोडसै व्हैतौ तौ बापू रै मूठी हाडकां री ठौड़ भ्रस्टाचार रै भूत रौ भूटकौ करतौ...ठें...ठें...ठें ..!'

अंडौ चरम संजोग सज्या ई मिनख रै कंठां हसी रौ ठेकौ नी गूंजै तौ वा रोवण सूं वत्ती दुखदाई। कदास इण गत री हंसी रै होड़ी लाग्यां ईं मिनखा-देही रै मांय कठै न कठै ई कैंसर रौ उठाव व्हैतौ व्हैला !

जगत-काका आपरौ खोळयौ बिसराय, नाथूरांम विनायक गोडसै री छिब नैं पूरमपूर अटोपली ही। आपरै कंठा ठणकता अेक-अेक आखर माथै वांनै पूजतौ धीजौ हौ। जद इज तौ जगत-काका रै मूडै हाथ रै लटकां इत्ता जोर सूं तीन भूटका व्हिया के ऊंघीजतै तारां री झपकै ऊघ खुलगी। पण वानै उण वेळा ऊचौ जोवण री मोकळ ई कठै ही ! तारा ऊघै तौ ऊघै। जागै तौ जागै। तासड़ा तोड़ती हूस रै

बधार वै धकै कैवण लागा, 'चवड़ै-धाड़ै, मज्झ बेफार रांमलीला रै मैदांन, उणी पलक वो जम हेटै गुड़ जातो —धड़ांम ! तीन हाथियां रै उनमान लांठो भोडक। सात बांस लावा लटिया, मैल सूं चिपचिपा अर लुखयुका। माटी री परात रै उनमांन तीन गोळ-मटोळ आंख्यां, अेकण ठोड़ अटक्योड़ी। पांच हाथ लांबो गाबड़, पूरमपूर रूंगतां ढक्योड़ी। दो-दो हाथ लांबा दांत।'

भ्रस्टाचार रै जम सूं तौ जिद छूटी पण मातेती रौ खईस हाल ई जीवतौ-जागतौ है। ठौरमठौर। भाखर रौ भार उठावणौ सोरो पण मातेती रा तोख उठावणा दोरा। कद किणरै हाथां इण सूं पिंड छूटैला ? कीकर छूटैला ? देस रै भाग कोई दूजो जगत-काको अवतरै तौ अवतरै !

सै मांनखो अर सै प्रांणी मरण सारू ई जलमै, उणी भांत राजस्थांन रै विद्युत-मंडळ री बिजळी जावण सारू ई आवै। मौत आगै बस पूगै तौ इण आगै ई बस पूगै। पंखा की गरणाटी बंद व्हियां जगत-काका दफ्तर मे अेकला बैठा पंखी सूं हवा खावै हा। अंडो आड़ंग अर अंडी बळत तौ इण जमारै भुगत्योड़ी याद ई नी आवै। तिण ऊपरां आपोआप सूं अेकल सांम्हैळो। जगत-काका खुदोखुद आपरी संगत रै हेवा इज नी हा। वांनै आपरै चेता तकात रौ अेलम मजमा रै बिचाळै इज व्हैतो।

संजोग रै बडभाग बीसेक महिलावा रौ झूलरौ धब्ब करती रौ जगत-काका रै दफ्तर ठाडी बावळ रै उनमांन अचीतो धमक्यो। सोना रौ सूरज ऊगै जणा किणी नै बूझनै थोड़ो ई ऊगै ! जोर सूं हाकाहाक मचावता वै चपड़ासी नै कुरसियां लावण रौ आदेस करयो। पण कुरसियां वाळो कांम निवडतां ई जगत-काका नै तुरत अेक दूजो ई उपाव सूझ्यो। परसेवा मे घांण झूलरा रै न्यारै-न्यारै उणियारां जको रंगत निगै थाई तौ अजेज वांरै मूंडै दफ्तर सूं बहीर व्हैतां पाण नीबड़ा री छींयां तळै जाजम ढाळण रौ चपडासी रै नांव फरमाण सुणीज्यो।

पण आज उण झूलरा रै हीयै तौ अेक दूजी ई खदबद मच्योड़ी ही। जोधपुर री सडकां अर गळी-गळियारा हवा रै समचै हाको फूटयो जको हाल उणरी पड़गूज नी ढबी के टणकेल धाड़वी मंगळसिंघ री चूकती गैंग री खातमो व्हैगो। नौ धाड़वियां री ल्हासां पुलिस लेण रै मैदांन जनता रै जोवण सारू धरीजी। अेक ओटाळ धाड़वी मरतां-मरतां ई दो सिपाहिया रै सागै अेस. पी. अमरनाथ नै ई ढाय लियो। आखो नगर ई हलबलै चढ्यो। मरघोडा धाड़वियां नै निरखण सारू निसंक निरभै मेळो मंड्यो। बापड़ा सै धाड़वी रगत में रगाबग सचळा बोला-बोला पड़्या। डरण जैड़ी कांई बात नी।

दफ्तर रै पसवाड़ै ऊभतां ई सांम्हीसांम्ह सडक माथै हळफळाई भीड आपरी धुन में भाजती दीसी। बाईसिकलां रा पैडल चकरी चढ़्योड़ा। पाळी भीड़ दोवडी धुणिया धुचधुचियै पगरखियां रा झपीड़ पाड़ती ही, जांणै उणरै हाथां ई सै धाड़वियां रौ उत्तन ऊठ्यो व्है।

के अणछक फाटक री उरळी बाजू मुरळीधर रै सांढ़ै सुलोचना राय माथै जगत-काका री मीट पड़ी। ऊभा उणी ठोड़ सूं आचै-आंचै बतळावता बोल्या, 'आज

आ बात वांरै हीयै झरै जैड़ी नीं ही। इण उपरांत सुलोचना रौ तौ वांनै जांणै जित्तौ पतियारौ हो। पण अबार तो वांरै साम्ही उणनैं मूंडै-मूंड कबूल करतां अगं ई हैंप नी आई। पण जगत-काका तौ सुणनां पांण लातरग्या। रू-रू मे राद चभीका मारण लागी। मैंण रौ सिध नी पिघळै जित्तै ई सिघ री गरज सारै। अबै किणी दूजा खोळ्या री सरण नी झाल्यां तौ चालतौ सास ई थम जावैला। वानैं जद-कद चिळका अर चिश्राम री चावना व्हैती तौ नी दिन आडी आवतौ अर नी रात। सातम री चादणी रै पड़दै अणछक अेक भळभळातौ चिळकौ पायरयौ। गोळ-गोळ भरणाटी खावता उण चकरिया मे अेक छिब दीसी। धूधळी, धूधळी। ओळखता ई चालू वतळ रै अजेज मूंचौ देव वै भारी गळ में बूझ्यौ, 'जे म्हैं नायूराम विनायक गोडसे व्हैतौ...!'

हेवा व्हैता यकां ई किणी रै कानां जगत-काका री आ अचीती अपरोगी मंसा नी झरी। सुणता ई अैडौ लखायौ जांणै चादणी मे ठौड-ठौड धूवा रा गोट उठचा व्है। कांता बहल छाती मायै हाय धरती बोली, 'तौ काई आपरै हाथां बापू री हित्या व्हैती?'

'आ इज तौ बात है! जे म्हैं नायूरांम गोडसे व्हैतौ तौ बापू री ठौड़ किणी दूजा रौ भख लेवतौ। बतावौ किणरौ?'

घड़ाघड केई मोटा-मोटा नांव होठां उछळचा। मुरळीधर रौ नांव ई भेळम-भेळ गाथीज्यौ। पण जगत-काका किणी नांव सारू हांमळ नी भरी। घडी-घडी पळकतौ भोडक हिलावता नटता इज गिया, 'आ हां, आ हां।' सेवट री बाजी आती आय वानै ई आडी सुळझावणी पडी, 'जे म्हैं नायूराम गोडसे व्हैतौ तौ ओटाळ जिन्ना रौ पापौ काटतौ। नी देस रा टुकडा व्हैता अर नी अणगिण मानखौ भूडै-ढाळै कटतौ-बढतौ। अेक नै मारचां अलेखूं प्रांण बच जाता। हजारू बैन-बेटिया...!'

सुलोचना तीन-चार सिंधी-पजाबी अध्यापिकावां रा नांव गिणाय ओडौ देवती विचाळै बोली, 'जगत-काका, देस रौ बंटवाडौ नी व्हियां, आं रूपाळी अपछरावां रौ अठै तंत कीकर जुडतौ? नी अै आपनै ओळखती अर नी आप आंनै ओळखता। कित्तौ काई गडबोळौ व्हैतौ!'

वै तुरत गुचळकी खाई, 'अरे, म्हैं तौ यूं ई थांनै डरावण खातर चालू वात कीवी। जगत-काका रै हाथां, जिन्ना तौ मोटी वात, अेक नाकुछ कीडी ई नी किच-रीजै। पण साचाणी, जे म्हैं नायूरांम विनायक गोडसे व्हैतौ तौ बापू रै मूठी हाडकां री ठौड भ्रस्टाचार रै भूत रौ भूटको करतौ...ठैं...ठैं...ठैं...!'

अैडौ चरम संजोग सज्यां ई मिनख रै कठां हंसी रौ ठेकौ नी गूंजै तौ वा रोवण सूं वत्ती दुखदाई। कदास इण गत री हंसी रै होड़ौ लाग्यां ई मिनखा-देही रै मांय कठै न कठै ई कैंसर रौ उठाव व्हैतौ व्हैला!

जगत-काका आपरौ खोळचौ विसराय, नायूरांम विनायक गोडसे री छिब नै पूरमपूर अटोपली ही। आपरै कंठां ठणकता अेक-अेक आखर माथै वानैं पूजतौ धीजौ हो। जद इज तौ जगत-काका रै मूंडै हाथ रै लटका इत्ता जोर सूं तीन भूंडका व्हिया के ऊंधीजतै तारां री झपकै ऊघ खुलगी। पण वानैं उण वेळा ऊचौ जोवण री मोकळ ई कठै ही! तारा ऊघै तौ ऊघै। जागै तौ जागै। ताखड़ा तोड़ती हूस रै

वघार वै धकै कैवण लागा, 'चवड़ै-धाड़ै, मज्झ बेफार रामलीला रै मैदांन, उणी पलक वो जम हेटै गुड जातो—धड़ाम ! तीन हाथियां रै उनमांन लाठौ भोडक। सात वांस लांवा लटिया, मैल सू चिपचिपा अर लुथथुका। माटी री परात रै उनमांन तीन गोळ-मटोळ आंख्यां, अेकण ठौड़ अटक्योड़ी। पांच हाथ लांबी गाबड़, पूरमपूर रूंगतां ढक्योडी। दो-दो हाथ लांबा दांत।'

भ्रस्टाचार रै जम सू तौ जिद छूटी पण मातेती रौ खईस हाल ई जीवतौ-जागतौ है। ठौरमठौर। भाखर री भार उठावणौ सोरो पण मातेती रा तोख उठावणा दोरा। कद किणरै हाथां इण सूं पिंड छूटैला? कीकर छूटैला? देस रै भाग कोई दूजौ जगत-काकौ अवतरै तौ अवतरै!

सै मांनखो अर सै प्रांणी मरण सारू ई जलमै, उणी भांत राजस्थांन रै विद्युत-मंडळ री बिजळी जावण सारू ई आवै। मौत आगै बस पूगै तो इण आगै ई बस पूगै। पंखा की गरणाटी बंद व्हियां जगत-काका दफ्तर मे अेकला वैठा पंखी सूं हवा खावै हा। अेड़ौ आड़ंग अर अैड़ी बळत तौ इण जमारै भुगत्योड़ी याद ई नी आवै। तिण ऊपरां आपोआप सूं अेकल साम्हैळो। जगत-काका खुदोखुद आपरी संगत रै हेवा इज नीं हा। वांनै आपरै चेता तकात रौ अेलम मजमा रै बिचाळै इज व्हैतौ।

सजोग रै बडभाग बीसेक महिलावां रौ झूलरौ धव्व करती रौ जगत-काका रै दफ्तर ठाडी वावळ रै उनमांन भचीतौ धमक्यौ। सोना रौ सूरज ऊगै जणा किणी नै बूझनै थोड़ौ ई ऊगै! जोर सूं हाकाहाक मचावता वै चपड़ासी नै कुरसियां लावण रौ आदेस करयौ। पण कुरसियां वाळौ कांम निवडतां ई जगत-काका नै तुरत अेक दूजौ ई उपाव सूझ्यौ। परसेवा में घांण झूलरा रै न्यारै-न्यारै उणियारां जकी रंगत निगै आई तौ अजेज वांरै मूंढै दफ्तर सूं वहीर व्हैतां पाण नीबड़ा री छीयां तळै जाजम ढाळण रौ चपडासी रै नांव फरमांण सुणीज्यौ।

पण आज उण झूलरा रै हीयै तौ अेक दूजी ई खदबद मच्योड़ी ही। जोधपुर री सडकां अर गळी-गळियारां हवा रै समचै हाकौ फूटयौ जकौ हान उणरी पड़-गूंज नीं ढबी के टणकेल धाडवी मंगळसिंघ री चूकती गैंग रौ खातमौ व्हैगौ। नौ धाड़वियां री ल्हासां पुलिस लेण रै मैदांन जनता रै जोवण सारू धरीजी। अेक ओटाळ धाड़वी मरतां-मरतां ई दो सिपाहियां रै सागै अेस. पी. अमरनाथ नै ई ढाय लियौ। आखौ नगर ई हलबलै चढग्यौ। मरयोडा धाड़वियां नै निरखण सारू निसंक निरभै मेळौ मंडयौ। बापड़ा सै धाड़वी रगत मे रगाबग सचळा बोला-बोला पड़्या। डरण जैड़ी कांई बात नी।

दफ्तर रै पसवाड़ै ऊभता ई साम्हौसाम्ह सडक माथै हळफळाई भीड़ आपरी धुन में भाजती दीसी। बाईसिकलां रा पैडल चकरी चढयोड़ा। पाळी भीड़ दोवडी खुणियां खुचखुचियै पगरखियां रा झपीड़ पाड़ती ही, जाणै उणरै हाथां ई सै धाड़वियां रौ उत्तन ऊठयौ व्है।

के भणछक फाटक री उरळी वाजू मुरळीधर रै सांढै सुलोचना राय माथै जगत-काका री मीट पड़ी। ऊभा उणी ठौड़ सूं माचै-आंचै बतळावता बोल्या, 'आज

तो गरूजी सेंजोड़ँ पधारधा ! सेवट तौ समझायां सुमत वापरी दीसै ?'

पाखती आवता ई आखता होय बूझ्यो, 'देखू, आपरै हाथ री लिखावट कैड़ीक है ?'

'आधो-दूधो जाप घटै, अबार अठै ई बैठ पूरो कर देस्यूं ।'

जगत-काका रै जीव मे जीव आयो। मुरळीधर रै सांम्ही डोढ री मुळक झारता कैवण लागा, 'मास्टरजी, अबार ई मांग रै कठ्ठो-कठ्ठां गुडाळ्यां चालण लागा तौ दिल्ली कीकर पूगोजैला ?'

हवा में अेकण सागै हंसी रौ फव्वारौ छूट्यौ। पण मुरळीधर रै होठां नी मुळक, नीं हंसी अर नी खीज। इण वेताछीली खमडोळ सूं उणरै आप-थापी सुभाव री अंगै ई रंगत नी बदळी। जगत-काका रै कांनां उण अेकल मूंन री गूंज सगळी हसी सूं वत्ती गूजी। तद जगत-काका हाबगाब होय तिरछी आंख्यां सुलोचना रै साम्ही जोयौ—हूंसी तौ अळगी, मगसी मुळक री रेसौ तकात उणरै उणियारै नी हो। मुळक री ठोड़ सूग अर घिन री झाई उणरै थोबड़ै सुभट निगै आई। अेक मांमूली मजाक रौ ई अेड़ो चरड़को लागो ! जात, धरम नै छिटकाय परणी-ज्यां पैली दूजा मरद सू प्रीत करतां लाज नी आवै तौ दो थोक सुणतां रीस क्यू आवै ? फिदड़क-फिदड़क सार्थे आई, जांणै उणरी छीयां व्है। जे पराया मरद रौ अेड़ो ई वळो है तौ इण भात चोड़ै छिदर करण री काई जरूरत ! छानै-ओलै आपरी पेटियौ पूरलै। छांनै रा मळीच काम तौ छानै ई ओपै। चोडै रा सत-करम चोड़ै छाजै। पण सावचेती नी बरत्यां भरीजगी तौ ठौड़-ठौड़ झीकती फिरैला। पछै जगत-काका टाळ अबखी मे कोई नैडो नीं आवैला। आपरो नाक आपरै उणि-यारै अर समाज रो नाक समाज रा लिलाड हेटै। अेडी लाज-बायरी छूट सूं तौ किणी रौ नाक नी बचैला। कैडी तौ फूठरी अर मोवनी सूरत ही अर कैड़ी सिग्या परवारगी ! देख्यां डाकण ई डरपै। वैडो रूपाळो उणियारो अैड़ो विडरूप कीकर व्हैगो ? जगत-काका नै लखायो जाणै डोल रौ साधो-माधो छिटक जावैला।

महिलावां रै झूलरै तो अबार अेक दूजो ई बळो तावड़ा तोडतो हो। अेक छिण रो अवेळो ई वानै घड़ी जित्तो लखावतो। भाजतो भीड़ सांम्ही सानी करतां पाच-सातेक जणिया अेकण सागै खयावळ दरसाई, 'जगत-काका, म्है ई मरघोड़ा घाडवियां नै निरखण रो मतो करचो। आपरै साथै चाल्यां दूणो मजो आवैला। जद इज तौ भेळी होय आपनै ले जावण खातर आई। पधारो-पधारो, अठै दफ्तर में नींतर ई तपै।'

चेताचूक दिहावळा मिनख रै सांम्ही जांणै धूंभ-मारग पगां चलायनै हाजर व्हैगो व्है। दूजै ई छिण जगत-काका री छाती रो होडो खुलग्यो। अंतस री रग-रग पाछो असली रगत बहण लागो। मुरळीधर वाळो लफडो छिटकाय वानै बरजता समझावण लागा, 'आं हां, अैडी भूल भवै ई मत करज्यो। सरकार ई भून कीवो सो मोकळी। म्हारो बस पूगै तौ टाबर-लुगाया नै अैड़ो कावळ जंजाळ ई नी आवण दू अर थे साथै चालण री बात करो ?'

नीवड़ा री छीयां तळै सुघराई सू बिछयोडी जाजम माथै ऊभतां ई जगत-काका च्यारू मेर हाथ धुमावता धकै कैवण लागा, 'थे तो दुनिया नै सिरजण वाळी

मां हो ! थांनै मौत रा दरसण छाजै भलां ! म्हैं सरकार जैड़ी मूरख नीं हूं। अबार पुलिस-लाइन री फाटक रै पाखती बाळचरां गी तीण बाध दू। किणी टाबर के लुगाई नै ल्हासां रै नैडाकर नी फरूकण दू। बाळ-गोपाळ अर लुगायां रा मन माथै कित्तो बेजा असर पड़ैला ! जिणरो की तूमार है !'

माया पंवार आड़ी लेवनी व्है ज्यू बोली, 'नी काका...!

वै बिचाळै ई धड़ूकता बोल्या, 'वळै वा ई बात ! सात वळा बोलो —जगत-काका, जगत-काका।'

आपरी भूल कबूल करचा उपरात वा धकै कैवण लागी, 'पण जगत-काका, धाड़वियां री ल्हासां नै जोवण री वळै कद अैड़ी नामी ताखो सजैला। अर वै ई अेकण सागै नो। देखां तो खरी के धाड़वी व्है कैड़ा ?'

'कैड़ा कांईं, साख्यात म्हारै जैडा।"

'आपरै जैडा ! कांईं आप ई धाड़ायतिया जैड़ा हो ?' अनुराधा भंडारी टाबर वाळी सका दरसाई।

'ऊ हूं, म्हैं धाडवियां जैडो कोनीं। कैवण रो सार के धाड़वी सगळा ई मिनखा जैड़ा मिनख है। वै ई दो हाथ, दो पग, दो आंख्यां, दो कान, अेक माथो अर दो नाक !'

'दो नाक ?' गुल अडवांनी अभरोमा रै इचरज खरायो।

'हा हां दो नाक। अेक ई नाक व्हैतो तो लाज री धार वढण रा डर सू वै मिनख होय धाडवियां जैडो मळीच अर सूगलो काम करै भलां !'

'सूगलो ! सूगलो कीकर ? धाडविया रो काम तो हिम्मत अर जोखम रो है।' प्रतिभा केलकर जीभ माथै की इदको जोर देय कह्यो।

'मिनख री हित्या मे कैड़ी जोखम ! हिम्मत अर जोखम रो कोई सिरै काम है तो मिनख नै जलम देवणो। आपरी देह रो रगत पाय उणनै मोटो करणो। हिम्मत-हिम्मत वाळी तो थैं हो। मां बणणा जित्तो जोखम रो कांम दुनिया मे दूजो कीं नी है। जगत-काका री गीता रो सार-नांव फगत औ इज है। बोलो, 'हिम्मत रो कांम मिनख नै मारणो है के उणनै जलम देवणो ? मां बणण री जोखम उठावणी। बोलो, बोलो !'

सार-नांव रा इण गरू-मंतर समचै ई जगत-काका टांगां पसार आजम माथै पसरीजग्या। तद सगळी महिलावां नै ई मन माडै हेटै बैठणो पड़चो। नीची धूण करचां इण विध भेळी-भेळी होवण लागी, जांणै जाजा री चसमस चीस अेकण सागै हाली व्है। विना भणकार अेक छिण धकावणो ई दोरो लखायो तो गुल अडवांनी नीठ हीमत करनै पूछचो, 'पण जगत-काका, भिड़त व्हियां अै पुलिसवाळा ई तो धाड़वियां नै मारै।'

जगत-काका अेक निजर उछाळ सुलोचना री तपास करी। थोवडा री रंगत ज्यूं री त्यूं बिराजमांन ही। इणनै अैडी नुगरी तो नी जांणी ही। दूणै दिखावटी जोस म्यांनो समझावतां कैवण लागा, 'छैबास ! छैबास ! म्हनै इणी निगोट सका री आस ही। बापू रै अमोघ-मंतर रो महातम औ इज है—अतस रो बदळाव, अंतस रो बदळाव !'

ताखड़ा तोड़ता चपड़ासी नै इत्तौ ताळ वात करण रो ई वख नीं मिळ्यौ। अंतस रै वदळाव रौ 'सम' पूरौ व्हैता ई अरदास कीवी, 'सा'ब...!'

सा'ब तौ आज आपीआप ई आपरै मांय गम्योड़ा हा। रोजीना वाळी चाळ-चोळ रौ अधकर उमाव ई नीं हौ। पण तौ ई आपरै नांव री खोटी वतळावण वारै कांनां रड़की। खीज रै स्वांग चपड़ासी रै मिस जाणै मुरळीधर नै सुणावता जोर सूं कह्यौ, 'सा'ब नीं, जगत-काका, जगत-काका। लगावौ पांच ऊठ-बैठक।'

चपड़ासी दोनूं हाथां कांन झालतौ कैवण लागौ, 'जगत-काका, दफ्तर रा सगळा बाबू अर चपड़ासी धाड़वियां नै जोवण सारू आपरी दवायती मागै।'

जगत-काका गताधम में पजग्या। अवार-अवार ई तौ खुरमुरिया खावती सै महिलावां नै वै माई ढाबी। आलै ढाबणौ जरूरी हौ अर दूजां नै दवायती देवणी जरूरी है। महिलावां टाळ वाकी दफ्तर सूनौ व्हियां वांरौ मन पूरमपूर मुगन व्है जावैला, नीतर लोकीक रौ थोड़ो-घणौ चोज निभावणौ पड़तौ। दवायती इनायत करयां उपरांत चपड़ासी नै भुळावण देवण सारू ई नीं भूल्या के वौ उम्दा कॉफी वणायनै लावै। चपड़ासी रौ मन ई पैंजड़ा तुडावतौ हौ। खुणियां सूदा हाथ जोड़ होळै-सीक गुणगुणायौ, 'म्हैं ई सगळां रै भेळमभेळ...।'

'इत्तौ कांई आंचौ है! मरघोड़ा धाड़वी पाछा जीवता तौ व्है कोनी। कॉफी बणाय जाजै परौ।'

इत्ती ताळ जगत-काका अेकर ई मुरळीधर सांम्ही नीं झांयौ। तौ ई उणरौ उणियारौ वांरी आंख्यां सूं अदीठ कठै व्हियौ! केई वळा आंख्यां परवारौ ई दीसै। कांनां परबारौ ई सुणीजै।

'म्हैं कांई कैवतौ.. हा , अंतस रौ वदळाव। जे म्हैं अेस. पी. व्हैतौ ..।'

'तौ इण सिक्सा-विभाग रौ कुण धणी-धोरी वणतौ?' कांता वहल जगत-काका नै पोमावण रै मिस पूछ्यौ।

'थें डरौ मतौ, साच-साच रौ अेस. पी. नीं। थोड़ी ताळ वास्तै मांनलौ के म्हैं अेस. पी. व्हैतौ।'

'पण अैड़ी कावळ बात म्हे मांनां ई क्यूं? जे आप अेस. पी. व्हैता तौ आपनै ई अमरनाथ जी री मौत मरणौ पड़तौ।' गुल अडवांनी री साकूत संका ही।

'ना, ना।' जगत-काका माथौ धूणता कैवण लागा, 'म्हैं अमरनाथ अेस. पी. री भांत नांढ थोड़ौ ई हूं। धाड़वियां रा भूटका सुणतां पाण पाधरौ लांबौ-लड़ाक धरती माथै पसर जातौ।' अर साचांणी मुकळाई रौ चेतौ राख वै तौ जाजम माथै ऊंधा पसरता इज निजर आया। थोडी गाबड़ उठाय होळै-सीक बूझ्यौ, 'थें ई बतावौ, अबै गोळी कीकर लागती?'

आलीजा अफसरां री खेप इज इण गत री व्है के फगत सिक्सा-विभाग रै करमां रौ इज आ पुन्याई पाकी? सोचण री बात है।

तठा उपरांत भचकै बैठा होय, अेक गोडा रै पाण वै मोरचौ लेय, बंदूक चला-वता व्है ज्यूं कैवण लागा, इण भांत बंदूक री नाळ सांम्ही करनै वकारतौ—खबर-दार, अबै गोळी चलाई तौ सगळा नै भून न्हाकूंला। मिनखा जूंण पाय क्यूं दर-दर

जीव लुकावता फिरो। हथियार वगाय सगळा ई सरेंडर व्है जावो तो घकली सै खीचातांण म्हारी। नेगम घर बसावो। आपरा टापरा संभाळो अर टाबरा नै जगत-काका री सीख-प्रमांण पूजता भणावो। पछै जाच पड़ैला के मिनख-जमारा रो साव काई व्है ! अर वै साचाणी हथियार वगाय सरेंडर व्है जाता। अेक ई धाड़वी रै चडापो बावण री जरूरत नी ही। अंतस बदळियां पछै कैंडी आट !'

अेस. पी. रै भरम जगत-काका अंडा मगन व्हिया के थोडी ताळ वास्तै वानै पातरणो पडयो के वै सिक्सा-विभाग मे डिप्टी-डाइरेक्टर रै पद री सोभा बधावै। अर सुलोचना राय अर मुरळीधर पुरोहित वांरी इज मातेतो मे भणावण री बेगार काढै। जम रा डर सूं कम डर अेस.पी रो नी व्है। भूल-चूक सू कदै ई हत्थै चडग्या तो हाडका खोळा कर न्हाकैला। सांधो-मांधो टंटोळिया टाळ नेहचो इज नी करै। पुलिस रो अेस. पी., नी लुगाई री कांण राखै अर नी विद्वान री। दस-बीस रगरूट रगदोळैला तद इणगी अकल ठांणै आवैला। सावळ जाच पड़ैता के टूरिया री प्रीत अर मुरळीधर री प्रीत मे जमी-आसमांन रो भेद है !

प्रतिभा केलकर रै हीयै अतस रै बदळाव री बात झरी कोनीं। मूडै-मूंड सका कीवी, 'पण जगत-काका, म्हां तो सुणी के अै हित्यारा सवा-सौ मिनखां रा नाक-कांन वाढचा। ज्यां मे घणकरा टाबर ई है। लुगायां तकात भेळी। जका अघबेरडा टाबर-लुगायां रा ई नाक वाढ़ै, वानै पूजती सजा नी देय, फगत अंतस बदळियां कीकर पोसावै ?'

'पण अबै तो किणी रा नाक-कांन पाछा जुड़ै कोनी। आ तो अेक इतिहास री ओळी व्हैगी। अपांनै इतिहास री चिंता छोड, आगै अर फगत आगै देखणो है। इतिहास नै रोयां, इतिहास नी बदळीजै। नवी चेतना रै परताप ई नवो इतिहास रचीजैला। पापी रो नीं, पाप रो पापो काटो —आ इज नवी चेतना जणा-जणा रै हीयै जगावणी है।'

पण मत-बायरी पुलिस नवी चेतना नीं जगाय कैंडो रुळियार-रामो करयो ! ल्हासां नै जोवण सारू अलेखूं मांनखो आवै अर जावै। इकरेल धाड़वी आंगणै पडया धिधकै। घावा छव्योडा। खांडा-बांडा। रगां रगत ठस्योडो। बाका फाटयोडा। माख्यां भवै। डोळ विगडयां आ कचन-काया कित्ती विडरूप लागै ! किणी री जीभ बारै निकळयोड़ी तो किणी रा डोळा भवियोडा। इण गसका रा धणी कांई धाड़ा दौड़ता ! पसवाडो पलटणो तो मोटी बात, माख्यां उडावण री ई भरधा कोनी। वांनै इण विध भूंडै ढाळै मरयोडा पतवांण लोग-बागां नै आपरै जीवत खोळ्या रो अणूनो मोद व्हियो। मूवा धाड़विया खातर अबै सपना ई कठै पडया ? आरै भावै अबै नी तो लूवां बाजैला, नी ठारी पड़ैला, नी सूरज तपैला, नी बादळ बरसैला अर नी सुरंगा फूल विगसैला ! नी आंनै भूख लागैला अर नी आंनै प्रीत री चावना व्हैला। आ मत बायरी कुदरत ई फगत जीवता प्राणिया री हाजरी साजै !

अर उठी अेस. पी. अमरनाथ रै भेळमभेळ दो सिपाहियां रै दाग में कित्तो मांनखो अड़वडियो ! अेड़ो नेक-नांमो, सालस अर हीमतवर अेस. पी. जनमियो अर नी जलमै। हजारूं लोग बळबळता निस्कारा न्हाकिया अर झरां-झरां रोया।

मिनख तो जैड़ै तैड़ै टाणै आपरै खपतां किणी भांत री खांमी नी राखै। नी हूंमण में सोटो भुगतै, नी रोवण-रीकण मे कोताई। औ मांनखौ तौ मेळा-मेळा रौ ई जीव है!

धाड़वियां रा अंतस आवगा वदळ-बदळाय जगत-काका पाळगोटी मार निरांत सू जाजम माथै बैठा हा। अनुराधा भंडारी बूझ्यौ, *'जगत-काका, मरघोड़ा मिनख रौ अंतस नी बदळीजै?'*

'आ हां, आ बात नी बापू रै बस री ही अर नी जगत-काका रै बस री है। मरघोड़ा मिनख रै फगत आतमा व्है, अंतस नी व्है। अर आतमा रौ सरूप कदै ई नी बदळै।' अणछक कोई भूल्योड़ी बात याद आई व्है। 'हां, अेक खास बात तौ म्हैं अगै ई पांतरग्यौ। वां सरेंडर व्हियोड़ा नौ ई धाड़विया नै म्हैं सिक्सा-विभाग री बसा रा डलेवर बणाय देतौ।'

'नीं जगत-काका नीं, अंतस रौ काई पतियारौ। पाछौ बदळग्यौ अर कोई धाडवी लड़कियां सूं भरयोडी बस लेय फरार व्हैगो तो...!' गुल अडवांनी माथौ धूणती वानै ओड़ौ दियौ।

'गजब व्है जाता! थूं वगतसर नामी याद दिराई। म्हारी कित्ती बदनामी व्हैती! खैर-सल्ला, वानै डलेवर नी बणाय चपडासी बणाय देतौ।'

'गरीब-परवर, भेळमभेळ म्हारा भाई रौ ई ध्यांन राखजौ।' चपडासी चेतौ राख वगतसर पाछौ याद दिराई।

'जरूर राखूंला।'

'पण जगत-काका, अपांनै अैड़ी जोखम ई क्यूं झेलणी? धाड़विया रै कैड़ी *निरख! वांनै तौ पुलिस में भरती करावणौ ई सावळ है। जिणरा जैड़ा माजना व्है* वो उठै ई ओपै।' कांता वहल रौ औ सुझाव ई माड़ौ नी हौ।

नीबडा री छीया तळै बैठ्या इं आसोजां री लाय अगै ई कम नी व्ही। वायरिया रै झोला नै *छिण-छिण उडीकतौ नीव अवचळ ऊभौ हौ। मजाल के अेक पान तकात* ई काई हिल जावै! जगत-काका च्यारूमेर ऊंचौ भाळता, रूमाल सूं परसेवौ पूछता कैवण लागा, 'अपां वळत सू आती आय, छीया री सरण आया। पण आ छीया तौ सांम्ही किणी दूजी छीया रै आसरै जावण खातर तडफा तोडै। पण नीबडा रौ ठायौ छोड आ जावै तौ कठै जावै! जे भगवान री ठौड औ सूरज म्हारी वखडी मे व्हैतौ तौ म्हैं इण सू सीयाळै तपत बरसावतौ अर ऊन्हाळै ठारी। पछै नी तो पंखा चाहीजता अर नी हीटर। नी गरीब-गुरबा ठारी में धग-धग धूजता अर नी बळती लूवां दाझता। अनाप खरच-खाता रै खाम लाग जातौ। बोलौ, लागतौ के नी?'

पण खुदोखुद जगत-काका नै ई आपरै आखरां री कडपांण खासी झिगदळी लखाई। आपरौ गळौ वानै साव थोथौ लाग्यौ। चिपचिपा थूक रौ ठांव। मुरळीधर अर सुलोचना री गाढी प्रीत रौ वेरौ व्हिया माय रौ माय वारी आतड़िया रै लेवौ लागग्यौ व्है। सुलोचना फणाकली अैडा ई ताखा री मोय में ही। वख मिळता ई उणरी खाम खुली, 'जगत-काका, अबै फोरौ-पतळौ भार संभाळणा धाकौ नी धकै। इंदिरा गाधी री ठौड़ देस रै प्रधान-मत्री री लगाम झेल्या पार पड़ै तौ पड़ै।'

सुलोचना रौ तीर ठाणै लाग्यौ। जगत-काका रै रूं-रूं धूजणी वड़गी। तरर करती रौ मूडो थाप खायग्यो। होठा आगळी देय गुणमुणावता कह्यौ, 'खबरदार, सपनै ई अैड़ी बात नी सोचणी। हुवा रै हजार कान व्हे। जे भवांनी रै कांनां भणक पड़गी तो इण डिप्टी-डाइरेक्टरी रा ई जांदा पड़ जावैला।'

अचाणचक औ काई छूमतर व्हियौ। जगत-काका री ठौड़ जाजम माथै मुरळीधर नै अेक ऊंदरौ फदाफद नाचतौ निगै आयौ। दीठ री तासीर अैड़ी तौ नीं जाणी ही! आख्या टमकार वळै इदक सावचेती सू जोयौ—ऊंदरा री ठौड़ जगत-काका पाळगोटी सूदा, जाजम माथै बिराज्या हा। परसेवा में धाण। मगसी टाट अर आमण-दूमण उणियारौ। जाणै किणी अदीठ पंजै गळै टूपी लाग्यो व्हे! तौ ई बरसां...बरसां लग सासती सेवियोड़ी बाण सोरै-सास कद छूटती! सिग्या-विहूण जगत-काका रै कंठां नीठ अटकता-अटकता अै बोल बारै नीसरचा, 'प्रधान-मत्री री गादी तो छाजे जिणनै ई छाजे। पण जे म्हे टाटा-बिड़ला, नी-नी मोणकसा, नी नी रास्ट्रपति व्हैतौ...!'

पण अबकी इण धूजता सुर रौ वैंडौ गाढ़ ई कठै हौ! नी जगत-काका नै उणसू जोह बंध्यौ अर नी ओळू-दोळू घेरौ घाल्योड़ी महिलावां ई बिलमीजी। जगत-काका आख्या फाड़-फाड़ घणा ई खपिया पण वानै चिळका रै चकरिया रा किणी खुणै-खोचरै बावड़ नी व्हिया। आपरै आंगै मोटा मिनखा री मोवनी छिब अटोपण रै भरम रौ खळिदी व्हिया वै साव इज ढोळै बैठग्या। निपट अपळंग अर अम्यागत!

छेहला निवेड़ा रै गाढ़ सुलोचना वळै आड़ौ लेवती बोली, 'नी, जगत-काका, अबै तौ प्रधान-मत्री री गादी सभाळ्या ई देस री नाव काठै लागै तो लागै। आपरै हीणी ताक्यां आखौ देस रुळ जावैला।'

प्रधान-मत्री रै पद री अैड़ी धवक वैठी के आपरै होठा हथाळी देवण टाळ, जगत-काका आफळचा तो घणा ई, पण अेक फूटौ आखर ई बारै हुवा में नी उछळ्यौ जांणै बोलणौ इज पातरग्या व्हे। तिण ऊपरा मत-बायरौ मुरळीधर वळै बळती में पूळो रिगसायौ। जगत-काका रै जाप नाळो पानौ फाड़-फूड वारै माथै वगावतौ बोल्यौ, 'पुटियौ-काकौ! बापड़ौ आपरै पजां आभा नै थामण री हूंस राखै! लाई पुटियौ-काकौ!

आखै झूलरै झणझणाती पड़गूंज सुणीजी—पुटियौ-काकौ, पुटियौ-काकौ!

अर उण पड़गूंज बिचाळै आखौ झूलरौ आंख्या फाड़-फाड़ घणी ई तपास करी पण जगत-काका रै आसण वानै फगत फूटचोड़ौ ढब्बू ई निजर आयौ। सळां भरचोड़ौ। लिपळौ-लिपळौ। साव छिन्योक। पग रै अगूठा सू ई छोटौ!

राजी
नांवो

ऊमर परवांण जूंण री खरडो छिण, पल, घड़ी, दिन, मास अर बरसां तळै ओटीजतो जावै। पण कदै ई कदै ई ठेठ बाळपणा री कोई बात आखी ऊमर नी कझळाईजै। भोमर तळै यूं री यूं जगामग करतो लाधै। आज तो म्हैं ओक लेखक री मरजाद निभावू, पण वा दिनां तो फगत कोरो-मोरो पाठक हो। वांचण जोग कोई पोथी हाथै लागी नीं अर डकळ-डकळ आंख्यां सू पी जावतो। कदास नवी क्लास मे भणतो, वां दिनां री बात है। म्हैं खुद तो घरै ई रैवतो पण बाळगोठिया सू मिळण रो उमायो दूजै-तीजै दिन चारण-बोर्डिग रो भळाको अवस दे आवतो। सुभाव तो सगळा ई टाबरां रा न्यारा-न्यारा व्है पण रणसीगाव रो आसकरण ओक अजब ई ओपरा सुभाव अर ओपरी बणगट रो हो। मतीरा ज्यूं गोळ सफोट मायो। लांबी चोटी। घुगघुगो डील। खीलां ईं खीलां रूंघोड़ो गोळ मूडो। मीचरी-मीचरी आंख्यां। जांणै पाचणा रो चीरो देय मांय बैठांणा व्है। किणी सूं इं अणूती ओळखाण नी। ओकल खोरो। बतळायां जरूत-परवाण नीठ बोलतो। आपरै ई दद-फद मे अळूझ्योडो। मन करतो जणा ई ओक भळभळातो काच मूंहागै धर लेवतो अर हाथा रा लटका करनै आपरै प्रतम सूं इं निरी ताळ वंतळ करतो। साथी-साईना बख लागता इं चिड़ावता पण वो किणी री की गिनार ई नी करतो। जाणै भाटा नै बतळायो व्है। मन-मतै ई सिण-फिण मुळकतो रैवतो।

कमरा में माहौमाह घणकरी उणरी ई गांगरत चालती। सुणतां-सुणता म्हारै

पाखतौ खासी-भली चरपरी ख्यात जुड़ती गी। वौ काच मे टग-टग भाळतौ इण भांत आपरौ उणियारौ निरखतौ जांणै कोई दूजौ ई माणस व्है। अर इण भांत निसंक वंतळ करतौ जाणै किणी गाढ़ा मित सूं सुरपुर करै।

अेकर फाटोड़ी चूंदड़ी रै घड़चै रजी झाड़, काच टेबल माथै धरयौ। सांम्ही कुरसी माथै बैठ, थोड़ी ताळ तांई आपरौ प्रतम निहारतौ रह्यौ, जांणै ओळख में आंटी पजगी व्है। पछै होठ मुळमुळाय पूछ्यौ, 'अबकी तिमाई मे फेल कीकर व्हियौ ?'

मूंडौ उतार होळै-सीक पड़ूत्तर दियौ, 'म्हैं अेकलौ ई तौ फेल नी व्हियौ। क्लास में आधा सूं वेसी लड़का फेल व्हिया।'

वौ आख्यां फाड़ आकरा सुर में फटकार बताई, 'दूजा पड़घा घेड़ में। थनैं वांरा सूं काई वास्तौ ! कांई तल्लौ-मल्लौ ! घर री वळी परवांण वैवणौ चाहीजै। थनैं ठा कोनी, घर मे कित्ती नेन पड़योड़ी। धापनै रोटी नी खाय माईत थनैं भणावै। अर पिंडां रै की परवा ई नी।'

'परचा अणूता दोरा आया।'

'थारै अेकला सारू ई दोरा आया ? दूजा लड़का पास कीकर व्हिया ?'

'माथा-फोड़ी तौ घणी ई करूं। पण इम्तियांन रै नांव अैड़ी धड़धड़ी छूटै के आवै जको ई भूल जावूं।'

'जोधांणै आय बातां तौ खासी सीखग्यौ। सावळ मन लगाय भणैला तौ थूं ई सुख पावैला। कांन खोल सुभट सुणलै, अबै कोई चूक करी तौ थूं थारी जांणै।'

'म्हैं म्हारी ई नी जांणूं तौ दूजौ कुण जाणैला ?'

'ओळ्याकड़ा री जीभ घणी बधगी दीसै ?'

'वैम व्है तौ नापलौ। आ ई मन मे क्यूं राखौ ?'

'लपका करतौ ढबै के जमावूं दो-च्यार झापा मे।'

पछै वौ काठी मून धारली। घड़ी-घड़ी बतळायौ तौ ई नी बोल्यौ।

अेकर वौ दो-तीन घड़ी दिन चढ़यां मोड़ौ उठ्यौ तौ उणनैं जाणै जित्ती खारी लागी। आंचा-आच में उजाळिया घाट ई काच मूडागै धरनै दांत पीसतै बूझ्यौ, 'रातै इत्तौ मोड़ौ क्यूं आयौ ? अवस सिनेमा में उखलियौ दीसै।'

'थोड़ौ-सो मोड़ौ आवूं अर थांनै तौ झट सिनेमा रौ वेम व्है।'

'तौ साच बता गियौ कठै ?'

लिलाड़ मे सळ घाल थोड़ी ताळ उपरांत सोच-विचारनै बोल्यौ, 'घोड़ां रै चौक मासोजी सूं सिझ्या रा मिळण नै गियौ। म्हैं तौ घणी ई नटयौ पण वै ब्याळू करयां टाळ आवण ई नी दियौ। पछै आडौ व्हैतां ई ऊंध आयगी। जागतां ई सीधौ बोर्डिंग कान्ही म्हाटो। विसवास नीं व्है तौ...।'

'थारै माथै नैं वळै विसवास !' म्हैं सैं बावड़ कर लिया। करणीदांन अर रांमवगस रै साथै पिंडा चार भुजा टाकीज पधारया। थनैं कित्ती वळा समझायौ के आ लफंगां री सांढ़ी मत कर। पण थारै करै जद ! अर वळै म्हारै सांम्ही झूठ केवटणी चावै। पू कैवै तौ वांनै रूबरू बुलाय पूछूं ?'

आ बात सुणतां ई काच मांयली छिब री लप मूडौ उतरग्यौ। आख्यां चुरावतौ

अठी-उठी ताबा-माखा करण लागी। पछै दोनूं हाथां कांन झालतो गिरणायो, 'काले घूड़-खांणी व्हैगी। अबै कदै ई भूल नीं करूं। आज-आज माफी बगसाय दो।'

'माफी बगसायां यूं सांम्ही वत्तो इतरैला। अेकर सावळ भारणी उतर जावै तो पछै केई दिनां तांई निरांत। निसडा रै लाज-सरम रो वास्तो ई नीं। गांव रौ भाईपो दोखियां सूं ई भूंडो। वांरो बस लागै तो चोखळो छुड़ाय दे। घरवाळां री सै आस थारै माथै अटकयोड़ी। ज्यूं-त्यूं वकीलात पास करलै तो घरवाळां रा फोडा भरै पड़ै।' भीतर घरवाळां री आस माथै बीजळी पड़ैला जको तो पड़ैला ई, पण थारी गत ई भूंडी बिगड़ैला। वा ई कस्सी, वौ ई सूड़। वा ई झाड़बड़, वौ ई कूतर। वौ ई हळ, वै ई ऊमरा। वौ ई तावडो, वो ई परसेवो। वै ई लूवां अर वा ई छांत! सावळ मन लगाय नीं भण्यो तो थारा कांटा थारै ई भागैला।'

'म्हारा कांटा म्हारै नीं भागै तो काईं थारै भागैला?'

'म्हारै!' वौ इचरज अर गतावम मे अळझ संका कीवी। पछै मीचरी आंख्या काढ़ काच रै सांम्ही जोयौ। भला इण मे थोबड़ी सुजावण री कांईं बात! भलाई री बात ई खारी लागै! अै दिन तो कुदड़का मारता खिसक जावैला अर पछै पिछतायां की सांधो नीं लागै।

अरे! काच मे औ गधा रो मूडो कीकर परगट व्हियो? लारै कोई गधो तो नीं ऊभो? वो झिझकनै पाछल फोरी- कीं नै कांईं! पछै सांम्हो-सांम्ह मूंडो करयां आपरो इज उणियारो सुभट दीसयो। ठोड-ठोड़ खीलां ईं खीलां।

कुत्ता री गळाई अै कांन इत्ता लांबा कीकर व्हैगा? आंख्यां मीच पाछी खोलतो तो कांन पाछा छोटा व्हे जाता। कांनां री लोळां घड़ी-घड़ी तांण खींचतो। चिट्टूडी आंगळी सूं ठेठी काढ़तो।

अेकर देसी छातो पीयो मीचरी आंख्यां में ईं रंग आयग्यो। काच में भाळंयो तो उणियारो असैंधो लखायो! मीट गडाय बूझ्यो, 'थूं कुण है भाया?'

'म्हनै ई नी ओळख्यो?'

'कदै ई देख्यो व्हूं तो ओळखूं!'

'थारी अेंडी मत कीकर बिगड़ी के आपोआप नै ई नी ओळखै। आ तो मोत सू ईं माडी बात है।'

'माड़ी व्हो भलां ईं सिरै, पैला थारी पिछांण तो बता, थूं है कुण? म्हारा दरपण में डेरो क्यूं जमायो? थारो काळो मूडो कर अठा सूं।'

'म्हारो मूंडो काळो व्हियां थारो कीकर बचैला। आछो व्हियो रे बावळा, थनै इत्तो ई वैरो कोनी के थूं है जको ई म्हैं हूं।'

'म्हैं हूं जको ई थूं है?'

'हां!'

'पछै म्हैं ओळख्यो क्यूं नी?'

'वा तो थूं जांणै। कदास दारू पीयां आंख्यां री तासीर बदळगी दीसै।'

'कांईं थे वळै दारू पीयो?'

'म्हैं नीं पीयो, थूं पीयो।'

तठा उपरांत दोनूं हाथां माथो झाल वो थोडी ताळ गिड़ा री गळाई अवचळ बैठो रह्यो। पछै नीठ हीमत करनै टमकारती आख्यां काच सांम्ही जोयो। माथै अै दो सीगड़ा व्है ज्यूं कांई ऊगोड़ा ? देखणी चावै तो ई नी देखीजै। कुरसी छिटकाय भचकै ऊभो व्हियो। हाथां लुकायोड़ो बंडल अर आगपेटी लेय पाछो उणी भांत कुरसी माथै बैठग्यो। ऊंधी बीड़ी लगाय, लगता ई तीन-चारेक कस खींच्या। धूंआ रा गोट सूं काच रो पांणी धुधळो पड़ग्यो। अबकी काच मे बकरा रो मूडो निगै आयो। लटकता कांन। माथै दो तीखा-तच्च सीगड़ा। कठै ई काच री रंगत तो नी बदळगी ! वो जूझळ खाय माचा माथै आडो व्हैगो।

पछै खासा दिनां लग वो काच में आपरो मूंडो नी जोयो। तो ई हवा अर तावडा रै झीणै पड़दै उणनै आपरो प्रतम दीखण रो भरम व्हैतो। वो आपरी काळूटी छीयां सूं ई आंतरै...आंतरै भाजणो चावतो। पण छीया ही के उणरो सांढ़ो ई नी छोडती। उणनै आपरी छीयां सूं ई डर लागण लागो। जबर भूंडी गत विगड़ी।

अेकर रीस में भळभट्ट होय वो कमरा रो ताळो खोल्यो। ठोकर सूं फड़को उघाड़, बस्तो मांचा माथै पटक दियो। काच सूधो करनै साम्ही-सांम्ह कुरसी माथै जमग्यो। काच माथै रंजी ई रंजी झिल्योड़ी ही। रंजी मांय सूं अणछक अेक उणियारो उघड़्यो। उण माथै मीट पड़तां ई वो कैवण लागो, 'आज काले पिडा छोरयां लारै रांवण लागा ? अबै तो साव पाखी परवारगो ! व्है जकी बात म्हनै सुभट बता, नीतर आज थारी वाता है।'

'थारी म्हारी बातां तो भेळीज है।'

'आं पोथी आडियां सूं अबै नी भरमीजूं। ओटाळ, थारा अै लखण तो नी जांण्या हा ! सुभट पड़ूं तर दे के थूं सड़कां चालती छोरयां रै लारै चोड़ै-धाड़ै रांचै के नी ?'

'राज री सड़क म्हारै अेकला रै ई पट्टै कोनी। घणा ई मिनख अठी-उठी चालता रैवै। म्हूं किण-किण रो ध्यांन राखूं।'

'थूं खास ध्यांन राखनै लारो करघो, जद इज तो म्हनै थारै माथै इत्ती चंडाळी छूटी। पैला तो म्हूं कदै ई थनै अैड़ो ओळबो नी दियो। लाज-वायरा, थूं आ नवी विद्या कद सीखी ? घरवाळा कांई भरोसो करनै थनै भणावण खातर भेज्यो अर थूं अै छापा उधाड़्या ! अघवेरडा, थूं वळै म्हनै मूंडो बतावै ?'

'जे म्हारा मूंडा सूं थांनै अैडी ई ओक्या है तो थें मूंडो जोवो ई क्यूं ? म्हूं डरतो सांम्ही ई नी धकणो चावूं। पण थें नीं मांनो जिणरो तो म्हूं कांई करूं ?'

'वळै लपर-चपर करै ! अबै ई लखण पाछा नीं सांवट्या तो जीभ खांच लूंला।'

आ फटकार सुणाय वो रीस में होठ चाबण लागो। पछै दो-तीन वळा जोर सूं झाटकनै आखी रंजी झाड़ी। काच मांयलो उणियारो तो सांम्ही उण माथै ई आंख्या काढ़ण लागो। चोरी अर सीनाजोरी आज ई परतख आंख्यां दीठी। 'थोड़ी-घणी ई लाज व्है तो ढकणी में नाक डुबाय मरजा। घरवाळा तो राबड़ी खाय टंक टाळै। पेट रै गांठां देय थारै घी भेजै। पड़दो रा लाडू सांधै। थारै सपनां सागै

विसवासघात कर, थूं छोरघा लारै रांचतौ फिरै। बोल, पछै लाज-सरम किण दिन सारू व्है ?'

'म्हारा ई तौ की सपना व्हैला। सपना किणी री लाज-सरम नी पाळै !'

'थारै वळै कैड़ा-काई सपना है ?'

'सपना जैड़ा सपना। म्हारी ऊमर अर जमांना परवाण सपना !'

'पछै घरवाळां रै सपना रौ काई दीन व्हैला ?'

'घरवाळा जांणै।'

'थूं की नी जांणै ?'

'आं हां, म्हैं तौ आपरै सपनां टाळ दूजी की बात नी जांणू।'

'चंडाळ, थू इत्ती बातां कद सीखग्यो ?'

'अै बातां तौ आपै ई सीखीजै।'

आ बात सुणतां ई उणनै तरणाटी आयगी। तड़ातड़ पांच-सातेक लपड़ा मैली। गाल राता-लाल व्हैगा। आंख्यां जळजळी व्हैगी। घकै उणियारौ निरखण री हीमत नी व्ही। थोडी ताळ मूंडो ढेरचां बैठो रह्यौ। पछै पांटी पाधरी करनै मीचरी आंख्यां मन-माडै काच साम्हो जोयौ। गालां री रातौड़ हाल मिटी नी ही। तीन-चारेक खीलां फूटगी ही। सेवट हीमत हारतौ छेहली धमकी दीवी, 'अबै कदै ई छोरचां लारै रांचतौ निगै आयौ तौ घांटी मरोड़ म्हाकूंला।'

कीं पड़ूत्तर नी मिळचौ।

आंख्यां गडाय वौ अेकटक आपरै प्रतम सांम्हो तठा लग देखतौ रह्यौ के जठा लग दरपण मायली छिब होळै-होळै लोप नी व्हैगी।

के अचांणचक वौ झिझकनै ऊभो व्हियौ। बकाई खावतौ बरकण ढूकौ, 'आ कैड़ी अजोगती बात व्ही ? काच रै मांय म्हनै आपरौ उणियारौ ई नी दीसै !'

पछै वौ सितगिया रै उनमान दौड़तौ-दौड़तौ बोरडिंग रै बारै गियौ। कंदोई री दुकांन सूं अेक दई-वड़ी अर अेक लाडू लायौ।

पाछौ कुरसी माथै बैठ काच मे देख्यौ तौ उणियारौ सुमट निगै आयौ। गाला री रातौड़ खासी कम पडगी ही।

'अबै रूसणौ फिटो कर। ले आ मिठाई खामलै। थारै खातर ई लायौ।'

'नी खावू। म्हनै कूटचौ क्यूं ?'

'हाल कांई व्हियौ, बोछरड़ाया करैला तौ वळै कूटूंला। घणौ-घणौ जंतरावूंला।'

'पछै औ थोथौ लाड क्यूं। हाथ नीं थाकै जित्तै कूटचां जावौ।'

'ले खाय लै। घणौ वाद मत कर। नीतर वळै मागूला।'

काच मांयलो प्रतम थोबड़ो सुजाय बोल्यौ, 'मरचां ई नी खावू। थारी इंछा व्है ज्यूं कर।'

'अरे, मूरखां रा पातसा, म्हैं तौ थारी भलाई खातर इत्तौ घयौ करूं।'

'थारौ म्हारो भलो किसो न्यारौ है ?'

'कांई थूं म्हारा सूं न्यारौ कोनीं ?'

'आं हां, अपां दोनू तौ अेक ई हां। फगत औ दरपण रांडा रौ मूळ है।'

'म्हारो कह्यो मांन । थनै राजी करण सारू आ मिठाई लायो । खायलै ।'

'पैला इण काच री किळो-किळो बिखेर बारै वगावै तो म्हनै पतियारो व्है । पछै थारो कह्यो कदै ई नीं टाळूं ।'

'वचन देवै ।'

'हां, वचन देवूं ।'

तठा उपरांत राम जाणै उणरै कांई जची के गाभा धोवण री मोगरी सूं वो उण *काच रा टुकड़ा-टुकडा कर न्हाक्या । गळियारै रा बगदा में फेंक्या टाळ* नेहचो नी व्हियो । पछै कोड सू मिठाई खाई तो दूणी सस्वादी लागी । अर वो दिन अर वा घड़ी के जद-कद मिठाई खावण रो तंत सजतो वो कदै ई आळिया-टोळिया नी करचा । उण दिन सू ई माहोमाह दोनां रै बिचाळै अेक अैडो ई नेगम राजी-नावो व्हैगो । अर आज उण राजीनावा रै परताप अेक नाकुछ थाणेदार व्हैतां थकां ई लोग-बाग उणरै पाखती पाच लाख रिपियां रो नकदो कूतै !

अलेखूं हिटलर

वैं पांचूं ईं मिनख हा। कोई ऊमर में छोटी तौ कोई मोटौ। तीस अर पचास बरसा रैं बिचाळै सगळा री ऊमर ही। लांठोड़ा भाई रैं माथै कठै ई कठै ई धोळा झाकण लागा हा। बाकी सगळां रा माथा काळा-भंवर। उणियारा मिनखां जैडा ई हा। आंख्यां री ठौड़ आख्या। नाक री ठौड़ नाक। दाता री ठौड़ दात। हाथ पगा री ठौड हाथ पग। ताबा-वरणौ रंग। सगळां रैं माथै धोळा पोत्या। किणी रैं नवा। किणी रैं जूंना। लट्ठा रा धोळा झब्बा अर धोळी ई धोतिया। काना निगोट सोना री सांकळिया अर मुरकिया। तीन जणां रैं गळै काळै डोरां पोयोड़ा सोना रा फूल। सगळा ई मिनखां री बोली बोलता अर मिनखां री ई हाली हालता।

सगळा रैं ई खेती रौ हलोलौ। खेत कमावता अर साखां निपजावता। गवूं, जीरौ, मिरचा, राई, बिराळी के मेथी इत्याद भात-भांत री साखा रैं मिस सूखी धरती री कूख सरसावता। देस री आजादी रैं उपरात लूंठा करसां रैं फाचरैं आई पण आई। आंधा होय धूळ में बीज बूरता अर जांणै जित्ती कमाई बीणता।

आ पाचू मिनखां रैं ढंग-ढाळै अैड़ौ लखावतौ के किणी मां री कूख सूं जलम नी होय, आंरौ धरती री कूख सू ई जलम व्हियौ। केर, आक, खेजड़ी अर फोगड़ा फळै ज्यू ई, अै सरतर बध्या अर फळ्या। जाणै कुदरत री वनापती ई आंरौ भाईपौ व्हे।

;

पाचू ईं आगा-नैड़ा कड़ूंबै भाई हा। सीर में ट्रेक्टर मोलावण खातर जोधाणै

जावै हा। झब्बां रै हेटै वडियां रै ऊंटै खीसां नोटा री पूजतौ जाब्तौ करचोड़ौ हौ। सगळा रै ई मूंडै रिपियां री झीणी आब झबूका भरती ही। धन री जड़ व्है तौ काळजै ठेठ ऊंडी, पण उणरै अदीठ फळा री आब उणियारा झळकै।

मोटर सू उतरतां ई वै खीसा संभाळता पाधरा ट्रेक्टर री सोय खाथा-खाथा वहीर व्हिया। सड़क माथै पग टिकतां पांण पाछा अजेज ऊठ जाता। वांरै बस री बात व्हैती तौ वै काळूंटी सड़क माथै पग टेकता ई नी।

अेक पगोतियै चढ़तां ई काच रै माय दुकान रै धणी री माथौ सुभट निगै आयौ। पळकती टाट माथै निजर पड़तां ई सगळा अेकण सागै गुणमुणाय, 'सुगनां री बात, खुदोखद ओमजी माय बिराज्या।'

फडकौ उघडणा रै समचै ई हेम री जात ठाडी वायळ रै लैरकौ आयौ। पाचू ई अेकण सागै ऊंडा-ऊंडा निस्कारा खाच्या। अेक जणौ बोल्यौ, 'सुरग री मौजां तौ अै लोग माणै। अपा तौ ढोर-डांगरां री जूण भुगता।'

ओमजी मुळकता थका झीणै अर गळगच्च सुर में खुलासौ करचौ, 'थारी खेती-पाती सूं म्हारी दुकांन रौ आटौ-साटौ करता व्हौ तौ ना कोनी।'

'देखौ पिछनावोला।'

'छौ पिछतावतौ।'

लांठोड़ौ भाई ओझाड़तै कह्यौ, 'चिपतां ई आ पिछतावा री बरकत कांई छेडी। अै तौ आप-आपरा करम अर आप-आपरा काम है। करै जिणनै ई छाजै।'

रबड़ री गुदगुदी कुरसियां माथै बैठतां ई अैडौ लखायौ, जाणै वै बैठा ई नीं व्है। पतिमावण सारू रबड में तीन-चार वळा आगळियां खसोली, तद वांनै बैठण रौ धीजौ व्हियौ। पछै कुरसियां रै हत्थां खुणियां टेक नचीता व्हैगा।

रांमा-सांमा उपरांत अेक भाई कह्यौ, 'सेवट खपतां-खपतां म्हांरौ ई नंबर आयौ। आज रौ आज ट्रेक्टर खंचावौ जकी बात करौ। सांतरौ थार अर ससरी तिण रौ मौरत कढाय घर सू वहीर व्हिया। सदियै-सदियै गांव बड़ता व्हैणी चावां म्हे जांणांला के ट्रेक्टर आप बगसीस करचौ।'

'अठै तौ आवै जकौ ई आचौ करतौ इज आवै। दो बरस नंबर नै उडीक्या तौ अबै ट्रेक्टर सारू दो दिन रौ ई नेहचौ नी व्है।'

'दो दिन री भलां कही।' छोटकियौ भाई बोल्यौ, 'म्हांनै तौ अबै दो घड़ी री निरांत नी व्है। म्हांरै वहीर व्हैतां ई लुगायां तौ ट्रेक्टर वधावण खातर मोड़ा माथै ऊभगी व्हैला। सो, दोय सौ वत्ता लागै जिणरी आंट नी, पण ट्रेक्टर तौ अबार खेंचावणौ पड़सी।'

थांरी खथावळ देख ओमजी मुळक्या। 'म्हैं गांव वाळां री आदत ओळखूं। ट्रेक्टर कालै ई रेहो-रेट कर दियौ। मरजी व्है जणा खांच लीजौ।'

पांचां रै ई हरख रौ पार नीं रह्यौ। जाणै आखी दुनिया रौ राज हाथै आयग्यौ व्है। बिचेटियौ भाई ओमजी री पळका पाड़ती टाट सांम्ही जोवतौ कैवण लागौ, 'बडभागिया रै सवा हाथ रौ लिलाड़, पछै कैड़ी ढील। जीवता रौ।'

ओमजी सै भायां नै ओळखता। नम्बर री तपास करण सारू दो-दो तीन-तीन

वळा पेढी ढूकोडा। धंधा परवांण पूजती ओळखांण हो। दीसतो सळियो सुभाव। मीठो बोली। झीणी मुळक। डील री बणगट सूं अंदाे लखावतो जांणे ट्रेक्टर रै पुरजां री गळाई किणी कारखांनै वांरै सरूप री निरमांण व्हियो। मसीनां रै जोग ई वांरी काया घडीजी। टाट री ठोड टाट। पसवाड़ै कड़वटीलै वाळां री झालरी। गळा री ठोड़ गळो। मुळक परवांण मुलक।

साम्ही बैठा पांचू भायां रा उणियारा निरखता बोल्या, 'अबै तो नेठाव व्हियो। आखै मारग बस रा गदका खावता आया। की सुस्तावो। बिसाई खावो। ठाडो पांणी पीवो।'

इण मांन-मनवार रै उपरांत वै घण्टी बजाई। अेक आदमी मांय आयो। लस्सी लावण रो आदेस व्हियो। हाजरिया रै बारै नीसरता ई ओमजी कह्यो, 'थांरै दूध-दही री तो होड नीं व्है, पण दूजी मनवार ई काई करां। पांणी सस्तै दूध। मिचळो दही। अठै तो फगत ठाडी हुवा, ठाडो पांणी, रबड री गीदियां अर विजळी री चकाचूध है। मिळावट रा ठाट अर भेळ रा गाजा-बाजा है। रिपियां साटै ई नीं धांन मिळै अर नीं मुसाला। खावण-पीवण री मनवार करता ई लाज आवै।'

अेक भाई डोढ फेकतो फारगती कीवी, 'जे साचा मन सू मनवार करणी चावो तो घणी ई ऊंची-ऊंची चीजां मिळै। सुरग रै देवतावां नै ईसको व्है जैडी। मनवार करो तो अै चीजां है, नीतर लस्सी सूं काळजो ठाडो करणो तो दोसै ई है।'

सांनी साव सुभट ही। ओमजी जोर सूं हंसता थका कैवण लागा, 'अठै दुकांन में अै ऊंची चीजां नीं चालै। सिञ्या तांई ढबो तो म्हारै ठरका जोग थरै सरवरा री ना कोनी।'

'थांरै कैवतां पांण पूजती सरवरा व्हैगी। ओ माईतपणो ई घणो। अेकर ट्रेक्टर निजरां तो बतावो।' दूजोड़ो भाई मन री उबेड़ दरसाई।

'लस्सी आवै। पीयनै चालां।'

'लस्सी किसी पाछी व्हाडा मे वडै। ट्रेक्टर निरख्यां उपरांत काळजो घणो ठरैला। वत्तो स्वाद आवैला।' चोथोड़ो भाई की चोज नी राख मन में फरफरावती बात होठां उफणी।

खुदोखुद ओमजी साथै वहीर व्हिया। कारखांनै ट्रेक्टर तो प्यार-टंच पड्यो हो। लाल-बंब फरगुसन ट्रेक्टर। जांणै ममोलियां री ढिगली अेकठ व्ही। माथै निजर पितळता ई पांचूं भायां रो अंतस रंगीजग्यो।

सावळ हाथ फेर, भली-भात निरख-निरखाय सगळा ई पाछा कमरा में आया। लस्सी री गिलासां टेबल रा काच माथै ढक्योड़ी पडी ही।

कुरसी माथै बैठतां ई ओमजी कह्यो, 'काटोडां, जमांनो बदळियो पण बदळियो। पैला तो गांव मे अेक ठाकर हो, पण अबै सै मोटा करसा ठाकर बणग्या। आजादी रा सगळा थाट थांरै ई पांती आयग्या। छाछ-राबडी रा ई जांदा पड़ता अर अबै ऊंची-ऊंची चीजा पांणी रै मापै सळकाईजै। हळ अर हींयोड़ो बपरावतां जोर पडतो, जका हजारूं रिपिया री ट्रेक्टर खांचतां सोचो ई नी। डारां, आजादी रो लावो लेणो व्है सो ले लीजो। मन मे मत राखजो।'

दूजोड़ो भाई बिचाळै ई बोल्यो, 'कैणा घूळ रा साथा है! धांन खाय नीठ पेट

भरां। हजारूं पीढ़िया लग विखौ भुगतियौ, आज कांणी री काजळ ई को सुहावै नी ! भलौ व्हौ गांधी-बाबा रौ जकौ म्हांनै ई मिनखा-जूंण रो साव लिरायौ। नीतर गावां में बिजळी री मोटरां, रेडिया अर ट्रैक्टर रौ कांई वास्तौ !'

'पण म्हांनै तौ अबै कागदां रा नोट खाय पेट भरणौ पडसी। गिणिया दिन घटै, म्हां लोगां नै तौ धांन रा ई फोड़ा पड़ैला। रिपियां रौ कांई अथांणौ घालां?'

'थें म्हांनै ट्रैक्टर पूरधां जावौ, म्हे थांनै धांन पूरधां जावांला। चावौ तौ 'माहौमाह लिखत करलां।' चोथोड़ो भाई जांणै मनचायौ पासौ फैंक्यौ व्हे।

'कोई किणी नै की नी पूरै।' वडोड़ो भाई जूझळ दरसावतौ कैंवण लागो, 'भैंस खड़ खावै तौ आपरा पेट सारू। सै आप-आपरी गरज रा छातीकूटा है। कोई आपरी गरज ट्रैक्टर वेचै अर कोई आपरी गरज ट्रैक्टर मोलावै।'

बोलां रो भाकरौ भणकारौ कांनां पड़चौ तौ वडोड़ा भाई नै लखायौ के बात की अंवळी उलझगी। अजेज पाछी केवटी। 'हा, ओमसा, वात तौ साची फरमावौ। बाबा रै परताप म्हांनै सुख री थोड़ी झाकी अवस मिळी। घर-घर धांन रा ढिगला। घीणा री घेछाळां...!'

विचाळै ई टाटियौ माथौ घूणतां ओमजी ओडो दियौ, 'घर-घर री वातां झूठी इणिया-गिणिया मोटोड़ा करसां री अवस मन जांणी व्ही।'

छोटक्यौ भाई थोड़ो-घणो भण्योड़ो हौ। ओमजी री अछेरी बात नै संवारतां कह्यौ, 'मन जांणी तौ कांई व्ही ! दुख रो टूंपौ की खोळौ व्हियौ तौ सोरो सांस आयौ। सुख री झांई तौ हाल चांद ज्यूं घणी आंतरै है, घणी आंतरै।'

विचेटियौ भाई इण विरथा झिकाळ नै ओछी बाढण री नीत सूं कह्यौ, 'चांद सारू झापळिया भरणा मे की सार नीं। मतलब री बात करौ। खीसां मांयला नोट काढ़ ओमजी नै संभळावौ। अपांरी चीजां देख-भाळनै हांनै करौ। वगत तौ वातां करां तौ ई वीतै।'

अणछक, जांणै भूल्योड़ी बात याद आयगी। अजेज खीसां में हाथ बड़्या। टेबल माथै नोटां री ढिगली व्ही। पचास घोडां री ताकत रै विलायती फरगुसन ट्रैक्टर सागै ट्रॉली, तवियां, झूलो अर हेरो। साठ हजार रिपियां रो चरमौ हौ।

अठी ओमजी नोट गिणगिणाय दराज तालकै करचा अर उठी सगळा भाईड़ा अेकण सागै आपरी चीजां हांनै करण सारू कारखांना री सोय करी। वडोड़ा भाई रै आदेस छोटक्यौ भाई सुरंगी माळावां, साख्या सारू रातो रंग, गुळ अर रम री छव वोतलां लेवण खातर बजार कांनी वहीर व्हैगो। वाकी च्यारू भाई टिकिया जकौ हमालां साथै जुतनै झपाझप ट्रॉली भरली। वै आपरै कांम सूं निवड़िया जितै छोटक्यौ भाई आयग्यो। अणूता कोड सूं गुळ वेंच्यौ। माळावां सूं ट्रैक्टर सिणगारघो। सांम्हौ-सांम्ह साख्यौ कोरधौ। तीनूं छोटक्या भाई खांमची डलेवर हा।

आंचो करतां-करतां ई खासो दिन ढळग्यो। सूरज आथूण-दिस रै ओलै लुकण री त्यारी मे इज हौ। अजमेर-जैपर सड़क आळी चुंगी-चौकी सूं घर्क निकळता ई खुनी सडक हौ। फरफरावती माळावां सिणगारघोड़ो ट्रैक्टर धररर-घररर घालतो हौ। माथै बैठा पाचू भायां नै अंडो लखायौ जांणै सड़क री ठौड़ आभौ ई

वारै ट्रैक्टर तळै पाथरग्यो व्है। अर सांम्हली धरती वांनै नारेळी सूं ई छोटी—साव छोटी लखाई। आथमतो सूरज जाणै वांरा ट्रैक्टर नै निरखण सारू अेक ठौड़ ठम्यो व्है। सूमाड़ पाड़ती हवा जाणै वारा ई वारणा लेवती व्है। थांसी दुनिया रो हरख वांरै हिवड़ै हिलोरा भरण लागो। सोना रै फूलां रो परस पाय जांणै बिछड़ता सूरज री किरण सारथक व्ही। रूख बाटकां चापळचोडा पंछी ट्रैक्टर री धरधराहट सुणनै कांनी-कानी उडना तद वानै अैड़ो भरम व्हैतो जांणै वारै अंतस रो आणद आ पंखेरुवा रो रूप धरनै अठी-उठी उडै।

के अणछक सू-सू करतो तीखो सरणाटो वांरै कानां खणक्यो। झिझकनै असवाड़ै-पसवाड़ै जोयो। पाखां थाम्योडो अेक बाज हटै उतरयो अर देखतां-देखता सिणनरा रै पाखती चापळचोड़ा अेक धोळा सुमिया नै पजा झाप पाछो उडग्यो। पाचू ई भाई अेकण सागै हसनै अेक दूजा रै साम्ही जोयो। बडोड़ो भाई ग्यांन री वात छांटी, 'जोग किणी भाव नी टळै। इणी सिणतरा रै ओलै बाज रै पंजां इण सुसिया री मौत लिख्योडी ही।'

बाज अदीठ व्हियो जित्तै वै उठी देखता रह्या। ट्रैक्टर री धरधराहट चालू ही। नाळा री ढळांन ढळनां चोथोडो भाई बोल्यो 'नी नी करतां ई खासो अबेळो व्हैगो। पण तो ई मांनरै मोरत रो टांणो सजग्यो। गाव सू वहीर व्हैतां, सुगन ई टाळका व्हिया हा।'

चढांत उतरतां ई वानै दो-अेक खेतवा धकै साइकिल चढयो अेक मोटयार निगै आयो। अर उठी उण मोटचार नै की धरधराटो सुणीज्यो तो वो झट लारै मुड़नै भाळयो—कोई ट्रैक्टर आवै दीसै। वो तुरंत पाछो मुड परो नै खाथा-खाथा पैंडल दाब्या। ट्रैक्टर रै धणियां सू उणरी वा खथावळ छानी नी रीवी। छेती वधता ई वै आ बात लखग्या। ट्रैक्टर चलावतो छोटकियो भाई बोल्यो, 'कालो कठा रो ई! कित्ता ई आंवै पैंडल मारै तो कांई व्है! ट्रैक्टर सू धकै जायनै कित्तोक जावैला!'

वो थोडी-सीक रेस वळै बधाई। ट्रैक्टर री धरधराहट ई थोडी वधगी। साइकिल वाळा रै कांना ई इण वात रो बेरो पड़ग्यो। वो वळै आचै-आचै पैंडल दाब्या। की छेती वळै वधगी।

'तर-तर वधती छेती ट्रैक्टर चलावता भाई रै हीयै झरी कोनी। वो वळै कीं रेस खांची। 'मां रो माटी, सेवट तो थाकैला। थोड़ो ताळ मोदीजै तो छो मोदी-जातो।'

'उघाड माथ्या छोरां री अैड़ी इज अंवळी बुध व्है।' बिचेटियो भाई मूंडो मस्कोर बोल्यो।

धरधरातो ट्रैक्टर सड़क नै संवेटतां गुड़कतो हो। सुरंगी माळावां हवा में बत्ती फरफरावण लागी। बडोडो भाई दानापणो दरसायो, 'मतै ई आहुळैला। क्यूं बिरथा रेस खांचै। ट्रैक्टर आगै बापड़ो साइकिल री काई जिनात।'

चीं-चीं करती अेक तीखी चीचाट अणछक वांरै कांनां सुणोजी। बिल में वड़ता-वड़ता ऊंदरा नै अेक चील हांफरता झाप लियो। वा चीं-चीं उण मरता ऊंदरा री ही। थोड़ी ताळ मे चीं-चीं री आवाज इण दुनिया सू विलायगी।

सूरज री आधी कोर डूबगी ही। अबै वो ई रात लग विलाय जावैला। डूबता

सूरज रै ओळूं-दोळूं गुलाल ई गुलाल पाथरग्यो, जांणै ट्रेक्टर रै कसूंबल रंग रो उण ठोड़ प्रतम पड़ै।

डलेवर टाळ च्यारूं भाई डूबता सूरज सूं मीट हटाय धकै जोयो—अरे! साइकिल अर ट्रेक्टर री छेती तो तर-तर बधती जावै! सगळां रै मनांग्योना अेकण सागै अेक बात ई रड़की—सौ दो सौ रुपल्ली री साइकिल अर साठ हजार रिपियां रो ट्रेक्टर! आ कोई होड़ मे होड़ है! ऊदरो हाथी सू अड़यड़ै।

दूजोड़ो भाई बोल्यो, 'फीफरो फाटनै मरग्यो तो घरवाळां सूं छेती पड़ जावैला।'

'राम जांणै घरवाळां सूं छेती कद पड़ै, पण अपांरै ट्रेक्टर सू तो छेती बधती ई जावै!' छोटोड़ा भाई रै सुर मे पिछतावा रो पुट हो।

छोटकियो भाई थोड़ी रेस वळै खांची। नवो अटंग ट्रेक्टर हो। पूरी रेस खांचणी ठीक कोनीं।

साइकिल वाळो लारै मुड़नै जोयो। साचांणी वो खासो धकै निकळग्यो हो। जोस अर हूंस री थापी वो वळै जोर सू पैंडल दाब्या। पग तो जांणै भरणाटै चढग्या व्है। डूगर सूं खळकता झरणा रै वेग साइकिल रळकती ही। जांणै कोई वतूळियो साइकिल रो रूप धार लियो व्है के वो मोटचार वतूळियै सवार व्हैगो व्है।

ट्रेक्टर माथै बैठा पांचूं भाई ध्यांन सू माळचो। साचांणी छेती निसैंवार बधगी ही। अर तर-तर बधती ई जावै। माळावां सिणगारघोड़ो विलायती ट्रेक्टर। पचास घोड़ां री ताकत रो। साठ हजार रिपियां रो लागत रो। अर आ दो सौ रुपल्ली री साइकिल। अर औ कॉलेजियो छोरो। उघाड़ै माथै। नेकर पैरघोड़ो।

हवा रो जोर सू फटकारो लाग्यो तो अेक माळा रो ताग तूटग्यो। वा च्यारूं कांनी अठी-उठी फरफरावण लागी। कदैई दोवड़ी व्है जाती तो कदैई पाधरी। अेक ताग वळै तूटग्यो।

ट्रेक्टर चलावता छोटकिया भाई रै काळजियै फरफरावती माळावां रै मिस जाणै झाटी रा सड़िदा लाग्या। वो दांत पीसतो-पीसतो ई पूरी रेस खांचली। तोप सू छूटघा गोळा रै वेग ट्रेक्टर गुड़कण लागो। ट्रेक्टर तळै पाथरघोड़ो आभो पाछो पैला सूं ई ऊंचो—घणो ऊंचो चढग्यो हो।

की छेती कम पडी। वळै कम पडी। हां, अबै तो खासी कम पड़गी!

टोपसी रै उनमान छोटी लागती दुनिया फगत दो ठोड़ सिंवटनै बिखरगी ही। ट्रेक्टर अर साइकिल-सवार टाळ वांनै दुनिया री किणी तीजी बात रो ध्यांन नीं हो। साठ हजार रिपियां रो ट्रेक्टर अर दो सौ रुपल्ली रो खीलो।

जोग री बात के लगती दो मिलटरी री गाडियां सांम्ही आई तो ट्रेक्टर री रेस धीमी करणी पड़ी। बाईसिकल वाळो मोटयार औ ताखो राख खासो धकै निकळग्यो।

बिचेटिया भाई री आंख्यां में जांणै सूळां घुभी, 'अै उघाड़ माथ्या छोरा कित्ता असांम व्है। गाडियां रै उकरास लप धकै बधग्यो।'

बडोड़ो भाई वळै दांनापणो बघारयो, 'बापड़ो थोड़ी ताळ अंजसै तो छो अंज-सतो। कित्तोक धकै जावैला। सेवट तो सास तूटैला ई। बावळो, बिरथा आपरी

जवांनी गाळै। नसां ढीली पड़गी तौ लुगावडी रै कांम रौ ई नीं रैवेला। आ जवांनी कोई साइकिल माथै उतारण सारू नी व्है !'

खुली सड़क मिळतां ई छोटक्यौ भाई पाछी पूरी रेस खांचली। जांणै सोर नै वत्तो बताई। हवा नै अपडण सारू हड़बचा भरतौ ट्रेक्टर आधी री इज रूप बणग्यौ। अर तर-तर छेती भागती गी।

ट्रेक्टर री घरघराट सलबै सुणी तौ वौ अेकर वळै लारै मुडनै जोयौ। रीस में तणकारौ देय पाछौ मुड्यौ। फिडकली रै उनमांन उणरा दोनूं पग चकरी चढ्या सो चढता ई गिया। अबै उणनै थोडौ-थोड़ौ परसेवौ होवण लागौ। वौ राजस्थांन रौ सबसूं तेज साइकिल चलावणियौ हौ। हां, वौ ई अेक मिनख हौ। बूकियां री ठौड़ बूकिया। पगां री ठौड़ पग। सांस री ठौड सांस। सपनां री ठौड सपना।

नित साठ-सित्तर मील साइकिल बगडावण रौ अतूट धारौ हो। लारलै नव महीना सूं औ नेम पाळै। धकलै महीनै अखिल भारतीय साइकिल दौड मे अगवांणी रैग्यौ तौ कदास पेरिस जावण री बारी मे की मीनमेख नी।

साइकिल चलावण री लकब अर आंट देख उणरै भेळी भणती अेक साथण पैल फटकारै चिपतां ई पाधरी ब्याव सारू प्रस्ताव करयौ। वौ हां ना रौ सुमट की पड़ूत्तर नी दियौ। पण थोड़ा दिन सांढौ करयां, माड़ीमाड़ वंतळ करयां, अेक दूजा रौ अनस सावळ ओळखियां मतै ई सगळी बातां नेगम व्हैगी। अखिल भारतीय साइकिल दौड़ रै उपरांत ब्याव रै कौल-वाचा में झिलग्यौ। वौ विखा मे पळयोडौ हो। वा आसूदा घर में रम्योडी ही। पण दोनूं अेक दूजा माथै जीव देवता। अेक दांत रोटी तूटती। ब्याव री लाखीणी रात वांरी सेजां चांद उतरैला !

अणछक वाहेली रौ उणियारौ उणरी आंख्यां साम्ही भळक्यौ। जांणै वा हवा रै मिस आज री आ होड निरखै। उणरौ करार दस गुणा बधग्यौ। पगां रै जांणै पांखां चिपगी। भला वाहेली री अदीठ प्रीत सूं वत्ती इण निरजीव कळ री कांई जिनात ! छेती बधण लागी सो तर-तर बधती गी। बधती इज गी। टापतां-टापतां पैला सूं ई डोढ़ी छेती पड़गी। ट्रेक्टर री रेस पूरमपूर खांच्योडी ही। इण सूं आगै किणी रौ की जोर नी हौ। पांचूं ई भाया रौ मन मठोठी खावण लागौ। च्यारूं मेर सूंमाडा भरती हवा घरघराट रै पळेटै अळूझगी। आखी दुनिया रौ राज हाथै आयौ थकौ टीवतां-टीवतां खुस जावैला।

तोप रा गोळा रै वेग ट्रेक्टर भलापतौ हौ। साइकिल वाळा उघाड़-माथ्या छोरा रै पगां जांणै कोई तोफान सरण मांगी व्है। वाहेली रौ उणियारौ उणरी आख्यां सांम्ही झमंका भरतौ हौ। वळै छेती बधण लागी। नी तौ उणरौ फीफरौ फाट्यौ अर नी उणरौ सांस थाक्यौ।

आधी माळावां तूट-तूटनै हेटै खिरगी। ट्रेक्टर माथै थरपिया पूतळा दूजौ जोर ई कांई करता। अैड़ी अपरोगी रीस आई के पगां दौड उणरौ अळीतौ कर न्हाकै। जांणै ट्रेक्टर रै आगै आखौ जमारौ हार जावैला। कैड़ी अबखी अर अंवळी आंटी पजी !

पण अदीठ रै जोर अर जोग रौ किणी नै की वेरौ नीं हौ। मतूळियौ वण्योडा पग अणछक खासी धूमण लागा। बैरण चैन नै अबार ई उतरणौ हौ ! तौ ई वौ

हावगाव नी व्हियो। ट्रेक्टर रै वेग रो कूंतो उणरा पग मतै ई कर लियो। वाहेली रो उणियारो च्यारू दिस दीप-दीप करण लागो। प्रीत रै परचा सूं ऊंचो दुनिया में दूजो की परचो नी। वो तुरंत साइकिल थाम फूदी रै उनमान हेटै उतरचो। साइकिल अेक पसवाड़ै ऊभी करनै नेठाव सू चैन चाढण लागो।

तर-तर छेती कम पड़ती गी। ट्रेक्टर री धरधराट अर पांचू भायां रो मोद हवा में मावतो नी हो। भलां जोग रा जोर नै कुण पूगै ! साठ हजार रिपिया री मरजाद रै ढाकाढूमो व्हैगो। इण भांत रै कूड़ा सतोख सू कोई आपरो मन पोखै तो उणरो कुण काई करै !

ट्रेक्टर री धरधराट माव सलवै सुजीजण लागी। चैन चाढण री हळफळाई खथावळ मे साम्ही वत्तो मोडो व्हैतो गियो। अर देखतां-देखता ट्रेक्टर तो साव गळवै आयग्यो। पण उणनै तो आपरै करार अर वाहेली रै कांमण रो पूरमपूर थावस हो। धरधरातो ट्रेक्टर जोड़ै आय धकै निकळग्यो। पाचू भाई मिनखा री बोली मे जोर सूं अेकण मार्ग की बकिया। उण वेळा कागलां री जान कांव-कांव करती माथा कर नीसरी। ट्रेक्टर री धरधराट अर कागलां री कांव-कांव रै विचाळै मिनखा रा आखर सावळ उघड्या कोनीं। पण तो ई उणियारां री रंगत अर होठा री चाळचोळ रै लटकै औ स्यांनो तो साव सुभट हो के वै बोल किणी भला मिनख रै काना सुणै जैड़ा नी हा।

वो चैन चाढ साइकिल चढ्यो जणा ट्रेक्टर दो अेक खेतवा धकै निकळग्यो। च्यारूं भाई लारै मुडनै खिलको जोवण लागा। खेलो चैन चाढ़ण री मिस करै। होड करण री हूंस ढोळै बैठगी दीसै !

पण वो तो साइकिल चढतां ई पाछो बतूळियो वणग्यो। अर छेती तर-तर कम होवण लागी सो व्हैती ई गी।

मगसा-मगसा अधारा में कुदरत बूरीजण लागी ही। च्यारूं भाई आख्यां टमकार-टमकार देखण लागा। अरे ! आ नाकुछ साइकिल तो वळै धकै निकळ जावैला।

रैस पूरमपूर खांच्योड़ी ही। साचांणी, ट्रेक्टर रा वेग परवारो दूजो की ठरको नी हो। सगळा ई मन माडै दांत पीसण लागा। चैन चाढ़ती वेळा ई परचो वताय देणो हो ! कैड़ो उम्दा ताखो चूकया ! अवै काई जुगत विचारै !

ट्रेक्टर रा कसूबल रंग माथै सांवळी झांई धिरण लागी। छोटक्यो भाई बूझ्यो, 'उघाड माथ्यो कठैक आवै ?'

च्यारूं भाई दांत पीसता पाकल सुर मे बोल्या, 'औ तो वळै हांकरतां ट्रेक्टर सू धकै नीसर जावैला।'

'काई बात करो !"

'बात तो देखां जैड़ी इज करां। औ तो धकै निकळग्यो क निकळग्यो। वेम व्है तो थूं ई लारै जोयलै।' बडोड़ा भाई रै गळै जाणै कूजो पजग्यो व्है।

अर वो दूजै ई छिण अपूठो होय लारै जोयो। आंख्यां मे जाणै बीज भळकी।

'अवै तो इणरा बाप सू ई धकै नी निकळीजै।' आं बोलां रै समचै ई छोटक्या भाई रै कांनां वाज वाळो सरणाटो अर ऊदरा वाळी चीं-चीं बारी-बारी सू चटोड़ा

पाड़ण लागो। थोड़ी ताळ उपरांत अेक कांन में चीं-ची अर दूजोड़ा कांन में सरणाटो झणकतो ढब्यो ई नी। विर मांड री हवा जांणै इण पड़गूंज रै सड़िंदां चिराळी-चिराळी व्है जावैला। ट्रैक्टर रो धरधराटो ई इण गूंज तळै दटग्यो हो।

अर उठी साइकिलवाळा उघाड़ माथ्या री आंख्यां अेक दूजो ई बिरमांड झबूका भरतो हो। ठौड़-ठौड़ वाहेली रा उणियारा आगियां रै उनमांन खिवण लागा—छिड़ा-बिछड़्या तारा मे, रूंख बांटकां में, धोरां में अर सांम्ही जावता ट्रैक्टर में, ट्रॉली में! आज उणरी परख व्है जांणी है। जे ट्रैक्टर सूं धकै निकळग्यो तो वेगो ई ब्याव कर लेवैला। वा मांन जावै तो काले! नीतर परसूं! परलै रोज। जड़कद उणरी मरजी!

अबै तो धकै निकळणा में वारो ई कांई! आखी दुनिया उणरै हथळेवा री मूठी में समाय जावैला। ओ इज तो सिरै सुख अर संतोख है! आंख्यां सांम्ही सोनल सपनां रो बेजो बुणीजण लागो।

अर अठी बाज रै सरणाटा अर चीं-चीं रै झरणाटै हवा रो रेसो-रेसो जांणै टूंपीजण लागो। छोटक्या भाई नै बूझ आवती-आवती नीठ ढबी।

च्यारूं भाई किडकिड़ियां चाबता अेकण सागै बोल्या, 'अधबेरड़ा रै हाथा आज अपांरै पोत्यां री जबर सांन बिगडी!'

पछै वै छोटक्या भाई नै अेक जुगत बताई—'पाखती आतां ई ट्रैक्टर आडो करदे। ओटाळ कांई जांणैला के...!'

'आ तो म्हैं पैला ई तेवड़ली ही।'

बाज रो सरणाटो अर चील री झांपळी मिनख री वांणी में ढळग्या।

अर उठी वाहेली रै उणियारां रो उजास ई खासो बधग्यो हो। अेक-अेक उणियारो साव सुभट दीखण लागो।

अबै तो ट्रॉली रै साव अडोअड पूगण वाळो इज व्हैला। बाज रो सरणाटो अर ऊंदरा री चीं-ची छोटक्या भाई रै माथा में चापळनै आवगी मूंन धारली।

वतूळिया रै वेग उडती साइकिल अणछक ट्रैक्टर सूं टकराई। अेकर आख्यां सांम्ही वीज भळकी। पछै दीप-दीप करतो अेक-अेक उणियारो वडो व्हैतो गियो। लारलो काळो टायर गुड़क्यां उघाड़ा माथा रो गिरड़को निकळग्यो। सगळा उणियारा अेकण सागै वडा व्हैगा।

हवा में वळै मिनखां री बोली गुणमुणाई, 'मां रो मांटी, ट्रैक्टर सूं धकै जावण री हूंस पाळतो!'

छोटक्यो भाई अलवत भण्योड़ो हो। तुरत अेक नवी अटकळ विचारी। थोडी अळगी भांय जाय ट्रैक्टर ढाब्यो। मटिया खलता सूं बोतल काढ कैंवण लागो, 'वापडा नै थोड़ी रम तो पावां। मरघां पूठै याद तो करैला।'

पछै मिनख रै पगां-पगां वो धकै बध्यो। साइकिल वाळा रै पाखती जाय बोतल रो ढक खोल्यो। धणी अर साइकिल दोना रो पोखालो व्हियोडो। ट्रैक्टर सूं भिडयां आ दुरगत तो व्हैणी इज ही। कमसल कित्ती भांय लग नवा अटंग ट्रैक्टर नै दौडायो! अबै अेक आंगळ ई अठी-उठी चूकै तो जांणूं के जवांनी फाटती ही। उठा उपरांत मूंडा में आधी बोतल दारू ऊंधाय माथा रै अड़ोअड डग-डग हंसती

बोतल नैं फोड़-फाड़ निसंक आपरौ आसण अटोप्यौ। खटकौ दबावण रैं समचै ई धरधरातौ ट्रेक्टर धकै वधण लागौ। मोडै ऊभी लुगायां बाट जोवती व्हैला। घरै पूग्यां कोड सू बधावैला।

हवा में मिनखा री हंसी रौ ठहाकौ गूंज्यौ। जीत रौ गुमांन सदावंत इणी ढाळै परगट व्है !

अर उठी काळूंटी सड़क रै माथै अेक चित्रांम किणी उम्दा पारखी नैं उडीकतौ हौ। लाल रगत रै बिचाळै मिनख रौ घोळौ भेजौ ! फूटोड़ी बोतल रा चिळकता टुकड़ा ! उफणता जोवन री ल्हास ! धोळौ नेकर ! ठोड़-कुठोड रगत रा छाबका ! सोसनी बंडी ! सपना री किचड़कौ ! मोह-प्रीत रा रेला ! चित्रांम कीं बेजा नी हौ।

पण—पण दोनूं महाजुद्धां रा चित्रांम, हिरोसिमा, नागा-साकी रा चित्रांम, वियतनाम अर बंगला देस रा बेजोड़ चित्रांम, इण नाकुछ चित्राम सू घणा-घणा ऊंचा हा। घणा-घणा रूड़ा-रूपाळा हा। औ चित्रांम वारी होड तौ नी करै, पण गिवारू हाथां कोरयोड़ौ वौ न्यावेक चित्रांम ई साव माड़ौ नी हौ !

हां, तौ वै पांचूं ई मिनख हा ! मिनखा री बोली बोलता अर मिनखा री ई हाली हालता !

पिछतावो

उकील सा'ब अेक कतल री मुकदमो जीतनै आया। नाव ग्यांनचंद भंसाळी। पण अबै उकील सा'ब री बतळावण ई वारो सुभाव दरसाईजै। मोटो अर गोळ माथो। बिखाळै टाट। गुद्दी लारै कड-वटोला बाळा री झालरी। उफसयोडो लिलाड। चोडो मूडो। फीडो नाक। आंखयां थोड़ी-सीक सूज्योड़ी अर बारै निकळयोडी। माय डोळा मे रातोड, वारै च्यारूंमेर मगसी छीयां। नीचलो होठ जाडो नै लटकतो। ऊपरला दांत पडयोडा। खवा न्यावेक मांय बैठयोडा। धूंद रो घेरो मीता सू लाठो। हेटलो तग हळको नै ऊपरलो भारो। डील रै परवाणै कळाया कीं पतळी। नस ओछी अर जाडी। पूजती रूंआळी। जाणै धंधा रै सांचै काया री बणगट आपै ई ढळगी व्हे। अबै इण काया री टकसाळ आठ-पोर बत्तीस-घड़ी फगत रिपिया ढळै।

आज वै पाच मिनखा रा हित्यारा नै साफ बळनी लाय सू निकाळ लियो। पण घणो हरख को व्हियो नी। उकीलात करतां बोस बरस व्हैगा। जीत री खुसी रेजलै पड़गी ही। मेहनताना रा रिपिया तीन हजार, तिजोरी खोलनै माय धरण लागा के वांरो सबसू नैनकियो बेटो परकास दौडतो आयो। आधो हाफतो, आधो तोतलावतो। आपरो खजानो उकील सा'व सांम्ही करनै बोल्यो, 'पापा, म्हारी अै घोजां तिजोरी मे लुकायदो। नीतर, परदीप अर कुसम खोस लेवैला। तिजोरी मे लुकायां वानै लाधै कोनी। धरदो पापा।'

पापा रो जीव रिपियां में रूंधोड़ो हो। टाळमटोळ रै ओळावै परकास रै हाथ

मांयली पेटी में उडती निजर उछाळी। छोटी-मोटी केई अटरम-सटरम चीजां भरयोड़ी। तिजोरी रौ माजनौ गमीजै। अै चीजां कोई रुखाळै जैड़ी है! लाड सूं पुचकारता कैवण लागा, 'तिजोरी मे मावै कोनी बेटा। किणी दूजी अलायदी ठौड़ लुकायदै। जावौ रमौ, अठै गोदाम मत करौ। म्हनै अबार वेळा कोनीं।'

अबूझ परकास तौ आपरै इज दद-फंद मे अळूझयोडौ हौ। वेळा ई वेळा ही। उकील सा'ब री मूठी झिल्योड़ा बडळ माथै निजर पड़ता पांण टाबर रा बाळ मन मे अेक अटकळ सूझी। 'पापा, अै रिपिया दूजी ठौड़ धरदौ। आनै कुण खावै? म्हारा अै रमकड़ा गमै घणा। मांय धरनै झट ताळौ लगायदौ पापा। देखौ परदीप, कुसम दौड़ता आवै। फुरती करौ पापा!'

टाबर रा अै अजांण सबद पापा रै ठेठ काळजै धमीड़ पाड़चौ। बीस बरसां सू सूतोड़ा कवि रै जागै ताजणा रौ सटीड़ उडचौ। अगाढ़ ऊंघ मे चापळचोड़ी कोमल पलकां उघाड़ी। उकील सा'ब आपरै विद्यारथी जमारै नामी कवि हा। कविता री पाखा रै परवै तारां बिचाळै रमता। धरती माथै चांद-सूरज उतारण री हूंस राखता। दूध रै समदर रा मसोबा बांधता। जागती आख्यां सपना जोवता। मरयां अमर होवण रौ सपनौ! आखी दुनिया नै कुटम समझण रौ सपनौ! पण आज तौ वै जीवता थका ई छिण-छिण मरता जावै। आपरा छोटा-मोटा आळा नै ई आखी दुनिया मानै। कदेई वै देस री खातर मरणी चावता। आज फगत पईसां रै पड़पंच जीवै। औ काई व्हियौ? कीकर व्हियौ?

टाबर री अपळग सूझ रै मिस काळजै बळबळतौ डांम लागौ। टाट अर पग-थळियां परसेवा सू चिपचिपी व्हैगी। रिपिया रौ बंडळ हेटै धरनै हळफळतै हाथां उणरी पेटी थामी। नीठ बोलीज्यौ, 'देखूं बेटा थारौ खजानौ।'

धूजतै हाथ पेटी ऊंधी करनै सगळी चीजां गलीचा माथै राळी। सिगरेटा रा चिळकता जळपू। भांत-भांत री छापा। भांत-भांत रा गिळगिच्या। काच रा केई टुकड़ा—राता, पीळा, सोसनी अर लीला। राखड़ी रा फूदा। सीप रा बटण। रबड़ रा ढब्बू। चिड़ियां री सुरंगी पाखा। सतरज री दो-च्यार स्यारियां, अेक हाथी। डेळाचूक आख्यां री मीट आवगौ अतस उतार उकील सा'ब परकास रौ खजानौ जोयौ। काच रा टुकड़ा हाथ मे लेय समझावण लागा, 'अै काच रा टुकड़ा नी राखणा बेटा। भाग्यां लोई आवै। गिट्यां मर जावै।'

परकास पापा री सीख सावळ सुणी ई कोनी। बिचाळै ई मोदीजतौ बोल्यौ, 'अै तौ म्हारा चांद-सूरज है पापा!'

अबूझ बेटा आगै बाप नै बळै लचकांणौ व्हैणौ पड़चौ। लुळनै उणरै लिलाड़ बाल्हौ दियौ। धोळौ गिळगिच्यौ हाथ मे लेय बूझ्यौ, 'औ कांई है बेटा?'

'औ तौ म्हारौ भाखर है। बरफ रौ भाखर!'

परकास हूबोहूब उकील सा'ब रै उणियारै। जांणे वै खुद आपरौ बाळरूप धरनै पाछा अवतरया। भूरा घूघरिया केस। कवळा-कवळा। गोरा परवांणे ढीगौ। तीखौ अर चीकणौ नाक। दूधिया दांत। गुलाबी मुरायां। भोळी आख्यां। पतळा अर पळकता होठ। निरदोस हथाळियां। अबोट आगळियां। आखै उणियारै पालर-रूप ओसरै। उफ्फ! तौ कांई, किणी बगत रै खोळै वै ई इणी भांत अबूझ

हा ! इत्ता ई डीगा । गिळगिच्यां सूं रमता । साचांणी वांरै माथै अैडा ई धूघरिया बाळ हा ! तौ वगत री किसी कबर वांरौ औ रूप ऊंडौ ई ऊंडौ धंसग्यौ । नी नीं, अैड़ौ तौ सपनौ आयोड़ौ ई खोटौ । वारौ तौ सदावंत सागी औ इज डोळ रह्यौ । तौ कांईं छळगारा वगत री कुचमाद औ अबूझ परकास ई इण डोळ रै सांचै ढळ जावैला । टाट । धूद । कतल रा मुकदमा । काळौ कोट । तिजोरी । थाकेलौ । रिपियां रा बडळ ।

मंगता री गळाई बेटा रौ उणियारौ इण भांत निरखण लागा जांणै कोई सपनौ जोवै । परकास री बाळ मूरत मे आपरी भावी जूंण रौ सपनौ । वांरा सोनल सपना तौ समाज री उखरड़िया रळ-रळाय बूरीजग्या । अबै वां सपनां नै हेरणा तौ जाणै आख्यां सू बळबळता खीरा चुगणा । थोड़ी ताळ ताईं वै गुमघोंम आंमण-दूमणा ऊभा रह्या । पछै हथाळी में सीप रा बटण लेय बूझ्यौ, 'अै गिगन रा तारा तौ नी है ?'

परकास राजी होय लप हांमळ भरी । 'थांनै कांईं ठा पापा ? पिरसू रात रा टूटग्या । म्हैं चुगनै भेळा कर लिया ।'

'अै तौ सीप रा बटण है ! सीप रा बटण !' इण साच रै सूंसै परदीप अर कुसम जोर-जोर सू ताळिया बजाई ।

परकास रोवण-काळौ होय आड़ौ लियौ । 'कोनी कोनी । गिगन रा तारा है । है नी पापा ?'

पापा घांटी रै लटकां हांमळ भरी, 'हां, बेटा हां ।'

सगळा टावर गलीचै बिखरयोड़ा रमेकड़ा कांन्ही तक्योड़ा तीडै मकोडै ऊभा हा । परदीप ताखौ राख बगी मडयोड़ी छाप उचकाय ली । परकास पग पटकण लागौ, 'पापा, परदीप रामजी रौ रथ ले लियौ ।'

परकास आड़ौ लेवतौ नी ढब्यौ तौ उकील सा'ब उणरौ रथ पाछौ दिराय दियौ । परदीप मूडौ मस्कोर बोल्यौ, 'रथ अैड़ौ व्है कांईं ? आ तौ कागद री छाप है छाप ।'

'छौ म्हारै ।'

खजानौ पाछौ सांवटती वेळा अबूझ बेटौ अणछक मूळावण देवता आवेस जोर सू बोल्यौ, 'पापा, हाथी नै नीचै राखौ । औ सगळा नै किचर देवैला । जल्दी नीचै राखौ ।'

पापा तुरंत बेटा रौ हुकम बजायौ । वगत रै हाथां अैड़ी मिसखरी तौ नी जांणी ही । आपोआप अजांण ई अेक हाथ धूद अर अेक हाथ टाट माथै फिरण लागौ । जांणै खुदोखुद नै सोधता व्है ।

'बेटा, परकास ?'

'हां, पापा ।'

'अै सगळा रिपिया थूं लेलै । थारा रमेकड़ा म्हनै देदै ।'

घाटा रा इण सोदा समचै ई परकास रौ मूडौ तरर करतौ रौ उतरग्यौ । जांणै औ अमोलक खजांनौ खुसतां ईं वौ कंगाल व्है जावैला ।

परदीप अंतावळ दरसावतां घोदायौ, 'देदै परकास, देदै ।'

उकील सा'ब तो अबार आवगी चेतो बिसरघोड़ा हा। तिजोरी मांयला चूकता चंडळ परकास रै पगां न्हाकनै पीढ़ियां रै जाचक री गळाई गिरणावता बोल्या, 'अै सगळा रिपिया देदूं, आ पेटी म्हनै बगसै तो !'

टावर री आंख्यां जळजळी व्हैगी। तावकनै अतावळी सूं पेटी झापली। छाती सूं चेप डिढ़ सुर मे बोल्यो, 'कोनी देवूं, कोनी देवूं।'

दो आसूडा ढुळकनै पेटी री सपत भेळा जुड़ग्या। उणरो खजांनो अलेखू रिपियां रो व्हैगो। अमोलक।

उकील सा'ब आपरो काळो आयरो खूटी में टांक दियो। बीस बरसा सूं सूतोड़ा कवि री छाती मे तोपां दर तोपां गूजण लागी। तेल रै उकळतै कड़ाव कोई बारो आख्यां रा डोळा काढनै फेंक दिया व्है ! साचण लागा—आ रिपियां पेटै म्हारी विद्या, कविता अर म्हारी आतमा बेची। म्हारी हूंस, म्हारी प्रीत, म्हारा विचार, म्हारा सपना वेच्या। ओ कांई सौदो करयो ? म्हामे टाबर जित्ती इ अकल कोनी, जको आपरी भावना रो साचो मोल जांणै !

के तो उकील सा'ब नींद सूं जाग्या व्हे के जागतां-जागतां ऊंघ आयगी व्हे, की अैडो अधभदरो चेत बानै लखायो। जाणै डोल रै माय की झबझब क्षुपै अर वडो व्है। माथो पगां आयग्यो के पग माथा मे समायग्या—अरथगरथ री गाठड़ी की सावळ सुळझी नी। सुळझण री आस ई आगो-नैड़ो निगै नो आई। बीत्या उपरांत ई सै लारलै जमारै काळस पुतग्यो। कांई जाण्यो अर कांई बरतोजी ! जागती आख्या रै जंजाळ रो घामलो कुजरबो व्है। कंड़ा ई बजर-पूतळा री चिराळी-चिराळो व्हियां सरै, पछै वो तो हाड़-मांस रो जीवतो-जागतो खाळचो हो। जीवतो ! जागतो ! इण गत रो जीवणो तो मोत सूं ई माड़ो। अैड़ो जागणो तो अगाढ़ ऊंघ सूं ई निरामो। आज दिन ताई नी जाण्यो के जीवणो कांई व्है, जागणो कांई व्है ! मिनख रो सिरै जमारो पाय, फगत रिपिया कमावण री कळ बणग्यो। अबै इण ढळती ऊमर पाछो गुडाळियां नी चालीजै। चालणवाळा मारग रा बावड़ ई कठै व्हिया ! अबै तो कीकर ई मसांण री मजल सोरो-दोरो पूगण सारू खुर रगड़णा है। पण अबार तो खुर रगड़णा रै आणद रो भरम ई उपटग्यो।

परकास पापा रै उणियारै झाक्यो तो उणनै अैडो-लखायो जांणै इण मिनख नै तो वो पैली वळा ई देख्यो। पापा री अैडी सूरत तो कदैई निगै नी आई ! उणरै खजाना री पेटी अैडो घादो करैला तो वो पापा नै छेड़तो ई नी। धांदा रो मूळ तिजोरी है के पेटी की सावळ समझ पड़ी नी। अैड़ी अबखी वेळा अबूझ टाबर व्हैना थकां ई उणनै तो फगत आ सूझी के अबार पापा नै बिलमावणो जरूरी है। खुद पापा उणनै केई वळा बिलमायो। आज अचांती उणरी बारी आई तो अबै चूक्यां नीं सरै। पोटायां टाळ पापा हरगिज राजी नी व्है। परकास अैडो ई कीं तेवड़ नै पापा रै पाखती आयो। अेक हाथ मे पेटी पाम्योड़ी ही, दूजै हाथ पापा रा गाल पपोळतो कैवण लागो, 'पापा रावण अंकल यूं...यूं...म्हारै माथाकर छलांग मारनै कूदग्या। कठै ई सोई नी आयो। कठै ई नी लागी। रावण अंकल रै लाई 'क्यूं नी आयो पापा ? म्हारै तो लागतां ई सोई आ जावै। है नी पापा !' परकास मणूतै उमाव पापा रै बाल्हो दियो।

पापा नै अजेज की पड़ूत्तर नी उकलियो तो परदीप उणरी खिखरां करतै कह्यो, 'कैंड़ो बावळो है ! फोटू रै कदै ई लोई आवै ?'

'नी, वै तो रावण अकल हा। रावण अकल।'

परदीप खाखां पिदावतो वळै कह्यो, 'फोटू ही फोटू। रावण अंकल तो मरग्या।'

'ऊं हूं।' परकास माथो धूणतो बोल्यो, 'वै तो ऊंचा...ऊंचा चांद-मांमा रै पाखती गिया। मम्मी थारै ज्यू झूठ थोड़ी ई बोलै। है नी पापा ! रावण अकल पाछा कद आवैला पापा ? मम्मी कह्यो के वै म्हारै सारू चांद रो इत्तो...इत्तो लांठो टुकड़ो तोड़नै लावैला। आपरै टाळ किणी नै नी बतावूं। नी परदीप नै। नी कुसम नै। क्यू पापा ?'

पापा चावी रै रमेकड़ा री भात ऊंची भींत कानी जोयो। ठौड़ अडोळी लागी। 'अरे ! रावण री फोटू कठै गी ?'

कुसम नै जवाब देवण रो जबर मजो आयो। अैंड़ो ताखो बा कदै ई नी चूकती। तुरत बोली, 'मम्मी मडावण सारू लेगी। हुवा रै हिलाया रावण अकल री फोटू हेटै पड़गी। घड़ाम। काच रा टुकड़ा-टुकड़ा व्हैगा।'

उपफ ! रावण री फोटू नै ई झल नी मिली। लारलै बरसा जीवियो जित्तै छिण-छिण रांधीज्यो अर आज उणरी फोटू नै ई सांयत कठै ! कैंड़ो जोनियस हो ! आपथापी। इकडकी। मोटयार पणै मोटयारां रो मोड़। भणिया-गुणिया थोक रो अेकल अगवांणी। लाखां...लाखां मे कोई बिरळो उणरी जोड़ रो जलमै। समझ री वैड़ी आंट अर जीभ री वैड़ी लकब तो सोच्यां ई नी सोचीजै। रूप, सूझ अर सुभाव वेमाता पूजतै कोड, पूरी पोळाई सू सिरजिया। दुनिया मे नाव करण वाळा बदा री सेवट काई गत बिगड़ी ! दारू, सिगरेट अर गाजा री चरखी सू छूटापो इज नी व्हियो। मित...मित तो जोड़ी रा व्है। भगत...हां भगत खप-खपनै हार थाका पण वो तो आपरै खूटा सूं हिलियो ई नी। आखी दुनिया नै समझावण री हूंस राखण वाळो भलां किणरै समझाया समझतो ! लारलै बरसा अलीण अैदीपणा आगै नी समझ री पसवाड़ो फिरयो अर नी सूझ रो। वैड़ो इकडकी जोरावर ग्यान देखता-देखता साव वैसकै बैठग्यो। कांई आस ही पण की नी करयो ! करयां तो ठौड़ के गादी कायम व्है जाती। होड़ री पात मे भिळ जातो। फगत, नी करयां ई सिरै बेजोड़पणा रो भरम थिर रैवतो। जांण-अजाण जद खुदोखुद सूं ई राजीनांवो नी करयो तो दूजां री तो बात ई किसी ! छिण-छिण आगोआप सू जूझतो रह्यो अर सेवट री बाजी भूंई-ढाळै हार थाको। आप आगै आप ई लातरग्यो। ऊमर अर समझ परवांण बाळपणो तो अवस बीत्यो, पण टाबर वाळो अबोट अर पवीत मन उणरो सांढ़ो नी छोड्यो। कदैई कदैई दारू मे कलरावतो के उणरी तो छीयां ई उणनै छोडगी पछै ग्यांन री कांई भरोसो के वो उणनै नी छोडैला। ग्यान उणनै छोड़ै उण पैला वो ग्यान नै छिटकाय दियो। उणरी जाण मे ग्यांन सूं लाठो भरम दूजो की नी हो। किणी भांत री उणनै की चावना नी ही—नी नामून री, नीं सुख-सपत री, नीं जीवण री, नीं मरण री। मंसा परबारो जलम्यो, परबारो जीवियो अर परबारो ई मरयो। नांव ई उणरो आखा देस सूं परबारो। रावण !

नवमी पास करतां ई खुद राख्यौ ! रामचंदर पलटनै रावण। रामचंदर तौ हजारूं रुळता भंवै। पण रावण तौ वौ दूजौ ई हौ। अेक तौ लकाधीस रावण अर दूजौ बोहरां री पोळ रौ अनामी रावण। ग्यांनचद भंसाळी रौ गाढ़ौ मित। न्यारा-न्यारा मारग अटोप्या तौ काई, मितपणा मे कदै ई दुराजौ नी व्हियौ। अै तौ आप-आपरी सरधा जोग पग मतै आपरौ मारग सोधलै। न्यारा-न्यारा पग है तौ न्यारा-न्यारा मारग ई व्हैला। पण ग्यांनचद मितपणा मे कदै ई रावण सू न्यारा-पणौ नीं दरसायौ। अड़ियै-वड़ियै मांगतौ जणा ई अर मांगतौ जित्ता ई मोद सू उणनै रिपिया पूरतौ। नी कदै ई उणरौ मागणौ मिटचौ अर नी कदै ई उणरौ देवणौ। सूरज दीवा सू चांनणा री जाचना करै तौ इण मे दीवा रौ इज मांन वधै।

साचैला चांद-सूरज नै कोयला सस्तै अर काच रा टुकडां नै चांद-सूरज मानण वाळा री इण माया रै ससार अैड़ी इज दुरगत व्है। तौ कांई. .परकास ई इणी मारग उछरैला। डोळ तौ अैडौ ई दीसै। तौ कांई...औ ई रावण री लकब जीवैला अर उणी गत मरैला। निरणौ। तिरसौ। नसा रै ओळावै तिपड़ा सू थरकीज। हां, तड़कै गळियारै मेहतरांणी उणरै मरण रौ समचौ दियौ हौ। मूडै माख्यां भंवती ही। रगत रै कूडाळियै लथपथ लोथ ! हे राम ! उकील सा'ब नै लखायौ के वांरौ माथौ आवसनै फाट जावैला। जे वांरौ परकास ई रावण रै खोजां ढळग्यौ तौ ! रावण अंकल री भणक पड़चा कित्तौ राजी व्हेतौ, जाणै आदू बातां रौ राजकवर उडण-खटोळै उतरचौ व्है।

उकील सा'ब तौ जांणै ऊंडी ई ऊंडी समाघ में गमग्या व्है। छोटौ टाबर व्हियौ तौ काई. परकास आपरै पापा नै पोटायां ई मांनैला। पापा रै गाला आपरौ कवळौ हाथ फेरतौ लाड सू बळै बूझ्यौ, 'पापा, रावण अंकल रै लागी क्यूं नी ? चांद-मामौ वांनै पाछा आवण देवैला के नी ? तार देवौ पापा, म्हनै रावण अकल री हर घणी आवै। क्यू, आज ई तार देवौला नी पापा ?'

इण सवाल रै हूचटै पापा री समाध तूटी ! अर तूटतां पांण मन रै चित्रांम री रंगत ई आवगी वदळगी। बड़ा इचरज री बात के आज वांरौ बजर माथौ ई इण गत कोकर भवग्यौ ! कचरा री नाकुछ पेटी नै अमोलक खजाना री खान कीकर मानी ? कांई साचांणी थोडी ताळ पैली वै अबार-अवार इण कचरा-पेटी रै सीगै परकास नै तिजोरी मायला सै वडळ धांम्या ? ओह ! हाल तौ वै वडळ ई वारै गलीचा माथै पड़चा। कोई मतै उछळनै वारै थोड़ा ई आया ! मिनख रौ माथौ भवतां आ जेज लागै ! पापा नै विलमावण री धत ज़िल्योड़ौ परकास वळै वौ ई सवाल दुसरायौ तौ पापा रै अेडी सू चोटी लग झाळ-झाळ ऊठगी। चिड़ता थका धाकल कीवी, 'उल्लू, पाजी, फोटू रै कदैई लोई आवै ! मरचोड़ौ मिनख कदैई पाछौ आयौ ? रावण अकल तौ मरग्यौ। मरग्यौ। दारू रै टिप्पै हेटै पड़नै। थू ई उणरै लारै मरैला काई ? ठोठ ! गिवार !'

कार रौ सैंधौ हांरन सुणीज्यौ। पैली वळा उणरी भणक उकील सा'ब रै कांनां ओपरी लखाई। उकील सा'ब री जोड़ायत पारवती अणूतै उमाव माय आई। कित्ती मोटी व्हैगी ! कड़िया मांस रा उबरता पीडा लळकै। कंड़ीक पतळी कमर ही, बचका मे मावै जित्ती ! सोना री कांब ज्यूं छरहरी देह ! आज वौ रूप इण

डोळ में कठै रळग्यो ! पण अबार उकील सा'ब री दीठ नै वो रूप हेरण री अंगे ई लालसा नी ही। वारी निजर तो फगत पारवती रै हाथां मे ई कळगी ही। अेक हाथ मे रावण री ताजी मडघोड़ी फोटू अर दूजै हाथ गुलाब री माळा। फोटू अर माळा ! माळा अर फाटू ! उकील सा'ब रै काळजै गिरमिट री मठोठी लागी। धूक उछाळता उकळतै सुर बोल्या, 'पारो, फोटू मडावण रो इत्तो कांई आचो हो ! थोड़ो परकास रो ई तो ध्यांन राख। नोकर-चाकरा रै टाबरां री गळाई आ कचरा री पेटी भेळी करी ! इत्तो लाठो लड़दो व्हियो अर हाल काच रै टुकड़ा नै चाद-सूरज मांनै। सीप रै बटणां नै तारा जाणै। कद सोजा आवैला ?'

पारो हाल पूरी खिलको सावळ समझ्यो नी हो। मुळकती थकी बोली, 'टाबर है, मतै ई समझ जावैला।'

'टावर ! टाबर ! सावचेती नीं बरती तो आखी ऊमर टाबर इज रैवैला। इण नाकुछ कचरा-पेटी सारू म्है तिजोरी रा सै वडळ धाम्या तो ई नटग्यो। म्हैं तो इणरी अकल रो तूमार जावणा चावतो अर अै माडणा उघड़्या ! कैड़ो मूरख अर पाजी है। जे इणनै रमेकड़ा रो इतो ई कोड है तो उम्दा बाईसिकल, माटर अर रेल दिरावणी ही। मागै जित्ता ई रमेकड़ा दिरावणा हा। नीतर चिड़िया री पाखां अर गिळगिच्या सू मन बिलमावणो पड़ै। इत्तो इ ठा कोनी के सतरज रा हाथी अर साचैला हाथी मे कांईं भेद व्है ? खबरदार, आ कचरा-पटी म्हारै धकै आई तो !'

उकील सा'ब परकास री पेटी तुरत झांपनै आपरै हानै कीवी। खोड्योड़ा ऊंट री गळाई गळगळावता बोल्या, 'अैड़ो कूड़-मगज तो नी जाण्यो हो ! बेवकूफ ! रामजी रै रथ अर रॉकट रो कांई बराबरी !'

पण परकास नै तो किणी सू की बराबरी करणीज नी ही। होठ भागतो होळै-सीक बोल्यो, 'पापा, म्हारी पेटी !'

पेटी रो बोल सुणतां ई पापा रै काळजै जांणै भट्टी चेतन व्ही। 'खबरदार, म्हारै सांम्ही पेटी रो नाव ई लियो तो...।'

धकै जीभ आंटी खाई तो उकील सा'ब जीभ रो कांम हाथ सूं सार लियो। आवेस जार हाथ घुमाय पेटी नै बारणा रै बारै फेक दी।

अबूझ परकास रै भावै जाणै आखो दुनिया री इज खातमो व्हैगो। जोर सूं चिराळी करनै बरकियो, 'पापा, म्हारी पेटी !'

आज पैली कोई टाबर—मिनखा री दुनिया रो कोई टाबर—इण भांत देवाळियो नी व्हियो व्हैला। पापा री खीस आपरो आपो ई बिसरगी ही। तड़ातड़ च्यार-पाचेक थपड़ा मेल्यां टाळ रजत नी व्ही। तठा उपरांत बेटा री रीस मां मार्थ किड़की, 'पारो, थू अस्ट पोर घर मे बैठी टाबरा रो की ध्यान राखै है के नी ? देख बारै जाय, पेटी रो कचरो देख तो खरी। इत्तो लाठो व्हियो अर हाल गिळगिचिया नै बरफ रो भाखर समझै !'

उठा उपरांत आपरी जोड़ायत नै इत्तो जोर सूं हेलो मारयो जांणै वा अलंघ आंतरै ऊभी व्है। 'पारो, अबकी छुट्टिया खुलता ई इणनै सेंट-जेवियर मे भरती करावणो है। सुण्यो के नीं ? पाच-दस हजार रिपिया चंदा रा देवणा पड़ै तो ई कीं आंट नी। नीतर साव इज परवार जावैला।'

डोकरी तो आज व्ही है ! पण साठ बरसां पैली नंग-धड़ंग कुदड़का मारती, ओजरी बध्योड़ी छोकरी चंवरी री रात पैली वळा सीव्योडो नवो भेस सिणगार सासरै सिधाई तद साचांणी आठ बरस री इज ही ! खलूं खलूं धांसतो नांनो आज मरूं, कालै मरूं करतो, दोहीती रा वेगा ई पीळा हाथ कर दीन्हा। ब्याव रै तीजै महीनै नांना रै मोखांण नांनेरै गी, तठा उपरांत अेकर ई पाछो सासरा रो ठायो नीं छोड्यो। तद सूं आरण, अेरण, धंवणी, घण, हथोडो, संडासी, बासदी अर धूंआ टाळ नीं तो कोई दुनिया ही अर नी कोई बिरमाड हो। दस-वीसेक गांवां रै चोखळै भळाकां सारू ऊंधो मांचो ढाळचोड़ी गाडी ई उबरती पड़ी ही। अेरण अर घण री धमाधम रै छातीकूटै कद इत्ता बरस लुकमीचणी रमता आगा ई आगा उछरग्या, डोकरी नै कीं बेरो पड्यो नीं। कीं जाच पड़ी नीं के धवणियां धांईजतै बासदी री झाळां आयै वरस कद तो लगती पांच बेटियां अर अेक बेटो व्हियो ! कद बगत परवांण सगळा टाबर मोटा व्हिया, कद कांम करतां-करतां परणीजग्या, कद जाई बेटियां रोवती-रोवती सासरै टुळी अर कद बेटा री पराई बहू रोवती-रोवती सासरै आई।

आपो संभाळतां ई बेटो-बहू तो आरण अर धूंआ री दुनिया अटोपली अर हंजा घर-घर फेरी रो कांम संभाळ लियो। छाबड़ी मे कांटा-कादणा, झर, कड़ी-सीकळा, कुड़छो, पळा-टीपरी, चीपिया अर टाबरां रै रमण जोग सोह रा रेख-

लिया लेय बारणै-बारणै भळाका देवण लागी। धकला धणी के धणियांणी रै जीव परवांण अळिया-सळिया कणूका हुंजा रै हाथ लाग जाता। वा कदै ई किणी सू झोड़ नीं करती। झोड़ करणौ पोसावतौ नी हौ।

आठ बरस री उण अबूझ बीदणी रै डील आज हुंजा-माऊ री आ कैड़ी छिब कुरगी? सांवळी सफीट उणियारी ठौड़-ठौड़ सळां रै चित्राम कुरग्यौ। गाबड़ रै जीमणै पसवाडै लांठी मेद मंडगी। छाती रा नीबूडा बधता-बधता ठाली कोथळिया रै उनमांन टिरग्या। काळै कसां री ठौड़ धोळौ रंग भरीजग्यौ। अेक-अेक करनै सै दूधिया दांत झडग्या। मां री कूख छोडचा, किणी अंवळै-ऊजड़ मारग मौत रै बासै पूगणौ हौ जकौ हुंजा-माऊ कीकर ई सलवै पूगगी ही।

कालै तांई किणी भांत री की मिरगिराटी नी ही, पण आज आ कैड़ी पटकी पडी! रोटी वेळ्या छाछ, लूण अर मिरच रै लगावण दो लूखा सोगरा मठोठ उणरौ बेटौ झोलौ आरण चेतायौ ई हौ के अणछक पेट मे पीड री अैडौ गोटौ ऊठचौ कै वौ है जठै ई गूचळी मार हेटै गुडग्यौ। हुंजा-माऊ रामदेव बाबा रै सवा सेर गुळ री सीरणी बोली तौ ई आड़ौसी-पाडौसी उणनै गाडी मे घाल माडै सफाखांनै लेयग्या। डॉक्टर आपरै भांणजा रै ब्याव पचास कोस आंतरै रूघोड़ौ हौ। कम्पोडर जाच-पडताळ करनै हील [अपेंडिक्स] री उठाव बतायौ अर पीपाड़ रै सफाखांनै ले जावण री सलाह दीवी।

गताघम मे पज्योडी हुंजा-माऊ नी तौ की पालापूली करी अर नी ओडौ दियौ। उणरै देखतां-देखतां गांव रा स्यांणा-समझणा लोग अधगावळा झोला नै हाका-धाकां धकै बहीर कर दियौ। सौ रिपियां रै भाडै जद चंपा कलाळ री जीप धरर-धरर धूआ रै सागै खंख उडावती बहीर व्ही तद हुंजा-माऊ नै चेतौ व्हियौ। गोडां धूजणी बडगी। झोला रै भेळमभेळ उणरी बहू अर इग्यारै बरसां रौ पोतौ ई लोगां रै कह्यां जीपडी में ढळग्या अर लारै हुंजा-माऊ अेकली बचगी। इत्तै मांन होय वा आज दिन तांई कदै ई अेकली नी रीवी अर नी सपनै ई उणनै अेकलपणा रौ की अेलम व्हियौ। घरवाळां रै बिचाळै उणनै अैडौ थावस व्हैतौ जांणै साळ-संभाळ रै बजर-कोठलिये वा आवगी नेगम है। उणरी सेम-खूणळ मे कठै ई कीं खांमी नी। पण आज अेकली व्हैतां ई उणरै अतूट बिसवास री नीव ई जांणै पंयाळां धंसगी। नीठ टुळक-टुळक सफाखांना सू आपरै बासै पूगी।

हुंजा-माऊ आपरी जैड़ी-तैडी गतमत मे ढांण पडघोड़ी ही, पण आज तौ उणरी रूं-रूं चळ-विचळ व्हैगौ। नी गाडी अर आरण रै आदू बासै ढबगां सरै अर नी आंतरै ढळया बेटा रै पाखती पूगीजै। धिधकता धूंआ रौ काळौ मास छोडती वा डाकण तौ उणरै देखतां-देखतां बेटा नै लेय ढळगी—आतरै! आतरै! कुण जाणै दुनिया रै किण खुणै? आ नवी दुनिया इत्ता दिन कठै लुक्योड़ी ही। कदै ई उणरी जरूरत ई कद पड़ी!

इण डाकण री डोळ देख्यां ई हुंजा-माऊ नै फेर चढै तौ कांई व्हियौ, अेकर मांय बैठण सारू पूछणौ तौ हौ। बेटा री चाल्या मौत रै साथै बैठ जाती। कूंख मे बिना देख्यां ई अेल नी आवण दी तौ अबै आंखां रै साम्ही कीकर अेल आवण देवती! मा जीवै जितै बेटा रै कांटौ ई नी खुभणौ चाहीजै। हुंजा-माऊ नै कीं

अंडो लखायो, जांणै गळा रो थूक उगटग्यो व्है। करवो भरनै बोखै मूंडै दो-तीन कुरळा करया, अेकाध घूंट पांणी चूंग्यो पण कंठां ढळ्यो कोनीं, जांणै डूंजो आयग्यो व्है। अठी जोयो। उठी जोयो। आंगणो, नीवड़ी, आरण अर उजास अंडा बिलखा-बिलखा तो कदै ई नी दीस्या !

फड़फड़ावता जीव रो धाल्यां हुंजा-माऊ पाछी सफाखांनै वहीर व्ही। ठक-ठक गेडी ठपकाग्ती गोडै आम ऊभी तो ई कम्पोडर खुद चलायनै की नी बूझ्यो। हुंजा-माऊ वगनी व्हियोड़ी उणरै पांन दाब्या गोळ-मटोळ थोबड़ा सांम्ही टगमग जोवती रीवी, जांणै वो आतरै ई आंतरै ऊभो व्है। थोड़ी ताळ उपरांत गळै पज्योड़ा आखर नीठ धकावती बोली, 'बेटा, म्हारा छोला नै पीपाड़ भेजती वेळा अेकर म्हनै तो बूझणो हो ?'

के तो उणनै हुंजा-माऊ रो सवाल सुणीज्यो कोनीं के सवाल रो म्यांनो उणरै पानै नी पड्यो। मीचरी-मीचरी आख्यां फाड़तो हुजा-माऊ रै जाळी तण्या मूंडा कानी गुमसुम देखतो रह्यो। उणरै उणियारा री रंगत सूं आ ई ठा नी पड़ी के साम्ही ऊभी अेक डोकरी उणनै ई बतळाय कोई सवाल बूझ्यो। निजर तेज व्हैतां थकां ई उणरै उणियारै असूझता मिनख वाळो गसको पोरयोड़ो लागै। हुंजा-माऊ सूं निरात नी व्ही तो वळै खरायो, 'बोल, बूझणो हो के नी ?'

अबकी पान ठस्योड़ो मूंडो थोड़ो-सी खुल्यो, 'थू खुद ठेट ताई पाखती ऊभी ही। की उज्रर हो तो दरसाय देती।'

'बेटा, म्हनै उण वेळा की सुध-बुध व्हैती तो बूझती। पण थनै तो बूझणो हो।'

'क्यूं बूझणो हो ? मांदगी री बात म्हे माईतां बिचै वत्ती जाणा।'

कम्पोडर रा अै बड़-बोल उणनै तिणगां ज्यूं चटखता सुणीज्या। 'थांनै अंडी काई गरज पड़ी ! मां सूं वत्ती गरज धन्नर वेद रै ई नी व्है।'

खंखर डोकरी रा अै उगीना बोल कम्पोडर रै कांनां झरणाट पाड्यो। 'गरज तो कीं कोनी, पण की फरज म्हारो ई है। अर थूं सायं रैय कांई नव री तेरह करती। साम्ही रोय-धोय बोबाड़ा करती सो सवाय में।'

पड़ूत्तर तो हुंजा-माऊ नै अंडो उकलियो, जांणै आरण रो वळबळतो भोभर व्है। पण बोबाड़ा रो बोल सुणतां ई उणरी आंख्यां सांम्ही लबूरा भरती झाळ रो धपळको व्हियो। आक-बाक होय बूझ्यो, 'ठाला-भूलां, म्हारा छोला रै कठै ई चीरो तो नी देवोला ?'

हुजा-माऊ री भोळप माथै कम्पोडर झीणो-झीणो मुळकतो थको कैवण लागो, 'वा अे हुंजा-माऊ, अंडी गांद बात तो राईकांणी ई नीं बूझै। चीरा री जरूरत नीं व्हैती तो उणनै पीपाड़ क्यूं भेजतो ?'

हुंजा-माऊ री भोळप माथै कम्पोडर नै तो फगत इचरज व्हियो पण उणरा पड़ूत्तर सूं हुजा-माऊ रो जांणै अंग ई सूंनीजग्यो व्है। अबै तो वह रो सुहाग पोता रो भाग अर मा री पुन्याई। मौत नीं अठै टळै नी उठै ! पण औ अदीठ आतरो ! अर ओ खिळखिळ अभरोसो ! मौत रो धीजो व्है जातो पण अभरोसो अर आंतरा रो धीजो नी व्है ! आंतरो—भलां ई अंतस रो व्हो, भलां ई भांय रो !

आख्यां अदीठ रो अभरोसो ई उणरी मोटी खळतळावण ही। कांई ठा कांई

व्हियो अर कांई व्हैला, गताघम री आ कळझळ ई कळकळ चढघोड़ी ही। कुदरत मौत-मांदगी तौ हाथ री बात कोनी, पण विजोग तौ हाथ री बात है। तेवड़ ज्यूं ई बरतीजै। पछै दीखती आंख्यां बेटा नै आंतरै क्यूं जावण दियौ? अडमठ बरसां री अेकठ व्हियोडी सोजी जे अैडी अबखी में कांम नीं आई तौ वा काई कांम री! लांपौ लागै अैड़ी सोजी रै! हुंजा-माऊ तौ आज मौत आया पैली ई मरगी!

चितबायरी व्है ज्यूं पाछी बासै टुरी। हाली रै समबै पगां हेटली धरती धकै सिरकती लखाई। वासै री भांय लेवणी भारी पड़गी। नीठ ठिरडक ठिरड़क पूगी तौ वळै साव अेकली। अठी-उठी जोय, गिगन रा सूरज सांम्ही भाळयौ कीं चांनणौ निगै आवै तौ! इत्ता बरस तौ दिन रा उजास पूरण टाळ इण सूरज री दूजी कीं इदकाई नी ही। फगत कांम करण रा सुभीस्ता सारू बापडौ आखं दिन तपै। पण आज उणनै कीं अैडौ लखायौ जाणै आभा रै गोरवै लाय लागी व्है।

उणरौ बेटौ केई वळा गांव-गोठ, न्यात-पांत अर मेळा-खेळां आंतरै सिधायौ तौ ई हिवड़ै री आंख्यां अदीठ कदै ई नीं व्हियौ। अेक दिन रा लवारिया नै बळगौ लियां, जिण भांत गाय छिगराईजै, उणी भांत अड़तीस बरसा री अधबूढ बेटौ आंतरै व्हियां हुंजा-माऊ छीगरगी ही। आखै बरस घण रा घमाघम घमीड़ पाड़ जद कठै ई सौ रिपिया नीठ भेळा व्है, जकौ बडभागियां नै सौ रिपिया मांगता लाज को आई नीं। केई वळा सै घरवाळा निरणा ई सूवता पण छूं होवण री जोखम रोक-रिपियौ नीं बटायौ। डुवलिया रै हेटै मीगणिया री तप करनै सोयाळौ धकावणौ कबूल पण राली-गूदडां खातर बिरथा अेक कोडी ई खरच नी कीवी। पण आज तौ सौ रिपिया ई खिडिया अर बेटौ ई आंतरै गियौ। रिपिया अर ओखद रै जोर सांघौ लागतौ व्है तौ अै ठाकर-वांणिया आपरै घरवाळां नै मरण दे भलां!

आज री रात जैडौ काळौ-बोळौ अंधारौ तौ कदै ई नी व्हियौ। पैला त अंधारौ ई सैधरूप दीखतौ पण आज तौ आंख्यां फाड़्यां ई अंधारौ निगै नी आवै आख्यां री जोत तौ नी विलायगी! दीवौ झुपाया मुघरौ-मुघरौ चानणौ व्हियौ पण उजास रै पांण उणरौ झोलौ सांम्ही दीसै तौ उणरौ महातम है। मुधरै उजास अठी-उठी हेरघौ। बेटौ व्है तौ निगै आवै! उजास हळवाणी रै जगता फाळ ज्यूं उणरै कोयां खूमण लागौ। धडचा रै झपाटै झट दीवौ खिडाय दियौ। जठै मां है उठै बेटा नै व्हैणौ चाहीजै। जठै बेटौ है, उठै मां नै व्हैणौ चाहीजै।

चयारू मेर वळै अंधारौ ई अधारौ पाथरग्यौ। कुडघोडा खोळघा रै मांय अधारौ। बारै अंधारौ! जाणै अंधारा रै तळै पीचीजगी व्है। छिण, घडी, दिन, मास अर बरस री ठोकरां रिगमती जूण रै आज औ कैडौ अचीतौ झपीड उडघौ के वा पैल फटकारै ई झडपडीजगी। भरणाटै भाजती इण डाकण रौ वेग कांई इण खातर वध्यौ के वा अेकाअेक बेटा नै मां सूं आंतरै करदै!

कदास अेक ठोड ढब्यां नीं आज री रात ढळै अर नीं अपाग अंधारौ लोपै। सपन-मारगू री गळाई खाधै अेक पोटळी लटकाय ठक-ठक री टपकारां अधारा नै रोसती हुंजा-माऊ तौ बेटा री सोय मतै ई घहीर व्हैगी। बेटा री खातर अेक अेक पावडै अधारौ लांघैला। आखौ बस्तौ रै भेळमभेळ सै पछी सूता हा। पण छिड़ा-बिछड़्या गिडक सुजाग होय अंधारा रै बटका भरता भुसण लागा सो भुसता ई

गिया।

आज हंजा-माऊ नै घर-गवाडो अर वस्ती री ध्यांन तो मोटी बात, खुदोखुद री ई अेलम नी ही। आपोआप ई आपरै मांय गमगी ही। के तो मायलो अदीठ अंतस खालोटीजनै बारलै पसवाड़ै आयग्यो के बारलो झुर-झुर पिंजर मांय समायग्यो। तो ई अड़सठ वरसा रै उण अधभदरा चेता बिचै वेचेता री आ नवी धू'र घणी वत्ती ही।

हंजा-माऊ गांव रै उखरड़ै ढळी तो ठपकारा री भणक बड़ला री वासो छोड टिव-टिव करता पछी पांखां फडफडावता कानी-कांनी उडग्या। कदास अै ई विचियां री माळ में उडग्या दीसै। बड़ला रै हेटै ऊभ हंजा-माऊ ऊंचो भाळचो—अणगिण सांवळा पांनड़ा। सांवळा डाळा अर सावळी डाळियां। सांवळी साखां टिरै। आखो घेर-घुमेर बिरछ अेक गोड रै पांण ऊभो! फर-फर रै फड़फड़ाटां पान लळाक-लळाक हिलै। फगत अेक बीज री ओ परचो! डाळ-पांनड़ा अर गोड समेत इत्तो लांठो रूख उण छोटा-सा बीज मे कठै लुकयोडो हो! वा तो आज पैली आं रूख-बाटकां नै सावळ निरख्या ई कोनी। फगत आपरी जरूरतां पोखण खातर ई कुदरत रो महातम हो।

अणछक सांवळा पांनां रै मथारै उणनै धोळी-धोळी खिवण निगै आई। गिळगिचियां रै उनमांन अै कांई पळकै! बडला रो घेर-घुमेर ठायो छोड ऊंचो जोयो—अरे, अै तो रोजीना वाळा तारा! पड़घा खिवै। सावळ ध्यांन सूं जोवण री वेळा ई कठै मिळी! पछै तो कड़ियां ई कुड़गी। चलायनै ऊंचो भाळर्या नै बरस बीतग्या। आंरी कद किणनै जरूरत पड़ै। अलेखूं-अलेखू व्हैता थकां ई धरती माथै तिणग जित्तो ई चांनणो कठै! सूझती आंख्यां फगत टिम-टिम खिवता दीसै। वापड़ा आंधा नै तो सूरज ई निगै नी आवै, पछै अै तारा तो कांई दीखता व्हैला! आंधा री जमारो ताही खोटो। काळी भीत! जे सताजोग वा आंधी व्हैती तो आज आतरै गिया बेटा री सोग कीकर वहीर व्हैतो! हंजा-माऊ नै आंख्यां री जोत री पैली वळा अंजस व्हियो।

अंधारा रै आंमगोम हंजा-माऊ रै अदीठ-अंतस अेडी आस चापळचोड़ी ही के अबार झोला री बोली सुणीजै—'मा, म्हैं आयग्यो। साव साजो-सूरो। पण थू सिध जावै?' अबार सुणीजै, अबार सुणीजै री आस लगायां हंजामाऊ लगोलग धकै बधती ई गी। ठक-ठक गेडी ठपकारती। पण अंधारा री घाटी लांघ्यां, उजास री सीव मे वड़तां ई हंजा-माऊ री आस तूटगी। ओ धू-धू सिळगतो उजास उणरा बेटा नै आंतरै ई आतरै लुकाय दियो।

हंजा-माऊ रै कानां मिनख रै कंठ री भणक पड़ी, 'कुण व्है ई?'

वा झिझकनै सारै मुड़ी।

'अरे, आ तो हंजा-माऊ!'

अबै जावतां डोकरी नै चेत व्हियो के आ बतळावण तो उणरै बेटा री कोनीं। पण बोली सेंधी ही। छकडो पालती आवतां ई वा सुघट ओळख करली के अै तो उणरै इज गाव रा—झूमर चोकीदार अर भंवरलाल कोठारी। आथती होय मूंडो ऊंचो करनै बूझ्यो, 'म्हारा झोला नै तो नी देख्यो?'

भ्रमर छकड़ो ढाव कह्यो, 'सुणी के कालै रोटी-वेळ्यां झोलो जीप में बैठ पीपाड़ ढळ्यो। हील [अपेंडिक्स] रो उठाव बतायो! मांदगी रै जोग जीव में हीडा खावण रो लावो तो लियो, नीतर वापड़ा रै कद अैड़ो तंत जुड़तो।'

हंजा-माऊ री खोपड़ी जांणै घण रो घमीड पड़्यो। ओळाकाड़ा खावरी नै ओडो देवण सारू मन तो घणो ई व्हियो पण जीभ उथली कोनीं। पण बोहरा री जीभ रै तो किणी गत रो वांदो नी हो। भंवरलाल कोड्याळा लांबा दांत काढतो अजेज कैवण लागो, 'हील रो उठाव व्हो, भलां ई वादी रो। सौ रिपिया रो जूत खावणो हो जको खाय लियो। हंजा-माऊ, थूं ई बता, अै सौ रिपिया लेहणा पेटै जमा करावता तो बोझ हळको व्हैतो के नी? भाड़ा खातर पाऊ गमावण री तो ना कोनीं, पण म्हैं मांगूं जितरी वेळा ई रांडी-रोवणा रोवो।'

किणरी आस ही अर किण सूं भेटका व्हिया! हंजा-माऊ नै लखायो जांणै आरण माथै गुड़गी व्हे। मोळी पड़ती थकी बोली, 'थांनै ई देवांला सेठां, दूध में खोळनै देवांला। थोड़ो नेठाव राखो।'

'पांणी में खोळ परखावो तो ई म्हैं घणो राजी। पण देवो तो खरी। अेकर बीरगत करयां म्हनै तो नेठाव राखणो इज है।'

हंजा-माऊ नै लखायो जांणै मूडा रा सै दांत अबार-अबार ई झड़चा व्है। पड़ूतर देवती वेळा मुरायां में चभीको ऊठ्यो। 'सेठां, घण तो घणो ई कूटां, पण तो ई ऊपरलो पांनो नी आवै।'

भंवरलाल कोठारी पवीत गुर रो सिरै ग्यानो बखांणतां कह्यो, 'नील बोदी राख्यां ऊपरलो पांनो आवण री रीत ई कठै।'

किणी अदीठ चरखी में झिल्योड़ी हंजा-माऊ सू नीठ बोलीज्यो, 'झोलो मादो नी पड़तो तो हकनाक सौ रिपिया रो फड़ियो क्यूं लागतो?'

आसांमी नै घोदावण री अंजस ई भरपाई रा आणंद सूं घटतो नी व्है। बोहरा री जीभ ओ ताखो कद चूकती! 'झोलो तो कालै मांदो पड्यो अर म्हैं कद सूं मांगूं, कांन ई को ढेरचो नी। थांनै तो कोई मिस लाधणो चाहीजै। कालै पोता री मांदगी रो ओळावो लेवैला। म्हैं जांणूं थांरा लखण!'

हंजा-माऊ रै रूं-रूं सीकंपा छूटण लागा। लेणायती री जोरावरी जम सूं ई सांठी व्है। आंटो खायोड़ी जीभ नै नीठ पाधरी करती बोली, 'सेठां, लखण बखांणै जैड़ो तो आज दिन ताई कोई काम नी करयो।'

'जद इज तो थारा विसवास माथै म्हैं नगद तीन-सौ रिपिया गिणिया। थूं बेटा रै नांव छीदी पड़ै तो भलां ई, म्हैं तो लफंगा झोला री फुतरका जित्ती ई पत नीं मांनूं। खैर सल्ला, मारग में मिळगी तो प्रस्तावू बात छिड़गी। पण थूं ढळती रात कठै जावण री मतो करयो?'

रीस तो अैडी भळकी के हाथ मांयली गेडी सूं बत्तीसी तोड़ नाखी चिगद न्हाकै। पण बोहरा सांम्ही आसांमी री रीस रो कितोक गाढ़! मिड़कन पाडा आगै राजा रा हाथी नै ई घेरो करणो पड़्यो! धूजती जीभ नीठ सुळी, 'था ओ सेठां, पूं कठकारो कांई दो। बेटा सूं मिळण खातर पीपाड़ जावूं।'

'तो बैठ छकड़ा माथै। पीपाड़ रै गळवै छोड देवूंला। जीपड़ी रै भाड़ा रा तो

रिपिया दिया तौ पांच रिपिया म्हनै ई परखाय दीजै।'

हंजा-माऊ मांय री मांय भिमरचोड़ी ही। अपूठी धिरती बोली, 'नी, थें जावौ। म्हैं तौ पाळी ई तेवडनैं वहीर व्ही।'

सरधा-बायरी मिड़कल डोकरी री इण विध सुभट नटणौ भंवरलाल नैं सुहायौ कोनीं। डोढ़ में बोल्यौ, 'थां गाडूलियां रै बख री वात व्है तौ मसांण ई पाळा जावौ। अैंडी मळीच अर मूजी जात म्हैं तौ नी दीठी। हंगनैं लारै भाळै।'

मर्माण री बोल सुणता ई डोकरी रै कांनां बटीड़ उडचौ। काळजै आरण चेतन व्हियौ। तौ ई लुळताई सू बोली, 'थूकौ थांरा मूंडा सूं, राजा करण री वेळा औ काई दग्ध आखर काढ़चौ!'

'साची कह्यां मां ई माया में देवै। तनका मत कर। खुर रगडती पाळी कद पूगैला? बेटा सू वेगी मिळणौ चावै तौ बोहरा री सरण झेल। जा, पांच रिपिया नीं लेवूं। म्हैं तौ मिसखरी कीवी अर थूं ठूंठीजगी।'

मादा बेटा सू वेगी मिळण री उमाई वा धकै की वाद नीं करचो। राद रौ घूटियौ गिट-गिटाय बोली-बोली छकडा माथै बैठगी।

उण दिन—हा उण दिन गाडी माथै बैठनै ई तौ सासरै आई ही। घूंघटौ काढ़चोड़ी—बाळ-बनड़ी! कित्तौ, कित्तौ वगत गुड़ग्यौ! आरण री आंच मे कणा जोबन ठाडौ पड्यौ, कीं अेलम व्हियौ नी! नाकुछ चीजा घडणा में ई चूकतौ जमारौ चूर-चूर कर न्हांवयौ! धार देवता-देवतां आवगी जूंण इज मोटी व्हैगी! अबै वै दिन पाछा कीकर न्हावड़ोजै!

हंजा-माऊ री कळझळ सू बळदां नै तौ लेणौ ई कांई हौ! वै तौ आपरी ढांण वेवता हा। जुत्योड़ौ छकड़ौ उणी मार्ग गुड़कतौ हौ। सेवट गुडकतां-गुडकतां भंवरलाल कोठारी रौ ठायौ आयौ अर पीपाड सू कोसेक उरळी भांय डोकरी नै हेटै उतार दी। माळियां रै वेरै मोलायोडौ जीरौ भरण सारू छकड़ौ तौ डावे पसवाडै मुड़ग्यौ अर हंजा-माऊ खांधै पोटळी टेर पीपाड रै मारग वहीर व्हैगी। डोकरी तौ आज व्ही है!

चार-पांचेक स्कूलिया-छोरा हाथ में बस्तौ लियां आवता हा के अणछक वांरै कांनां ठक-ठक री टपकार सुणीजी। अेक कुड़चोड़ी डोकरी हाथ में गेडी झाल्यां सांम्ही आवै। हंजा-माऊ की पूछताछ करै उण पैला अेक अचपळौ टावर खमडोळ करतां कह्यौ, 'माऊ, मसांण तौ उठी है, थूं अठी सिध जावै? गेलौ भूलगी कांई?'

सगळा वेली ठट्ठौ मार जोर सूं हस्या।

दूजा छोकरा री मीट गळा री मेद माथै पड़ी तौ वौ आड़ौ लेवतौ व्है ज्यूं बोल्यौ, 'डोकरी, थारै गळै चिप्योड़ी आ दड़ी म्हांनै इनायत करदै। रमता-रमता घरै जावां। नीतर ई आ दड़ी थारै कांई कांम री?'

नित-हमेस हंजा-माऊ, हंजा-माऊ री मीठी बतळावण सुणता कांनां नैं अेका-अेक भरोसौ नी व्हियौ कै मिनख रै जाया-जलमिया री आ वाणी है। उणनै नीं ओळखण वाळी आ दुनिया कठै सुखयोड़ी ही! असैंधा गिंडक माहोमाह भुसै पण अैंडी धमडोळ नी करै। मिनखां री बस्ती रौ अठै अैंडौ कांई धारौ! वा सगळां नै ओळखै अर उणनै सगळा ओळखै, इसा बरस उणनैं औ इज विसवास हौ। इण

बिसवास नै भरम मांनणा बिचै तौ मरणौ आछौ ! मूंडै बैठी माखी रै उनमांन अेक ई फटकारै हंजा-माऊ इण भरम नै उडाय दियौ। पण माखी पाछी बैठै री बैठै !

घूजती गेडी रै पांण नीठ घरै बहीर व्ही। जांणै दोवड़ी कड़ियां दसेक मण लोह रौ ठेबौ उलळ्यौ व्है। मारग में चार-पांचेक टाबर वळै मिळ्या। वैं कों कोगत करै उण पैला ई हंजा-माऊ बूझ्यौ, 'बेटां थें म्हारा झोला नै देख्यौ कांई ?'

अेकर तौ सगळा ई टाबर औ अचीतौ सवाल सुण चकन-बकन व्हैगा, पण डोकरी री डोळ देख अेकण सागै हांमळ भरी, 'हा देख्यौ।'

'कीकर है ?'

'साव सावळ है।'

अणूंता इचरज री बात के अचीता बिखा रै भेळमभेळ औ अथाग हरख हंजा-माऊ रै खखर-खोळयं मायौ तौ मायौ इज कीकर ! आसीस देवती बोली, 'बेटा, थांरौ रांम भलौ करै। जुग-जुग जीवौ। अबै अेक छिण री ई खटाव नी व्है, वैगौ सफाखांना रौ मारग बतावौ। पोटळी खोल अबार टीपरी, पळी, चीपियौ, कुड़छी अर कांटा-काढ़णौ देवूंला। थें म्हारै बेटा झोला रा भला समंचार सुणाया।'

सफाखांना रौ गेलौ देख्यां उपरांत हंजा-माऊ हृदभांत कोड सूं घड़चा री पोटळी खोल कैवण लागी, 'म्हारा डाया बेटां, दाय पड़ै जकी आधी चीजां अटोपलौ। आधी झोला रा हीड़ा...हीड़ा करण वाळां नै सफाखांनै देवूंला।'

'उणरा हीडा...हीडा म्हा इज तौ करघा।' इण इदक समंचार रै समचै टाबर मतै-मतै ढूका सो सगळी चीजां आप-आपरै हानै कर ली। अर पोटळी रौ मैलौ घड़चौ अबूझ डोकरी रै खांधै राळ जठी वांनै जावणौ हो उठी धमचक मचावता सोकड़ मनाई।

वा दौड़ता टाबरां नै टुग-टुग देखण लागी—जाणै उणरौ बाळ-रूप ई वारै भेळमभेळ कुदडका मारतौ दौड़ै। आ ऊमर इज अैडी व्है ! अबार खंदा-खोळयां नी करै तौ पछै कद करैला ! डोकरी रै सुळचोड़ै हाडकां थोड़ौ-घणौ करार चेतन व्हियौ। उमाव अर हूंम री गरणाटी पाछी मुड़ी अर खायी-खायी वहीर व्ही। ठकाठक बजावती। असवाड़ै-पसवाड़ै पक्का घर ई घर। जठी निजर ढूकै उठी मांनखौ ई मांनखौ। अरुंधौ अर अजांण। अर उठौ पीपाड़ रै गिणिया लोगों नै बावड़ व्हिया के वांरी बस्ती में आज अेक असैंधी डोकरी ठक-ठक गेडी ठपकारती आई। कुड़चोड़ी। गळै लाठी मेद। बोखौ मूडौ।

सफाखाना रै कमरा सूं बारै निकळती अेक लुगाई नै वा बिपतां ई बूझ्यौ, 'झोलौ कीकर है ?'

'किसौ झोलौ ?'

'किसौ कांई, म्हारौ बेटौ ! कालै रोटी वेळयां गूंचळी मार हेटै गुड़ग्यौ तौ उणनै अठै लाया। सौ...सौ रिपिया मोटर रै भाड़ा रा दिया।'

'म्हनै कीं ठा नीं। आं नरसबाई नै बूझ।'

तद वा गेडी ठपकारती नरसबाई रै पाखती आई। बुगलौ री भांत ऊजळौ वेस। सांवळौ पसम। बोखौ मूडौ ऊंचौ करती बूझ्यौ, 'म्हारौ बेटौ कीकर है ?'

मुळक नै दबावण री आफळ करतां नरस पाछौ सवाल करचो, 'किणरो बेटौ ? किसौ बेटौ ?'

'म्हारै तौ अेक ई बेटौ है—झोलौ...झोलौ। कालै पेट में अंड़ौ गोट ऊठचो के मोटर मे घाल अठै लावणौ पड़चौ। पूरा सौ रिपिया...सौ रिपिया भाड़ा रा दिया। उणरा हीड़ा करण वाळा पाचेक टाबर म्हनै मारग मे मिळचा। पोटळी खोलतां पांण मतै-मतै ढूका जकौ चूकती चीजां झापली—कुड़ची, छर, कांटा-काढ़णौ, चींपियौ अर मिरिया। लारै फगत ओ घड़चौ छोडचो।' ओ निरवाळौ समंचार सुणाय खांधै टिरतौ मेलौ घड़चौ उणरै सांम्ही करती धकै कैवण लागी, 'पण थानै सोच करण री अंगै ई जरूरत कोनी। झोला रै साजो व्हियां म्हैं थानै नामी कांटा-काढ़णौ, छर...!'

'कांटा-काढ़णौ !' नरस इचरज अर भोळप रै सुर कह्यौ, 'म्है कांटा-काढ़णा रौ कांई करू ?'

'कांई करो ! म्हारा कांटा-काढ़णा चोखळै चावा है। कैड़ौ ई ऊंडो कांटौ छिण-पलक मे बारै ! आप देखोला तौ देखता रै जावोला।'

नीं नरस री हंसी ढबी अर नी पाखती ऊभी लुगायां री। पण इणमें हंसण री किसी बात ! वा कोई कूड़ा बखाण तौ नी करचा। तौ ई अजाण लखकांणी पड़ती मुद्दे री बात बूझी, 'म्हारौ झोलौ तौ साजो-सूरो है नी ?'

सूई भरती-भरती ई नरस मुळक रै आखरां होळै-सीक बोली, 'कालै बोरूंदा सूं आयो जकौ लुहार ?'

'हां हां, वौ म्हारौ बेटौ झोलौ इज तौ हौ ! कीकर है ?'

'डाक्टर सा'ब दौड़ा मे हा, इण खातर उणनै जोधपुर भेज्यो।'

चिड़ी रै अधगावळा बिचिया रै उनमांन उणरौ बोखो मूंडौ फाटोड़ौ इज रैग्यौ। नीठ बोलीज्यौ, 'वौ अठै कोनी ! टाबर तौ कैवता...।'

'अर म्हैं झूठ बोलूं।'

'आप नीज झूठ बोलो। वौ कोई दूजौ लवार व्हैला। म्हैं तौ *गाडूलिया लवार* हा। म्हारै बेटा रौ नांव है—झोलौ, झोलौ।'

'हा हा, वौ इज। कित्ती वळा कह्यां समझैला।'

'पण वै टाबर तौ कैवता के...।'

'म्हैं कैवूं जकी बात साची के टाबर कह्यौ जकी। बेटा सूं मिळणौ व्है तौ जोधपुर जा परी।'

नींद मे सूती रौ सपनौ झांपनै कोई कंवळी अलंघ आंतरै उडगी व्है। कैड़ा... कैड़ा सपना मे थरकीजो ! धबूकार ऊठै धूंओ छोडती उण डाकण रौ। चूंची नीं लागै आरै !

दो पग अर तीजी गेडी रै खांधियां वा कीकर ई रोडवेज टेसण पूगी। च्यारूं मेर मिनखां री भीड़ी। आपरै टाळ किणी नै ई अेक दूजा री की गिनरत नी ही। तौ ई ठक-ठक गेडी ठपकारती डोकरी रौ गसको देख्यां हवा में अेक अचीती खदबद साचरी। देखण वाळो अेकोअेक आंख्यां में इचरज अर बोगत रो अंडो गिनार-विहूण भाव हो जांणै आज पैली किणी मांनखा रौ बुढ़ापौ इज नी देख्यौ व्है। के

कदास उणरी बुढापी देख्यां इं वा आंख्यां नै पैली वळा ओ अेलम व्हियौ व्है के सेवट अेक दिहाड़ै सगळा री ओ इज ढंग-ढाळो व्हैणो है। इण अळखावणा अेलम सूं वांनै माय री मांय अधेरी लखाई।

अबकी हुंजा-माऊ किणी नै की नी बूझ्यो। पाखती ऊभी अेक लुगाई रै खोळै हाचळ चूंघता पिचिया रै साम्ही टगमग जोवण लागी। काईं साचाणी वा ई अेक दिन आपरी मा रै खोळै इण विध हांचळ चूंघ्या? किणी अेक बगत री नेगम साच, देखतां-देखतां अेक ई जमारै साव कूड़ो व्हैगो! तो काईं वा डोकरी रै खोळ्यां ई जलमी—सळां री जाळी तण्यौ अदंत उणियारो। दोवडी कमर। धवळा केस। नी नी, आ तो वगत रै छूमंतर उणरै साथै वेजा कुचमाद व्ही। हां हां, ई जलमता टाबरां री गळाई उणरो ई जलम व्हियो हो। डोकरी तो आज व्ही है। जोबन रै घणा-घणा बरसां उपरांत! जे किणी अपरबळी देवता रै कांमण ओ छळगारो वगत कीकर ई पाछपगल्यां लारै सिरकै तो अेकर गम्योड़ो जोबन आपरी आंख्यां वो निहार लूं। छेहला जुहार तो करलूं।'

हाचळ चूंघावती लुगाई झट बेटा रै मूंडै पल्लो राळ अपूठी फिरगी। गताघम में पज्योडी डोकरी रै काळजै जगजगती हळवाणी आरमपार व्हैगी व्है। काईं आज उणरी अंड़ी सिग्या परवारगी जको निजर री टोकार मांवां इत्ती सावचेती बरतै। वगत परवाण ओ डोळ तो व्हैणो इज है। फगत वा इज तो कोई नवादी डोकरी नी व्ही। पोची पड़ती होळै-सीक बूझ्यो, 'वाल्हा, जोधपुर किसी मोटर जावै?'

'म्हनै कांईं ठा, जाणै जिणनै बूझ।' इत्तो ठुणको सुणाय वा धकै बधगी।

'कुण जाणै?'

पाखती ऊभी ठेला वाळो जांणतो हो। डोकरी रै बूझ्यां बिना ई हाथ री सानी रै समचै कैवण लागो, 'जोधपुर तो आ मोटर जावैला पण उठै फोड़ा खावण री जरूरत। अठा रा मुड़दा तो अठै इज बळै।' पछै सिड़घोड़ा केळा हाथ मे लेय सिफ्फिण मुळकतो जोर सूं हाक लगाई, 'रिपिया रा आठ, रिपिया रा आठ।'

सेवट जोधपुर वाळी मोटर में चढ़धां इं उणनै भख पड़ी। जोड़ै ऊभी अेक अधबूढ़ लुगाई नै बूझ्यो, 'वाल्हा, थू सिध जावै?'

'जोधपुर।'

'क्यूं, थारो वेटो ई मांदो है कांईं?'

'काळ-जीभी, थूक थारा मूडा सूं। म्हारो वेटो मांदो क्यू व्है? मौत रै बारणै पूगी अर बोलण रा ई लोतर कोनी।'

वा फीटी पड़ती बोली, 'बड़भागण, चिड़ मत। हजारी ऊमर व्है थारै बेटा री। म्हारो वेटो मांदो है, जिण सू अजांण गचळको निकळग्यो।'

'थारो वेटो मांदो है तो कांईं सगळां रा वेटा मांदा व्हैला ओ कैड़ो हिसाब!' पासती बैठो अेक बांणियो मिरची-वड़ो खावतो-खावतो ई हिसाब रो गुर बतायो।

'इती सीट खाली पड़ी अर थू ऊभी। म्हारो मूंडो मातै।' मूंगफळी रा छिलका छोलतो अेक सोनार धुरत अकल री बात उपजाई। धोरा करतो कैवण लागो, 'दहो जमै ज्यूं जम जा।'

इनवेर वाळी सीट कांनी दो-तीन वळा बध-बधनै सानी करी तो वा हाथ

मांयली गेडी खूणा में ऊभी करयां उपरांत उण सीट माथै निरांत सूं बैठगी। लारै मुड़नै बोली, 'बेटा, थारौ रांम भली करै। ऊभी-ऊभी री कड़िया कुळण लाग जाती।'

मोटर में अेकण सागै केई मिनखां रौ ठहाकौ गूंज्यौ। अेकाध ताळियां रा तटकारा ई सुणीज्या। नवी चाळचोळ रौ नीठ उकरास लाधौ। लारै बैठा जातरी ऊभा होय औ खिलकौ जोयौ अर हस्या। मोड़ा री सै जूझळ मिटगी, जांणै टाबर रौ मन बिलमावण खातर कोई खुणखुणियौ हाथै लाग्यौ व्है।

मोटर मे तर-तर भीड़ा रौ थट्ट जुड़तौ ई गियौ। आवतौ जका नै ई जांण-कार लोग डोकरी कानी हाथ करनै तोतक बतावता। कोई की गुणकौ मारयौ, कोई की गुणकौ मारयौ, पण हजा-माऊ तौ आवगी आपरै ई अळूझाड़ मे अळूझ्योड़ी ही। अबै तौ जोधपुर पूगण री जेज। झोला नै झटोझट पाछौ गांव लावैला। इत्ती तूमत व्ही जकौ इदकाई मे। जे उण वगत अबोली नी रैवती तौ औ विखौ क्यू भुगतणौ पड़तौ! धाई सफाखाना रै इण धया सू। मूडौ मगरूर मौत रौ जकौ मां रै जीवतां बेटा नै ले जावै। मरघां ई नी ले जावण दे।

चाय-पांणी अर बीड़ी सू निवड़-निवड़ाय डलेवर फाटक खोलो। उणरी सीट माथै आ अधगावळी डोकरी कुण बैठी? किंवाड़ खुलण रौ खुड़कौ सुण्यौ तो वा झिझकी। मूडो फोर उठी जोयौ। मोटी गल-मूछां रौ अेक काटी फड़कौ झाल्यां ऊभो। गोळ मूडो। मोटी आंख्यां। मटिया उड़दी।

उणियारौ आंटीलौ व्हैता थका ई डलेवर खोड़ीलौ नीं हौ। बापड़ी कायी होय इत्ती ताळ पाहरौ खावण नै बैठी तो छौ बैठी। सीट रौ किसो डळो तूटै! फाटक झाल ऊपर चढ़यो तौ पाखती रा लोग अेकण सागै हस्या। वांरै देखादेख दूजा मिनख ई हंस्या। डलेवर रै आया थम्योड़ी चाळचोळ रौ पाछौ ओड़ौ खुलग्यौ। अेक जणै कह्यौ, 'डलेवर-सा'ब थांरी तो अबै जरूरत ई कोनी। आया ज्यूं ई पाछा पधारौ। डोकरी सगळां नै ठाये पूगता कर देवैला।'

'म्हारो तो हाल मुकलावौ ई नी व्हियौ। थे सगळा ठाये पूगो, म्हैं तौ उतरूं।' चूंदड़ी रौ गोळ फेंटो बाध्योड़ो अेक काटी कह्यौ।

'पण म्हारी तो हाल सगाई कोनी व्ही। थे बतावौ ज्यूं ई करूं।' उघाड़-माथ्यौ अेक अधमद रौ डावड़ै बूझ्यौ।

सुण्यौ जको ई खुल्ली-खाळां हंस्यौ। डलेवर री डग-डग हंसी नीठ छाती में माई। गलमूछा री काजळिया छिब रै जोड़ै दांतां री धवळ हंसी दूणी फबी। डलेवर हंसतो-हंसतो ई अरदास रै लटकै बोल्यो, 'बूजी, बिसाई खाई जको ई मोकळो। अबै तो म्हारी सीट छोडो, म्हैं आयग्यो।'

हंजा-माऊ तौ बराबरी तेवड़यां बैठी के अबै किणी री फाकी में नीं आवणो। डलेवर की मटिया उड़दी कानी मगसी मीट सू जोवती बोली, 'थूं आयौ तो भलां आयौ बेटा। सेवट री बाजी आ ठौड़ तो म्हनै छोडणी इज है। पण अबार नी छोडूं। ठेठ जोधपुर पूग्यां छोडूंला। गाडी रौ फेर चढ़ै, म्हनै छेड़ मत।'

'ऊभी गाडी मे फेर चढ़ण री बात तो आज थारै मूंडै ई सुणी।' गलमूंछा मार्थ कड़ा वाळौ हाथ फेर डलेवर मुळकतां कह्यौ।

'बेटा, म्हनै तौ बाळण जोगड़ी मोटर रौ नांव सुण्यां ईं भंवळ आवै। आप-आपरी तासीर। पण आखी मोटर में छेड़ण सारू थनै म्हैं इज मिळी। म्हारी गिया देख, थांनै थोड़ौ-घणौ विचार को आवै नी।'

रिपिया खरचिया ईं अैड़ी रांमत री तोजी नीं बैठे। मोड़ौ व्है तौ व्है। अैडौ किसौ मोहरत टळै! ठिळोकड़ी करता लोगां रै ई जद आंचौ नीं है तौ डलेवर क्यूं खथावळ करै! डलेवरी करता सतरै बरस व्हैगा पण अैड़ौ रासौ कदै ई नीं देख्यौ। डोकरी नै समझावण री जुगत करता कैवण लागौ, 'विचार तौ घणौ ई आवे, पण बूजी, आ तौ डलेवर री सीट है। खाली व्हियां टाळ मोटर ई चालू नी व्है।'

वा तौ आज धारयां बैठी ही। हौणी तावयां अठै पार नीं पड़ै। आ पतवायरा लोगां री काइ पतियारौ! वा ओळचाकड़ा टावरां री विसवास करयौ नकोसै चीजा वोळाय दी। बोली, 'थारौ मन पाधरौ व्है तौ किणी ठौड़ बैठ मोटर हकायलै। काईं थूं बळदगाडी रै सागड़ी सू ईं पोचौ है? वौ तौ कठै ई ऊभनै गाडी खड़लै। म्हनै चिगायां थारै कांई हाथ आवै! बोलौ-बोलौ गाडी हकावै जकी बात कर। म्हारौ बेटौ जोधपुर सफाखानै है। अबेळौ व्हियां घणौ मोड़ौ पूगीजेला।'

'पण आ सीट नी छोड्या तौ आखी ऊमर ई नी पूगीजै।'

खिलकां री कोडायौ कण्डक्टर ई पाखती आयग्यौ हौ। डोकरी साम्हौ हाथ करतौ बोल्यौ, 'टिगट, ला टिगट तौ बता।'

वा अबूझ टावर री गळाईं इचरज दरसाती बोली, 'टिगस! टिगस वळै कैड़ो?'

'छेवास डोकरी, थूं तौ सगळां सू ईं डंपाळ निकळी। टिगट ईं नी लियौ अर डलेवर री सीट माथै जमगी।'

'डलेवर रै टिगट री कांईं जरूरत!' आंणियौ हाथोहाथ फारगती कर दीवी।

खिखर खमडोळां रौ अैड़ौ नांमौ जोग कद सजै! लोगा नै आज दिन ताईं अैडौ आणंद नी आयौ। चाळ माथै पड़्या छिलका झाटकतौ सोनार मुळावण देवता कह्यौ, 'बूजी, किणी रै घोदायां सीट छोडजै मती। खामची डलेवर व्है तौ छात माथै बैठ मोटर हकायलै। जिणरौ नाव डलेवर।'

भरै पडती मुळावण ही। कह्यौ, 'म्हैं जांणूं बेटा, म्हनै कांईं पाटी पढ़ावै। म्हैं लूण खायौ जित्तौ थू आटौ ई नीं खायौ।'

'जद इज तौ थारै टाळ दूजौ कुण ई डलेवर री ठौड़ नीं बैठौ।' अंजण रै पाखती वाळी सीट माथै बैठौ अेक आदमी मिळती मारी।

'म्हैं कोई मतै थोड़ी ई बैठी। अेक मुसांणस रै कह्या माडै बैठणौ पड़्यौ। दूजी ठौड़ खाली ई किसी ही, जिण माथै बैठती। थू ईं बता।'

'म्हे पाणी नी पीयौ जित्तौ थू घी खायौ। घी खाया ईं तौ अकल आवै।' बच मिळ्या सोनार कद चूकतौ।

कानी-कानी सूं हसी रौ फव्वारौ छूटौ। मिनख रै कठां इण सू बेसी हंमी मावै ई तौ कोनी। पण कित्ता ई जोर सूं हसौ, भलां ईं रोवौ, हजा-माऊ अबै नी मनरीजै। हंसी ढब्यां उपरांत हाथ जोड़ती बोली, 'थे इत्ता जणा अर म्हैं अेकली। कीकर पूग आवूं! म्हैं तौ किणी नैं आपरी सीट छोडण सारू नी कह्यौ। भला मिनखां थांरी

मां रै साईनी हूं। थोड़ी-घणी तो कांण राखौ।'

डोकरी रै आया पैली तौ सगळां रै पगा कीड़िया चैंटोड़ी ही। डलेवर अर कंडक्टर माथै घणी ई रीस आवती। पण अबै अैंड़ा लावा रौ लोभ छोडीजै! डलेवर बुळताई सूं कह्यौ, 'कांण राखां जद इज तौ कणाकला थारा लालरिया लेवां, नीतर बाहूडो झाल हेटै नीं थरकाय देतौ। बूजी, साच मांनौ, आ सीट तौ म्हारी है म्हारी।'

'थू कांई रांमजी रै घर सूं लिखत करायनै लायौ?'

"हां बूजी, इण सीट रौ तौ लिखत ई समझौ। खुदौखुद भगवांन ई आ जावै तौ इण माथै नी बैठण दूं।'

'बेटा, इत्तौ गुमेज मत कर। पिरथी थप्या पछै ई किणी री गादी अमर नीं व्ही। पछै बापड़ी इण ठौड़ री तौ ठरकौ ई कांई! म्हारा डाया बेटा, थूं कठै ई दूजी ठौड बैठनै गाडी खड़लै कालै सू ई साव निरणी हूं। थारा सू जोड़ करै जित्ती म्हारी सरधा कोनी।'

'झोड़ थू करै के म्हैं करू? डलेवर री ठौड़ बैठ्यां टाळ भवै ई मोटर नी खड़ीजै।'

'पण आ ठौड़ खाली कठै, म्हैं बैठी तौ हूं!'

'तौ थू गाडी हकायलै। म्हारी ना कोनीं। आ संभाळ कूची।' अर साचांणी डोकरी नै कूंची झिलावतौ डलेवर होठां रै च्यारूमेर मुळक ढोळतौ अठी-उठी जोयौ। ताळियां री तड़ातड़ रै सागै हंसी रौ घिरोळौ छूटौ। कठैई आंतड़िया नी अळूझ जावै?

वा अेक ऊंडो निस्कारौ न्हाकती बोली, 'म्हनै गाडी हकावणी आवती तौ इत्ता थोक नी सुणती। जे थू अैंडौ ई खामची है तौ ऊभौ-ऊभौ ई गाडी हकायलै।'

'आ कोई हीयोड़ी है, जकौ ऊभा-ऊभां खड़ीजै?' कंडक्टर खाकां पिदावतै कह्यौ।

'तौ ठिठकारद्या, अैंड़ा टाठ्या वपरावौ ई क्यूं? म्हैं तौ आज पजी जकौ ई मोकळी। म्हैं थारौ कांई लायौ? थारै पगां पड़ूं, आज-आज तौ म्हारी बात मांनलौ। पछै तौ मरयां ई मोटर मे नी बैठू।'

'सीढ़ी माथै सूवण रा दिन आया अर हाल ई संतोख नीं व्है।' अेक पिडत ग्यांन री ऊंची बात पघराई।

'झोला री मांदगी औ आंटो साज्यो। नीतर म्हैं तो आं ठीकरां लारै सात धोबा धूळ वगावूं। कालै गूंचळी मार हेटै गुड्यौ जकौ उणनै अेक 'जीबड़ी' में घाल अठै लाया। अठै नी झेल्यौ तौ जोधपुर सफाखानै टोळ दियौ। उण सूं मिळयां टाळ टूकड़ौ ई नी तोड़ूं। थूं वळै म्हनै क्यू रांधै?'

डलेवर हाथ जोड़ण रौ स्वांग लावतौ बोल्यौ, 'माजी, थनै म्हारौ पतियारौ नीं व्है तौ किणी नै ई बूझलै। इण सीट माथै म्हैं बैठूला जद इज गाडी चालू व्हैला।'

वा जूंझळ दरसावती बोली, 'म्हैं तौ अबै किणी नै कीं नी बूझूं। अबार-अबार थारै अरू-बरू अेक सालस मोटयार कह्यौ के थांमची डलेवर व्है तौ छात माथै बैठ

गाडी खडलै । थूं नीं सुण्यो ?'

'भोळा बूजी, अै तौ सगळा थारा सूं खिखरां करै ।'

'काईं ठा कुण खिखरां करै ? म्हनै तो थूं खिखरां करतौ लागै । लारला भो री बदळौ तौ बाकी नी है ?'

अैड़ौ सिरै आणद तौ आज पैली सोना में धपावू भेळ करण रौ ई नी आयौ। सोनार वळै थापी देवतां कैवण लागौ, 'डोकरी, थोड़ीक वळै सैठी रैजे। म्हैं थारै पखै हूं।'

सगळा जातरी ताळियां वजाय वळै जोर सूं हस्या। लुगायां, टाबर अर बूढ़ा-ठाडा धुराधुर। औ अड़दू तौ आखी ऊमर याद रैवैला। मोड़ौ व्हियौ तौ छौ व्हियौ। वगत-सर जाय कोई हीरा-मोती तौ चुगणा कोनी। अर अै रोडवेज रा खटाळा वैता ई खोटवाळा व्है जावै।

पखा री बात सुणतां ई हंजा-माऊ रै हीयै जांणै आधण उकळग्यौ। लोगां रै पखै वध्या ई तौ आज औ दिन देखणौ पड़ग्यौ। आरण रौ आदू ठायौ छोड हाथ खाया जकौ सवाय मे। मिनखां रै मूंडै काळिदर रा बोल सुणणा पड़चा। आकरै सुर बोली, 'म्हनै किणी रै पखा री जरूरत कोनी। थारौ जोर व्है जकौ करलो, मनै तौ मरघा ई आ ठौड़ नी छोड़ूं।'

'मरधा तौ आ दुनिया ई छोडणी पड़ै। जीवै जित्तै आ सीट नी छोडै तौ थारी मरदाई है।' वांणियौ बीड़ौ पीवण सारू तूळी सिळगाई।

वांणिया रा आखर डलेवर रै काळजै रड़क्या। छेहलौ सवाल करयौ, 'बोल डोकरी, म्हारी सीट छोडै के नी ?'

'नी छोडू, नी छोडू। अभ्यागत डोकरी जांण थूं म्हारै लारै इज क्यूं पड़यौ ? दूजां नै कैवता डर लागै ?'

आ डोकरी तौ जबर निसरड़ी। समझायां थोड़ी ई मानै ! गलमूछा री मर-जाद तौ अबै राख्यां ई सरैला। डोढ़ मे मुळकतौ बोल्यौ, 'थू कांई नीं छोडै, आ सीट थारै बडेरां नै ई छोडणी पड़सी।'

डोकरी नै हाथां माथै उचाई तौ साव इज हळकी। वा तड़फा तोड़ती घणी ई गिरणाई, पण पछै तौ वौ थारै ई नी कीवौ। उंचायां-उचायां ई फदाक मार हेटै कूदचौ अर उणनै ढूली रै उनमांन धूळ आंगणै ऊभी कर दी।

'टिगट लेय लारली गाडी मे आ जाजै। इत्ती भीड़ नी व्हैला। पण डलेवर री सीट टाळनै बैठजै।' आ भुळावण देय वौ अजेज पाछौ चढ़ग्यौ। खोळौ होप खटकौ दबायौ। मोटर घरर-घरर करती चालू व्ही, जाणै या ई हंजा-माऊ नै धुरकारती व्है।

'अरे, बापड़ी री गेडी तौ लारै रैगी।' अेक बूढ़ी लुगाई रै याद दिरावतां ई डलेवर गेडी हेटै थरकाय दी। सिग्या-बिहूण हंजा-माऊ री चेतौ बावड़ियौ जितै काळौ निसास छोडती मोटर बहीर व्हैगी। पांच-सातेक अधकिचरी भणाई वाळा डावड़ा हाथ हिलाय टाटा-टाटा ई करया। पण हंजा माऊ रै कीं जाच पड़ी नीं के आ किण री बोली है ! मांनखा री तौ नी लागै। वा अेकण ठौड़ माटा री रूपोड़ी पूतळी ज्यूं अवचळ ऊभी ही। हाथ मायली गेडी थोड़ी आंतरै पड़ी ही। हाथ में

झेल्यां उपरांत ई पाछी ठक-ठक री ठपकार सुणीजैला। बीजळी पडै आं खटाळां माथै। अेक डाकण तौ धूऔ छोडती उणरा झोला नै आंतरै ई आंतरै लेयगी अर दूजोड़ी उणनै लारै छिटकाय धकै वहीर व्हैगी। काळौ-धिराक सास छोडती। अबै आ डाकणिया रौ वेग कीकर न्हादडीजै ? कीकर मांदा वेटा रै पाखती पूगीजै। उणरी सुख-साता बूझीजै। मौत रौ धीजौ व्है जातौ पण आंतरा रौ धीजौ नी व्है! नी व्है!!

राईका बाग टेसण री फाटक ई जबर कुलंगी फाटक है। टन्-टन्-टन् रै रणकारां राहगीरां नै सावचेत करतो रांम-जाणै दिन मे कित्ती वळा बंद व्है, तिणरी कीं तूमार नी। फाटक पड़ता ई कित्तो घाटो अळूझै ! आप-आपरै काज, आप आपरी खथावळ, आप-आपरै ठरका परवांण, आपरै ध्यांन में मगन मानखो फाटक री दोनू बाजू अेकठ होवण लागै सो व्हैतो ई जावै। जिणरी जेड़ो वेग व्है उणनै अठै ठमणो पड़ै। छकड़ा, साइकिल, फटफटिया, स्कूटर, कारा अर ट्रका दोनू फाटका रै पाखती अेकठ होवण ढूकै। हॉरन बजावण री जूंझळ मे आपरो बाण भलां ई पोखो, पण फाटक तो रेल पार व्हिया पैली नी खुलै। पाळा चालणियां री ईसको फगत अठै आवता भरै पड़ै। फाटकां रै नाकै ठायोड़ी सैरयां सूं वारै निकळ वै झटोझट आपरी राह लागै। कोई अेकाध साइकिल चलावणियो जोबन रो हुस खमखरी खाय, साइकिल उंचाय पार जावण री जुगत बिठायलै।

दिल्ली सूं जोधपुर ढूकण वाळी डाक-गाडी री टेम अेकर म्हैं अेक अडब नजारै रुंधग्यो। यूं तो गाडी आवण रो सही वगत पूणी बारै रो है, पण उण दिन गाडी घड़ी सवा-घड़ी लेट ही। फाटक रै असवाड़ै-पसवाड़ै तर-तर बधती भीड़ मे कमला-नेहरू कॉलेज री लड़कियां रा झूलरा जुड़ण लागा। केई पाळी तो कई साइकिलां माथै। अदीठ आणद रो जांणै ठाडो बावळ साचरो। पण म्हारै मतम जसवंत कॉलेज रो बरसां जूनी ओळू, मूंन कुरळाट करण लागी। आज तो वै दिन अर वै

बातां ई विलायगी। रांम-जांणै किण अदीठ भाखसी रोहडचोडा, वै दिन अड़यड़ै। जे कोई कामणगारौ वां दिनां रै अेक छिण सूं ई पाछौ गळवरथी सांम्हेळौ करावै तौ बच्चोड़ी आखी जूण उण छिण पेटै राजी-बाजी बगसीस कर दू। वां दिनां सपनै ई ओ वेरौ नीं हो के वै छळगारा दिन म्हारै साथै अैडी वेजां कुचमाद करैला। घोळा-धट्ट भोडक रै बिचाळै पळकती टाट म्हनै अवार परतख नी दीसै तौ कांई, जांणू तौ हूं। पण आं सूझती लडकिया नै तौ सुभट दीसतौ व्हैला? रूप अर जोबन रै नैणां निरखण लेखै अै चीजां तौ भवै ई गिणती मे कद आवै! निरख्यां किरकिर ज्यूं रड़कती व्हैला। अर अठी आं रूपाळी डावडियां री पसम रौ परस मदछकियां रै नैणा ई छाजै। हे रांम, कैडी व्हो अर व्हैती ई जावै! तौ ई किणी कूडै थथोपै माड़ै-मीठै भरम मन तौ बिलमावणौ ई पडसी। आ फाटक तौ रेल हुकियां खुलै री खुलै, पण म्हारै अतीत अर वरतमांन रै आडी छिण-छिण पसरती आ अदीठ अगोचर फाटक इण जमारै तौ पाछी भवै ई नीं खुलैला। कैड़ी कावळ अर विडरूप लाचारी है!

परली फाटक रै सलवै ऊभी भीड़ नै सांम्हली भीड़ रै भाग सूं अवस ईसको व्हियौ व्हैला। कैडा कंवळा-कंवळा, भांत-भांत फूल!

म्हारै जीवणै पसवाडै फियट-कार मे अेक जोडौ बैठौ हौ। घरवाळी री कांण-मरजाद, घणी री ताक-झाक माथै आंकस लाग्योडो हौ। धांटी तांण्यां अडीजंत वो स्टेरिंग नै अजांण पंपळोतो रह्यौ। अर कदै कदै ई छांनै ओलै धांटी रै आंगै डोळा घुमाय आडौ-अवळौ झांक लेवतौ। जोडायत गुमसुम रूपाळी पूतळी रै उनमांन धणी रै जोडै अवचळ बैठी ही। तौ ई खुदोखुद रै उणियारा खातर ताखा-माखा करण वाळी आंख्यां रौ उणनै पूरमपूर चेतो हौ। पाखती ऊभा डेळीचूक मोटयार इण विध घूरता जांणै आंख्यां सूं उणरै डील बटका भरै।

रेल रै कोयला सूं भरया छकड़ा माथै सोळै-सतरै वरसां री अेक अचपळौ छोरौ बैठौ हौ। गाभा काळा अर फाटोडा। कोयलां री रंजी सू भखभूर। पण आंख्यां, होठ अर दांत निकेवळा। दांतां री चमक अर होठां री रातोड़ सांम्ही वत्ती बधगी। ही जिण सूं ई आंख्यां मोटी लखाई। रमेकडा ज्यूं घडी-घडी धांटी हिलाय वो लडकियां कांन्ही देखतौ अर ऊंडा-ऊंडा निस्कारा भरतौ। पछै सिनेमा रै अेक चालू गीत री आंकड़ी उगेरी।

उणरै जोड़ै ई कठफाड़ां रा ठेला माथै उण सूं दो-तीन बरस लांठौ अेक छोकरौ बैठौ। वेजा री माळ ज्यूं डोळा घुमावतौ बोल्यौ, 'कित्ता ई कांव-कांव कर, कागला रै कस्मीरी सेव हाथै नीं लागै। थारै बिचै तौ म्हारौ बळद ई फूठरौ है। पण बापड़ौ वेजां हर नीं करै!'

पांच-सातेक लडकियां होठां रै मांय-मांय थोडी मुळकी। अर दूजै ई छिण बातां में इण भांत रुंधगी, जांणै वै आ बात सुणी ई कायनी।

पद अर धन रै माथै मोटा बाजणिया मोतबर इण गत रौ दिखावौ करता, जांणै वै अठी-उठी कीं ताक-झांक नी करै। पण वांरी आंख्यां, म्हनै सांम्ही वत्तौ मैल निगै आयौ। अर लडकियां इण भांत रौ स्वांग करती के ताखा-माखा करण वाळी निजर रौ वांनै कीं वेरौ नीं है। पण म्हारी जांण में वांनै पूठ सारै री

तिरसी आंख्या रो ई पूजतौ ध्यांन हो। म्हारै ओळूं-दोळूं ऊभा हर मोटयार नै अैड़ो लखायो जांणै कोई न कोई लडकी उणरी हरकतां रो लेखो राखै। सांकड़ी मोरी रो भगवो पेंट अर छींट रो झब्बो पैरयां अेक कॉलेज रो लड़को झटका सूं साइकिल उंचाई। अेक हाथ रै पांण साइकिल झेली अर सेरी बिचाकर फाटक पार करण लागो। उणरै भरम जांणै तमांम लड़कियां री मीट उणरै बध्योड़ै कैसा अळझगी। पूठ लारै जणी-जणी रा डावर-नैंण सळवळ-सळवळ पितळण लागा। उणरै हरख री कठै ई की माठ नी ही। उणरी देखादेख दो-तीन विद्यारथी सोच्यौ के वै इण स्वयबर में टळ जावैला। पछै वा री वा लकब अर वौ रो वौ भरम। मोरां तिरती आंख्यां रै परस मीठी-मीठी गिलगिली चालण लागी।

कदास भीड़ में घणकरा लोग आ बात सोचता व्हैला के गाडी वळै मोडी आवै तौ आछो। पण मिनकियां रै भाग छीका नी तूटै। अणछक रेल री तीखी सीटी सुणीजी। सीटी सूं झिझकण रै ओळावै पाखती ऊभी लड़कियां माथै निजर फेंकण रो नांमी ताखो सजग्यो। सीटी उपरांत सीटी अर घरघराटो। ओळूं दोळूं ऊभी लडकियां रै कामण जाणै मीठी ऊंघ रो सपनौ लुकमीचणी रमण लागो। पण दूजै ई छिण वांरा जागता सपनां नै रोसतो काळो-धिराक अजण सीटी रा रणकारा अर काळा धूंवां री सांसां छोडतो अेक दैंत रै उनमांन होकारां भरतो आवै हौ। अजण री झाळमझाळ भट्टी मे कोयला राळता डलेवर नै अणछक फाटक रो ध्यांन आयो। वौ हमेसां री गळाई भट्टी रो ढकणो देय दरूंजा माथै ऊभग्यो। उण री सोसनी वरदी काळो रंग धुळचोडो हो। माथै रूमाल बाघोड़ो हो। फगत लडकियां रै चीकणै कैसां अर वांरै उणियारां खातर ई उणरी मीट रांचती लखाई।

अजण फाटक रै अड़ोअड़ आयो तो वौ पूरी बत्तीसी उघाड मतै ई हंस्यो। अंजण रा वेग रै माथै उणरी घांटी लडकियां कांन्ही पाछी लारै मुडण लागी। जांणै किणी अदीठ कांमण सूं बंध्योडी डोर उणनै माडै उठी नै खांचै। अद लडकियां रो झमकी मीट री मार सूं अलोप व्हैगो तो घाटी मतै ई पाधरी व्हैगी। हुबोहूब औ रो ओ खिलको घणकरा डिब्बां में व्हियो, जांणै पैला सूं ई माहोमाह सगळा कोई जुगत विचारनै आया व्है। रीत-धरम रै आंकस निवेदां री बजर फाटक रै मांय झांकण सारू मिनख रो मन मरयां ई तालडा तोडतो नी ढबै!

फस्ट क्लास रा डिब्बा रै बारणै रेसमी भगवो भेख ठसायां अेक महात्मा ऊभो हो। धरम रै काजळ सारयोडी उणरी आंख्यां नै कदास लडकियां टाळ दूजी कीं चीज निगै ई नी आई व्हैला। वो चेतावायरो होय उचकनै बारणा रै पाखती आयो। अपछक हूयो हाथ मे नी झिलतो तो वो हेटै धरबीज जातो। काया री मुगति रो जोग टळग्यो। सांम्ही ऊभा सगळा मोटयार अेकण सागै ठहाको मारनै हंस्या। लड़कियां रै उणियारै झीणी झांई धुळगी। पण वांरो तो कीं कसूर ई नीं हो। डलेवर सू पणी मोडी महात्मा री घांटी पाधरी व्ही। जांणै इदर लोक रो राज देखतां-देखतां खुसग्यो। साव अड़ोअड़ ऊभा ये मोटयार किसा सभागिया है!

बारी में मूंडो काढ्यां अेक सेठ रो अणछक माको फाटगो सो फाटफोड़ी ई

रैयो। फीटो-फीटी आंख्या उणरी घांटी खांगी होवण लागी तो भीड़ में ऊभो अेक छैलो सेठ कान्ही लांबो हाथ करनै बोल्यो, 'सेठां, कठै ई डोळा बारै नीं आय पड़ै!'

सेठ लचकांणो पडनै अेकदम मूडो पाधरो करचो। झटका रै समचै टोपी हेटै पड़गी। निरलज्ज हंसी हंसतो घांटी मांय खांचली।

मटिया उड़दी रै माथै रातो फेंटो बांध्यां रेल रो सिपाई हाथ में डंडो लियां फाटक रै सलवै उभो हो। कठपूतळी रै उनमान उणरी घांटी ई लड़कियां कान्ही उणी भांत मुड़ी अर धकै बधियां मतै ई पाधरी व्हैगी।

दोनूं फाटकां रै बिचाळै डाक गाडी धरधराटा रै सागै रपटती ही। परली बाजू खचावळी भीड कदास फाटक खुलण री उडीक में कसमसावती व्हैला।

म्हैं घांटियां री रूडी रांमत देखण मे मगन हो।

आंख्यां सोनल चस्मो। माथै टाट। वा अेक आई.अे. अेस. अफसर री नीमण घांटी ही। की दोरी मुड़ी। अर मुड़चां उपरांत पाछी दोरी पाधरी व्ही।

वा अेक खद्दर धारी नेता री सिरोळी घाटी ही। फा-फीटी मुळक ढोळनो घांटी पाछी पाधरी करणी पांतरग्यो। रैयत रै कल्यांण सारू नेता रा जीव रै पचासूं पंपाळ है।

गांव रो अेक वूढो डोकरियो फाटक झाल्यां जांणै किणी री सोय में उभो व्हे। माथै सांगानेरी पोत्यो। फरफरावतो धोळो खत जांणै हवा रै बायरो घालै। कदे वो ई बाळक हो! मोटयार हो! आज ऊपर सांकडै आयगी तो कांई व्है! देखण वाळी चीज सांम्ही आंख्यां मतै ई मुड जावै। कोई अवूझ टावर रमेकडां कान्ही कोड सूं टगमग जोवै. उणी भांत वो भीड़ मे ऊभी लडकियां सांम्ही जोवण लागो। अेकर घांटी मुड़चां उपरांत वो पाछी पाधरी करणी भूलग्यो। वूढापो सिंघ नै ई चेताचूक करदै।

वा कॉलेज में भणता अेक लडका री भण्योडी घांटी ही। उणरी आंख्यां तो जांणै आपरो ठायो छोड लडकियां रै रूप उलळ-उलळ पड़ैला। पो उणरी आंख्यां रो नीं, रगा उफणता रगत रो कसूर हो।

कैदियां री घांटियां नै सिपाई बारै नी निकळण दीवी। वांरै हाथां हथकडियां अर पगां बेडियां ही। पण निजर रै नाथ किणी सूं ई नी घालीजै। थोड़ी-सीक झांकी मिळतां ई वांरै कोयां ठाडोळाई वापरगी।

वा अेक कवि री घांटी ही। तिणरी बखाण किणी कवि माथै ई छोड दूं तो सावळ है। उण मीट नै आखरां दरसावणी म्हारै बस री वात कठै? म्हैं तो म्हारी मगसी मीट उणरी आंख्यां सारघा सपनां नै फगत कान्ही-कान्ही ओसरता ई देख्या।

पछै ई केई डिब्बां री घांटिया मुड़ी अर पाधरी व्ही।

अरे! वा तो अेक थांणेदार री आंटीली घांटी है। उणरी आकरी निजर मतै ई उण नजारा री फडद उतारण लागी।

घरर-घरर गाडी रपटती ही। सेवट गारड बावू वाळो छेहलो डिब्बो आयो। वा ई किणी जीवता मिनख री घांटी ही। आंख्या आडो कोई पड़दो तो सांप्योड़ो

अर मटिया ई खांगो-बांको पोत्यो। लिलाड़ रै बीच भोळा महादेव री भभूत रो टीको। भांग रो बंधाणी पण ड्यूटी रो पाबंद। मरीजा खातर गाइड रो कांम करै। अेक आंख में फूलो व्हियो तो काई, चौतरफ निजर राखै। नांव गंगाराम बोड़ो। अेकल छडो। ड्यूटी सूं निवड्यां भांडैळाव रै मसांणां घोटा घुमावै। खुद मांदो पड़ै तौ हाथां ई आपरो देसी ओखद करलै। आपरी इण धत रो गुमांन करतां ई नी थाकै के वो कदै ई किणी डाक्टर री गरज नी कीवी। आपरै खरचा सूं बाबा री पूतळी नै अगरबत्ती रो धूप खेवै। धत झिल्यां पूतळी नै धोवै। पळकता भोडक री बीटां हथाळी रगड़-रगड़ साफ करै। टूटी-फूटी अंगरेजी में अबूझ कवूड़ा रो माजनो गमै के वांनै बापू रै माथै बीट करतां लाज को आवै नीं। पण निसरड़ा कवूड़ा आपरी गुटरगू टाळ नी दूजी वांणी बोलै अर नी सुणै।

आज रै आउटडोर डॉक्टर सरवणकुमार सरावगी री बारी। मोळै बरसां पैली डॉक्टरी री चाकरी चढ्या तद सूं दोनूं टेम संवार बणावण रो नेम, सो आज पैली कदै ई नागा नी व्ही। विदांमी रंग री झाई देवता उणियारा सूं सालसपणो माडै निगै आवै। बरसां परवांण माथा रा केस तौ कम व्हिया, पण झान वेडा रा वेडा काळा। गुद्दी माथै कंवळी रूआळी। माथो सीधो अर ऊंचो। उफस्योडो लिलाड। पतळी अर लांबी आंख्यां। तीखो नाक। बोलती वेळा कंठ रो मिणियो ऊंचो-नीचो हालतो दीसै। घणकरा मरीज सवाल रो झटकै पडूतर नी देय मिणिया री चाळचोळ इचरज सूं जोवण लागै। तद डॉक्टर सरावगी आपरै पतळै होठा मुळक छितरावता मरीज नै वळै वौ ई सवाल बूझै। मुळक री आब सूं दाता री पळक इण गत सुहावणी लागै, जाणै अै दांत चबावण वास्तै नी, फगत मुळकण खातर ई बण्या। सोळै बरसां सूं लगोलग डॉक्टरी री अेक सरीसी झाटी कूटतां वांरै साहू औ टदको हुनर रैजलै पड़ग्यो। लोगां नै वांरै माथै अतूट विसवास है, पण खुदोखुद रो विसवास खोळी व्हैगो। हाथ में हदमांत जस व्हैता थकां ई आपरी आब रो हाल तांई ओखद नी व्हियो सो नी व्हियो।

डॉक्टर सरावगी जस रै सागै नाणो ई धावू-धप्प कमायो। अबै नांणा साहू झांपळियां मीं भरै। राजी-खुसी देवै तो धकला री मरजी। लांठो बंगळो। पूजतो बगीचो। दोय कारां। जोड़ायत ई जिनांनै सफाखांनै डॉक्टर। चार बरसा सूं पीड्यां सरणां हालै, पण की कारी लागी नी। अर अठै आउटडोर में घणो रै परताप दो-दो मिनट री जांच-पड़ताल सूं नुसखो त्यार-टच। कदास मरीजां रो अग्यांन अर भरम ई वांरी मांदगी रो मोटो ओखद है।

थरमा-मीटर, स्टेथस्कोप, अेक्स-रे अर ई. सी. जी. री कळ रै उनमांन कळ बण्या डॉक्टर सरावगी आज रै आउटडोर अडवहता मरीजां नै झटोझट वगत सूं सवा-घड़ी पैला सलटाय दिया। नेहचा सूं आळस मरोड़, उवासी खाय भंवती कुरसी माथै घूमण लागा ई हा के डॉक्टर मोनल राय रै सागै डॉक्टर अभेराज सोनी, डॉक्टर हमकुमार वाहेती, अर डॉक्टर राजेम वरमा, लोह री जाळी रो फड़को उघाड़ मांय वड़्या। डॉक्टर वाहेती टाळ दूजां रै गळै स्टेथस्कोप लटक्योड़ा, जांणै डॉक्टरां साहू आही मिरै ओळख अर औ ई मिरै आभूमण व्है। डॉक्टर मोनल री बरस-गांठ रै टाणै डॉक्टर सरावगी री कार में दो बज्यां सगळां नै ई जीमण साहू

सायै जावणो हो। वैगा ई निवड़-निवडाय वंतळ खातर भेळा व्हैगा।

डॉक्टर राजेस वरमा ऊमर में सगळां सू छोटो। छंटचोड़ा काळा-स्याह खत उपरांत ई उणियारै टावर वाळी भोळप झबळकती ही। घूघरिया केस। गुलाबी रंग। गोडा परवांणै लांवा हाथ। जाडा भोपणा। आखया मे रातोड़। धब्ब करती री कुरसी माथै बैठ्यो अर बोलण खातर इण विध आखतो दीस्यो जाणै उणरै होयै तेल रो कड़ाव कळकळै चढ्योडो व्है। लिलाड़ रै हाथ लगाय कैवण लागो, 'काई कोड सूं इण धंधा री चावना करी अर काई माळीपन्ना उघड़्या। म्हैं तो इण नारगीवाडै अेक घडी ई सास लेवणी नी चावू।'

अर इण बात रै समचै टाबर री गळाई साचाणी सांस ढाब वो मीनल रै डाबर-नैणां सांम्ही जोयो, जांणै खराखरी उणनै ओ विसवास बंधावणो चावै के वा पाखती नीं व्हैती तो ई उणरै कठां अै ई बोल नीसरता।

पण डॉक्टर मीनल राय नै ई आपरी छिब ओर सुभाव माथै कम पतियारो नी हो। सोनली झाई पाडती पसम तो अळगी, उण री छीया घुराधुर मे जाणै कामण घुळ्योडो व्है। फीचा लूवती कळायण रा लोर जांणै अबै बरस्या, अबै वरस्या। लावी नस रै ओळू-दोळू कुदरती कठी माथै निजर पड़तां ई राजेस री आवगी अकल जीभ मे घुळ जाती।

डॉक्टर अभैराज सोनी नै आपरै धधा री कटवी तो खारी लागती जको लागती इज पण मीनल रै सांम्ही राजेस री बात रो काट करणो ई जरूरी हो। घुगघुगो भरवो डील। सांवळो रंग। बोली अणूती आखती। कांम मे खथावळ। धंधा में परवीण। उबरती सूझ-बूझ। मोसा री तोख में कैवण लागो, 'अेक घड़ी करतां-करता तीन बरस निकळया ज्यू दस बरस वळै निकळ जावैला, पछै की रीझट नीं। पण आ वात म्हारै समझ नी ढूकै के फगत डॉक्टरा रै गळै ई भलाई री डोगरो क्यूं बंधै! मंत्री, विधायक, कलेक्टर, अेस. पी., थांणेदार अर तहसीलदार री बात तो ऊंची, डॉक्टरा बिचै तो पटवारी अर रोडवेज रो कंडक्टर ई वत्ती कमाई करै। दूजा मुस्तंडा नी तो किणी री आंख्यां आवै अर नी दांतां चढै। बापड़ो डॉक्टर ई काळा तिल खाया, मन करै सो ई सवारी गांठै। उपदेस झाड़ै। जैड़ो आखो देस व्हैला, वैडा ई डॉक्टर व्हैला। इण में आंती आवण री किसी वात!'

मीनल रो मन जीतण सारू डॉक्टर सोनी अर राजेस में जांण-अजांण माहो-माह सायपाय लाग्योडी रैवती। मीनल रो डिग्गू-पिच्छू अंतस कदैई अठी लुळतो। कदैई उठी लुळतो। आंख्यां मीच सोच-विचार छिटकावती तो राजेस खातर हीयो ढुळमतो। आखया उघाड उजास में लेखो करती तो डॉ. सोनी सारू मन डिगतो। तीन छोटी बैनां अर दो छोटा भायां री भणाई अर भारीगरा आगै उणनै पांच बरसां मे ई इण धंधै सैगत व्हैणो पड्यो। आखी दुनिया मे उजास पूरण वाळो सूरज ई उणनै कदैई कदैई कमळाईज्योडो निगै आवतो। जे कावळ सपना ज्यू बाप रै दिल रो अचीतो दोरो नी पड़तो तो वा पकावट राजेस वरमा सू ब्याव कर लेती। पण सठा उपरात गताघम मे पड्योड़ी वा दिन रै चांनणै कांई सोचती अर रात रै अंधारै कांई विचारती!

डॉक्टर सोनी घर रो पूजतो आसूदो हो। जोड़ायत रै सिधामां सासरा री

चूकती माया-मस्ता उणरै ई पांती आयगी। अेकाअेक बेटी रै सभायां मुमरा री माया सूं मन इज फाटग्यौ। मीनल सू दस बरस मोटी व्हियौ तौ कांई, सैर रै माय अर बारै छोटा-मोटा आठ बंगळा। पांच-सातेक ठावकी ठोड लांठा धाळा। घडी सोना-गैणौ अर मण-सवामण चादी रै वासणां नै तौ तीन पीढ़यां सू छेड़ण री ई जरूरत नी पड़ी। मां मारू झरां-झरां रोवती अेकाअेक बेटी रा आंमू मीनल रै पाखती रह्यां दूजै महीनै ई खूटग्या तौ डॉक्टर सोनी नै मीनल रा हेजळा मुभाव माथै पूरमपूर धीजौ व्हैगौ।

राजेस रै सांम्ही जोवती इचरज सूं मीनल होळै-सीक बूझ्यौ, 'आज अेड़ी कांई नवादी बात व्ही ?'

मीनल री इत्तौ पूछणौ व्हियौ अर राजेस रै गळै अड़वड़ता आखर खळकी-जण ढूका, 'गरीब अर अमीर सैं अेक लखणा। जद गरीब ई गरीबां रौ दुख अर विखौ नी समझै तौ अमीरां रै कांई पीड़ पाकी के वै गरीबां रै पखै बंधै।' डॉक्टर सरावगी रै सांम्ही जोवतौ राजेस धकै कैवण लागौ, 'अपांरै वारड रौ धीसूलां, रेलवाई कारखांना रौ मजूर, सेवट निकाळौ तावै नीं आयौ तौ ढळती रात नीठ छेहली सांस छोडचौ। स्ट्रैचर में लोथ ले जावती वेळा सुगनारांम हाथी मस्ती में गावण लागौ—ओ जाने वाले बालमा, लौटके आ, लौटके आ। म्हारै कानां जांणै फटाकां री लड छूटी। रीस तौ अैडी आई के बूंटां री ठोकरां उणरा दांत तोड न्हाकूं। धाकल रै समचै हेलौ मारघो ई हौ के 'साह ऑफ इरान' रा बाडा धोबडा माथै निजर पड़तां ई म्हारी सैं गुस ठाडी पड़गी। जद इण सफाखांनै अैडी-अैडी टाळकी वांनगियां है तौ वापड़ा अणपढ हाथी में कांई चूक! हळाहळ भूठी मांद-गिया सूं डराय रिपिया टांचै। अमीर हत्यै चढ़ै तौ वाही बात अर गरीब हत्थै चढ़ै तौ वाही बात। अैड़ौ काठौ काळजौ तौ जरख रौ ई नीं व्हैतौ व्हैला।'

डॉक्टर धनपत साह नै परपूठ सगळा ई 'साह ऑफ इरान' रै नांव बतळावै।

आपरै खोळयै फाटतौ राजेस उणीज पांण लाग्या सुर मे धकै कैवण लागौ, 'डॉक्टर पदम सास्तरी तिणखा तौ राज री अरोगै अर अठै बैठौ फगत बंसल नर-सिंघ होम री दलाली करै। आवै जका नै ई पाटी पढाय उठै टोळै। अेक जणौ नीं मांन्यौ तौ बापड़ा नै आपरौ पग वढावणौ पडचौ। डॉक्टर गोविंद पटेल...हूं... आंख्यां रै पाटी बांध मरीजां नै कावळ मतरै। नित पांच सौ रिपिया रौ नेग घर-वाळी नै नी चुकावै तौ वा घर में नी वड़णदै। कदैई कदैई तौ लाई नै उधारा-पारा लेय पांच-सौ रिपिया भेळा करणा पड़ै।'

डॉक्टर हंसकुमार वाहेती अर राजेस सरमा रै विचारां में अंगै ई मेळ नीं हौ। राजेस डाबी तांणतौ तो वौ जीमणी। राजेस रै पाहरौ खावतां ई डॉक्टर वाहेती कैवण लागौ, 'रावळी आंख्यां तौ जलम सूं ई गुलाबी रंग में रंगयोडी है। फगत अमीर अर मोटा मिनखां में ई दोसण निगै आवै अर गरीब सगळा ई दूध रा धोयोडा खापौखाप दीसै। बापडां नै वत्तौ जुलम करण रौ मौकौ ई नी मिळै तौ दूजौ जोर ई कांई करै। पण मौकौ मिळयां कुण ई नी चूकै। ज्यां गरीबां रै थूं विड़ू बंधै, म्हैं म्हारै हाथां केई वळा सफाखांना री थाळियां, कटोरा अर कामळां रातै रै बीटां सूं बरामद कीवी। थारी जांण में वांनै अैं चोरघां 'साह ऑफ इरान,' पदम सास्तरी

के गोविंद पटेल ई सिखाई व्हैला, क्यूं ?

डॉक्टर हुमकुमार वाहेती महात्मा गांधी अस्पताल रा मान्योड़ा सरजन। ममोल्यां री जात कंवळा-लवद हाथ। मिनखा-देही री काट-छांट नी करनै रूड़ा चित्रांम कोरता तो वत्ता फवता। मीठी बतळावण। मोठ-मरजाद री जात नी। वै रिपियां सारू नटता अर लोग माडै झिलावता। नटणो फाचरै आयोड़ो हो।

राजेस जोस रै बघार पड़ूत्तर दियो, 'जिणरै पाखती की नी व्है, वो झांपळियां भरै तो उणमें काई चूक ! पण अै धाया-धाप्या अमीर लोग खांड क्यूं खावै ! किणी मिनख नै वत्ती अमीरी फोड़ण रो कदै ई हक नी व्हैणो चाहीजै।'

'अर इण हक रो बंटवाड़ो करै कुण ? आज री आपाधापी रै जमानै जिणरै हाथ पड़ै सो आपरो।' डॉक्टर सोनी परतख निजरा री बात मूडै दरसाई।

राजेस वरमा रा माईत उणरै दसवी पास करघा पैली ई खेण रोग री मादगी सूं समायग्या। पैला वाप अर तीन वरसा उपरांत मा। खेण रोग सू ई मोटो रोग गरीबी रो हो। मौत रै उनमांन गरीबी ई निजोरी व्है। उण वेळा वो हो तो टावर ई, पण आपरी साप्रत आंख्या माईता नै जिण भूडी गत रिब-रिब मरता देख्या, उणरै हीयै अजांण ई आ धत झिलगी के वो डॉक्टर बणैला। गरीब मरीजा री सेवा करैला। कीकर रात-दिन खुद री भणाई रै सागै वो मजूरी अर ट्यूसन करनै औ खण पार घाल्यो, आज चितारघां रूगता ऊभा व्है। थोड़ो पोचापो लखावता ई माईता री चांम मंढ्योडी हाडकियां रा झांवळा आख्यां साम्हो तिरण लागता : वै ऊंडा धंस्योड़ा डोळा, वै पिचक्योड़ा गाल। वै सांस लेवता किड़कोड़, घसूं-घसू री वा अळखावणी घासी अर वै खेंखार रा डचका। खिळखिळ व्हियोड़ी जोह पाछी अेकठ व्है जाती। माईतां री वा छिण-छिण मौत ई उणरी अखूट हेमांणी बणगी। इम्तियान मे उणरी मदावत सिरै नबर ई रैवती। सुवरण-पदक रै नामून जिण पुळ उणनै डॉक्टरी पास करण रो समचो मिळ्यो तो जाणै उणरा माईत सैंघरूप पाछा जीवता व्हैगा। पण डॉक्टरी पास करण रो सपनो तो फगत सपनो इज हो। साचैली डॉक्टरी सू उणरी हूस, आस अर विसवास रै जांणै तीजी वळा लापो लाग्यो। इण लांपा री कळझळ माईतां रै लापा सूं घणी वत्ती ही। डॉक्टर वण्यां तो तीन वरस व्हैगा, पण गरीब मरीजां री सेवा खातर तो मन री मन मे इज रैगी। धंधा री चरखी मे झिल्यां सै ग्यान-विग्यांन धंधा रै सांचै ढळ जावै। धंधो विग्यांन रो वैरी ! डॉक्टरी रा इण धंधा रै मिस गरीबा री ठौड़ वो तो जाणै दवा बणावण री कपनियां रै उमरावा री हाजरी बजावै। इण धाण-मथाण रै घिरोळां राजेस वरमा सारू नी डॉक्टरी करघा सरै अर नी छोड्या सरै। कमाई करणो चावतो तो घणी ई मोकळही, पण वैड़ी हीमत रै हाल होड़ो लाग्योड़ो हो।

डॉक्टर मीनल राय राजेस रो भुगतियोड़ो विखो अर उणरो सबळी हूंस रो छांण काढ़ती तो वो पूरमपूर उणरै अंतस समायोडो लखावतो। पण खुदोखुद री आपळ रै भेळमभेळ राजेस वरमा री धांण-मथाण रै परवाड़ां धकलो तूमार जोवण सारू खपती तो उणनै राजेस नैड़ो-आगो ई निगै नीं आवतो। असवाड़ै-पसवाड़ै डॉक्टर सोनी रा उणियारा ई उणियारा ठौड़-ठौड़ कुरघोड़ा खिवता। राजेस री गताघम सू ई वेसी उणरी गतागम ही।

सफाखांना रा दूजा डॉक्टर मनाग्यांना राजेस री लाड राखता थकां ई उणरै विचारां री मुळगी ई कांण नी राखता। औ तौ आपरै हाथां आपनै इज सगळा रै सांम्ही नागौ करणौ हो।

फगत डॉक्टर सरावगी ऊमर अर ओहदै मोटौ व्हेतौ थका ई राजेस री खातौ-भलौ मांन राखतौ। वौ तौ जमाना री आंधी में भरबूर व्हियौ जकौ तौ व्हियौ ई, पण औ खेलौ कोरौ निकळ जावै तौ सखरी बात। इण खातर केई वळा वौ उणरै पखै बंधतौ। डॉक्टर सोनी री परपूठ आपरै खपतां मीनल नै समझावण री माथा-फोड़ी करतौ। पण दूजा डॉक्टर अभैराज सोनी री पैरोकारी करता। जाणै राजेस घरमा सू मीनल रौ हथळेवौ जुड़्यां सगळां रै मूंडै काळस पुत जावैला।

आपरै सुभाव परवाण जद राजेस घरमा अभैराज सोनी रै परम गुर रौ हाथो-हाथ म्यांनौ नी समझाय थोड़ी ताळ वास्तै गुमसुम रह्यौ तौ डॉक्टर सरावगी झीणौ-झीणौ मुळकतौ उणनै वळै धोदायौ, 'हा, आ बात तौ साव साची के आपा-धापी रै इण जमांनै हाथै लागै सो आपरौ।'

डॉक्टर सरावगी रै धोदावतां ई उणरै आळोच-पळोच री जाणै खळिदी व्हियौ। इत्ती ताळ तौ वौ आपरै मांय गरजतौ हो। डॉक्टर सरावगी रै धोदाया होठां रै बारै धड़कण लागौ, 'जमांना री आण-दुहाई अंगेजियां कांई साव खोटी बात ई खरी व्है जावैला! जे लाखू-किरोड़ं मिनख गलती, अकरम के ऊंधौ कांम करै तौ काई फगत गिणती रै मापै वौ सूधौ कांम गिणीजैला!'

डॉक्टर सोनी उणरी कटवी करतै कह्यौ, 'अरे लाडो, गिणती री जोरावरी रै पांण ई तौ चंडाळ भला मिनखां माथै राज करै। मूरख ताड़कै अर समझदार आपरी पूछड़ी दबाय बोला-बोला सुणै। कुत्ता रै कूकारोळै कोयल री वांणी रौ कठै थाग लागै! जमानौ चालै ज्यू चालणौ अर मन भावतौ खावणौ। अेकलो चिणौ कित्तो ई नाचै-कूदै, भाड़ नी फोड़ै।'

'पण भड़मूंजा री आंख तौ फोड़ै।' डॉक्टर वाहेती उणनै चिगावण री खातर पळोतण लगायौ।

आपरा गुमेज रै उफाण राजेस डॉक्टर वाहेती रौ मोसो कांनो टाळौ करनै धकलै ई छिण डॉक्टर सोनी री फारगती कीवी, 'आ इज तौ मोटी खांमी पजै के सातरा काम सारू मिनख खुदोखुद नै टाळ, दूजा मिनखां सूं आस राखै अर भूंडा कांम सारू आपनै छोड खलकां मे खोड़ काढ़ै।

डॉक्टर सोनी धकै विवाद खातर आसतौ व्हियौ ई हो के गंगारांम बोडा रै वड़कां-तड़कां बोलण मे भंज पड़ग्यौ। गाव रै अेक डोकरिया नै तगतगावतौ वौ मांय आवतौ दीस्यौ। भाग रौ सवायौ लूंठो जमायोड़ो हो। पावती आवतां ई माटी रा लटका करतौ कैवण लागौ, 'गांव रा घणा ई लोग ओखद करावण सारू आवै, पण थैड़ौ बुज्ज म्हैं आज दिन तांई नी देख्यौ। रांम जांणै ऊमर रा इत्ता बरस कठै सिड़वया? पांच बरस रा टाबर में ई इण सूं बत्ती मोजी व्है! सगळा सू पैला आयौ अर हाल तांई बारै ऊभौ व्है ज्यू ऊभौ। म्हारै बतळावतां ई आपरी मांदगी रौ घरहौ बतावण लागौ जाणै म्हैं इज डागदर व्हूं। बापजी, अबै सावळ जाच पड़ताल करनै इण अबूझ नै सलटावौ।'

गंगाराम री हड़बडी में इत्ती ताल उण डोकरा सांम्ही सावळ भाळीज्यौ ई कोनी। पण उणरी इदक भुळावण उपरांत सगळा ई उणरै सांम्ही जोयौ तौ डोकरा री मोवनी छिब सगळां रै हीयै उतरगी। हेम री जात ऊजळौ खत, छाती तणौ छायोड़ौ। गोळ धोळौ पोत्यौ। धोळी ई अंगरखी। अवळियां खावती छाती री रूंआळी पळक-पळक करै। धोळी ई धोती। खांधै सुरंगौ लूंकार। गळै सोना री मूरत। काळै डोरां पोयोड़ी।

अणगिण मानखा सू नित भेटका व्है। पण अैड़ौ सुहावणौ डोळ तौ आज ई दीठौ। मीनल राय तौ 'हाउ लवली, हाउ लवली' री रट रै सागै चितबगी होय उणरै उणियारा कानी जोवण लागी तौ मीट ई नीं टमकारी। बाळपणै नांनी-दादी रै मूडै काकड़ रै देवदूत री बाता सुणी, वौ इज तौ साप्रत परगट नी व्हैगौ ?

हाथ मायली डाग खुणा में सुथराई सूं ऊभी करद्या उपरांत दोनूं हाथ जोड़तौ डोकरियौ सगळा रै साम्ही देख मुळकतौ बोल्यौ, 'राम-रांम-सा !'

राम रै नाव री अैड़ी ऊडी, मीठी अर खरी रणकार तौ आज पैली किणी रै मूडै नी सुणी। जाणै अेक-अेक दांत सूं मुळकती आब री आ रणकार न्यारी-न्यारी झरी व्है। नी किणी भात री हेप नी सकोच। जांणै बरसा जूनी अमाठ ओळख व्है। राजेस री अबोट मीट तौ जांणै किणी सपना रौ छाण काढ़ती व्है। वौ जोर सू रांमा सामा रै सागै हाथ जोड़ डोकरा रौ जुहार कोड सू झेल्यौ। मीनल राय होठा ई होठा होळै-सीक गुणमुणाई। बाकी तीनू डॉक्टर डोकरिया सू निजर घुमाय मीनल रै उणियारा री रगत जोवता रह्या।

'बाया, रांम रौ नाव लेवण मे कैड़ौ संकौ !' वौ मुळकतौ थकौ मीनल नै हेज सू बतळावतां कह्यौ, 'थोडी जोर सू बोल, म्हारै कांनां री ई ठेठी झडै।'

'आज औ गिवार तौ जबर आयौ।' फूला वाळौ डोळौ तांणतौ गंगाराम ई मुळकियौ।

उणरी वेताछोली बात री कुण ई गिनरत नीं कीवी। डोकरा रौ आदेस मानती मीनल तौ साचांणी जोर सू बोल पाछा रांमा-सामा करद्या। पछै बाबौ बारी-बारी सगळा रै सांम्ही जोवतौ बूझ्यौ, 'हौ तौ राजी-खुसी ?'

डोकरा रौ स्वांग धारद्या जांणै किणी पवीत टाबर रै गळै अै बोल ओसरद्या व्है पण गंगारांम री विटळघोड़ी हंसी नी ढबी। 'कालौ कठा रौ ई। आ डागदरा रै कांई बिगड्यौ, अै तौ राजी-खुसी इज है।'

'काई डागदर मांदा नी पड़ै ?'

'डागदर मांदा पड़ै तौ थारी गरज नी करैला। थारै कांई पीड़ पाकी जकौ माडनै बता ?'

'म्हारी पीड रौ अेक सांवरिया टाळ किणी रै पाखती औखद कोनी।'

'तौ पछै सफाखांनै डाफा क्यूं खाया ? करम फोड़ण नै।' लिलाड़ ठपकार गंगारांम बूझ्यौ।

'म्हारो को पसवाड़ौ नी फिरयौ तौ डाफा खावणा पड़या।'

'पसवाड़ौ नी फिरै जद इज तौ अठै आवणौ पडै। राजी-खुसी कुण आवै ?' डॉक्टर अमंराज सोनी खुलासौ करयौ।

बाबो डॉक्टर सोनी कांनी पैली वळा ध्यांन लगाय जोयो तो उणरै गळै टिरती चीज सारू उणनै खासो इचरज व्हियो। सारी-बारी सगळां रै सांम्ही भाळ, मीनल रै गळै टिरती चीज हाथ मे लेय डिचकारी देवतो कैवण लागो, 'बिना मिणियां री अंडी माळा तो आज ई दीठी। सुणी के भण्या-पढ्या काटी, राम के धरम की नी मानै। झूठी बात!'

सगळा ई आप-आपरी हंसी माथै नीठ काबू राख्यो। भाटा नै ई हंसी छूटै जैड़ी बात ही, पण भोळा डोकरिया री कांण सै डॉक्टरां नै अजांण ई राखणी पड़ी। अेकण सागै आपोआप मतै ई सावचेत व्हैगा, जांणै डोकरिया री बात माथै हंसणो, खुदोखुद री माजनो गमणो है।

'वाल्हा!' गोळ चकरिया मे मीट घोळतो वो इचरज सू बूझ्यो, 'मूरत कांई माय बीडघोड़ी है? म्हनै तो बारै की नी दीसै!'

'ओ थारी आख्यां री नी, अकल री कसूर है।' मीनल राय की पड़ूत्तर देवै उण पैला ई गंगाराम ताचकनै बाबा रै पाखती आयो। झूचटो देय उणरो हाथ छुडावतां बोल्यो, 'आगो ऊभनै तमीज सू बात कर।'

अेकर तो बाबो ई हावगाब व्हैगो। कीं समझ पड़ी नी के वो अैड़ो कांई कावळ काम करयो। सगळा नै ई गंगाराम री ओ नितोतपणो भूंडो लाग्यो, पण मीनल नै ताही खारी लागी। ओझाड़ती बोली, 'थू थारो कांम सभाळ, बिचाळै पंचायती करण री जरूरत?'

'व्हा वाल्हा व्हा।' बाबो मीनल नै दाबतां कह्यो, 'म्हारी खातर इण माथै रीस मत कर। छो पंचायती करतो। म्हैं तो इणरो गुण मांनूं के जावता री बाहूड़ो झाल ओ म्हनै अठै लायो।'

'आ इज तो म्हारी मोटी भूल व्हैगी, जिनावरां रै सफाखांनै नी उथेर थनै अठै लायो। म्हैं जाण्यो के बापड़ो अबूझ अर स्याणो है।'

'म्हारी अंडी कांई अचपळाई निगै आई?'

'बूढो डैण व्हियो अर लुगायां सू बात करण रा ई लोतर नी जाणै।'

राजेस रै ऊभी-आडी नीं माई। गंगाराम माथै डाकर करतै कह्यो, 'थू झिकाळ करतो ढबै के नी? अबै अेकर ई लपका करया तो म्हारै जैड़ो भूडो नी है।'

अैड़ा आकरा बोल सुण्या उपरात ई गंगाराम चूकारो नीं करयो। अैड़ी सुमत उणनै कीकर सूझी? खरी फटकार रो सुर वो इत्तै मांन होय पैंनी वळा ई सुण्यो।

अणछक आखै कमरै डोकरा री डग-डग जोर सू हमी गूंजी। जांणै गिगन रै किणी अदीठ—अदीठ खुणा सूं सांचरती आ हंमी छात फोड़ माय पांगरी व्है। मिनख रै कठा अैड़ी हसी कठै सुक्योड़ी ही!

'वाह रै अकल रा दरियाव!' बाबो हंसतो-हंसतो ई कैवण लागो, 'थारी ऊंडी समझ रो मरम अबै जावतां म्हारै पांनै पड़्यो। घणा रंग है थारी समझ नै। काला, आ तो म्हारी पोती के दोहीती रै साईनी है। म्हैं तो कीं दुभांत नीं पाळी अर थूं म्हारा लोतर बखाणै!'

कंडो अचीनो अडडू व्हियो। डॉक्टर मरावगी नै जाणै जित्ती हेंप आई। मीनल री हीयो मांय री मांय उगटतो सवायो। बाकी डॉक्टर ई भेळा-भेळा व्हिया। पण

राजेस वरमा तौ जांणं चेतौ ई बिसरग्यौ व्है। झाळ-भूळौ होय जोर सूं बोल्यौ, 'बास्टर्ड !'

गंगाराम रा घं छिलग्या। फूला वाळी आंख भांग, होठ फरफरावतौ बारै निकळग्यौ। मीनल रै मन री सोय व्हियां डॉक्टर सोनी डोकरा रा दोनूं हाथ झाल बोल्यौ, 'बाबा, इण सितंगिया री बात रौ भूंडौ मत मांनजै। म्हे सगळा ई माफी चावा।'

'इण मे माफी री किसी बात दयाल ! मन सूं छांनी तौ चोरी कोनी ! सूगला बोल उलाकै जिणरी जीभ इज मैली व्है। आप बिरथा खीज कीवी। म्हनै घणौ पिछतावौ रैवैला।'

थोड़ी ताळ उपरांत कमरा री हवा नितरघोड़ी लखाई तौ डॉक्टर सरावगी हेवा ग्हियोड़ै हाथ मे कलम लेय, डोकरिया रै साम्ही जोवतौ सोळै बरसा सूं बांण पड़्यौ सवाल बूझ्यौ, 'बाबा, थारौ नांव ?'

पण बाबा रा कान तौ सपनै ई अैड़ा बासी सवाल रै हेवा नी हा। चंदण रा कांधसिया सूं रूपाळौ खत सुळझावता कह्यौ, 'नांव ! नांव-नाव तौ फगत भगवांन रौ। बाकी सै थोथी अर कूड़ी बतळावण। कांई धरयौ किणी रा नांव मे !'

डॉक्टरां रा कांन तौ अैडा झीणा पडूत्तर रै मुळगा ई हेवा नी हा। अैड़ौ पडूत्तर देवणियौ औ बाबौ कुण है ? कांई कांमणगारी कुदरत ई छांनै-ओलै बाबा रौ रूप धार सैंधरूप नी अवतरी ! आज रै मिनखा री बिटळी दुनिया रौ जीव तौ नी लागै ? कठै ई जुगानजुग जूनौ आदू मिनख इण बावा रै खोळयै पाछौ तौ नी वावड्यौ ? नित री कचबचती फूलण आगै इण अचीती सोरम री नवी बानगी सूं डॉक्टरां रै हीयै जांणै कामण इज व्हैगौ।

'भगवान ?' राजेस वरमा उणनै वतौ उकराळण री नीत सूं बूझ्यौ, 'थारौ भगवान तौ सौ बरसां पैली मरग्यौ ! हाल उणरा नाव नै झीकै !'

'कांई बात करौ, बेटी रा बापा !' बाबा रै ठेठ काळजै चीरौ लाग्यौ। 'भगवांन मे भरोसौ व्हियां बिना ई थें मिनखां रौ औखद करौ ! भवै ई पार नी पड़ैला। अैड़ा अंवळा बोल थांरै मूडै नी छाजै।'

'बाता तौ अैड़ी फांकै जाणै भगवान सूं भेटका करनै आयौ व्है।' डॉक्टर वाहेती बाबा नै अळूझावण खातर बूझ्यौ, 'देख्यौ, कदेई भूल-चूक सूं भगवांन नै देख्यौ ?'

'इण मे कांई मीन-मेख ! म्हैं तौ परतख पावंडै-पावंडै भगवांन सूं सांम्हेळौ करूं। सूरज सांम्ही भाळू तौ भगवांन दीसै। तारा खिवता जोवूं तौ भगवान दीसै। बादळ, बिरखा, रूख-बाटका, जीव-जिनावर, पास-पंखेरू, फूल-पानडा अै सगळा भगवान रा ई तौ न्यारा-न्यारा रूप है। बतावौ, थे घेर-घुमेर जंगी बड़ला नै कदेई देख्यौ ?'

सगळा ई अेकण सागै हांमळ भरी। तौ ई डोकरा नै बिसवास नी व्हियौ। अभरोसा रै सुर कैवण लागौ 'पण उणरा बीज नै हाल ताईं देखण रौ कांम नीं पड़्यौ व्हैला। साव छोटौ ! राई सूं ई छोटौ। इत्तौ लांठौ बड़लौ उण न्यावेक बीज मे निगै आवै तौ कुदरत मे भगवान निगै आवै। औ तौ दीसै जिणनै ई दीसै !'

मीनल नै लखायो जाणै रूप-जोबन रै खोळचै पांच बरस री अबूझ बाया पलवाड़ो फोर पलकां उघाड़ी व्है। हीरा-मोत्यां री खांन अचीती हाथै लागी तो वा क्यू चूकै ? मुळकती बोली, 'दीसतो व्हैला ! पण अठै भगवान रा नांम सू काम नीं चालै। पुरजिया माथै लिखण सारू नांव तो बतावणो ई पड़ै।'

बाबो अभरोसा री मीट गडाय, उणरै उणियारा सांम्ही जोयो। बादळा रै गरणै पूनम री चादणी छण-छण झरै उणी भांत मीनल री सोसनो पसम सू आब झरती ही। अेकर तो बाबो ई चकन-बकन व्हैगो। पछै माथो धूणतां कह्यो, 'बाल्हा, थू ईं कैड़ी बावळी बातां करै ! कांम तो फगत भगवांन रा नाव सू ई चालैला। दूजो कोई नांव आडो नी आवै।'

बाबा री वातां रै आळावै आप-आपरी सोजी अर समझ परवाण च्यारूं डॉक्टरां रै मनाग्यांनां अेक नवो ई चेतो झमंका भरण लागो। राजेस नै लखायो के उणरै अदीठ अतस ओटघोड़ी घांण-मथाण री अळूझाड़ ई बाबा रो रूप धार सांम्ही तो नी आयग्यो ! ओ धीगाणै गरू जबर मिळचो। इण सू तो हारणा में ई मोद। सबद सुणै जित्ता ई गुणकारी। सिणफिण मुळकतो बोल्यो, 'पण अबार इण पुरजिया माथै किणरो नाव लिखां ? भगवान री ओखद करण सारू तो म्हारी सरधा कोनी।'

'भज भीड़ू रांम !' बाबो डिचकारी देवतो कैवण लागो, 'था उघाड माथ्या री सरधा रो कोई पार है भलां ! थांरै बख री बात व्है तो भगवान तकात नै मांदो पटक उणरी माडाणी ओखद करदो। अै उडण-गाडियां अधर आगासा उडै। विलायत अर ठेठ दिल्ली सू मिनख बोलै अर घकलै ई छिण सुमट सुणीजै। म्हनै तो डारा घणो मोड़ो विसवास व्हियो। सुणी के थे तो चाद-देवता सू ई चाळ-बोळ करण मे नी चूक्या। था भणियां-गुणिया री माया रो तूमार थोड़ो ई है ! भज भीड़ू रांम ! पण अेक वात म्हारी ई गिणनै गांठ बांधलो के अेक दिहाड़ै बिना मारै पसरती आ माया सरब मांनखा रो भख लेयनै छोडैला। मिनख री माया तो घणी ई वधी अर बधती ई जावै, पण मिनख साव ढोळै बैठग्यो। बतावो बैठयो के नीं ?'

किणी नै की पड़ूत्तर नी उकलियो। साच रो पतो पडया ईं झूठ सुहावणो लागै। डोळां मे सारधां उपरात ई मिनख अैड़ा साच नै कद देखणी चावै ! साच सू सांम्हेळो करणो अणूंतो आहजो काम ! घड़ीक मन हरखै, घड़ीक धडकै। जनम री पीड़ रो अैड़ो इज परवानो व्है। भला ईं नवा टाबर रो जलम व्हो, भला ईं नवा ग्यांन रो। आणद रै सागै धभीका ई पाड़ै। डॉक्टर सरावगी नै आज सोळै वरस उपरात आंख्या रो जाळो की छंटतो लखायो। हवा, पांणी अर चून ज्यूं ई भरम रो आधार मोटो। भरम रै पाण ई मिनख री जीवारी व्है। बरसां संच्योड़ी आ भणाई तो फगत कमाई करण री हटोटी है। साचैली विद्या री तो हाल बारहखड़ी ई नी सीखी। कित्तो, कित्तो भेद है—जाणणा अर जीवणा मे ! ओ बावो जांणै अर जीवै। म्हे जांणा पण जीवा कोनीं। वांरी आंख्यां सांम्ही रेलवाई टेसण माथै रूप्योड़ो—राती, पीळी अर सीली रोसनी रा अबाअब पळका पाड़ती मसीनां रा झावळा तिरण लागा। दस पईसा राळनां ईं धटाक तोल बतावै। फगत पईसां रै परस सळवळ साचरै। मंगता सू लेय मजूर, बैंमकार, डॉक्टर, वकील,

वैपारी, मंत्री, नेता अर धरमधजा धारियां सारू धंधा परवांण कम-वेसी कमाई। कळ री रूप धारचा मांनखा नैं दीसैं पण सूझै नी। वौ सुणै पण साभळै नी। हूंमैं पण मुळकै नी। बकै पण बोलैं नी। पेट री अथाग ओजरी समूळा डोल नैं गिटगी। कसाई जीवां नैं मार पेट रौ भरणौ भरैं तौ डॉक्टर मांदगी मेटण रैं भरम आपरौ गुजरांण करैं। सै ग्यांन, विग्यांन, कळा, विद्या अर हुनर पेट रा चोटी वढ़्या चाकर बणग्या। पेट, पेट फगत पेट री हाजरी साजै। आपरी जिण लांबी-चौड़ी अकल रौ मिनख गुमेज करै, पेट तौ उणनैं ई डकारग्यौ। डॉक्टर सरावगी री आख्यां अधारी आवती-आवती नीठ बची। औ बावौ पंद्रै-सोळै बरसां पैली देठाळौ देवतौ तौ कदास की कारी लागती। अबै नित री झाटी रौ औ बजर-पैंखड़ौ किणी भाव नी छूटै। अबै तौ नित रैं पराळ-कूटा री आ कैद ई मुगतौ रौ भरम बणगी। लोगां रौ ओखद करता-करतां वै तौ आपरी कुधाल ई पातरग्या। आज इण डोकरिया रैं ओळावैं न्यावंक चेतौ व्हियौ, पण अबै इण चेता नैं अंगेजण जोग सरधा कठै! आ चरड़-घांणी यूं ई चालती रैंवैला। जे आज दिन ताई आपरी आस्था जोग साचैलौ सार पानैं नी पडचौ तौ अबै जैड़ा-तैड़ा हाथ-वसू सार नैं ई आपरी आस्था रौ थान मानणौ पड़सी। इत्तौ मोड़ौ करचां नी पोसावै।

दूजोड़ा डॉक्टर ई आप-आपरैं अळझाड़ में रुंधोड़ा हा। डॉक्टर मीनल अर राजेस रा डोळा दीखणा मे तौ साव सुमट खुला इज हा, पण वांरी सूनी मींट सू अैडौ भरम व्हैतौ जाणै वै अगाढ़ ऊंघ मे सूता व्है। अणछक राजेस वरमा जांणै काची नींद सू झिझक्यौ। मीनल री आंख्या मे आंख्यां पोय बोल्यौ, 'अबै तौ मरचां ई आ चाकरी नी करू। करी जित्ती ई मोकळी। थारी दाय पड़ै उणनैं परणीज। म्हैं तौ अवार ई इस्तीफौ...।

मीनल जाणै अधभदरी ऊंघ मे बोली व्है, 'पिरसू...पिरसू तौ कह्यौ के...!

'पिरसू री वात पिरसू विलायगी। आज री वात आ है!'

'जे कालै वळै मत फिरगी तौ!' डॉक्टर वाहेती खरावण री नीत सू संका कीवी। राजेस वरमा सू मीनल रौ ब्याव व्हियां बाजिदा डॉक्टरां रौ मठ मर जावैला। डॉक्टर सोनी री जोड़ायत रैं बदळै जे वांरी घरवाळी दिल रैं दोरैं देव-लोक व्है जाती तौ वै मीनल नैं अवस पटाय लेता। खुदोखुद री कमाई सू कित्तौ माया संची! भाग री बात के वांरी बहू हाल ठौरमठौर है! इत्ती मोटी, जाणै नित सूरज री उगाळी की न की हवा भरीजै। बाथ मे नी मावै तौ काई, आख्यां मीच परणी रैं आंगै मीनल रौ भरम उपजावै तौ किणरै कांई ठवक लागै!

डॉक्टर सोनी मीनल कानी उडती निजर फैंकी, पण वा तौ जांणै आपरी ठौड़, ही इज कोनी। सजीवण देही रैं आंगै जांणै काठ री पूतळी थरप्योड़ी व्है। हवा अणूती बोझल व्हैगी ही। बाबा री कांण राख्यां अवस इणरौ मन पावसैला। खाली कुरसी सांम्ही सांनी करतां कह्यौ, 'बाबा, इण कुरसी मार्थै वैठ, ऊभौ-ऊभौ थाकग्यौ व्हैला।'

''बापडी कुरसी रौ क्यू भौ बिगड़वावौ? म्हे तौ आगणै बैठा ई ओपां। अर म्हैं तौ ऊभण-चालण रैं पूजतौ हेवा हू। बैठ्यां थाकूं। म्हानैं बैठां नी पोसावै।'

हवा रौ छेह आवै तौ बाबा री वाता रौ छेह आवै। पण सेवट री बाजी इण

मीनल नै लखायौ जांणै रूप-जोबन रै खोळ्यै पांच बरस री अबूझ बाया पस-वाड़ौ फोर पलका उघाड़ी व्है। हीरा-मोत्या री खांन अचीती हाथै लागी तौ का क्यूं चूकै ? मुळकती बोली, 'दीसतौ व्हैला ! पण अठै भगवान रा नांम सू काम नीं चालै। पुरजिया माथै लिखण सारू नांव तौ बतावणौ ई पड़ै।'

बाबौ अभरोसा री मीट गडाय, उणरै उणियारा साम्ही जोयौ। बादळा रै गरणै पूनम री चांदणी छण-छण झरै उणी भांत मीनल री सोसनो पसम सू आब झरती ही। अेकर तौ बाबौ ई चकन-बकन व्हैगौ। पछै माथौ धूणतां कह्यौ, 'बाल्हा, थू ई कैड़ी बावळी बातां करै ! काम तौ फगत भगवांन रा नाव सू ई चालैला। दूजौ कोई नाव आडौ नी आवै।'

बाबा री बातां रै आळावै आप-आपरी सोजी अर समझ परवाण व्याहै डॉक्टरां रै मनाग्यानां अेक नवौ ई चेतौ झमंका भरण लागौ। राजेस नै लखायौ के उणरै अदीठ अतस ओटचोड़ी घांण-मथांण री अळूझाड़ ई बाबा रौ रूप धार साम्ही तौ नी आयग्यौ ! औ धीगांणै गरू जबर मिळ्यौ। इण सूं तौ हारणा में ई मोद। सबद सुणै जित्ता ई गुणकारी। सिणफिण मुळकतौ बोल्यौ, 'पण अबार इण पुरजिया माथै किणरौ नाव लिखां ? भगवान रौ ओखद करण सारू तौ म्हांरी सरधा कोनी।'

'भज भोड़् रांम !' बाबौ डिचकारी देवतौ कैवण लागौ, 'था उघाड माथा री सरधा रौ कोई पार है भलां ! थारै बख री बात व्हे तौ भगवान तकात नै मांदो पटक उणरौ माडांणी ओखद करदौ। अै उडण-गाडियां अधर अकासा उडै। विलायत अर ठेठ दिल्ली सू मिनख बोलै अर धकलै ई छिण सुभट सुणीजै। म्हनै तौ डारां घणौ मोड़ौ विसवास व्हियौ। सुणी के थे तौ चांद-देवता सू ई चाळ-चोळ करण मे नी चूक्या। थां भणिया-गुणियां री माया रौ तूमार थोड़ौ ई है ! भज भोड़् रांम ! पण अेक वात म्हारी ई गिणनै गाठ बाधलौ के अेक दिहाड़ै बिना मारै पसरती आ माया सरब मानखा रौ भख लेयनै छोडैला। मिनख री माया तौ घणी ई बधी अर बधती ई जावै, पण मिनख साव ढोळै बैठग्यौ। बतावौ बैठ्यौ के नीं ?'

किणी नै की पड़ूत्तर नी उकलियौ। साच रौ पतौ पड़्या ई मूठ सुहावणौ लागै। डोळा मे सारघा उपरात ई मिनख अैड़ा साच नै कद देखणौ चावै ! साच सू सांम्हेळौ करणौ अणूंतौ आहजौ कांम ! घड़ीक मन हरखै, घड़ीक धड़कै। जनम री पोड़ रौ अैड़ौ हज परवानौ व्है। भलां ई नवा टाबर रौ जलम व्हौ, भलां ई नवा ग्यान रौ। भाणद रै सागै घभीका ई पाड़ै। डॉक्टर सरावगी नै आज सोळै बरस उपरांत आख्या रौ जाळौ की छटतौ लखायौ। हवा, पांणी अर चून जिवै ई भरम रौ आधार मोटौ। भरम रै पांण ई मिनख री जीवारी व्है। बरसां संच्योड़ी आ भणाई तौ फगत कमाई करण री हटोटी है। साचैली विद्या री तौ हाल बारहखड़ी ई नी सीखी। कित्तौ, कित्तौ भेद है—जांणणा अर जीवणा मे ! औ बावौ जांणै अर जीवै। म्हे जांणां पण जीवा कोनी। थांरी आख्यां साम्ही रेलवाई टेसण माथै रुप्योड़ी—राती, पीळी अर लीली रोसनी रा मबाझम पळका पाडती मसीना रा झांयळा तिरण लागा। दस पईसा राळतां ई धटाक तोल बतावै। फगत पईसा रै परस सळवळ साचरै। मंगता सू लेय मजूर, अेमकार, डॉक्टर, वकील,

वैपारी, मंत्री, नेता अर धरमधजा धारियां सारू धंधा परवांण कम-बेसी कमाई। कळ री रूप धारचा मानखा नैं दीसैं पण सूझै नी। वौ सुणै पण मांभळै नी। हंसै पण मुळकै नी। बकै पण बोलै नी। पेट री अथाग ओजरी समूळा डोल नैं गिटगी। कसाई जीवां नैं मार पेट रौ भरणौ भरै तौ डॉक्टर मांदगी मेटण रै भरम आपरौ गुजरांण करै। सै ग्यान, विग्यांन, कळा, विद्या अर हुनर पेट रा चोटी वढ्चा चाकर बणग्या। पेट, पेट फगत पेट री हाजरी साजै। आपरी जिण लांबी-चौड़ी अकल रौ मिनख गुमेज करै, पेट तौ उणनैं ई डकारग्यौ। डॉक्टर सरावगी री आंख्यां अधारी आवती-आवती नीठ बची। औ बाबौ पंद्र-सोळै बरसा पैली देठाळौ देवतौ तौ कदास की कारी लागती। अबै नित री झाटां री औ बजर-खेंखड़ौ किणी भाव नी छूटै। अबै तौ नित रै पराळ-कूटा री आ कैद ई मुगती रौ भरम बणगी। लोगां री ओखद करतां-करतां वै तौ आपरी कुयाल ई पांतरग्या। आज इण डोकरिया रै ओळावै न्यावंक चेतौ व्हियौ, पण अबै इण चेता नैं अगंजण जोग सरधा कठै! आ चरड़-घाणी यूं ईं चालती रैवैला। जे आज दिन ताईं आपरी आस्था जोग साचैलौ सार पांनैं नी पड़चौ तौ अबै जैड़ा-तैड़ा हाथ-वसू सार नैं ई आपरी आस्था रौ थांन मानणौ पड़सी। इत्तौ मोड़ौ करचां नी पोसावै।

दूजोड़ा डॉक्टर ई आप-आपरै अळूझाड में रूघोड़ा हा। डॉक्टर मीनल अर राजेस रा डोळा दीखणा मे तौ साव सुभट खुला इज हा, पण वांरी सूनी मींट सूं अैडौ भरम व्हैतौ जांणै वै अगाढ़ ऊंध मे सूता व्है। अणछक राजेस वरमा जांणै काची नींद सूं झिझक्यौ। मीनल री आंख्यां मे आख्यां पोय बोल्यौ, 'अबै तौ मरचां ईं आ चाकरी नी करू। करी जित्ती ई मोकळी। थारी दाय पड़ै उणनैं परणीज। म्हैं तौ अबार ई इस्तीफौ...।

मीनल जांणै अधमदरी ऊंघ में बोली व्है, 'पिरसूं...पिरसूं तौ कह्यौ के...!

'पिरसूं री बात पिरसूं बिलायगी। आज री वात आ है!'

'जे कालै बळै मत फिरगी तौ!' डॉक्टर वाहेती घरावण री नीत सूं संका कीवी। राजेस वरमा सूं मीनल रौ ब्याव व्हियां वाजिदा डॉक्टरां रौ मठ मर जावैला। डॉक्टर सोनी रौ जोड़ायत रै बदळै जे वांरी घरवाळी दिल रै दोरै देव-लोक व्है जाती तौ वै मीनल नैं अवस पटाय लेता। खुदोखुद री कमाई सूं कित्ती माया संची! भाग री बात के वांरी बहू हाल ठौरमठौर है! इत्ती मोटी, जांणै नित सूरज री उगाळी की न की हवा भरीजै। बाथ मे नी मावै तौ काईं, आख्यां मीच परणी रै आगै मीनल रौ भरम उपजावै तौ किणरै कांई ठवक लागै!

डॉक्टर सोनी मीनल कांनी उडती निजर फैंकी, पण वा तौ जांणै आपरी ठौड़, ही इज कोनी। सजीवण देही रै आंगै जांणै काठ री पूतळी धरयोड़ी व्है। हवा अणूंती चोखल व्हेगी ही। बाबा री कांण राख्यां अवस इणरौ मन पावसैला। खाली कुरसी सांम्ही सांनी करता कह्यौ, 'बाबा, इण कुरसी माथै बैठ, ऊभौ-ऊभौ थाकग्यौ व्हैला।'

'बापड़ी कुरसी रौ क्यूं भौ बिगड़वावौ? म्हे तौ आगणै बैठा ई ओपा। अर म्हैं तौ ऊभण-चालण रै पूजतौ हेवा हू। बैठ्यां थाकूं। म्हानैं बैठां नी पोसावै।'

हवा रौ देह आवै तौ बाबा री वातां रौ देह आवै। पण सेवट री बाजी इण

अचौती संगत री गांठ तौ आंणी इज है। डॉक्टर वाहेती टूटी बात रौ पाछौ तांतौ साधतां कह्यौ, 'थारी इछा ! पण अठै सफाखानै सरूपात आपरौ नाव लिखायां टाळ धकै की बात ई नी वणै। औ इज धारौ है।'

'क्यू, थांनै नाव रौ औखद करणौ है के म्हारा डील रौ। जे नाव सू थारौ धक जातौ तौ म्हैं बिरथा फोडा क्यूं खाया ? कारट मे म्हारौ नांव लिखायनै भेज देतौ। बगसौ दयाल, बगसौ, थें जाणौ जितौ भोळौ नी हूं।'

'पण बाबा, थू तौ अेकलौ ई इक्कीस भोळा री गरज सारै।' अबकी डॉक्टर वाहेती रै मूंडै मतै ई अै अजाण्या बोल रळक पड़्या। भणिया-गुणिया डॉक्टर री विद्या अर हाथां सच्योड़ी माया रौ मोद, गांव रा अेक ठोठ-गिंवार डोकरा नै आप सू इदक समझवांन मानण वास्तै त्यार नी हौ। पण अबूझ डोकरियौ तौ लप हांमळ भरतां कह्यौ, 'साव साची फरमावौ दयाल, म्हारी नानी ई केई वळा म्हनै आ इज बात कैवतौ।'

डॉक्टर सोनी री होडाहोड रै ताखै राजेस ई प्रीत घुळी मीट सू मीनल रै साम्ही जोयौ पण उणरी सूनी आख्या रौ उणनै कठै ई की थाग नी लाधौ। साचाणी, आज मीनल री बरस गांठ रै टाणै बाबा रौ जोग जाणै राजेस खातर ई सज्यौ व्है। बाबौ आपरी भोळप हामळ भरी तौ काई, डॉक्टर वाहेती रा बोल उणनै अळखावणा लागा। होठा डोढ़ री मुळक छितरावतौ बोल्यौ, 'बाबा, थारी भोळप सू म्हारी अकल अर विद्या रौ आटौ-साटौ व्हैतौ व्है तौ म्हारी ना कोनी।' पछै डॉक्टर सोनी कानी मूडौ फोर कैवण लागौ, 'बड़ भागी, जे थू म्हनै तीन बरसां पैली मिळ जातौ तौ दूजां री देखादेख म्हारौ राम क्यू निकळतौ ?'

अणछक मीनल रै आखै डील धड़धड़ी छूटी जाणै जागती आंख्यां किणी सपना रै पसाव झिझकी व्है। पण दूजै ई छिण आपौ सभाळ पाछी आपरै माथ ऊडी ई ऊंडी छिमकी मारली।

डॉक्टर सरावगी री कळझळ ई हाल मिटी नी ही। हीयै दटपोड़ौ काट जाणै बाबा रै मिस सगळा री आख्या चौड़ै व्हैगौ। माया अर जस रै थाट ई मिनख कदैई कदैई यू देवाळियौ व्है ! अेकर राजेस रै साम्ही जोय वै मीनल रै उणियारै आपरा अपळग मीट गडाई। खासौ-भलौ पावस सांचरधौ। आ दोनां री तळमळावण रौ छेहड़ौ तौ आयौ क आयौ ! तद बाबा रौ सजोग तौ भलां सजियौ। थूद री जूण रै पोसाळा री अबै किणी रै हाथां की कारी नी लागै। पण सताजोग आज मीनल अर राजेस री अबखी घाण-मथाण ई भरै पड़ जावै तौ वै आपरै कूंथोड़ा जमारा नै सुवपारथ जाणैला। डॉक्टर सरावगी नै पैली वळा औ अेलम व्हियौ के मून री धुरकार झेलणौ कितौ, कितौ दोरौ है। कदैय बाबा नै बतळायां इण धुरकार रौ पापौ कटै तौ कटै। कमरा री हवा नै फंफेड़तौ पसौ खाऊ खाऊ करण लागौ तौ वानै बोलणौ ई पड़्यौ, 'बाबा, थारी सोगन, थारी बातां रौ आज म्हानै जबर आणद आयौ। पण अबै थारौ नांव बतायै जकी बात कर। मोड़ौ व्है।'

'मोड़ौ व्है तौ जावण दौ। काले वळै आय बाजूला। गरज तौ म्हारै है। छतौ आयौ हूं तौ थारै औखद रौ तूमार ई जोय सूं।'

'गरज तौ म्हांनै ई थारै जिती है।' वै डोकरा नै घुळ्वाई सू समझावण खातर

कह्यो, 'पण पुरजिया रो पेटो भरयां टाळ कांई जाच पड़ै के किणरो ओखद करयो !'

'किणरो काईं म्हारो ! म्हारो।' बाबो छाती ठोरतै कह्यो, 'मरयां ई नी नटू। पूछो जठै ई हांमळ भरूला। थें जाणो अर म्हैं जांणू। भोळो भलां ईं गिणो, गुणचोर नी हूं।'

डोकरा रै खोळयं अंडो बाळ-रूप तो कदै ई देखणा में नी आयो। नित री सडांद अर पगळकूटा रै बिचाळै अंडी अबोट निरवाळी बातां तो नैड़ाकर ई नी नीसरी। के तो बाबा री निकेवळी भोळप आगै के आपरी थोथी समझ आगै हार मानतां डॉक्टर सरावगी अंतस री जूझळ नै बारै दरसाय कह्यो, 'बाबा, थनै कीकर समझावां ?'

'की समझावण री जरूरत कोनी।' बाबो आंगळी हिलावतै कह्यो, 'सै समझ्यां बैठो हूं। *तावड़ै धोळा नी लिया। समझण री ऊमर तो थांरी है। म्हैं तो अबै* मसांणां मे ई ममझूला। थें कळाप करनै कित्ता ई राजी व्हो। सांस तो वेमाता घाल्या उत्ता लियां ई मरै। नी आधो बेसी अर नी आधो कम।'

'तो पछै, इलाज करण सारू अठै डाफा क्यूं खाया ?' डॉक्टर वाहेती गंगारांम रै लटकै बाबा नै सीधो बूझ्यो।

'खरो सवाल करयो दयाल। भाई-गिनायत सोगन दिराई तो दरजै-लाचार अठै आवणो पडयो। आपरै गळै हाथ, म्हैं तो नटण मे कीं खांमी राखी नी। सेवट जोर नी पूगो तो हचां-हचां आय गदियो। पण म्हारा जीव री आण, आवण रो अंगै ई पिछतावो कोनी। मोटा मिनखां सूं वंतळ व्ही जको सवाय मे। बीज रा चांद री गळाई, आप जैड़ा भाग-धारयां रा दरसण करया। जोधांणो सैर जोयो। मरयां मन मे रै जाती। भज भीड़ रांम ! कित्तो मांनखो कळवळै ! कोई अठी म्हाटै, कोई उठी म्हाटै। जांणै लाय लागी व्है। पी-पी, टन-टन अर खड-खड री अवाजां हवा रो फींफरो वींध न्हाक्यो। भगवान कूड़ नी बोलावै, म्हैं तो बगनो व्हैगो, बगनो। हाट-बजारा अणगिण सेमांन रो थट लाग्योडो ! नी निजर म्हावै करै अर नी अकल। थें ई बतावो दयाल, जरूरतां पोखण सारू सेमांन व्है के सेमांन खपावण खातर जरूरता ? ओखांणो ई कयीजै के घर जोग पांवणो व्है, पावणा-जोग घर नी व्है। पण ओ मांनखो तो उपत री होड आपरी जरूरतां बधावतो गियो अर बधावतो ई जावै। जिणरो रांम आगै लेखो। खात रा उखरड़ा तो खेत में राळयां नेपै बधै, पण मूठी जरूरतां खातर सेमान रो अयाग कूटळो की कांम नी आवैला। काया री तिसणा तो लोटो के बुगतो पांणी सूं बुझै, पण मन री तिसणा तो दळ-बादळ पळवयां ई नीं छीजै। म्हैं तो इत्तो ताळ मे ई आंती आयग्यो, पछै मांनखो अठै कीड़ी नगरा मे कीकर आपरी जूंण पूरी करै ! आ कोई माया-नगरी है के बजराक ! नीं किणी सूं जुहार, नी किणी सूं रांम-रांम। आंधा व्हियोड़ा अड-बड़ै। नी नेहचो। नी निरांत। नी लुगायां रै घूंघटा अर नी मरदा रै पोत्या। अंडा खिलका रो तो सपनो आयोडो ई खोटो। आप किमो साच मांनौला के गांव अर ढाणियां लकात मे आ छून वापरगी। गजब रांमत परवारी। इण खटपटिया मिनख री कळा नै तो पलीत ई नी पूगै। जीवण सारू कित्ता कळाप करया। सेवट री

जसवत कॉलेज रौ हत्थौ आवतां ईं उणरा पग मतै ई अजांण उठीनै मुड़ग्या। मुरड़ री सड़क रै असवाड़ै-पसवाड़ै लोह री चौड़ी पातियां सूं घिरचोड़ौ बगीचौ आज इण गत असैंधो अर अपरोगौ-अपरोगौ क्यूं लखायौ ? मोगरा रा अै अलेखूं फूल सदावंत मुळकनै बधावै ज्यूं आज क्यूं नी बधाया ? वारै आगै तौ आज अै चौड़ी-चौड़ी पातिया जांणै काळा-काळा दांत काढ़ै। नित-हमेस तौ अै इज फूल उणरी हाली रै भणकारै सेढाव हसी हसता। खिलता। झूमता। पण आज तौ जांणै ओळखै ई नी। अवार फूल तोड़ती वेळा उणनै अैड़ौ भरम व्हियौ, जांणै वै माय रा माय चीचाया व्है। पण कालै तांईं तौ जांणै हथाळी रै परस रा कोडामा मतै ई लूय-लूय पड़ता। सूंघ्या, तौ वा सौरम ई नी। कठै विलायगी वा सौरम ! चिड़कोल्यां रा न्यारा-न्यारा ढूल आज इण भात कुरळावै क्यूं ! उगता सूरज री निरमोही किरणां फूल-फूल नै फफेड़ै। रगदोळै ! आखी कुदरत ई वगत आया अैड़ी नुगरी व्है जावैला, आ सपनै ई कद जाणी ही !

अचांणचक टप-टप रै भणकारै घोड़ा री टाप सुणीजी। उणरा कांन जांणै इणी अणहद नाद री छिण-पल उडीक मे हा। मुड़नै जोयौ। जांणै कोई सुहागियौ सपनौ तांगा रै मिस देठाळौ दियौ ! पण आज सरोज इत्ती वैगी कीकर आई ! उणरै फूल तोड़ण रौ नित-नेम भूली तौ कोनी !

सरोज ई अळगी भांय सूं पैल झबूकै ई ओळख करली के काळी-स्याह पातियां रै अड़ोअड़ ऊभौ प्रफुल्ल हथीको फूल तोड़ै।

आज अेक बरस रै उपरांत दोना रौ इण गत सांम्हेळौ व्हियौ के दीखतौ वरत-मान देखतां-देखतां अलोप व्हैगौ अर बीत्योड़ौ नाळग अेक ई फटकारै पाछौ उपपनै झब-झब झमंका भरण लागौ :

...हां, अै इज इम्तिहानां रा दिन हा। सूरज रा उजास में तौ आखी दुनिया रौ हांती-पांती ही, पण उणरी मधरी-मधरी मुळक मे वा दोनां टाळ किणी दूजा रौ सीर नीं हौ। खुदोखुद आपरा चेता रै भेळमभेळ सैं की बिसराय सरोज कड़ियां रळकता केस पूछती सिरै बारणै ऊभी दीसती। अैड़ी पवीत उडीक रा बादळ महल टाळ, नी आणंद रौ कठै ई वासो अर नी सुख री दूजी ठौड़। मोड़ रै नाकै मुड़ता ई प्रफुल्ल री मीट उणरै ठाढै केसां अळूझ-अळूझ जावती।

अेकर थोड़ी-सीक मोड़ौ व्हैगौ। प्रफुल्ल बायरा रै वेग साइकिल बगडावतौ आयौ। सरोज रौ रूं-रूं जांणै फूदियां रै ओळावै उणरै ओळूं-दोळूं चकारा देवण लागौ।

पाखती आवतां ईं वा मीठौ ओळमौ जतावती बूझ्यौ, 'आज मोड़ौ कीकर व्हियौ ?'

प्रफुल्ल मुळक रै मिस कविता उजाळतौ बोल्यौ, 'अेक अैड़ौ ई सभागियौ सपनौ जोवतौ हौ। बिचाळै ग्विडायां पाप लागतौ, जिण सूं...।'

सै जांणतां-बूझतां सरोज अजांण बणती बूझ्यौ, 'अैड़ौ किसौ सपनौ, जकौ म्हारा सूं ई इमाळ व्हैगौ। म्हैं ई सुणूं।'

'सपना फगत जोवण सारू व्है। सुण्यां वांरी मरजाद घटै।'

प्रफुल्ल रा उण पड़ूत्तर मे ई सरोज नै उणरै सपना रौ म्यांनौ साधग्यौ। अर

दोनां री मुळक रै सांम्हेळै सूरज आपरो भाग बधायो। पण आज तो बापड़ा सूरज नै आपरो वैड़ो भाग वधाया पूरो वरस ढळग्यो। कोई किणी नै साप्रत कीं नीं बूझै। नी मोड़ो आवण रो म्यांनो अर नी सपना रो म्यांनो। परपूठ बूझै तो बूझता ई व्हैला, पण तग्तख सुण्यां टाळ वैड़ी मुळक कठै! दीठोड़ै सपनां रा सभागिया समंचार कठै! दोनां रै बिचाळै भरम रो अेक अंड़ो ई भीवगोटो पायरग्यो हो। जिणनै चौड़ै नी करणो ई दोना खातर मगळीक है।

प्रफुल्ल रै अड़ोअड आवतां ई वा माथो निवाय लेती अर प्रफुल्ल उणरै काळै, चीकणै ठाडै केसां आपरो जीवणो हाथ फेर कांई अबोली आसीस देवतो सो वो ई जांणै, पण सरोज नै पूरमपूर विसवास हो के वा उण आसीस रै परचै ई पास व्ही। अर जे पास नी व्है तो कांई, उण पवीत परस रै आणंद रो कोई छेह थोड़ो ई हो!

पण कठै—कठै आज वै काळा, चीकणा, ठाडा केस! अर कठै वो अबोट परस!

घोडा री टापां सलवै सुणीजण लागी ही। टप-टप!

सरोज रै आखै डील अेक सरणाटो सांचरग्यो। कांई प्रफुल्ल आज ऊठतां पाण उण सू मिळण खातर उमायो नी व्हियो व्हैला?

प्रफुल्ल री आंख्यां सांम्ही बीजळी झमंका भरण लागी—कांई आज सरोज उणरी उडीक मे बारणै ऊभी केस नी पूंछ्या व्हैला?

टप-टप पोड़ां री ठोकर जंजाळ तूटग्यो। बीत्योड़ी वातां नै तो घोडा ई नीं न्हावडै। बंध्योड़ा तांगा नै गुडकावतो घोड़ो पाखती आयग्यो हो।

चेता परबारो ई सरोज रो माथो होळै-होळै नीचै निमण लागो। जांणै अतप आभो रग-रूडी धरती सूं गळबाथ भरैला।

प्रफुल्ल री हथाळी रै अेक-अेक फूल सू हजार-हजार फूलां री भमरोळ फूटी। अर दूजै ई छिण उणरो हाथ अजांण ई होळै-होळै ऊचो आभा कानी अधर होग डूको। हथाळी सू विछूट्या अेक-अेक फूल रै ओळावै अनंत अममान री प्रीतड़ली, सुहागण धरती री मांग पूरण लागी।

पण आज उण हाथ रै हेटै किणी रा चीकणा-ठाडा वाळ नीं हा। अर नीं वा कंवळै केसां किणी हाथ रो पवीत परस।

घरर-घरर गुड़कतो तांगो जोड़ै आय धकै निकळग्यो। सरोज रो माथो उणी भात निव्योड़ो हो। प्रफुल्ल पासाण पूतळा री गळाई पगां रै ओळूं दोळूं धरती रै खोळै रमता वां अजर फूलां सांम्ही देखतो रह्यो। फूल-फूल मे सूरज रो अपूर उजास जगामग करतो हो!

ऊसा पाठक रै पूठै चालता श्रीकात नै अेड़ो लखायो, जाणै वो खुदोखुद री काया रो इज लारो करतो व्है। अडोअड़ आवता ई वो अणूती अपणायत रै सुर बोल्यो, 'म्हैं...म्हैं आपनै कीं कैवणी चावू। सुणोला ?'

ऊसा आपरै इज पगां हालती-हालती, ऊडै अंतस री मून वांणी सुणती ही। अणछक आपरै कानां दूजी वांणी रो भणकारो पड्यो तो चिमकनै उठी जोयो। ओ तो श्रीकांत! लगोलग छव बरस सू उणरै साथै भणै। नित आंख्यां रै नाद मांय रो मांय गुणमुणावै। कठै ई ऊसा रो मून ई तो उणरै मूंडै परगट नी व्हियो। नीची धूण करनै वा आपरी छींयां रै आरमपार की हेरण लागी। उणरी छीया तो सदा-यंत वारै इज पड़ै। पण अबार-अबार उणनै की अेड़ो लखायो के श्रीकात री छीया उणरै होयै ठोड-ठोड़ सांचरगी है।

आधी पलकां उठाय वा श्रीकांत री आंख्यां में जोयो। उणरी आंख्यां श्रीकांत रो अेक-अेक आखर सुणण सारू आधती लखाई।

जागती आख्यां रै सपनै वो ऊसा पाठक सूं कित्ती अर कांई-कांई बंतळ करी, जिणरो लेखो वो ई जांणै। पण आज धराधरी तेवड़नै परतख रूबरू मूंडै-मूंड कैवणी चावतो—आज अपारै इम्तियांन रो छेहलो दिन ई निवड़ग्यो। कालै सू ई थें थांरै अर म्हैं म्हारै मतै। इण जमारै पाछो मिळणो व्है के नीं, कुण जाणै! छव बरस साळो रै लटकारै ढळग्या अर की बेतो ई नीं व्हियो। घासता छव बरस अेक

ई क्लास मे साथै भणतां थका कदै ई अैड़ी जोखम नी जाणी के अेक दिन यूं अचाण-चक विछोव भुगतणौ पड़ैला। कॉलेज मे भरती व्हियां रै तीजै दिन ई म्है म्हारै मन-मतै चलायनै आपरै इत्तो नेड़ो आयग्यो के कदै ई आतरा रो अेलम इज नीं व्हियो। म्हे आवगो आपरै अतस समायग्यो अर आप म्हारै हिवड़ै नेगम पसीज-ग्या। म्हे, म्हारी इज छिब री काई ध्यावना करतो ! पण अबार-अबार दो सोळपा रो अेलम व्हैता ई म्हारै रूं-रू चभीका ऊठण लागा। अरे, औ विजोग रौ विखो तौ अजाण ई माथै उलळग्यो। म्हारी अैडी अपळंग सरधा तो नी जांणी ही। साचांणी, आपरै विजोग रो ओळूबो अेक छिण ई म्हारा सू नी सहीजै। म्है तो फगत म्हारी बात ई जांणू, आपरी बात आप जाणो, म्हनै की वेरो नी। साच बूझो तो म्हैं आपरी बात आपरै मूंडै की नी जाणणी चावू। पण इत्ता बरस म्हारी ओटघोड़ी प्रीत नी दरसायां म्हनै इण जमारै कदै ई सुख नी पड़ैला। मन रळाय सुणणी चावै तो सुणावूला, मन माडै सुणणी चावो तो ई सुणावूला। नी सुणाया तो लागै म्हैं जलम-जलम गूगो व्है जावूला।

पण 'सुणौला' रै उपरांत उण सू धकै की नी बोलीज्यो, जाणै बोलणो पातर-ग्यो व्है। नीची घूण करया बोलो-बोलो ऊमा रै आंगै उणरी छीया नै गुमषाम जोवतो रह्यो। जाणै उणरी छीया सू देह री गरज पूरण सारू मून अरदास करतो व्है। आ सांप्रत ऊमा तो सपना री ऊमा सू अेकदम न्यारी निरवाळी है। वा तो कदै ई उण सू आंतरै नी व्ही। पण आ तो सांम्हीसांम अळगी ऊभी। सपनां री ऊमा तो कदै ई श्रीकांत माथै अभरोसो नी करयो। अर नी वो अभरोसा जोग वैड़ो मौको ई दियो। पण आ सांप्रत ऊमा तो भिड़ता ई आळोच-पळोच मे पड़गी। थोड़ी ताळ उपरात उडीक रो धीजो तूटया होठा ई होठां गुणमुणाई, 'की बोलो तो खरी। बिना बोल्यां काई सुणू ?'

श्रीकात नै अबै जावता पूजतो अेलम व्हियो के आ तो हाड़-मांस अर आव-कान याळी जीवती-जागती ऊमा है ! अड़ीअड़ ऊभी उण रै बोलण री बाट उडीकै। तद वो नीठ घांटी ऊंची करनै उणरी आख्यां मे जोयो। जाणै युदोयुद उणरी आख्यां इज ऊमा री आख्या मे घुळगी व्है। होळै-सीक बोल्यो, 'आ तो बिना कह्या, सुणण री बात है। सुण्यां तो सांम्ही वत्तो गबदोळो व्हैला। भरम उपजैला।'

'तो अैड़ी बात सुणावो ई क्यू ? अर बिना कह्या सुणीजै, म्हारै काना री वैड़ी तासीर कोनी।' जाणै ऊमा रै मूंडै कोई दूजी अपछरा बोली व्है, उणनै की अैड़ो ई लखायो। खुद रै आपरा माथै खुद नै ई पतियारो नीं व्हियो।

श्रीकांत री आख्यां अेक दूजो ई चानणो भळकयो। मूंडै बोल दरसायां तो उणरी प्रीत विटळ जावैला। थूक रा अेठवाड़ा माथर अपोट प्रीत नै नी रखै। मुळक रै सांचै होठा वीजळी ढाळनो कैवण लागो, 'तो जावण दो। पण अक...अेक बार याद राखजो के श्रीकांत आपरो अतस उळकावण खातर आयो अर अेक छांट-भासर ई मूंडै नी ओगरयो।'

बस, वा बोलां रै समचै ई वो अपूठो फुरनै ऊमा सू आंतरै जावण दूको—अेक पावडो, दोय पावडा, तीन पावडा ..! युदोयुद भगवान आपरै हाथां वां पावंडां रो लेखो मांडण लागो। चार, पांच, छव, सात...!

आंतरो तर-तर वधतो गियो। क्यूं तो वो चलायनैं की कैंवण सारू पाखती आयो अर क्यूं बिना कह्या मतै ई चलायनैं पाछो वहीर व्हैगो। ऊसा अेकण ठोड़ ऊभी अपूठा श्रीकांत नैं आंतरै जावतां टगमग भाळती रीवी। जाणै आंतरै नी जाय वो उणरै पाखती नैड़ो आवै। तर-तर नैड़ो। मूंडै अेक फूटो आखर दरसाया टाळ ई वो लारै की नी छोड्यो। बिना बोल्या वो सै की दरसाय दियो अर वा बिना भणकारै सै की सुण लियो। काना री अैंड़ी तासीर रो ओ वरदांन तो नवादू इज फळ्यो। नवो अटंग। आदू सूरज री भांत अेक नवो ई थावस! नवो ई सुख अर संतोख! हा, नवो ई सुख अर नवो ई सतोख!

भरम
जाळ

उठी पाडोस में हाजण फातमा रा कूकडा पैली बाग उगेरी अर उठी नांमी कथा-नवीस बाबूराव आपरै सघ्योडै लेफर पैन कथा लिखण बैठो। नाव रातै ई सूवती वेळा सोच लियो—'ढाई आखर!' प्रेम रा ढाई आखर। बाबूराव रै खोळयै ग्यान अर चितन भरपूर ढळयोडा। लिलाड़ मे सात सळ। आख्या ऊंधी तण्योडी। उणियारै ग्यान री सावळी परतम। सांम्ही मेज माथै धरयां काच मे बळै मूंडो जोयो। आपरै प्रतम सूं उणनै अैडी निरवाळी प्रीत व्हैगी के वो मन करतो अैडी रूपाळी छिब उण काच में हेर लेतो। अेक ई उणियारै इत्ता सरूप! यो मोबाळो जकी ई छिब काच में हाजर। फगत उणरै सोषण री जेज। मरयां उपरांत दुनिया कळरैला के वैडा बेजोड कळावंत नै मावळ ओळख्यो कोनी। दुनिया मे जिती ई सिरै वांनगिया अवतरी वांरी साचैली परख तो मरयां पूठै ई व्ही। पूग्योडा ऊंचा मिनख कोई आपरी खातर नीं, दुनिया री खातर जीवै। बाबूराव रै अेक धन बळै जिस्योडी के दुनिया रा तमांम सिरै लेखक आंतरकै दो-तीन घडी रात पछै जागनै आपरो साहित्य सिरजै। अमर साहित्य।

उणरो पैन डाछंट चालू हो। कदास डाम्यां ई मीठ दवै। केई वळा तो वगरो पैन उणरै पेखा-परखारो ई चालतो।

"सोनल सपनां घुळघोड़ी आंख्यां सूं वौ भाळयौ के आखै दिन आपरै हजार हाथां सोना री झोळ उळींच-उळींच किणी रा हाथ पूरमपूर लातरग्या। पण अणूता इचरज री वात के ज्यां हाथा आखै दिन उजास उळीच्यौ, उण अछेही उजास नै उणरा कुळता हाथ अेक छिण मे पाछौ सांवट लियौ। कैड़ी अपरम्पार है इण सूरज री माया। वौ सोचण लागौ के इणरै अलोप व्हियां कीकर पार पड़ै ! पण सोरी-दोरी पार तौ पड़ै इज है। सोरी-दोरी कीकर? उजास जरूरत है तौ अधारौ आणद। अंधारा रा आणद नै उजास नी पूगै। सपनै ई नी पूगै।

"साम्ही-साम्ह अेक घेर-घुमेर रूख तळै अेक कांमणी ऊभी। साख्यात अपछरा! वौ खूटतौ सोवन उजास उणरै चीकणै गाला रौ परस पाय निहाल व्हैगौ। उणरै बस री बात व्है तौ वौ इण अपछरा रा रूप नै ई आपरा उजास रै भेळमभेळ सांवटलै। तद उण कांमणी री कामण वां टगमग निहारतै नैणां कीकर नी धुळतौ ! औ रूप तौ मुड़दा रा मन नै ई मोहै।

"जिण भांत उण सोनल उजास री पैली किरण रौ परस पाय हेमाळा रौ हेम पिघळनै अणगिण नीझरणां खळकतौ बहै, उणी भात इण छेहली किरण रै परचै इण अपछरा रो रूप ई अदीठ नीझरणा झरण लागौ।

"कॉलेज री भणाई सू निवड़यां उपरांत वौ अवस करनै अेकर तौ उडती निजर इण रूपाळी रौ रूप रोजीना निरखै, पण आज तौ जाणै उणरौ रूप झालौ देय किणी नै निवतै। संजोड़ै बुलाय अेकमेख होवण री हेजळी मनवार करै। उणरौ मीट जांणै उण अपछरा रै उणियारै चिपगी व्है। कळा रै इमरत सराबोर उणरी आख्यां नै नेगम विसवास व्हैगौ के आ मून मनवार फगत इण मीट सारू ई है। रूप रा पारखी वैंडा दूजा नैण ई कठै ? उणरी रूड़ी तिसणा रूं-रूं सू अेकठ होय फगत दो कोया घुळगी। आंख्या री जोत री महातम इण सू वत्तो दूजो वळै काई व्है !

"तद आंख्या मीच अतस री हबस नै कीकर धुरकारै ? जोवत खोळयै अैड़ो निरमोही कीकर बणीजै !

"वौ अेक आपथापी कवि है। कळावंत है। रूप रौ पारखी। खोळा हाथ अर खोळा जीव रौ। हृदभात हेताळू अर हेजळौ।

"उणरी पवीत प्रीत माथै आकस राखण रौ किणी सत्ता नै हक-हकूक कोनी।

"वादीली हबस छिण-छिण उणरै हीयै ताखड़ा तोड़ण ढूकी। कवि खुदोखुद नै मतै ई पूरी छूट देदी। उण रूप रै खिचाव उणरा पग उठी बधण लागा। वां पगल्यां रौ परस पाय धरती आपरौ भाग सरायौ। इण परस रै आणद ई वा अपरम्पार बोझ खिवै।

"पाखती आयां पग आपोआप ई थमग्या। अैड़ी मांय लांमण सारू ई तौ हाली री महातम है। गति री सारथकता है। किणी असैंधा मोटयार नै पाखती ऊभौ देख जाणै अपछरा रै आंगै हरियल नीब डरप्यौ व्है। उणरौ पान-पांन पूछतौ सखायौ—क्यूं ? क्यूं ? क्यूं ? अैड़ा रूप री वांणी फगत गळा रै भरोसै इज नी व्है। उणरै आंगै तौ धुदोधुद कुदरत दपूचा लेवै।

"पण वो तो निसंक उणरै नैणां मीट पोय कैवण लागो, 'आपरो नांव तो म्हैं जांणू—हिरण्यगरभा। म्हारो नांव है—देवदास।'

"झूमना नीब री छिवरी-छिवरी जाणै डरपती संकाळू निजर उणरै साम्ही जोयी—काळा-भंवर घूघरिया केस। पळकतो लिलाड़। लांबी नस। डाबर नैण। धवळ बत्तीसी। मावणिया होठ। रूप री पूतळी। अकल रो दरियाव। पांन-पान री हरियाळी जांणै अपछरा रै नैणां घुळगी व्है। पार नी पड़यां उण नै बांमणी रै कोयां रो आसरो लेवणो इज पड़यो। पूजती झिझक थका ई उणरी मीट अळगी नीं व्ही। जांणै इण असैंधा पूतळा नै हमेसां रै वास्तै आपरी ओळूं रै साचै ढाळणी चावै।

"आंख्यां री मूंन वंतल रै उपरांत उणरी वांणी खुली, 'म्हारी पिछांण के म्हैं कवि हूं। पण कवितावां सुणावूं कोनी। बतावूं कोनी। छपावूं कोनी। म्हारै टाळ फगत आपरी खातर कवितावां लिखूं। लिखूं कांई मतै ई लिखीजै। आप आरी प्रेरणा हो। अथाग रूप री धणियांणी। सरूपोत कुण किणनै ओळखै! कूख में पळया बेटा सूं ई नौ महीना उपरांत मा री पिछांण व्है। पण कळा अर रूप रो परसग तो आदू अर अखै है। इणी सनातन रै भरोसै म्हैं आप सूं की मांगणी चावूं। आपरो कूड़ो गुमांन कठै ई उणनै म्हारी जोरामरदी समझण री भूल नी करै।'

"मूंधी अर सरळ दीठ की बखड़ी मे नी झिलै इण खातर वा रूपाळी रमणी मिरग-सा नेतर घुमाय बांकी निजर उणरै सांम्ही माळची। कदास उणरै आगरां री गळाई कवि रै आखें डोल किणी भांत रो दिखावो के स्वांग नीं हो। सैं अबोट अर पालर।

"वा अपछरा ई कोई काची-केळ नी ही। अेम. अे. मे भणती। जोबन रै उफाण रूप री संकाळू लाज उणरै हाथ-बसू ही। बाळचोड़ी लोकीक रा जूना बेबला आंतरै छिटकाय दिया हा। आपरै रूप-जोबन री रांणी ही वा। फूलां रै रंग रांचता भंवरा री तिसणा ई उण सूं अछांनी नी ही। वारी मोठी मणकार रो भेद वा राई-रती पिछांणती। कवि री निरवाळी वातां उणनै नवी तो अवस लागी पण बेजा नी। सादै सुर बोली, 'आप कांई मांगणी चावो। म्हारै पारती व्हियां आळिया-टोळिया नी करूं। कविता री कोई नवी पोथी! कोई उपन्यास! म्हारी लाइब्रेरी साथोनी ईमको करै जैड़ो है।'

"कवि रै होठां गोसा री मुळक सांचरी। 'पोथ्यां कोई बाचण री चीज है! समझ नीं ही जित्तै धणी ई बांची...।'

" 'बांच्यां पछै ई तो बा समझ आई।' वा बिचाळै ओढो देवती बोली।'

" 'आप जैड़ा रूप नै हाल औ भरम है! तो बरग काळै आसरां अधारो फिरोळ्यां ई चांनणो कठै! पण अेड़ा रूप नै तो अेक दिन निरख्यां ई तीन भो रो ग्यांन अेकण साथै उपजै। अबै म्हारी तो फगत अेक इज आफळ है—बांच्योड़ा ग्यान नै...नी नीं...ग्यान रा भरम नै पाछो भूनू कीकर? इणी विसवास रै जोड़ आपरै पाखती आयो अर आप अपूतै कोड पोथ्यां री बात इज छेड़ी!'

" 'पछत छेड़ी कांई? अेकर थारै साथै बात म्हारी टाळवी पोथ्यां नै निजर मारै तो काढ़ो। पछै ओळखो दीसो।'

" 'म्हारी निजर फालतू कोनीं। ग्यांन रै भरम-भरम घणी ई फालतू गमाई। अबै नैणां री दीठ रौ सिरै मरम म्हारी समझ मे आयग्यौ। पोथ्यां लारै धूळ बगाय प्रेम रा ढाई अच्छर बांचण मे ई इणरौ महातम है।'

"प्रेम अर प्रीत। प्रीत अर प्रेम। वै ई बामी अर कुयोड़ा बोल! सुण-सुणनै कांनां तकात ओक्या वैठगी। कवि रै मूडै तौ कीं दूजी रणकार सुणण री आस ही। प्रेम री आंण-दुहाई उलावयां प्रेम थोडो ई करीजै। अै गांजरा प्रेमी तौ काचौ नख लिरीज्यां ई बरकै, वै जरूरत पडयां झड़ लौ ई कांई चढावै! प्रेम रा आखर तौ ढाई इज है, पण जिम्मैवारी हेमाळा सू ई लाठी। छिण-छिण मूडा रै थूक बरतो-ज्योडा प्रेम रौ नांव सुणतां ई उणरै अंतस री सूग आखै उणियारै धूळगी। देवदास नै फगत दो आंख्यां इज नी, भेळमभेळ कवि री जोत मिळी ही। उणनै अजेज हिरणयगरभा रै हीयै चापळघोड़ी सूग री झबको पडग्यौ। तद मन उपरांत दरसावणौ ई पडयौ, 'डरौ मती। म्है आपनै 'पारो' रै नाव बतळावण सारू नी आयौ। म्हारी 'पारो' म्हारा अतम मे है, बारै कोनी।'

"लुगाया रा फद लुगाया जाणै। प्रेम री बात ई उणनै अछेरी लागी अर नटणी ई अछेरौ लाग्यौ, जांणै उणरै रूप-जोबन रा लेवड़ा उतरग्या व्है। जीभ री आट पलटती बोली, 'पण अंतस री पारो सूं बारली गरज नी सरै।'

" 'पण म्हारै वैड़ी गरज व्है तौ! इण गत बायरी गरज सूं आपनै ओक्या नीं व्ही!'

"प्रीत बगत री धणियाप अंगै ई नी मानै। कदैई अेक छिण मे सईका रा सईका याल खा जावै। कदैई अेक छिण बरस सूं ई लाठी अर अळसावणौ लागै। कवि सूं सांम्हैळौ होवण रै पैल-फटकारै ई हिरण्यगरभा नै अैडौ लखायौ, जांणै माहौमाह जुगा जूंनो हेत व्है। कवि री बांणी उणनै निरापेखी अर अबोट लागी। भेळमाळ री सबनेस ई नी। अैडा निरवाळा जीव सू चोज राख्यां तौ लाज री मरजाद ई घटै। मन सू चोज राखीजै तौ इण सू राखीजै। निसक बोली, 'ओक्या री ऊमर आयां, मतै ई ओक्या व्है जावैला। पैला आंचौ क्यूं करू?'

" 'आही तौ समझ री मोटी भूल है। ओक्या ऊमर रै आसरै नी सांवरै। बुद्ध-भगवांन री ऊमर ओक्या व्है जैडी ही? कोई तौ मरै जठा लग नी जलमै अर कोई जलम्यां पैली ई मर जावै। अर कोई बुद्ध-भगवान रै उनमांन मरयां पूठै जीवै!'

" 'बुद्ध-भगवांन...! हुं...वै तौ अेक ई उबरता पडया। समार रौ घारौ आ अवतारां रै मीगै नी चालै। बौद्ध धरम री थापना उपरांत कोई दूजौ बुद्ध जलम्यौ व्है तौ बतावौ!'

" 'जलमै तौ है, पण दुनिया जांणै कोनी।'

" 'नी जांणै तौ खांमी बुद्ध-भगवांन में इज है। अंधारौ विणस्या लोग मतै ई सूरज रा कू कू-पगल्या ओळखलै।' "

आपरी बेजोड बसम रै मोद बाबूराव गुमांन सू बाथ सांम्ही जोयौ। मायत देवदास री रूपाळी छिब पळक-पळक करती दीसी—बाळा-भंवर घुघरिया केस।

लांवी नस। माखणिया होठ। अकल रो दरियाव। उणरै पसाव ई तौ देवदास रै मूंडै इण भांत अकल री बातां उपजै, नीतर उणरी जिनात ई कांई! घानी ताळ तांई वो काच मांयली छिब निरखतो रह्यौ। भलां अैड़ी सूझ अर समझ रा पूतळा माथै हिरण्यगरभा नी रीझै तौ इचरज री बात है। वेद री कांवड़ी सूझ्या पछै ई लळाक-लळाक लुळै त्यूं वो हिरण्यगरभा नै मन करै जठी लुळावैला। उणरी कलम रै आंकस किणी चरित री की पसवाड़ो ई कठै फिरै! अेक टक मीट गडाय वो छिब रा रूप में रंग घोळतो रह्यौ। थोडी ताळ उपरांत उणरै देखतां-देखतां छिब मतै ई पिघळण ढूकी अर अेक दूजो उणियारो आरसी रै पांणी परगट व्हियो। बांकी माग टाळचोडा बाळ। नीं साव छोटा अर नी अणूंता वध्योड़ा। आंख्यां मे समद सारीसो विस्तार। होठां अथाग ग्यान चापळयोड़ी मुळक। सूरत की सांवी। मिनखपणा री अबोट अर बाळी झाईं। सरतचद्र—दुनिया रो मांनीता कथा-नवीस। पण हाल पूजती परख इज कठै व्ही! पोचा देस री निबळाई आगै उणरै नामून री की थाग इज नी लागै। सरतचंद्र . सरतचंद्र...! चेखव रै लवैटवै जिणरी कलम ही। अपळंग देस रै लेखकां नै, कीरत री ऊंची उडाण सपनै सज नीं आवै। अर जोरावर देस रा नाकुछ लेखक ई आसी दुनिया भंवता उडै। वगत-वगत री धणियाप है।

दरपण रै पांणी जड़योड़ा सरत-बाबू उणरी कलम री तूमार जोवता रह्या अर वो पाछो लिखण में मगन व्हैगो।

"हवा किणी री मूठी मे झिलै तौ कवि किणी बखड़ी मे झिलै। वस्तो उकराळन रै मिस हिरण्यगरभा कह्यौ, 'थें कोई सखरी वात करण नै आया हो के आडियां वूझण नै।'

" 'दुनिया में आडियां फगत दो इज है।'

" वै किसी ?'

" 'अेक तौ लुगाई रो रूप अर दूजो उणरो जोवन। ज्यांरो अरथ आज दिन तांई नीं उघड्यो।'

"मन-भावतो पडूत्तर व्हैतां थकां ई वा इणरी कटवी करी, 'आ उगति कोई नवादी कोनीं। बांचतां-बांचतां आंख्यां दूखण आयगी। औ तो फगत मरदां रो छळ-छंद है, जको लुगाई रै रूप-जोवन नै आडी मांनै।'

" 'पण आडी नीं व्हियां लुगाई नै कुण बूझैला? आडी मिटी अर भेद अमोर। अगम भेद रै पगाव ई प्रीत पांगरै। नीतर गाय-घोड़ी, गाडर-बकरी अर लुगाई में फरक ई कांई! आडी है जितै ई लुगाई रै रूप-जोवन री महातम है।'

" 'अैड़ो महातम थां मरदां नै सोहै, म्हांनै नीं पोमावै। म्हारै सुभाव रो भेदो म्हानै ई करण दो, थें बिरथा माथो क्यूं पचावो?'

" 'सांचणो, म्हारो माथो पचावणो थांनै इतो सारो लागै! थें बग-बगनै कैवो तौ ई म्हनै विसवास नीं व्है।'

" 'औ थांरै बिसवास रो दोस है, म्हांरो नीं। थेर समा, थें कांई मांयन नै

आया, आ तो वतावो। कठी री झिकाळ, कठी उछरगी ?'

" 'झिकाळ ! इण सिरै मरम नै आप झिकाळ मांनो तो रावळी मरजी। पण मांगण री छूट व्हिया ई मागणो अणूतो दोरो है। मूडा रै जोर ई सोरै-सास नी मांगीजै।'

" 'पण मांगणो तो मूडा सू ई पड़ैला। थारा गूढारथ यें जांणो, म्हैं तो मांगण नै आई कोनी।'

" 'म्हांरै पाखती है ई काईं, सो किणी नै पूरां। जिणरै पाखती व्है, उण सू ई मांगीजै। मागणो मरद नै छाजै अर देवणो लुगाई नै।'

"वा मोसा री तीख मुळकती गूंझ्यो, 'मांगणो छाजै ? आ ऊंधी वात तो थांरै मूडै ई सुणी।'

" 'हाल म्हारै मूडै सुण्यो ई कांई ? म्हैं कवि हूं। अर कवि री वाणी जका ई आखर प्रगटै, वारो सूरज सू ई वत्तो उजास व्है। वै अंधारा सू वत्ता अथाग व्है। साच मांनो, इण मागणा सू वत्तो की मोद नी अर इण देवणा सू वत्तो की अंजस नीं। बोलो, मांग्यां म्हारी बात अैळी तो नी गमावोला। पैला वचन दो।'

"पैला वचन कोकर देवै ! जबर आंटी पजी। पण दूजै ई छिण सुळझ्योडै सुर निसंक कह्यो, 'जे इत्तो ई विसवास नी है तो मत मागो। म्हैं तो मांगण सारू समचो भेज्यो कोनी। यें मतै चलायनै आया। थांरी दाय पडै सो ई मांगो। देणो नी देणो म्हारी मरजी माथै।'

" 'मन परवारो देवो तो म्हैं कबूल ई नी करू। म्हनै काई मंगतो जाण्यो ?'

" 'म्हैं नी जांणू तो काईं फरक पड़ै ! मांगण वाळा नै आखी दुनिया मंगता रै नांव ई बतळावै।'

" 'आ दुनिया री नादानी है। म्हारी जांण में तो देवण वाळा बिचै मांगण वाळो वत्तो दातार व्है।'

" 'फगत थारै जाण्यां दुनिया रो धाको नी धकै। दुनिया जांणै जको ई अपांनै जांणणो चाहीजै। थारी दातारी थांरै पाखती राखो। मांगणो व्है तो मांगो। म्हैं जावूं। खामो अबेळो व्हैगो।' "

काच मे नवी छिव रै लोभ मन माथै इत्ती ताळ बाबूराव नीठ आंकस राख्यो। लिखतां-लिखतां उणनै माडांणी देखणो पड्यो —अरे, औ तो चेखव, अॅंटन पेवलो-विच चेखव। बेजोड कथावा लिखणिया तो पांच-सातेक लेखक व्हिया ई है, पण कथा रै मीगै जस्या भाखर नै ठोड़ छुडावणियो तो वो अेकल इकडंकी कथा-नवीस ई हो। ठोडी रै ओळूं-दोळूं छोटो-मोक तीखो सत। चस्मा री डाडी डोर लटकती थकी, जिणरै सेडै वो जाणै आखी दुनिया ई टेरली व्है। माथै रा केस-केस री जडां, मिनख री ओळख अर अनुभव सू सराबोर। कद री ऊंचाई रो नी कोई पार, नीं कोई छेड़—तारां सूं ई ऊंचो। मरयां उपरांत ई आखर-आखर मे अमर। मोटा डाक्टर रै जीव दुनिया री आखी कुचमाद अेकठ व्हियोड़ी। अर उणरी वा कुचमाद दुनिया खातर कित्ती गुणदाई है। चेखव ! अॅंटन चेखव। तमाम कथा-नवीसां रो

ई मिटग्यो। पकावट, पकावट आ रीस री रंगत है। उफळतै सुर बोली, 'म्हारै रूप-जोबन री फगत औ इज गाढ़ के थारै अतस री अंधारो वारै लावै ? फगत म्हारा सूं ई थानै अंडी आस बंधी ? आज पैली म्हारी अेड़ी माजनो कुण ई नीं गम्यो। केड़ा ई कवि नै किणी री अपमान करण री छूट तो भगवान ई नी बगसी व्हैला। थैं म्हारो अेडो अपमान क्यूं करयो ? बतावो, काई हक हो थानै। जीवूं जितै थांरो मूडो नी जोवूं। कवि हो तो आपरी गरज सूं हो। म्हनै घरावणो को आवै नी। बोलो, क्यूं, क्यूं करयो थैं म्हारो अपमान ? जबाव दो। म्हैं जबाव सुणणी चावूं।'

" कवि की भूडो नीं मान्यो। होठां आई मुळक नै माहै दबावतो कैवण लाग्यो, 'थांरी आफरो पूरो झड़ै तो जबाव दूं। म्हारा काम अेड़ी रीस रै पूरा हेवा है। जित्ती गाळयां काढणी व्है, काढलो। पण म्हारै वास्तै रीझ अर खीज अेक डाळै है। नी घिन अर प्रीत मे फरक जांणू अर नी धुरकार अर सत्कार मे भेद मांनू। थैं रीस करो तो भलां ई करो। यसोधरा नै ई उण रात कम रीस नीं आई व्हैला। हां, म्हनै ई इण बात रो इचरज कम नी व्है के गौतम नै डोकरो अर मुडदो देख्यां ई वैड़ा छिण सूं साम्हेळो क्यूं व्हियो ? कांई यसोधरा रै रूप-जोबन में वैड़ी गाढ़ नी ही। पण म्हनै थांरै रूप-जोबन री झाईं वो गाढ सुभट निगै आवै।'

" अपछरा री गळो रुंधग्यो। तो ई रोस रै आपांण नीठ बोली, 'कांई म्हारी बात, थैं म्हांरा सूं वत्ती जांणो ?'

" 'हा, जांणू। पण ढब्यां टाळ कीकर सुणीला जद थानै कानां परबारो सुणीजै ई कोनी।'

" 'आ इज तो म्हारी मोटी भूल व्हैगी। थारी उगीनी बातां सुणी जकी ई मोकळी।'

" 'आप-आपरी समझ। पण आज जकी बात थानै भूल निगै आवै, बाहीज कालै थारी सिरै वरदान व्हैला। याद राखजो।'

" 'खूब याद राखूंला।' अपछरा डोढ़ में बोली, 'जीवूं जितै नी भूलूं। अबै थांरी अग्यांन थैं ई रुखाळो। मेवो। ओ थानै ई छाजै।'

" आ बात कैय वा झळ री पूतळी घडी अेक छिण ई नी ढबी। बावै-आवै सांवी बीधां भरती वहीर व्हैगी। उणरी रूम्योड़ो अनूठो जोबन ई कम रुपाळो नीं हो। देवदास सागी ठोड ऊभो ई जोर सूं बोल्यो, 'म्हारो कैणो मांनो, मीतर निजा-वोला।'

" वा बीजळी री गरणाटी सारै मुड़नै जोयो। अणूंतो रोस ई अबोलो रै। बीज री झळ फैंकती कवि रै साम्ही देहनी मीट जोयो।

" कवि हरस मे बावळो होय उछळतो बोल्यो, 'म्हारी मना पूरी व्ही। म्हारी साध फळी। बरसां सूं इणी छिण री उडीक मे हो। आज अचीतो घरै पधी। म्हारी जूंण सारथक व्ही। थांरो रूप-जोबन सारथक व्हियो।'

" किड़कती बीजळी रै उनमान बट खावती अपछरा उणरै देखता-देखता अदीठ व्हैगी। कांई औ इज तो देवदास रै अंतस ओटीज्योड़ो अग्यान नी हो ?

"पण हिरण्यगरभा रै मन री मान-मथाण...!"

आज तौ किणी खांतीला लेखक री आतमा बाबूराव रै खोळचै कोड-मोद सू सरण झेली देसी। सूझ, समझ अर मन सू पग्बारी इण भांत लिखीजैला बाबूराव नै अैड़ी आस नी ही। पण अै बाता-विगता है तौ उणरै अंतस ई रळचोड़ी। लिखावट री लक्ख अर आंट माथै बाबूराव नै जाणै जित्तौ अंजस व्हियौ। अबै टॉलस्टॉय रै सलवै पूगण में कांई जेज! उणरै हीयै टॉलस्टॉय वणण री सीर साचरी। थोडी ताळ निरख्या उपरांत ई उणनै नी तौ वैडो छितरचोडौ खत निगै आयौ अर नी वैड़ौ उणियारौ। कठै भाखर रै आरमपार जोवण वाळी वै अपरवळी आख्यां? कठै वगत नै छेकण वाळी वा आकरी मीट? सानी रै समचै कुदरत में मन-जांणी चाळ चोळ सिरजण वाळौ कठै, कठै वौ आतम-विसवास! अलंघ आंतरै समदा पार वांरी आतमा अठै आवण सारू कदास ओजौ ताकती व्हैला। दूजै ई छिण उणरै अंतस रवी बाबू री सेजौ फूटचौ। पण अकारथ। मसा अगै ई भरै नी पडी। नी वैडो रूपाळौ खत, नी वैडौ चवड़ौ माथौ अर नी वैड़ा गुमानी वाळ। जूझळ रै आगै अेक दूजी ई सूझ उणरै हीयै भळकी। उफ्फ, उणरी भोळप री ई कांई पार है? प्रीत री हीगळू सेजां, जोबन अर रूप री ठोड बूढापौ छाजै भलां! उणरी आंख्यां सांम्ही तौ 'ढाई आखर' रै नायक देवदास री टुळसती छिब दीप-दीप मुळकै ही। काळा-भंवर घूघरिया केस। लाबी नस। मोटी-मोटी सचळी आंख्यां।

अणछक देवदास री छिब सू मीट फोर वौ डावै पसवाड़ै जोयौ। चवड़ै सोनल चोखटै मढचोडी दोनू फोटुवां नेगम भरोसा री आस वाबूराव रै पैन कांनी अेकटक भाळती ही। टॉलस्टॉय अर रवीन्द्रनाथ ठाकुर! हरख अर संतोख री सांस वौ आळस मोड़चौ। अरे, आज सूरज तौ उणरै अजाण ई नीसरग्यौ। उणरै चेता-परधारी ई मधरी उजास अदीठ साती देय आखै कमरै नेगम परपीजग्यौ। नी दवायती मागी अर नी समचौ ई दियौ।

कैडी अजोगती अर इचरज री बात के सूरज रै भळभळातै भाग अंधारौ लिख्योड़ौ अर अंधारा रै काळै-धोळै भाग सूरज रौ अछेही उजास लिख्योडो। हाजण फातमा रा कूकड़ा आपरी बांगा रै मिस दुनिया नै जगावण री आफळ करता हा। जद वारै पोटाया, नवलख तारां जड़ी कांवळ अळगी वगाय सूरज तकात जागै तौ मिनख अर जीव-जिनावर वयू नी जागैला! इण विचार रै समचै ई बाबूराव नै जोर सू धड़धड़ी छूटी, जाणै अबार-अबार ई वौ अगाढ ऊंघ सू जाग्यौ व्है। हळ-फळायौ होय भचकै कुरसी सूं ऊठ्यौ अर बत्ती बुझाई। सूरज रै अलोप व्हियां इण नाकुछ चानणा री ई कित्तौ महातम है, पण उणरै प्रगट व्हियां जांणै-जितौ फा-फीटौ सयावै। सूरज सांम्ही कांई तौ इण नाकुछ चांनणा री ठरकौ अर कांई उणरी जिनात! तौ ई सूरज रै विणस्या आपरी जिमात परवाण औ मिनखां री गरज सारै। ओ खटपटियौ मिनख सूरज रै भरोसै कद रैवणियौ! वौ तौ आपरी गरज आपरै हाथां ई पूरै। पण अबार आ बिरथा वातां सारू बाबूराव नै अेक छिण ई माथौ पचावां नी सरै। कथा नै धकै वधाय अैड़ी अचीनी ठावकी अंत करै के पाठक आक-बाक होय इचरज करण लागै। दुनिया मे मिरै लेखकां री बीज कोई धूटपौ थोड़ो ई है! कथा संपूरण व्हिया टाळ नी तौ मन पड़ै अर नी सांपत सावरै। सरू करतां ई पैन तौ आरै ई चालू व्है जावैला। हदभांत इग्याकारी है।

ई मिटग्यो। पकावट, पकावट आ रीस री रंगत है। उकळतै सुर बोली, 'म्हारै रूप-जोवन री फगत औ इज गाढ़ के थारै अंतस री अंधारो वारै सावै? फगत म्हारा सूं ई थांनै अैड़ी आस बंधी? आज पैली म्हारो अैड़ो माजनो कुण ई नीं गम्यो। कैड़ा ई कवि नै किणी री अपमान करण री छूट तो भगवान ई नी बगसी व्हैला। थें म्हारो अैड़ो अपमान क्यूं करयो? बतावो, कांई हक हो थानै। जीवूं जित्तै थांरो मूंडो नी जोवूं। कवि हो तो आपरी गरज सू हो। म्हनै धरावणो को आवै नीं। बोलो, क्यूं, क्यूं करयो थें म्हारो अपमान? जवाब दो। म्हैं जवाब सुणणी चावूं।'

" कवि वी मूंडो नी मांन्यो। होठा माईं मुळक नै माहं दबावतो कैवण लागो, 'थांरो आफरो पूरो भटै तो जवाब दूं। म्हारा कांन अैड़ी रीस रै पूरा हेवा है। जित्ती गाळयां काढ़णी व्है, काढलो। पण म्हारै वास्तै रीस अर खीज अेक ढाळै है। नी घिन अर प्रीत मे फरक जांणू अर नी धुरकार अर सत्कार मे भेद मानूं। थें रीस करो तो भला ई करो। यसोधरा नै ई उण रात कम रीस नी आई व्हैला। हां, म्हनै ई इण बात री इचरज कम नी व्है के गोतम नै डोकरो अर मुड़दो देख्यां ई अैड़ा छिण सू सांम्हेळो क्यूं व्हियो? काईं यसोधरा रै रूप-जोबन में अैड़ो गाढ़ नी हो। पण म्हनै थारै रूप-जोबन री हाईं यो गाढ़ सुभट निगै आवै।'

" अपछरा री गळो रुधग्यो। तो ई रोस रै आपाण नीठ बोली, 'कांई म्हारी बात, थें म्हारा सू वत्ती जांणो?'

" 'हां, जांणू। पण इब्यां टाळ कोकर सुणीला जद थांनै कांनां परवारो सुणीजै ई कोनी।'

" 'आ इज तो म्हारी मोटी भूल व्हैगी। थांरी उगीनी बातां सुणी जको ई मोकळी।'

" 'आप-आपरी समझ। पण आज जकी बात थांनै भूल निगै आवै, वाहीज काले थांरी मिरै वरदान व्हैला। याद राखजो।'

" 'खूब याद राखूंला।' अपछरा डोढ़ मे बोली, 'जीवूं जित्तै नी भूलू। अबै थारो अग्यांन थें ई रुखाळो। सेवो। औ थांनै ई छाजै।'

" आ बात कैय वा झळ री पूतळी धकै अेक छिण ई नी ढबी। आवै-आवै लांबी वीखा भरती बहीर व्हैगी। उणरो रूम्योड़ो अपूठो जोबन ई कम रूपाळो नी हो। देवदास सागै ठोड ऊभो ई जोर सूं बोल्यो, 'म्हारो कैणो मानो, नीतर पिछता-वोला।'

" वा बीजळी री गरणाटी लारै मुडनै जोयो। अणूतो रोस ई अबोलो व्है। खीज री झळ फेंकती कवि रै साम्ही छेहली मीट जोयो।

" कवि हरख मे बावळो होय उछळतो बोल्यो, 'म्हारी मंसा पूरी व्ही। म्हारी साध फळी। बरसां सूं इणी छिण री उडीक मे हो। आज अचीती भरै पड़ी। म्हारी जूंण सारथक व्ही। थारो रूप-जोबन सारथक व्हियो।'

" किड़कती बीजळी रै उनमान वट खावती अपछरा उणरै देखता-देखता अदीठ व्हैगी। काईं औ इज तो देवदास रै अंतस ओटीज्योड़ो अग्यान नी हो?

"पण हिरण्यगरभा रै मन री घांण-मथाण...!"

आज तो किणी ख्यातीला लेखक री आतमा बाबूराव रै खोळयै कोड-मोद सू सरण झेली देसी। सूझ, समझ अर मन सू परबारी इण भात लिखीजैला बाबूराव नै अैड़ी आस नी ही। पण अै बाता-विगता है तो उणरै अतस ई रळचोड़ी। लिखावट री लक्ब अर आट माथै बाबूराव नै जाणै जित्तो अंजस व्हियो। अवै टॉलस्टॉय रै सलवै पूगण में काई जेज! उणरै हीयै टॉलस्टॉय बणण री सीर सांचरी। थोडी ताळ निरख्या उपरात ई उणनै नी तो वैडो छितरचोडो खत निगै आयो अर नी वैड़ो उणियारो। कठै भाखर रै आरमपार जोवण वाळी वै अपरवळी आंख्यां ? कठै वगत नै छेकण वाळी वा आकरी मीट ? सांनी रै समचै कुदरत में मन-जोगी चाळ चोळ सिरजण वाळो कठै, कठै वो आतम-विसवास ! अलथ आंतरै समदा पार वांरी आतमा अठै आवण सारू कदास ओजो ताकती व्हैला। दूजै ई छिण उणरै अंतस रवी बाबू री सेजो फूटयो। पण अकारथ। मसा अगै ई भरै नी पडी। नी वैडो रूपाळो खत, नी वैडो चवड़ो माथो अर नी वैड़ा गुमानी बाळ। जूझळ रै आगै अेक दूजो ई सूझ उणरै हीयै भळकी। उपफ, उणरी भोळप री ई काई पार है ? प्रीत री हीगळू सेजा, जोबन अर रूप री ठोड़ बूढापो छाजै भला ! उणरी आख्यां साम्ही तो 'ढाई आखर' रै नायक देवदास री हूळसती छिब दीप-दीप मुळकै ही। काळा-भंवर घूघरिया केस। लांबी नस। मोटी-मोटी सचळी आंख्यां।

अणछक देवदास री छिब सूं मीट फोर वो डावै पसवाड़ै जोयो। घवडै सोनल चोखटै मडयोडी दोनू फोटुवा नेगम भरोसा री आस बाबूराव रै पैन कांनी अेकटक भाळती ही। टॉलस्टॉय अर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ! हरख अर संतोस री सांस घो आळस मोड़यो। अरे, आज सूरज तो उणरै अजांण ई नीसरग्यो। उणरै चेता-परबारो ई मधरो उजास अदीठ सातो देय आखै कमरै नेगम परपीजग्यो। नी दवायती मागी अर नी समचो ई दियो।

कैडी अजोगती अर इचरज री बात के सूरज रै भळभळातै भाग अंधारो लिख्योडो अर अधारा रै काळै-धोळै भाग सूरज रो अछेहो उजास लिख्योडो। हाजण फातमा रा कूकडा आपरी बागा रै मिस दुनिया नै जगावण री आफळ करता हा। जद बारै घोदाया, नवलख तारां जडी कावळ अळगी धगाय सूरज तकात जागै तो मिनख अर जीव-जिनावर क्यूं नी जागैला ! इण विचार रै समचै ई बाबूराव मै जोर सू धडधड़ी छूटी, जांणै अबार-अबार ई वो अगाढ ऊंघ सूं जाग्यो व्है। हळ-फळायो होय भचकै कुरसी सूं ऊठयो अर बत्ती बुझाई। सूरज रै अलोप व्हिया इण नाकुछ चानणा रो ई कित्तो महातम है, पण उणरै प्रगट व्हियां जांणै-जित्तो फा-फीटो लखावै। सूरज साम्ही काई तो इण नाकुछ चांनणा रो ठरको अर कांई उणरी जिनात ! तो ई सूरज रै विणस्यां आपरी बिसात परवांण औ मिनखां री गरज सारै। ओ सटपटियो मिनख सूरज रै भरोसै कद रैवणियो ! वो तो आपरी गरज आपरै हाथा ई पूरै। पण अबार औ विरथा बाता सारू बाबूराव नै अेक छिण ई माथो पचायां नी सरै। कथा नै धकै बधाय अैडो अचोतो ठावको अंत करै के पाठक आक-बाक होय इचरज करण लागै। दुनिया में मिरै लेखका री बीज कोई घूटयो घोडो ई है ! कथा संपूरण व्हियां टाळ नी तो अध पड़ै अर नीं सायत सांचरै। सरू करतां ई पैन तो आगै ई चालू व्है जावैला। हदभाव इच्याकारी है।

कदेई कदेई तौ आपरै मतै उणरी सुध-बुध परबारी घालै। पण आज इण कथा साहू वैड़ी छूट नी लेवण दे। पाठकां रौ काळजौ वारै साथ नीं पटकै जित्तै तिरनी पिरथा है। कथा रै आरारां हिरण्यगरभा रै मन रौ घिरोळौ अेड़ो फूटरौ जड़ै के पाठक आपरौ चेतो ई बीसर जावै।

कथा रौ अंत तौ बाबूराव रै गांम्ही दरपण रै उनमांन सुभट हो। झबाझब पळका पाडतो। पण ठमक-ठमक कथा रै गांडै वो आपरी ठौड अेड़ो पवै के बस! कथा रौ उठाव तौ उम्दा व्हियौ अर अंत बिना लिद्यां ई जड़ाव री जात उणरै हीयै मंडघोड़ो। फगत इण अत मग निरांत सू पूगणौ है।

"देवदास हिरण्यगरभा नै छेड़ण खातर याद दिराई के वा उण दिन रीस में याभराभूत होय आंतरै क्यूं ढळी? देवदास नै तौ सिरैपोत ई खरातरी विसवास हो के आज रौ औ दिन वगत-सर आयां ई सरैला।

"लाज रै अबखै भार उणरी पलकां निवगी। होठां ई होठां होळै-सीक गुण-मुणाई, 'मरद अर लुगाई में औ इज तौ आदू अर अनंत भेद है, सो किणी भाव मिटणौ नी चाहीजै। जे औ मरम ई थें नीं जांणो तौ कैंडा कवि हो!'

"हिरण्यगरभा रै गुलाबी गालां कसूंबल झाईं वळै पळगी। उणरौ रूप अछन-अछन करण लागौ। काच री हरियल कचकोळियां पंपोळतो देवदास आपरै अंतस री आवगो हेत गळै छिलावतो बोल्यौ, 'पारो!'

" 'वळै पांतरग्या। म्हारौ नांव हिरण्यगरभा है।'

" 'औ तौ कांम धकाव बतळावण रौ धारी है। पण असली नांव तौ 'पारौ' इज है। जद म्हारौ नांव देवदास है तौ थांरो नांव 'पारौ' टाळ दूजो की नीं व्है सकै। म्हैं तो इणी नांव सूं बतळावूंला।'

" 'थांरी मरजी। अबै किणी बात साहू ओड़ो देवण री भूल नीं करूं। अेकर भूल व्हैगी सो ई मोकळो। साच बतावो, म्हारी भूल रौ पिरासचित व्हैला के नी?'

" 'थें जिणनै भूल मानौ, वौ इज तौ प्रीत रौ सिरै वरदान है। वरदांन रौ कैंडो पिरासचित!'

"तठा उपरांत दो न्यारा-न्यारा सांस अेकमेक होय माहौमाह घुळग्या। चार होठ जुड़या, घटनै दोय व्हैग्या। लाज री गुलाबी झाईं सू पार नी पडी तौ सूरज आपरी आख्यां मीचली। अबै औ अंधारौ जाणै, अंधारै ब्रिवता झबाझब तारा जाणै अर थांरी प्रीत जांणै। सूरज-भगवान सूं इण अछेही प्रीत रौ लेखौ नी राखीजै।"

ढाई आखर प्रेम रा पढ़ै सो पिंडत होय। प्रीत! प्रेम! सबदां रो नसौ चौबारा रै दारू सूं ई इदक आकरौ व्है। बाबूराव गेळीज्योड़ी पाण मुळकतौ थकौ वळै काच मांम्ही जोयौ। हिरण्यगरभा गाढी प्रीत रळी निजर उणनै टमगम निरखै ही। इण कथा रै ओळावै औ इज तौ उणरै अंतस दपटघोड़ो मीठो जञाळ है, जकौ इण जमारै कदै ई साच व्हैणौ नीं। प्रेम-कथावां रै आखरां धोळा-काळा

कित्ता ई करौ, हिरण्यगरभा री छीयां रौ ई परस भरै नीं पड़णो। न्यारा-न्यारा चार होठ सदावत न्यारा आतरै ई आतरै रैवैला। साचाणी वो हिरण्यगरभा सू छानै-मानै अबोट प्रीत करै। पण साप्रत दरसावण जोग नी डोळ है अर नी हीमत ई। वो उणरी काळूटी छीया रै जोड़ै ई नीं ओपै। जद इज तौ अलायदी उडांण भरै। इण कथा रै मिस आ आखरा रै पड़दै उणरै इज अतस री फड़फड़ावण है। ज्यू-त्यू जीव बिलमै बिलमावणो पड़ै। रोटी-बाटी खाया तौ काया रौ पेटियौ पूरीजै पण हिवड़ा रौ भरणो कद भरीजै! परमेस्वर प्रीत करण सारू अँड़ो खोळौ मन दियौ तौ उण सागै वँड़ौ डोळ ई सूपणो हो। आखी जूण माय रौ माय धुकया कीकर पार पड़ैला! दरपण रै भरम कँड़ो ई भोळो मन कठा लग पोखीजै!

इणी आळोच-पळोच मे बाबूराव आपरै केसा आगळिया पजाय दरपण मे देवदास रौ उणियारो कोड सू निरखतौ रह्यो। पण काळै मंवर चीकणै केसां रौ परस अँड़ो अळखावणो कीकर? औ तौ निपट लुखधुको अर लूखौ परस! आगळियां चुभतो थको। विस्वादो अर अलूणो। आख्या टमकार भाळचो तौ देवदास री ठोड़ उणरौ ई प्रतम जाणै उणनै चिगावै। केसा रै मिस, माथै जाणै घास ऊगो। काईं सुळझावै! न्यावेक माय बैठोड़ो छोटो-सीक लिलाड़। कोडिया सू ई माड़ी दो आख्या। फीडो नाक, ऊपर कानी लुळचोड़ो। गत-वायरा होठ। गाल पिचक्योड़ा। फूठरापा रै नाव फगत बत्तोसी, जाणै भूल सू किणी दूजा री बैठायोड़ी व्है। कद ठीकोठोक, नी डीगो अर नी ठिगणो। डोळ री इण धवक रै आकस हिरण्यगरभा सू मिळण रौ जोह कठा सू लावै? इणी खातर आपरै हाथां सिरज्योड़ी घणकारी कथावा मे यो काया रा डोळ विचै प्रीत रा गाढ नै घणो ऊचौ मानै। जद उणनै आपरै जाया आखरा माथै ई पतियारौ कोनी तौ दूजो कुण वारी पत पाळैला। इण भांत दोवड़ी सीचण सूं तौ लेखक री मरजाद विटळै। सबद रौ आपाण छीजै। कांमण तूटै। हीमत करनै यो आज दिन ताईं आपरी प्रीत रौ तुमार क्यू नी जोयो? पतवाण्या टाळ मतै ई छाण काढ़ लियो। परतख दरसायां ई तौ प्रीत रौ पसराव व्है। जबर भूल कीवी। पण हाल ई की अबेळो नी व्हियो। जाग्यो जणा ई जांझरको। इण कथा रै आखर दर आखर उणरौ आवगो अतस रम्योड़ो है। वो दस-बीस कै पचास वळा नी, हजार वळा हिरण्यगरभा सू मनाग्याना आ इज वंतळ कीवी। लिख्या इण उकरास रौ सोय व्ही। प्रीत रै हदभात आपाण थका डरण री जरूरत! परतख साम्हेळै आ री आ वंतळ करचा आपै ई कथा रै अत रौ निवेड़ो व्है जावेला। हा, साचैलो अंत अड़पां इण कथा रै आखरा चार चाद भिळ जावैला।

तो आज उणरी प्रीत अर कळा री परख व्है जाणी है। अेक अचीती हूस माय री मांय उणनै पापरती सताई। रूप अर डोळ विचै आदमी रै गुणा रो महातम हजार गुणा वत्तो व्है। उणरी जोड़ रा कथा-नवीस देस मे किताक है! आज नी तौ काले, नीवर मरघा उपरात अेक दिहाड़ै आखो देस उणनै सुरैला। उणरा नांव माथै मोद करैला। कोरा मोरा नामून सू काईं व्है! असली मुदार तौ प्रतिभा अर कळा सू अँडीजै। दरपण परबारो ई यो आपरा डोळ माथै रीझण लागो। पण जेज करचां आयरां री हेटी लागै। साचीणी दह विचै आखर घणा अमोलक व्है।

दो-तीन दिनां सू यो हाथ-पग अर मूंडो घोय कॉलेज जावतो, पण आज सावण

रगड़-रगड़ धावू-धप्प सिनांन करयो। सूधी केसां अेकण सागी तिवणो तेल चोपड़यो। मूंडा रै क्रीम लगावती वेळा पिचक्योड़ै गालां सारू थोड़ो-घणो तो हबको पड़ियो इज, पण दूजै ई छिण भोळो मन मतै ई विलमीजग्यो कै मिनख री छैहली परख तो गुणां लारै इज व्है। नीतर विडरूप चाणक्य नै आज दिन ताईं कुण याद राखतो! बापड़ो रूप तो अकल आगै लटका करै।

गाधी जगतां खातर सभाळ राख्योड़ी धोती सुघराई सूं पैरी। माथै वंडो ई झीणै पोत रो झब्बो। घुली लाग री गुमांनी पल्लो खूंजियै खसोल्यो। तेल रम्योड़ी देसी पगरखिया मे कथा नवीस रै चरणां आसरो मिळयो। सेवट री बाजी चारेक मोटी-मोटी पांप्या लास मे दबाय वहीर व्हियो जणा वै खासो-भलो पातरग्यो कै वो कुण है—बाबूराव कै देवदास!

जागता सपना री ऊंची उडांण मे मगन खुलो पंन अबै जेब तालकै करयोड़ो हो। जेब मे छेक निब बारै निकळग्यो। कथा तो आपरी ठौड़ अधूरी पड़ी ही, पण सिरै कथा-नवीस रो पेन भला कीकर सचळियो रैवतो। बाबूराव रै अजाण ई वो आपरै काम रूपोड़ो हो।

कॉलज रै मोड़ सूं पैला टळ परो नै वो पिडतजी री दुकान पूगो। नोट झिलावतां आदेस करयो, 'पिडतजी, दो मीठा पांन। सादा।'

पिडतजी नै ई इचरज कम नी व्हियो। वै भलो भात जाणता कै बाबूराव पान नीं खावै। मित-साथी मनवार कर-कर हार थाक्या पण बाबूराव पान सारू मूंडो नीं विटळायो। सोना री पतळी लड़ नै पंपोळता पिडतजी बूझ्यो, 'हजूर, ओ पान रो चस्को कद सूं?'

बाबूराव ई मुळकनै पडूत्तर दियो, 'चस्का रो काई, करयो अर व्हियो। थे वेगा झिलावो जको बात करो।'

दोनूं गलाफड़ा मे पान ठूस वो कालेज री सड़क सपनां री पोट बाधतो वहीर व्हैगो। पगा री चाल आज निरवाळी इज ही। अतस री अदीठ सुन्याड जाणै हजार सूवटा री टिव-टिव सुणीजी। पाखा टाळ ई वो कुरजा री खोड़ खुड़ावण लागो। पाचूं इदरिया री जाणै तासीर ई बदळगी व्है। नवी किलोळां अर नवो ई छोळा। रूं-रूं मे जांणै फूदिया भरणाटै भवती व्है।

हिरण्यगरभा! हिरण्यगरभा! काई प्रेम रो दूजो नाव इज तो भगवान नी है। नीतर उणरै पगा अंडी समझ री रेसो कीकर घुळतो! जिण सड़क रै नाकै हिरण्यगरभा तागो ढाब नित ढबै, उणरा पग मतै ई उण दिस मुड़ग्या। पावडै, पावडै इदर लोक रो सुख रड़वडतो हो।

टप-टप घोड़ा री सैंधी टापा सुणीजी। काना जांणै अणहद नाद रस-बसग्यो। सपना रो रथ साप्रत दठाळो दियो तो ई उण सूं उठी भाळीज्यो कोनी, जाणै गाबड़ अर पलका अेकण ठौड़ चिपगी व्है। पण उणरी प्रीत फगत आख्या री जोत रै आसरै इज नी ही। रूं-रूं रै सधीकै अलेखूं आख्या जड़गी। पण लिलाड खुड़कै री आख्यां जको गसको दीस्यो तो उणरा धै छिलग्या। अरे! चांकणी पगरखियां तो रजी मे भखभूर व्हैगी, जाणे वा रेत पगरखिया री ठौड़ उणरै काळजै रळ-थळीजी व्है। खूंजियै खुस्योड़ा पल्लो काढ झटोझट रेत साफ कीवी जणा उणरो

जीव ठांणे आयो।

हिरण्यगरभा हमेसां री ठोड़ नीव तळै ऊभगी अर घोड़े बंध्योड़ो तांगो टापा रै भणकारै पाछो वहीर व्हैगो।

हाथा लिख्योड़ा आखरां रो जोह बाबूराव नै माडै धकावतो हो। चार-पांच वळा वाच्योड़ी कथा रा सवाद उणनै आधा-दूदा याद व्हैगा हा। वांनै मन ई मन घोखतो नीठ उणरै पाखती पूगो।

हिरण्यगरभा बाबूराव रो डोळ अर नवादू वणाव देख सूखी निजर सूं अेकर जोयो। कदास उण निजर मे थोड़ी-घणी ओयमा ई व्हैला, पण कथा-नवीस री आंख्यां की वेरो नी व्हियो। वा निजर उठाय देख्यो तो खरो ! आ किसी कम मेहर है !

आखरां री ठोड जांणे बाबूराव री काळजो कंठां पजग्यो व्है। होठ मतै ई फरूकै पण आखर बारै नी छिटकै। हाथां सिरज्योड़ा सवाद अठी-उठी अेक-दूजा मे अळूझग्या। सांम्हा ऊभा अड़वा री आ रगत देखी तो वा मुळक दबाय होळै-सीक बूझ्यो, 'फरमावो, की काम है म्हारा सू ?'

ओह, अपछरा पूछ तो करी। धुड़तै आपांण की याग लाग्यो। अेक-आध संवाद बखड़ी में झिल्यो, 'आपरो...आपरो नांव तो म्हैं जांणू—हिरण...हिरण...। म्हारो नांव...।'

'आपरो नांव म्हैं जांणू।'

आं वोलां रै कांमण बाबूराव रो जांणै काया-कळर इज व्हैगो। हरख रै हिलोळै इचरज सूं बूझ्यो, 'आप म्हारो नांव जांणो ?'

'आपरो नांव कुण नी जाणै ?'

बाबूराव तो चकन-बकन व्हैगो। हेप-हेंप में इत्ता बरस अेळा गमाया ! कांई जाण्यो अर कांई अचीतो वरदान फळयो। पैला हावगाव रै गब्दोळै जीभ तावळ नीं उपली, अबार हदभांत हरख मे आपो बिसरगी। अटकतां-अटकतां धकै नीठ वोलीज्यो, 'म्हारी पिछांण...के म्हैं कथा-खईम...मतयल के अेक...अेक कळा-मार हूं। आ...आ...आपरी ओळख के आप अधरात...अधरात...स...समंदर...नी नी, सुन्दर हो।'

तीन-चारेक छोटी-मोटी चूक व्हैगी। कथा-नवीस री ठोड कथा-खईस, मतलब री ठोड़ मतबल, कळाकार री ठोड़ कळा-मार अर हदभांत री ठोड़ अधरात निकळग्यो। बाबोजी अपळ-गपळ के बेटा भावना सफळ। बात तो भावना री है। सबद तो फगत जीभ सू उछळ्यो अेंठवाड़ो है।

हिरण्यगरभा सू मिळण खातर बीसूं विचारयो रांचै। की न की मिस लेय घरै आवण रो उकरास लगावै। वा सै समझै तो ई वीं नी दरसावै। जिणरो जेड़ो माजनो व्है, उणनै उणी भांत सलटावै। सगळा ई आप-आपरै भरम डबोड़ा। उणरी गत वा इज जांणै के दुनिया-गिनिया सारा जांणै, चांदणी जाणै के रात रो अंधारो जाणै। पण सूरज रै उजास किणी नै की काढ़नै नीं देवै। आज ओ रमेकड़ो जबर हाथै लागो। थाबी भरण रो ई जरूरत कोनीं। मांनी रै समचै नाचैला। स्वाग करती बूझ्यो, 'साथाणी, म्हैं आपरी निजर मे रूपाळी हूं ? आज दिन तांई इण ई

म्हनै ओ भेद नीं बतायो।'

'थैं सूमता थका ई आंधा हो। पण म्हैं आंधो व्हैतो तो ई आपरो रूप म्हारा सूं अछांनो नी रैवतो। ओ रूप बारडी आख्यां रै भरोसै नी दीपै।'

'आपरो गुण मांनूं जितो ई थोडो है। पण म्हारा रूप खातर आप नोज आंधा व्हो। दुनिया नै आप सूं घणी-घणी आस है।'

बाबूराव नैं विसवास ई नी व्हियो के वो साचमाच री हिरण्यगरभा रै मूंडै... अर अैड़ा बोल सुणै। कैड़ा ई सपना नैं अैड़ा साच आगै निवणो पड़ै। मूंडो ढेरयां आक-बाक उणरै साम्ही चितबगिया री गळाई जोवतो रह्यो। उणनै अंगै ई इण बात रो चेतो नी हो के ढोली भूंफाड़ सूं झरती पीक झब्बा रै खूजियै अेकठ होवण लागी। सेफर पैन री लीली स्याही रो रंग बैंगणी के किरमिची होवण ढूको। वा नीठ आपरी हंसी डाबी। बोल्यां टाळ आ चाटीली हंसी नी खीलीजै। आगळी सूं सानी करती बोली, 'आपरै मूंडै लाळां झड़ै।'

लोगां रै सपनां रो छांण काढ़णियो कथा-नवीस इण सुभट सांनी मे ई नी समझ्यो। मोदीजतो थको कैवण लागो, 'मूंडा बिचै ई म्हारै पैन रा आखर घणा अमोलक है। मोत्यां सूं ई मूंघा। म्हैं आज झांझरकै ई अेक बात आधी छिटकायनै आयो। आप सूं मिळयां उपरांत ई वा संपूरण व्हैला। अेकर म्हारै आळै पधार मुलायजो तो फरमावो।' वो बळै बाको फाड उणरै साम्ही जोवण लागो। अबकी पीक रो रेलो पैला सूं ई सवायो हो।

वा मुळकती थकी बोली, 'बिना मुलायजै ई उणरो बानगी साम्ही दीसै।'

'जरूर दीसती व्हैला। आपनै नी दीसैला तो किणनै दीसैला? आप म्हारी प्रेरणा हो। म्हारी मा हो।'

अबकी वा झूठो रीस रो स्वांग भरती कह्यो, 'खबरदार! म्हैं तो हाल कंवारी हूं अर थें म्हनै मा बणावो!'

कळाकार री हूंस रै जांणै थापी लागी, 'मरियम ई तो कंवारी ही!'

वा मूंडो मस्कोर कह्यो, 'म्हनै मरियम नी बणणो। थारी मरियम नै सावळ संभाळनै राखो। वा दळै।'

अबकी बाबूराव मोसा री तीख सुभट समझग्यो। पीक री रातोड देखता पांण उणरो मूंडो काळो-मिट्ट पड़ग्यो। हळफळायै हाथ झठ धोती रो पल्लो खांच दोय-तीन वळा मूंडो पूछ्यो। पीक रै पसवाड़ै पगरखिया री काळस पुतगी।

उफणती हंसी रै भेळमभेळ हिरण्यगरभा री खीज रो ई पार नी हो। कागली चांद मारू झापळिया भरै तो खुदोखुद चाद मे इज खोट व्हैला। जरूर खोट व्हैला। नीतर कागला री अैड़ी निसरड़ाई के वो चांद रा रूप सारू झाव-झाव तरळा तोड़ै। साचाणी, आज तो इण सिरै कथा-नवीस रै रांच्या उणरै रूप-जोबन रो मठ इज मरग्यो। जे उणरै रूप-जोबन रो जथाजोग तप व्हैतो तो इणरी अैडी हीमत व्हैती भलां! पण आज रमेकड़ो हाथै लाग्यो तो रम्या ई सरैला। अमाठ हंसी अर खीज नै वा असळूद रै मिस कीकर ई माडै टाळी। उणरी झेंप मिटावण खातर बोली, 'हो तो आप साचांणी मोटा कथा-नवीस अर मोटा कळाकार! आ नाकुछ छोटी बाता रो ध्यान ई नी राखो। राखणो ई नी चाहीजै। आपरी मोठ-मरजाद रा तो

मपीणा ई न्यारा है।'

बाबूराव री फड़की खासो-भलो ताब्रै आयग्यो। अधूरी कथा री घ्यांन आवतां ई वो छूटचोड़ी बात नै तुरत सांधी। 'हा, तौ आप हद-भांत रूप री धणियाणी हो। म्है कळाकार हूं। मोटो-छोटो तो आप जांणो। पण रूप अर कळा री मेळ तो आदू अर अखँ है। क्यूं, है के नी ?'

'आप फरमावो तौ जरूर व्हैला।'

'विसवास करो, साचा कळावत रै मूडै सपनै ई झूठी बात नी निकळै। जे भूल सू निकळै तो वा साच बण जावै।'

'आ बात म्हनै ठा नी ही। आज ई आपरै मूडै सुणी।'

कथा-नवीस री पूजतो होड़ो खुलग्यो। पण अेकण सागै अणगिण अड़यड़ती वाता नै अेकल जीभ सू कीकर दरसावै ! तो ई निरात सू धकै कैवण लागो, 'अेक छोटी-सीक आस करनै आपरै पाखती आयो।'

'म्हारा बडभाग के म्हैं आपरी आस पूरण जोग हूं। आपरी छोटी-मोटी कैडी ई आस व्हैला, म्हारै खपतां पार पटकूला। आपनै नटियां सरै भलां।'

मथारै चढता सूरज साम्ही बाबूराव री निजर अटकी तो उणरी जोह बध्यो। हीयै भरम री रेसो साचरण लागो के ओ उजास उणरी प्रतिभा री इज है। नीतर हिरण्यगरभा रै कंठा अेड़ा बोल नीसरता भलां ! कूट-कूट में उणरै हरख री बायरो झोला खावण लागो। मसा दरसावण री अचीतो टांणो सजग्यो।

'अेक छिण खातर, फगत अेक छिण खातर आपरी मसा सू म्हैं आपरो रूप निरखणो चावू। आपरा रूप री इज वो गाढ है, जिणरै कामण म्हारै अंतस दटचोडो अग्यान वारै आय अलोप व्है जावैला।'

कठपूतळी रा लाग हिरण्यगरभा री बखडी मे हा। अेक ऊंडो निस्कारो न्हाकती बोली, 'बस... म्हैं तो आखी ऊमर री आस जांणो ही, पण थे तो अेक छिण उपरात ई छिटकावणो चावो।'

बाबूराव नै लखायो के ओ नीब, आ धरती, ओ गिगन उणरै विराट-रूप री इज प्रतम है। झरतो राफा बुद्ध-भगवांन री खोड घुडावतो ठीमर सुर मे बोल्यो, 'आखी ऊमर री डीगरी किणी सिरै कळावंत रै गळै नी खटै। म्हारी अग्यांन लोपण सारू अेक छिण ई उबरतो पड़घो। आपरै रूप-जोबन री परचो आप नी जांणो, म्हैं जाणू। फगत अेक छिण री दवायती चाहीजै।

'आप नी जाणो तो दूजो कुण जाणैला। आप तो सरब-ग्यानी हो। म्हारा बड़-भाग के आप म्हनै इण जोग मानी। आपरै आदेस री कांण तो राखणी इज है, उण पैला अेक वात बूझू ?'

'अेक छोड दस वाता बूझो तो ई बतावूला। आपरी बात टाळण री जोखम जांणू। नीतर आवगो अग्यांन कीकर विणसैला ? फरमावो, अबै अेक छिण रो ई अबेळो नीं खटै।'

'हां, अबै तो म्हारै सारू ई अेक-अेक छिण भार व्हैगो। बाई रूप निरखण सारू सिरै कळावत टाळ, किणो दूजा रो हक-हकूक कोनीं ?'

'क्यूं कोनी ? ओ हक तो सै मिनखां नै है।'

'तद इण हक सूं फगत म्हनैं ई क्यूं टाळी ? आप म्हारो रूप निरखौ, मरजी आवै उत्ती ताळ निरखौ, जित्तै म्हैं आंख्यां मींच्योड़ी राखूंला।'

अर साचांणी, उणरी आंख्यां मींचीजणा रै समचै ई सिरै कथानवीस रै माथा मे भचको ऊठ्यो। अलपां री उडांण भरतो हरख दूजै ई छिण साव ढोळै वैठग्यो। पण अग्यांन रो छिन्योक रैगो हाल उणरै अंतस चापळयोड़ो हो। समझ्या उपरांत ई वो नीं समझणो चावतो। अैड़ा गाच नै समझ्यां सरै भला ! खरावण रै थपोरै अजांण ई हाळै-सीक दपूचो लियो, 'क्यूं ?'

'सांप्रत आंख्यां किणी रो त्रिटक्ट डोळ निरखण रो डंड म्हैं क्यूं भुगतू ?'

हळाहळ विस री अैड़ी पोटळी तो काळिंदर रै दांतां ई नीं व्हैती व्हैला। हसणा रै समचै ई गैळीजग्यो। आख्या अंधारी आवण लागी। हरियल नींव री ठाडी छाव घू-घू मिळगणी लखाई। भंवळ री गरणाटी हेटै थरकीजण वाळो इज हो के रूप री धणियाणी मुळकती थकी भुळावण दी, 'नींव रो गोड अपड़लौ, नीतर रावळो ग्यांन, नीं नी प्रेम धूल चाटतो निगै आवैला।'

बिछडता रूप-जोबन री भुळावण कथा-नवीस रै भरै पडी। अंधारी थका ई उणनै नीव रै गोड रो न्यावैक झबको पड़ग्यो। दोनूं हाथ पसार पूरी बाथ भरली। पोच्यां तो धूळ-भेळी व्हैणी इज ही। वगत आयां डील रा गाभा ई वैरी बण जावै। झब्बो सिरक्यां पोटी कळायां छूनगी। दब्योड़ै लिलाड़, आका-वांका ढाई-आखर, प्रेम रा ढाई आखर ई उघड़ग्या।

सिरै कथा-नवीस रो अग्यांन लोप्यो तो अवस, पण उणरी मंसा परवारी। पैन फटकारै, सरूपोत ई उण वेजोड़ कथा रो अंत व्हैगो।

आठ दिनां उपरांत मां री बरसती आंख्यां नै आज नीठ-नीठ झपकी आयी। झपकी काईं ही--चेचेतो, थाकेलो अर लाचारी। मूरछागत नींद में ई मा रा बिलखा-बिलखा दुमना होठ घड़ी-घड़ी मुळक सूं संचन्नण व्है जाता। जागती जूण गम्योड़ा गीगला नै मां नींद रै सपनै पाछो खोळै रमावती ही।

अणछक फाक अर बाछोड़ रै धड़ूके बारी रा भिड़घोड़ा फड़का फटाक करता रा खुलग्या। बीजळी किड़की। मा रै कमरै अेकर सळावो नाचनै अलोप व्हैगो। मां रै होठां वळै मुळक नाची, अबोट अर पवीत। जकी फगत मां रै होठां ई छाजै।

बीजळी वळै अेक लांबो ई लांबो सळावो भरयो। मा रै कमरै वळै मधरी-मधरी उजास नाच्यो। बायरा री फाक रै फटकारै मां रै मुळकतै उणियारै बोछाड़ री छावको लाग्यो। बैरण नींद कित्ती दोरी आई अर छिण में बिलायगी। हळफळाय मचकै बैठी व्ही। सपना मे हाथै लाग्योड़ो गीगलो वळै गमग्यो। जीवता गीगला री मौत सूं ई ओ धामलो मोटो हो। अबै माथो उछळणा मे की लांमो नी। कदास कमरा रै अंधारै घापळपोडो व्है! हावगाब धूजतै हाथ खटको दबायो।

डरपती आंख्यां कमरा मे च्यारू मेर भाळयो। मुन्नो व्है तो दीसै! मिळमतो उजास खाऊं-खाऊं उणरै डील बटका भरण लागो। बिछावणै मीट बटकी—सोली मेम ऊंधी पड़ी ही। मुन्नो अेक छिण लारू ई जिणनै आगी नी करतो। सूवती वेळा ई पास मे चिप्योड़ी रासतो।

रांढो रोवणो

फिलोसॉफी में पी. एच. डी. करघा उपरांत ई म्हैं हाल तांई संसद रो पच हूं। है नीं इचरज री बात ! राजनीति रो ओ छोगो माडै ई बाप रै नामूंन अर जात रै थोक माथै बंधग्यो, सो अजै बंध्योडो इज है। जाणूं के राजनेता री बात रो आज कुण ई पतियारो नी करै। साच बोल्यां नैं बरस बीतग्या पण तो ई साच बोलणो बीसरघा तो कोनी। साच बोलणो चावां तो गळै अटकै थोड़ो ई है ! पण आज साच सुणणो ई कुण चावै ? साच सुणण वाळा कान कोनी तो साच बोलण वाळा गळा ई कोनीं।

ढबो ढबो, पूरी बात सुण्या टाळ बिचाळै ओडो मत दो। म्हैं जाणूं के पैला बोलीजै, पछै सुणीजै। साच भाखण जोग गळा रुंधग्या तो लोग-बागा रा कान साच सुणण रै हेवा कठै व्हिया ! साचांणी, इण सूगली राजनीति सूं अबै म्हैं काठो धापग्यो हूं। फगत ठिरड्यो ठिरडीजूं। मन तो घणो ई तूटै के माडै बध्या इण छोगा नैं आपरी फबती ठोड उखरडी माथै वगाय दूं, पण ओळघाकडा हाथ कह्यो ई नी मांनै। म्हैं लाख बध-बधनैं बरकूं के म्हारा हाथ ई म्हारो कह्यो नी करै तो कुण इणनैं साच मानैंला। आज साच री साख पेठ ई कठै ? देखतां-देखता सूरज रो उजास ढळग्यो, अबै उणनैं सोधणो बिरथा है। अपारो देस छिटकाय वो सात समदा पार आथूणो अलोप व्हैगो। पछै विधान-सभा अर संसद रै राजपथा इणरा खोज हेरण मे काइं सार ! म्हारै पग तो है, घणा ई कवळा अर फूठरा-फूठरा, पण वांरा खोज नी उघड़ै।

आज मुरादाबाद, जमसेदपुर, अहमदाबाद, अलीगढ, विहारसरीफ अर हैदराबाद रै रोळां मार्थं संसद मे भिकाळ व्हैला। रगत रै रेलां सारू घणो ई थूक उछळैला। पण बावडी रौ नांव गुलसप्पा ! गोरा तो न्हाय छूटा, पण वारै काळा-करतबां री नीव ससद-भवन री नीव सू ईं घणी ऊंडी अर नेगम है। देस रा फाडा व्हियां ईं धांन सळियौ कठै व्हियौ ? पोसणं हाल किरकिर रळचोड़ी। मवै रै कवै कड-मड करता जावौ अर बिना चिगळिया सोरो-दोरो गिटता जावौ। स्याद नी आवै तो कांई, भूख तो भागै ई है।

अेक नाकुछ सवाल म्हारै हीयै खदबदै के गाय अर सूअर री उत्तन ऊठयां अै रोळा मिटैला के नी ? देस मे सांयत वापरैला के नी ? जे वळै ई माहोमाह कटण-बढ़ण सारू मिस लाधग्यो तो ! आ रोळा री बाळण-जोगड़ी जड़ कठै है ? इणरो पापो कटयां ईं अै आक-धतूरा पांगरता ढबैला !

तो ई काळूटी सडका रळया इण रगत रा मायना खातर आज वळै संसद रा पगोत्या चढ्या सरसी। अेक पगोतियौ। दूजो पगोतियौ। तीजो पगोतियौ......! अणछक आख्या मीच्या ईं अदीठ नी व्हे जैड़ो जूनी ओळू रौ चितराम सुभट उघड़तौ गियौ, उघड़तौ ई गियौ।

आज तो साठी ऊमर मे फगत चार बरस ई घटै। पण चौतीस बरसां पैली म्हैं साचमाच बाईस बरस रो इज हो। म्हैं अर म्हारो विवेक दोनू भर-मोटयार-पणै हा। अेक-मेख। कोरा-मोरा नामूंन रै धड़बै पी. एच. डी. नी करणा चावतो। साच रा झमंका सारू म्हारी आंख्यां बुळती। पण आज तो औ विसवास ई ढोळै बैठग्यौ के मिनखां री दुनिया मे साच-कूड़ नाव रा सीगा व्हे के नी ! जे टंवळी साच वा आडी-अवळी पगडंडी नी छिटकावतो तो म्हारै हीयै मिनख-जमारा लेखै आज जैड़ो पिछतावो भवै ई नी व्हैतो। चौतीस बरसां रो औ घाटो, बापड़ी माया अर जस रै पथापै कद पूरीजै ! कीकर पूरीजै ! अै चौतीस बरस पाछा जुगानजुग नी बावड़ै। अैड़ी कांईं ठा ही के अेकर खूटया मिनख-जमारो दूजी वळा हाथै नी लागै।

जे उण दिन छिन्योक ई बेरो व्हैतो के छिण-घडी करतां-करतां यू बरस रा बरस उथप जावैला तो म्हैं मरघां ईं इण कुमारग नी ढळनो। पण बडभागी बापू रै कामण म्हैं अजाण ई राजनीति रै मारग मुडग्यो। मजल तो अेक ई है, मारग न्यारा न्यारा व्हियां तो कांईं ! पण ठेठ पूग्यां सोध व्ही के आ तो मजल ई बीजी। अबै वो गम्योड़ो मारग कद सोधीजै ? सोधण री सरधा ई कठै ? डेरो व्हैगो जठै व्हैगो। अबै तो डेरा नै ई मजल मान्यां सरसी। पण वा दिनां तो फगत अदेह मारग री बायड़ ही। पगां गाढ़ ही। दौड़ण री हूंस ही।

जसवंत कॉलिज जोधपुर सू अेम. अे. करयां उपरांत प्रोफेसर बेसकर री बदळी अलवर व्ही तो म्हैं वांरो टाळवो चेलो पी. एच. डी. करण खातर उठै ई पूगग्यो।

माधरां रै बिचाळै अलवर री बसद पैली दफा देखी तो म्हनै अैडो लखायो जांणै औ नगर डूंगरां रै डाळै बस्योड़ो। उन्हाळै री रुत जोधपुर ई बळती लूवा रा घेसाड़ कम नी बाजै, पण अलवर री तपत तो इण गत वेजां के जांणै डील रै भोभर चेंटयो व्है। बळबळती लाय रै परस उघाड़ी चाम फाला उपड़ जावै तो ई

पी. एच. डी. रै कोड अलवर री बळत सूं कांनो लेय न्हाटो कोनीं।

अेकर कॉलिज जावती वेळा अंडो रासो व्हियो के कदास मरघा उपरात ई नी भूलीजै।

अेक नैन्हो टाबर। ऊमर रै मापै नैन्हो नी, कम सूं कम इग्यारै बरसां रो तौ व्हैला इजा। तौ ई उणरा बाळ तकात म्हारी कड़ियां लग नीठ पूगै हा, तद मिनखा-जूंण री ऊंचाई रो तौ डोळ ई कठै ! अलेखूं कीडा-मकोड़ा अर जीव-जिनावरा री गळाई जूंण पूगी करण टाळ दूजो काई पड़पच करैला ?

आज तौ सै जांणता थका आं झीणी बातां सारू म्हैं खुद अजाण बणग्यो। क्यूंके म्हैं खुदोखुद गींडोळा री जूण ई जीवूं। पण वां दिनां म्हारै डील री तासीर ई दूजी ही। म्हारी दीठ ई सगळां सूं न्यारी ही। आपरा खोळघा मे जरू व्हैता थका ई वां दिना म्हनै लखावतो के म्हारी इंदरियां री कोई माठ नीं है। म्हनै वांरी पूग सूं परवारो दीसतो। सुणीजतो।

टाबर रो गसको देखता पाण म्हैं पाधरो उणरै पाखती पूगो। तावकनै। आपै भणाई रै ओळावै फगत इण काम सारू ई वारै नीसरघो व्हूं। उणरी मोचरी आंख्यां झरां-झरां आंसू ढळकै हा। डावी कनपट्टी सूं रगत टपकै हो। निजर रै पैल-फटकारै ई सै की निगै आयग्यो। आवणो इज हो पण आज आंख्यां आडी अैडो जाळो छायो के मानखा री अणगिण लोथां ई निगै नी आवै। कांनां इण गत डूजा पज्योडा के नीं टाबरां रा डुमक्या सुणीजे, नी लुगायां री बरका अर नी मिनखां री बांगां। नित जांझरकै इकधारा, अणगिण मांनखा री मौत, विखो अर पटकी बांच्यां आखं डील कठै ई की सळवळ नीं व्है। चाय रो वैड़ो ई स्वाद, सिगरेट रो वैड़ो ई लावो अर माखण री वाही चिकणास। तौ ई नित टेमोटेम खबरां बांचण रो नेम नीं टळै।

डील उणरो लुखयुको। पिलांदरो। मैलो कुडतो। मैली ई सिलवार। गोडा निकळघोडा। जांणे देवाळा री जीवती-जागती लोथ खुदोखुद ई आपरा गसका मार्थं विलखै। उण टाबर रै ओलै आखा देम रो दाळद म्हारी आंख्यां, मिरचा सूं ई वत्तो चरबरघो। परदेसी गुलामी रो म्यांनो पैली वळा सावळ समझ में आयो, पण आज तौ आजादी री चौनसवी बरसगांठ रै उपरांत दिनोदिन देस रौ ढग-ढाळो परवारतो देख्यां, नीं इचरज व्है, नी दुख अर नी म्यानो जाणण री मसा जागै।

मूंडो मत मस्कोरो। आं झाडसाही बाता नै अठै ई छोडूं। आरा सूं किणी रो की स्वारथ सरै नी। गुलांमी, गुलांमी रै ठांणै ढळी अर आजादी, आजादी रै नाकै पूगैला। हां, तौ उणरै आंसुवा रो रंग पांणी रै उनमांन हो अर रगत रो रंग रातो-साल। आज तौ रगत अर पांणी में अंगै ई भेद निजर नी आवै। पण वां दिनां भेद आळी बातां में मुमट भेद निगै आवतो।

बात नै मिठाय-मिठाय चकरी चाढ़ण री जूंनी बाण अजै ताई छूटी कोनी। स्वारथ सरै जित्तै धकायां जावूं। ठबक लाग्यां आपै ई छूट जावैला। छिण-छिण बीत्या अतीत रै ओगाळै ई इण खोळघा री खासी-भली जीवारी है।

म्हैं फिलोसॉफी री अंड़ो पिस्सू नी हो के उण वेळा इण म्यांना सारू माथो

पघावतो के पैला आसू बारै ढळघा के रगत रा टपका । लाड सूं बुचकारनै पावस बंधावण रै सुर बूझ्यो, 'कांई व्हियो रे !'

टाबर कीं पड़ूत्तर नी देय वत्ता डुस्किया भरण लागो। पाखती बंगळा रै बगीचै म्हैं जतन सूं उणरा आंसू पूछ्या। मूडो धोयो। रगत रा चाटा मेट्या। टाबर नै अवै जावतां म्हारै माथै पूरमपूर धीजो व्हैगो। उणरा आंसू मतै ई थमग्या। सफाखांना रो नांव लेवतां ई लप मांनग्यो। मारग में उणरो मन बिलमावण खातर म्हैं दपूचा लेवतां बूझ्यो के उणरै लागी कीकर? कांई धकड़ी खाय हेटै तो नी पड़ग्यो?

पतियारो व्हियां टाबर आपरो काळजो तकात सूंप दै। इण भांत दार्छट पड़ूत्तर दियो जांणै बूझण री ई बाट न्हाळतो व्है। 'अेक साइकिल वाळो—अलांमां रो कँवू जको—टक्कर मार न्हासग्यो। लारै मुड़नै देख्यो ई नी। साम्ही आंचै-आंचै पैंडल मारघा!'

साच मांनो, उण दिन साइकिल वाळा माथै जांणै जित्ती रीस आई। जे सताजोग वां दिनां उण सू भेटका व्हे जाता तो उणरो अळीतो काढघा टाळ नी छोडतो। इन्याव री बात सुण्यां झाळ ऊठती। जरूरत परवांण बाथेड़ो करण सारू ई पाछ नी राखतो। हिंमा री ठौड़ तो हिंसा ई छाजै। पण आज तो किणी माथै किणी भांत री रीस नी आवै। न्याव-इन्याव जैड़ी निपगी बातां खातर नी वगत है अर नी वैडी मत। भला ई नकलो दवायां खुल्लै-खाळां वेचो। दाय पडै जको ई धापनै तस्करी करो। चोर-बजारी करो। घी-दूध मे भेळ करो। निकांमो दारू वेचो। पीयां नसैडी मरै तो मरै। सेवट री बाजी अेकर सगळां नै ई मरणो है। पैला मरो भलां ई पछै। अमर कुण व्हियो? पछै बिरथा आळोच-पळोच करघां कांई सांघो लागै। व्हैणी व्हिया ई सरै। पण वां दिनां होणी नै टाळण री हूस राखतो। ऊमर परवांणै टाबरपणो आवै अर जावै।

बातां में बिलमणो टाबरां रो सुभाव। मून री सुन्याड़ वांनै अळखावणी लागै। कुदरत रै खोळै घाळचोळ करघां टाळ वांनै आवड़ै कोनी। आखी कुदरत ई वांनै मां री गळाई लखावै। वां दिनां टाबर, मोटयार, बूढा-ठाडा अर लुगायां-पतायां रै सुभाव री थोड़ी-घणी बातां जांणतो। पण आज तो अैडो वयारो पीयो के नीं जांणण वाळी घणकरी बातां जांणूं अर जांणण वाळी अेक ई बात नी तो जांणूं अर नी जांणण सारू माथाफोड़ी करूं। उणनै बातां मे बिलमावण खातर मळै अेक अस्वाभू सवाल बूझ्यो, 'थारी जात कांई है रे?'

सवाल रै समचै ई टाबर रै आखै डील धूजणी वहगी। अचांणचक डबनै मळै माथै घालण ढूकी। घांण-मथांण में अळूझ्योड़ो। आंख्यां धुरावतो व्है ज्यूं म्हारै वेस माथै अेक निजर उछाळी। खादी री धोळी धोती। खादी रो धोळो लब्बो। अर दूजै ई छिण आपरी मैलो मिगदळी सिलवार माथै निजर पिलळनां ई उणनै धडधडी छूटी। पिलादरो उणियारो धोळो-धक्क पड़ग्यो। जांणै आवगो अंस ई सूतीजग्यो व्है। रोवणकाळो होय नीठ कलरावतो व्है ज्यूं बोल्यो, 'म्हैं...म्हैं...म्हैं तो आपरो हिन्दू भाई हूं।'

म्हनै सपनै ई अैड़ो आस नीं ही के म्हारै सवाल रो अैड़ो बेजां पड़ूत्तर मिळैला!

आक-बाक आंख्यां टमकारतो उणरै मूंडा सांम्ही जोवतो रह्यो। औ कंडो कांई पड़त्तर दियो रे डावड़ा! पण उणनै तो पड़त्तर रै नागा साच रो अेलम ई कठै हो? उणरै बाळ-कंठां औ भोळो जवाब सुण म्हारा तो जांणै पग ई रुग्या व्है। आगै बखण रा आपा मार्यै थांण इज वैगो। रूपाळो अपछरा नै उघाड़ी देखण सारू जिण भांत मन सायद्दा तोड़ै, उणी भांत कदै-कदैई नागा साच नै निरखण री उवेड ई कम नी व्है। अजांण ई म्हारो मन होठां छिटक पड़्यो, 'साचांणी ?'

टाबर रै काळजियै डाफी चढ़गी। जांणै म्हारै वेस चापळयोड़ी मौत उणनै रोस्यां ई मांनेला। धग-धग धूजतै हाथ, टंटोळतो चोटी कांई अपड़ी जांणै प्राण बचण रो गुर लाधग्यो व्है। मौत नै अंडी दुभांत मपनै ई नीं छाजै, पण धरम-मजहब तो मौत सूं ई माड़ा व्है। चोटी ऊंची तांण मिमिमावतो बोल्यो, 'आ देखो...देखो म्हारी चोटी। सा...सा...साचांणी म्हैं आपरो हिन्दू भाई हूं। स...स ..सिनवार तो मांग्योड़ी है।'

फगत कांनां सांभळ्यां कोरै गपोड़ां उणरो काळजो फड़का नी चढतो। वौ अयस करनै आपरी आंख्यां धरम, जात, मजहब रै धूंमै टाबर, मोट्यार, डोकर अर लुगायां नै अलवर रै गळियारां, टेमण के रेल रै डिब्बां कठैई न कठैई कटता-वढ़ता देख्या व्हैला। वौ पड़त्तर घरवाळां रै घोखायोड़ो नीं हौ। वौ तो आख्यां दीठा किणी परतख रोळा रो अजांण्यो परताप हो।

उणरी भीट म्हारा कोया कुतरण लागी। म्हारी दीठ उणरै नैणां ऊंडी ई ऊंडी उतरगी। अेक कावळ आंटो रै दवाय म्हारी रग-रग मठोठीजण लागी। कदैव इणी कारणै टाबर री आंख्यां म्हनै डरपीज्योड़ी लखाई। म्हैं पाखांण पूतळी ज्यूं अवचळ ऊभो हो। रगत रा रगायण घाव नै बिसराय वौ मौत सूं कांनो लेवणी चावतो। पण म्हैं तो किणी दूजी ई धांण-मसांण में अळूझ्योड़ो हो। वो टाबर तो भली विचारो अर नीं मूंडी, जठी मूंडो हो, नाक री डांडी उठीनै सोकड मनाई। अेकर ई लारै मुड़नै नीं देख्यो। म्हैं उणी भांत ठूंठ री गळाई गड्योड़ो ऊभो हो।

कठै...कठै म्हाटनै जावैला औ बाळ-गोपाळ। इण दौड़ री सेडो है के नीं? कांई मरण री माठ लग औ इणी गत भाज्यां जावैला! अेक अंडा हेजळा खोळा री माळ में जको उणनै लाड सूं बुचकारै। उणरी डरपती रूंआळी पंपोळै। रिसता घाव रै मलम चेपदै।

उण नाकुछ खिलका नै बरस चौतीस बीतग्या। पण म्हनै आज ज्यूं याद है। धरम, धड़ा, मजहब रै डाकै वढ्योड़ा भोडक, हांचळ, हाथ-पग अर रगत रा रेला देख्यां उपरांत ई चेतै उतर जावै, पण अबूझ टाबर री वा चोटी अर वा दौड़ भूलणी चावूं तौ ई नी भूलीजै। भूलण वाळा भूल्या ई है, जद इज तौ आज जमसेदपुर, मुरादाबाद, अलीगढ़, हैदराबाद, विहार सरीफ अर अहमदाबाद रै रोळा सारू जबर धुरळियो मचैला। घणो ई थूक उछळैला। इणी खातर आज संसद रै छेहलै पगोतियै चढ्यां ई सरसी।

पण अेक नाकुछ सवाल म्हारै हीयै खदबदै। म्हैं खुद उणरै पड़त्तर सूं अंगै ई अजांण नी हूं। फगत मूंडै दरसावण री हूंस दोळै बैठगी 'बोलण री आजादी' ई.. इणरो तो अथांणो ई नी घालीजै। हींग री गरज ई नीं सरै। बापड़ो भगतसिंह

इणरी स्वाद चाख्यो इज हो ! आज तो कोई चित-बायरो व्हे जको ई इणरो पराळ कूटै। गुलाम भारत मे तो खुणै-खोचरै इणिया-गिणिया आजाद लोग ई बसता, पण आजाद भारत मे तो आज अेक आजाद बंदो नी लाधै। सगळै गुलाम ई गुलांम अडथड़ै। बडेरा रै इण पवीत देस मे लटापोरी, खुसामद अर गुलामी री छूट नीं व्हिया सूं बंटाढ़ार व्हे जावैला। आ गुलांमी री आजादी जुगानजुग थिर रैवणी चाहीजै। सीसा रै गारै नेगम अर अतूट ! पछै की जोखम नी। मछरां करो। घूपटा उडावो। कारां। बगळा। बगीचो। फ्रीज। टी. वी. अर नीं-नीं व्हे जैड़ा नित नवा-नवा अमोलक थोक। भगतसिंह तो भोंदू हो भोंदू। जीवण अर मौत रो भेद ई नीं जांणतो। कठै जीवण रा तापडधिन्न थाट अर कठै मौत री सिळगती रयी, ऊंडी कबर। नाव लेवतां ई डर लागै। भाजो, भाजो इण सू आतरै, अलंघ आतरै। पण आ बाळणजोगड़ी मौत लारो ई तो नी छोडै। नीं लटापोरयां पोमीजै अर नीं सूंक दियां धीजै। उण री आख्या तो सोना अर पीतळ रो अेक सरीसो पीळास। फगत अेक ई मळीच कांम जाणै—मारणो अर मारणो। राजा नै ई मारै, मंगता नै ई मारै। पण ओ मतहीणो मिनख मौत री खोड़ क्यूं खुडावै ? रमण री ऊमर वो अयूस बाळ-गोपाळ म्हारो वेस पतवांण्यां डरप्यो क्यूं ? म्हाटो क्यू ? अेकर तो लारै जोवणो हो ! बावळा, म्हैं तो फगत लाज रै ढाकाढूमै ऊजळा गाभा पैरया। पण लाज ढकीजी कठै ! छलै गाभां नागो व्हैगो। अर आज...आज तो नागा री बातां इज न्यारी है। फगत नागा रै इज बागा उबरता पडघा। पण संसद रा मांनीता पंच नै इण गत रो राडी-रोवणो नीं छाजै। मोड़ो व्हियां दो-दो पगोतिया डाकणा पडैला। बिरथा जोखम क्यू झेलणो ! अेक-अेक पगोतिया रै पाण ऊचो चढतां कुण ई नी अणखै। लारै छूटा पगोतियां नै बिसराय धकला री सोय राख्यां देहलै पगोतिये पूगण मे की थांदो नी। अबै तो फगत सात पगोतिया घटै। अेक पगोतियो... दोय पगोतिया...तीन, चार, पांच, छव अर ओ सातवों। पगोतियां री रास इज अैडी व्है। पण चढ़णा बिचै उतरणो सोरो। आ-हां, म्हैं नीं ढबूं, थें म्हारा रांडी-रोवणा सूं आंनी आयग्या तो रावळी आंख्यां मीचलो। म्हैं तो फगत ओ इज कांम जाणू—राडी-रोवणो। साचाणी, आंख्यां मीच्यां उपरांत म्हारै रांडी-रोवणा रो आधार ई नी बापोजै। बस, अबै तो राजी। कैड़ोक गुर बतायो। आंख्यां मीची अर अधारो। च्यारूं कूट अधारो। उजास रो इकडको महराण सूरज तकात आंख्यां मीच्यां उपरात नी दीसै, पछै म्हारै काळै-आखरां रो तो गसको ई कांई ! देवास, आप तो याद दिरावण रै समचै ई आंख्यां मीचण लागा। आप किसा म्हारा सूं कम समझदार हो !

छेहलो पिद्यांण

तीन बरसां रै विचाळै लगोलग अेक रै पूठै अेक, च्यार बेटा अर बीबी नै सुलेमांन हमेसां रै वास्तै खुदा रै दरीखांनै पुगाय दिया तौ ई सैंसकार सरूप जांण-अजांण अेक अैडी अखूट हेमांणी उणरै पांनै पडी, जिणरै जोह इण अकूंन घाटा नै वौ घाटौ नीं मांन्यौ। सिरैपोत जद उणरी बीबी उण आदू अदीठ मारग सिधावण री चहीलौ काढयौ तद सुलेमांन री आंख्यां जळजळी तकात नी व्ही। अरथी नै खांधै धरती वेळा वौ होठां ई होठां गुणमुणायौ, 'खुदा तांई पूगण सारू औ इज तौ गेलौ है। कुण टळयौ ?'

तठा उपरांत फगत दो महीनां रै वारै हनीफ ई छेहलै सास आख्यां मींचली तद वौ लोगां नै समझावतां कह्यौ, 'खुदा री अमांनत ही अर खुदा संभाळ ली।'

अकबर नै हनीफ सूं हदभांत हेज हौ। पछै मांढ़ा रौ उमायौ कीकर लारै दबतौ ! मिळण सारू उणी सागै मारग ढळणौ पड्यौ। पण वारौ सांम्हैळौ खुदा री आंख्यां टाळ किणी नै ई निगै नी आयौ। सगळां सूं लाडकौ अर इदक रूपाळौ बेटौ इब्राहिम ई जद वळै बाप सूं पैंली सिधावण रौ आंचौ करयौ तद अेक ऊंडा अर बळबळता निस्कारा रै सागै उणरी आंख्यां अवस डबडबाणी। पण निवाज री वेळा उणी लवल्या रै गाढ उणनै खुदा रै सांम्ही निवतौ देख्यौ तौ लोगां नै दुख रै भेळमभेळ थोड़ौ इचरज ई व्हियौ। अर उण दिन, हां उण दिन रहमांन आपरी सूनी अर जागती आंख्यां माई रै पेट धग-धग लोई उफणतौ दीठौ तौ उणरी रगां रै

आंटी लागी। रगत कळकळे चढ़ायो। 'अब्बा, म्हें मैमूद री बैर लियां ई छोड़ूला। जे दुरजण सिघ रा टुकड़ा-टुकड़ा नी करू तो म्हें आपरो बेटो नी।'

तद सुलेमान उणरो हाथ याम्यो। कदंच उणरा सुर मे आकळ धूजणी अर आंख्यां मे पाणी हो। माथो धूणतो गळगळै सुर बोल्यो, 'थू म्हारो बेटो है, इणी खातर औ कांम सपनै ई मत करज्यै। कोई किणी रै मारया नी मरै।'

पण आज जद जोबन रै घड़ै पग धरता ई उणरो बेटो रहमांन ई अंडो आखड़घो के पाछो चूळ्घो ई नी, तद खांधै सूती रहमान री लोथ रो जागती नूर उणरी आख्यां साम्ही झबूकण लागो। दाझतै सुर कलरायो, 'बेटा रहमांन, अबै इण मारग म्हारा सू नी चालीजै।' अर दूजै ई छिण वो तड़ाच खाय सड़क माथै ऊधो पसरग्यो।

चेतो बावड़या मन-माडै आंख्यां खोल अठी-उठी डरतां-डरता माळघो—छोटा भाई री बेटी सकीना कसूबल ओढ़णी सू आंख्यां पूछती उणनै बाव ढाळै।

सुलेमांन पाछी आख्यां मीचली। जाणै दुनिया मे कदै ई की जीवण री हीमत खपगी व्है। अबै आ दुनिया उण सारू जीवण-जोगी इज कोनी। पण मौत परवारो कीकर मरीजै! पलका नै छेक दो आसू ढळग्या। धावड़तै धामलै उणरी छाती आवसगो। हारघोड़ै थाकल सुर बूझ्यो, 'सकीना, रहमान पाछो आयो ?'

इण सवाल रो भलां वा काई पड़ूत्तर देवती? को पड़ूत्तर नी हो! आख्यां अर दांत भीच भीचावती कळप नै मांय रो माय ओटण सारू वा आफळती लखाई।

सकीना आपरा घणी सू वत्तो रहमान रो कोड करती। सुलेमान सारू काण-कुरबतो उणरै होयै मावता ई नी ही। जे खुद रा जीव साटै रहमान पाछो बावड़तो तो वा अेक छिण री ई जेज नी करती। जेज, जेज री ठौड़ छाजै। सुलेमांन री खातर तो वा लिया-दियां बैठी ही। पण खुदा री पेढ़ी अंडो सोदो नी पटै। आटो-साटो तो मिनखा री दुनिया रो धारो है। खुदा रै बजार तो खुदोखुद रै साटै खुदो-खुद नै ई सूपणो पड़ै।

सुलेमान पसवाड़ो पलट मूडो फोर लियो। सकीना उणरी बांह पंपोळती होळै-सीक बोली, 'अब्बा, म्हा दांना नै अबै रहमान रै आगै समझो।'

सुलेमान अेकर पारमपार निजर सकीना रै साम्ही टगमग जोयो। वाणी सू ई वत्तो भरकरार ई वा निजर। बापड़ी जीभ रा अेठा आखर नैणां री पवीत वाणा नै कद पूगै! मून निजर री कळझळ साव सुभट ही—सकीना, थू खुद जाणै के आज पैली कित्तो वळा म्हारी बजर-छाती नै समझाय-समझाय थै थोळा लिया है। नवादू कायदो सीखण री जरूरत कोनी। होळै-होळै आपै ई सीख जावेला। जोवूं जित्तै जूना घोख्योड़ा पाठ भरचा ई नी भूलू। अर नवा गुर सीखण री आ ऊमर कानीं।

मगज रै टाळ औ बोरग अडेह! अतस ई मिनख नै कुदरत री अेक सिरै नेमत है। सुख-दुख री जैड़ी-तैड़ी चाखणी चाख, उणनै वगतसर बिसराय देवणो—आ मिनख रो इज भरदाई है। वगत रै गार्य सुख-दुख रो अपाप अनुभव हरता-हरता पगत ओळू रै नाकुछ आळे आपरो वासो करसै।

सुलेमांन नै इण भांत आमण-दूमण अबोलो जाण सकीना आपरै सिर्ळिठयळ आपाण नै माडै सांधती मीठ बानी, 'अब्बा, थे फरमावो तो की खावण नै...' अर

झटोझट मूंडै धाम झड़दी । जाणै कोई लाठी जुलम व्हैगो व्है । वा मांय री मांय पिछाटा खावण लागी । सुलेमान उणी अणियाळी मीट सकीना री डोह लीवी । जाणै आख्यां ई आख्या मे वकारणी चावै—म्हैं सुलेमान हूं, घबरा मत बेटी । थूं की बेजा बात नी करी । तठा उपरांत सकीना रौ हाथ, उकळती छाती माथै राख कैवण लागौ, 'हा, ले आ बेटी । म्हैं रहमान नैं खुली आख्यां मरतौ देख सकूं, पण खुदा नैं हंसतौ नी देखीजै !'

सेंसकारा री हेमांणी जद सुभाव रैं साचै ढळ पूगै, तद वानै दरसावण खातर की अड़चल नी पजै । वैं आपोआप ई आखरां रैं ओळावै ओसरैं ।

वगत तौ आपरी धत-मत सदावत सारीसो ई टुळै । नी किणी खातर आवै अर नी किणी खातर होळै । पण मिनख नै आपरैं सुख-दुख परवाण उणरी हाली में भेद लखावै । कदैई किणी विखा रौ छिण, घड़ी सू वेसो तौ किणी हरख री घड़ी, छिण सू ई कम । रहमान रैं समाया कठै तौ सुलेमान सारू वगत रौ अेक छिण ई लाघणौ भारी हो, उठै छिण-पल, घड़ी रळकता अेक-अेक दिन रै जोड़ै दस दिन, साचाणी दस दिन थाल खायग्या ।

सकीना खाख मे घड़ौ थाम्यां, सुलेमान रैं पगा साम्ही जोवती डिढ सुर मे बोली, 'देखौ अब्बा, आज सू ईं इण लागा-घोड़ा नै आपरी दाय पड़ै ज्यू बरतौ, पण रिपियां री बात दूजी वळा आपरैं मूंडै सुणी तौ इण घड़ा समेत नाडी मे डूब नी मरू तौ म्हारो नाव सकीना नी । अे दिन आपरा इज दियोड़ा है, म्हैं किसी जाणू कोनी ।'

सकीना रै इण आड़ा खातर ओड़ौ देवण री अगै ई मंसा नी ही, तौ ई बात नै केवटण री जुगत करतौ सुलेमान कैवण लागौ, 'पण सकीना...।'

सकीना माथो ऊचो करनै उणरैं साम्ही जोयौ । आखती होय विचाळै ई बोली, 'छोटी अर नादान जाण यें हाल ताईं म्हारैं माथै ओसांण दर ओसांण खिड़कता जावौ, पण अबै साचाणी...।'

उणरी आख्या सू झरां-झरा धकला बोल झरण लागा । जांणै वा आंसुवा रैं ओळावै बध-बध खरावणी चावै—थें म्हारा अब्बा हौ तौ म्हैं थारी बेटी कोनी कांई ! पछै बेटो सू इतरौ चोज...।

सुलेमान उणरैं माथै हाथ फेरतौ बोल्यो, 'अेकर म्हारी बात सावळ सुण तौ खरी । अबै म्हारी लाडल चिड़कोली नैं अगै ई फोड़ा नी घालणी चावू ।'

सकीना री खाख मे खाली घड़ौ हो । वा पाणी भरण सारू बहीर व्हियोड़ी ही । पण अबार आख्यां सू ईं पाणी बरसण ढूकौ । घडा नैं चांतरैं धरती कैवण लागी, 'आप म्हारा बडेरा हो, ओडौ देवती छाजू कोनी । तौ ई माडै कैवणौ पड़ै के आप चूक मे हौ । आप फोड़ां री बात करो, पण इण सू लाठौ सुख म्हारैं सारू दूजो की नी व्है ।' पछै ओढणी सू आंसू पूछती धकै बोली, 'आपरी दाय पड़ै ज्यू करौ, म्है आडी नी आवू । पण म्हारौ बारणौ आपरैं कुत्ता खातर ई अस्ट पोर खुल्योड़ौ रैवैला ।'

सुलेमान री आख्यां सू आसू ढुळक, धोळा खत मे रळग्या । आज पैली वळा पांणी टाळ कोई पाणी जैड़ी चीज उणरैं खत रौ परस पायौ । उणरैं अजांण पर-

बारा ई पीढ़्यां रा चीटा सँसकार, अेक अदीठ आंच रै तप पिघळण ढूका हा।

जीमणै हाथ खत पंपोळतौ वौ नीठ बोल्यौ, 'वौ टापरौ ई थारौ है सकीना, थारा घर नै ई म्हैं परायौ नीं जाणू, पण चौतरफ बारी-बारणा ढब्योड़ौ वौ सूनौ घर म्हनै रहमान री कबर ज्यूं लखावै। उणनै पाछौ आबाद करणा चावू सकीना।' गिरणावती दीठ, अेक अपळग जाचक री गळाई वौ सकीना साम्ही भाळ्यौ। सकीना उण दीठ आगै काई जोर करती।

तीन-च्यार दिन उपरांत वौ ई सुलेमान जकौ आपरै बेटा रहमान री लोथ छिटकाय आगणै गुड़्यौ हो, वौ आपरै सागै हाथा लगांम झाल तांगा में बैठौ थकौ, डिचकारधां भरतौ उणी घर साम्ही ढब्यौ, जिण घर सू रहमान रै पैली धार जनाजा निकळ्या हा।

अबै सुलेमान री जूण तागा रै पसाव थकै गुड़कण लागी, जाणै छतै पगा वौ निपट पांगळौ होय ढोळै बैठग्यौ व्है। वौ तागै थरपीज्यौ थकौ डिच-डिच डिचकार करतौ अर उणरी सानी रै समचै सड़क माथै पेड़ा गणमण-गणमण गुड़कण लागता। इण भांत ठौड़ रै ठाव री गळाई अक आसण जम्योड़ौ आपरी धाल थकै बधावण खातर वौ आपथापी व्हैतौ।

आपरा जीव सू वत्तौ वौ घोड़ा रा जीव नै जाणतौ। लाबौ घोळौ खत पपोळता मतै ई उणरै हीयै आ बात ऊडी झरगी के आपरै दाता खातर नुगरौ व्हैण सू लाठौ पाप दूजौ की नी है। खुदा रै दरीखानै इणरौ हिसाब देवणौ पड़ैला। दूजा तागा वाळा रै उनमान कदे ई उणनै चाबक री दरकार नी व्ही। अर नी जिनावर व्हैता थका घोड़ौ ई इण खातर बाद करयौ। लगाम री मून वाणी अर डिचकारधां री सानी उणरै रू रू म पूळगी ही। सुलेमान री मसा परवाण, इग्याकारी बेटा री गळाई आपरी समझ अर करार मापै वौ धणी री पूरमपूर हाजरी बजावतौ। तद आछ्या रै अमोलक मात्या री आब सुलेमान रै होठां मुळक रै मिस अैड़ी दमकती, जाणै कोई अचीतौ वरदान फळ्यौ व्है।

रोजीना री गळाई सुलेमान घर साम्ही नीबड़ी री छीयां तागौ खोल्यौ ई हो के अेक सेठ पावती आय ताकीद कीवी, 'तागो करणो है।'

सुलेमान की खास गिनरत नीं कीवी। घोड़ा रा मोर पंपोळ बोल्यौ, 'नीं सेठजी, बिसाई री वेळा व्हैगी, कोई दूजौ तागौ जोवौ।'

नी तौ सलबै किणी घोड़ा री टारा सुणीजी अर नी आगो-नेड़ौ कोई तांगौ ई निगै आयौ। सेठ रै अणूती उथावळ ही। लाभ रौ महातम भली भात पतवाण्योड़ौ हौ। तुरत काच बतायौ, 'अरे बड़े मिया, अैड़ौ काई घोड़ा रौ ढळौ छूटै। म्हनै टेसण पुगाय पछै खाल दीजौ। मागोला सो ई देयूला।'

अबकी सुलेमान माटी फार सेठ साम्हो जोयौ। मोमा रौ तीख मुळकतां कह्यौ, 'कदास थारी दुनिया री दौलत तौ आपरै पावती नी इज व्हैला?'

सेठ चावतौ तौ सुलेमान रै बड़बोला रौ अवस पड़ूत्तर देवतौ, पण उणरी निरवाळौ निजर रौ कांकर सामनो करतौ। बोलो-बोलो चुपचाप बहीर व्हैगौ। कदास मन ई मन भांडतौ व्हैला कै तागा वाळा री जात इज असाम व्है। नी टको, नी धेलो पण हुकड़ौ नवाबा सू ई चढ़ती।

बेपारां री बळती वोतांगो खोल देतौ अर ढळती छांव पांच बज्यां पैली किणी भाव तांगो नी जोततौ । घोड़ा नै मांय लाय नीरणी करतौ । हाथां दांणौ देवतौ। खासी ताळ कोड अर हेज सू उणरी आखौ डील पंपोळतौ । तठा उपरांत अेक ओछा निस्कारा सागै—या अल्लाह, कैय मांचा माथै आडौ व्हे जातौ । अर घोड़ौ ई बिना किणी फरड़-फाटां चुपचाप चीपटा री कूतर अर रिजगा रो भेळ्यौ चरतौ। धणी री नींद मे भंज नी पटकण रौ गुर वौ आपै ई ममझग्यौ ।

की जागता अर की ऊंघता दिन कीकर ई आपरी गतमत सोरा-दोरा लोपै हा । अेक दिहाड़ै घोड़ा री जोर-जोर सू अचीतौ हिणहिणाट सुण सुलेमांन हळफळायौ भचकै ऊठ्यौ । पण ऊठतां पांण उणरी निजर जको खिलकौ देख्यौ तो वा है जठै ई चेंटघोड़ी रैगी । इचरज, डर अर जोखम री दीठ वौ आक-बाक थोडी ताळ ताईं उठीनै देखतौ रह्यौ । अेक भिमरघोड़ी कालिंदर खाट रै पाखती फुण करयां जांणै उणी नै डसण खातर फुफकारां भरतौ व्हे ।

अणछक सुलेमान रौ हीयौ भरीजग्यौ, जाणै कोई अदीठ वतूळियौ उणरै अंतस उतरग्यौ व्हे । अजेज ऊभौ होय घोड़ा सू गळबत्थां भरतो घड़ी-घड़ी गुणगुणायौ, 'बेटा रहमांन, बेटा रहमांन ।'

रहमांन मरयौ तो पछै, पैला जलमियौ अर ऊमर ऊभी जित्ते जीवियो। वौ जीवतौ जद री वात है । अेकर हूबोहूब इणी भांत रहमान अेक अंडा ई भरपूर कालिंदर सू बाप री रिछ्या करी हो । लाख पाला-पूली करयां उपरात ई रहमान कालिंदर रौ चिगदियौ कर न्हाक्यौ हौ ।

इत्तै मान होय सुलेमान नै आज पैली वळा उणरा चेता रै अजाण मौत री घड़घड़ी छूटी । मौत ई तौ उण अेकल जीव नै तळणा मे पाछ नी राखी, जाणै उणरी खेरौ इज तेवड़योडौ व्हे । पण उण दिन तौ साचाणी सांप नीं मारण खातर बाप, बेटा रा किता लालरिया लिया । 'बेटा, सै मरण वाळा नै कोई सांप तौ नीं डसै। अर जे मौत ई लिख्योड़ी है तौ तिरसिघजी रै जोर ई नी टळै । जिणनै खुदा बचावण खातर तेवडै तौ अेड़ा हजार सरपा रौ विस ई इमरत रै उनमांन कार करै।'

अर अबार-अबार थोड़ै दिन पैलां रहमांन रै धामला उपरात, खाणा री मनवार करयां वौ सकीना नै खाणा री दवायतो देय कित्ता डिड़ सुर मे कह्यौ के वौ रहमांन नै खुली आंख्यां मरतौ देख सकै, पण खुदा नै हंसतौ नी देखीजै।

पण लारला तीन बरसां रै बिचाळै मौत री निरमोही काळूटी छीया सुलेमान नै इण गत दाझ्यौ के नी उणरौ मगज ठाणै रह्यौ अर नी उणरौ अंतस । उणरी सुधबुध रै अदीठ अर अजाण अेक दूजौ ई रासो रचीजतौ गियौ अर सुलेमान नै जिणरौ बेरौ तकात नी पड़यौ । जद इज तौ आज सुलेमान उण अगोचर अचेतन रै आकस अंगै ई आपरौ आपो पातरग्यौ । नी उणनै खुदा रौ ध्यांन रह्यौ अर नी उणरी हंसी रौ । कालिंदर रै फुफकारता फुण मे उणनै सळवळती मौत निगै आई । बरसां लग जीवण रौ सूतौ मोह आळस मरोड पैली वळा जाग्यौ । खुदा रै दरीखानै पुगावण वाळा उण अेकल-पंथ रौ जातरी बणण सारू उणरौ मन किणी भाव नी मांन्यौ तौ खुदा रै दरबार पुगावण वाळा दूत नै ई उण मारग पुगाय दियौ। साप रौ रूप धारयोड़ी मौत नै आपरै हाथा ठाणै घाल्यां ई उणनै निरांत व्ही । साचांणी, वौ

सांप नैं नी मारचो, मौत नैं मारी ही। तठा उपरात अेकर वळै घोड़ा री गावड़ सूं लटूम आपरै रू-रूं सू गरळायो, 'बेटा रहमांन, बेटा रहमान।'

सुलेमान नै इण गत भूंडै-ढाळै चीचावता देख उणरो खुदा जोर सूं हंसण री ठौड़, सिणफिण मुळक्यो तौ व्हैला इज, इण मे की मीन-मेख नी। पण आज सुलेमांन रै पोतै उणरी मुळक निरखण री वा वेळा ई कठै ही !

पछै आखै दिन सुलेमान तागौ नी जोत्यो। मांचा मायै आडो पसरचो वो किसा आळोच-पळोच मे रूधाड़ो हो, सो वो ई जाणै। अंडो दरजै-लाचार तो वो कदै ई नी व्हियो। जिण लाट नै वो वजर-लोह री जाणा, वा तौ मैण सू ई पाची निवळी। उणरो चेतन, अचेतन अंतस कुण जाणै किण अळूझाड़ मे अळूझ्याड़ो हो क वो निवाज तकात पढ़णो पांतरग्यो। अदीठ व्हैता थका ई अंतस रै उण तोफान रै उथेलां रो उणनै सुमट अेलम व्हो। वौ नी तो जाग्योड़ो हो अर नी ऊंघीज्याड़ो। उणरी सुधबुध सारू वगत, छीयां अर भरतपा रो की अलम इज नी हो। सपन-मारगू री गळाई ऊभो होय वो चार-पाचेक पावडा धकै बध्यो। घड़ा सू पाणी लेवती वेळा वो चितबायरो व्है ज्यू लुळचो अर लुळता ई उणरै आखै डील अेक सरणाटो माच्यो—अरे, आज तौ अेक ई निवाज नी पढ़ी ! पण हदभात इचरज री बात के इत्ती लाठी भूल रो उणनै घणो साच नी व्हियो। 'अेक चूक तौ खुदा ई माफ करै।' सळवट भरचा होठा आ उगति गुणमुणावती वेळा उणनै पूरमपूर थावस बंधग्यो।

दूजै दिन जांझरकै ऊठतां ई वो आवतो होम तांगो जोत्यो। लगांम में धीमो तणकारो देय वो लाड सू बुचकारतो बोल्यो, 'चाल, बेटा रहमान चाल।'

अर उणी छिण बेटो रहमान कान अर पूछ पाधरा करचा, पळकती चाम लैरां थिरकाय घोड़ो तणनै जोर लगायो के गाळ-गाळ पेड़ा घरर-घरर सड़क माथै धकै बधण लागा। सुलमान रै हीयै कदास उण वळा आणद ई पावस्यो व्हैला के घाड़ा रै आगै उणरो बटो रहमान पाछो जीवतो व्हगो। पण घोड़ा रै लस्टम पुट्ठा माथै निजर पड़ता ई रहमान री ओळू उणरै रू-रू मर्याजण लागी। उणरो सवायो-डांढो सीनो, उणरी लावी अर भरकरार भुजावां हवा मे तिरती लखाई। टप-टप टापां री थापी तागो होळै-होळै गुड़कतो हो। गुधराई सू सुलेमान रै हाथां लगाम थम्योड़ी ही। वो टगमग दीठ घाड़ा रा पळकता पुट्ठा निरखतो हो। अणछक डोकरिया री आख्या डबडब भराणी। दासती ओळू रै भेळमभेळ वा आगुवा मे अपणायत रो पुट ई आधमआध हो। रहमान रा धामला पूठै इण जिनावर रै सागै उणरो मन अेक-मेक व्हैगो हो—माहोमाह दुभांत रो सवलेस तकात नीं। इणी पपोपै मूवा घरवाळा री दास खासी-भली रजलै पड़गी ही। दो प्राणिया री इण नवी गिरस्ती उणनै घर अहोळो नी लागतो। हिवड़ा री थळी अर घर रै बारणै मूवा घरवाळां री ओळू सातर आवगो निसंद हो। आपरै अवचळ मन मायै उणरो अेडो जबर आंकस हो क फड़फड़ावती ओळू रो पसवाड़ो ई नी चुळण दियो। वो भूलग्यो के उणरी गवाड़ी रै चांनण-चौक कदेई उणरै च्यार बेटा हा अर वा बेटां री अेक मां ही। मरचां पैली यै सगळा ई जीवता हा। ठौरमठौर। हंसता। मुळकता। जागता। सोवता। किलकारचां करता-करता ई इणी घर रै आंगणै मोटा व्हिया अर इणी

घर रै बारणै वांरा जनाजा निकळया। पाछो अेकर ई बूढ़ा बाप नैं नीं बूझ्यो के वारै मरया वो कीकर जीवैला ! बीबी धुराधुर ई आख्या फेरली। हित्यारण मोत नै कांई वेरो के जीवता मिनख री कांई तळतळावण व्है ! फगत तीन बरसां रै वारै वा पाचूं जीवा नैं धारी-सर कोई कामणगारो कैड़ी अलामदी ठोड़ लुकाय दिया के पाछो बुडको ई नी व्हियो। जीविया जित्तै कित्ती घाळचोळ ही। कैड़ी घमचक ही। पण किणी रै निकाह रो टाणो नी सज्यो। निकाह री सुरपुर व्हैती अर वै कूच कर जावता। अेड़ी ठा व्हैती तो बाळपणै ई सगळा नै परणाय दवतो। बापड़ा, मिनख जमारै आय लुगाई री साव चाख्यां टाळ ई ढळग्या। पछै वयू तो वै जलमिया, घपू मोटा व्हिया अर क्यू परणीज्या पैली ई सिधायग्या। घाड़ा अर साप वाळै रासै रहमांन री आळू उथेलो खाय धपळका रै उनमांन धू-धू सिळगण लागो। रू-रू तिणगां रा घटोड़ा अर ओळू रो घिरोळो काळिदर री गळाई फूफाड़ भरण लागा।

जोडायत रै भेळमभेळ चार जाया बेटा अेक रै पूठै अेक लगोलग खुली आख्या मरचोड़ा देखनै ई वो नी तो चळ-विचळ व्हियो अर नी झरता आसुवा सू उणरी आंख्या रा भेटका ई व्हिया। पण आज कुण जाणै कांकर, फगत वारी आळू रै ओळूवै उणरी आख्या भरीजगी। छिल-छिलावता आसू बारै ढळक्या। धूजतै हाथ आसू पूछ वो धूंधळो अर मगसो मोट घाड़ा साम्ही भाळयो—आपरै प्रचड डील जुत्योड़ा तागा नै घरर-घरर खाचतो हो। थाकेला रो लवलस ई कठै ! भला रहमांन ई कद थाकतो ! आखै दिन धवूस व्है ज्यू थुड़तो। इण घोड़ा रै लगैटगै करार हो उण मे। चार आदमिया जित्तो अेकलो खटतो अर ऊमर—फगत सतरै बरस। पण तो ई कैड़ा भोज रो घणी हो। सूठो तणो ऊडो निस्कारो गळा रै गाळै नीठ बारै आयो।

सुलेमान री दोनू पूतळया जूनी ओळू नै उकराळ-उकराळ जोवण री जुगत मे डूब्योडी ही, पण अणूता इचरज री बात क वरतमांन नैं छेक भावी मे झाकण सारू वै निरध आधी ही। वरतमान रै सुभट झीणै पड़दै धकलो छिण ई अगोचर ही, आवगो अगोचर !

राईका-बाग टेसण री सोय सुलेमांन घर सू नीठ दो अेक फरलाग आतरै गुडक्यो ई हो के भाटा री लोरी सू घोड़ो टकरायग्यो के घोड़ा सू लोरी टकरायगी। नतीजो व्हैणो जको ई व्हियो। डलवर गाडी ठामण री जाणै जित्ती आफळ करी। आफळ अकारथ नी जावै। घोड़ै जुत्योड़ो तांगो अर सुलेमांन तो बचग्या पण घोडा रो जोग नी टळयो। कावळ सपना ज्यूं आ कैड़ी अचांती पटकी पड़ी ! उणरी सास लेवती लोथ दूजै ई छिण पाखाण पूतळी ज्यू थिर व्हैगी। उणरी जळगळी आख्या घोड़ा रै घामलै पाछो सूखा खणक व्हैगी। जाणै अेक ई झोलै सगळा आसू खूटग्या व्है। आपरै हाथा मोत रो झिगद्यो करयो तो ई वा पाछी जीवती कीकर व्हैगी ! तो कांई वो मोत रै भरम साप नैं मारयो ! नी नी, सांप नै नी, साप्रत मोत नै मारी। पण वा मरया उपरात ई मरी कठै ! जीवती नी व्हैती तो घोड़ा लग कीकर पूगती !

मारग बैवती भीड़ तर-तर ओळू-दोळू अेकठ होवण ढूकी। म्याना रो छाण काढ्या पैली के चूक किणरो हो, घाड़ो आपरै ठायै पूगण सारू पकावट तवड़ली ही। मूडा रै पछै ओजरी रै पांण सड़क माथै गुड़नै वो आडो पसरग्यो।

कळ रै रमेकड़ा री गळाई सुलेमान हेटै उतरयो। तड़ाचां बावता घोड़ा

कांन्ही वौ सूनी-सूनी मीट टगमग भाळतौ रह्यौ। डील री बंधोकड़ी रोड़्योड़ी रातो-लाल रगत भेजा रै खुलै भखनाळ धक्क-धक्क बैवण लागौ। काळूटी सड़क माथै अेक लांठो घेर बणग्यो। सुलेमान जगजगती आंख्या जोयौ—बूथा री बूथा लाई ढब-ढबनै वारै उफणै। घाटी रै तणकारौ देय घोड़ौ ऊठण सारू ताखड़ा तोड़्या पण भरै नी पड़ी। पण तो ई आपरै धणी रै नैणा छहली सीख सारू अेकर तो झांक ई लियो। कैंड़ो कावळ विजोग हो ! अबखो अर विडरूप। बच्योड़ो तमाम आपाण च्यारू टांगा नै सभळाय, घोड़ौ दो-तीन तड़ाचा वाइ के च्यारू री च्यारू टांगा अेकण सागै अकड़ीजगी। पुट्ठा री पळकती आब होळै-होळै मगसी पड़ण लागी। पण रातो-रातो रगत हाल चालू हो।

सिग्या-बायरो सुलेमान रगत रो कूंडाळियो इण गत अेकटक जोवण लागो, जाणै आतरै ऊभो ई दीठ री वूक आवगो रगत आपरै अतस अेकठ कर लेवैला। उणरी अणियाळी मीट अतीत रा पड़दा नै छेक सुभट देखण लागी के इस्माइल रै पेट सू अेकर इणी भात रगत उफण्यो हो। बीबी री वै सूनी पाथरयोड़ी आख्या ! रहमान री लस्टम निरजीव काठी ! कबर मे ऊडी दफणायोड़ी, अकबर अर हनीफ री भोळप हाल ओळबा देवती व्हैला, अब्बा, म्हानै दफणावण रो इत्तो आचो क्यू करयो ?'

के अणछक मोटर रौ धणी, भाटा री ठेकेदार, अेक पावंडो धकै बधनै सुलेमान रै सार्थ हाथ धरतो बोल्यो, 'मत घबरावो बड़े मिया, घोड़ा रो पूजतो मोल म्हैं चुकावूला।'

सुलेमान झिझकनै ठेकेदार साम्ही अैंड़ी बळती निजर सू जोयो के उणरै होयै धूजणी वड़गी। पछै सुधबुध परबारा ई सुलेमान रा होठ मुळमुळाया, 'रहमान रो मोल चुकावैला ? थू ?'

घोड़ा रै आंगै दूजोड़ा रहमान री तड़ाचां वावती मौत देख सुलेमान री आंख्यां रातोड़ घूळगी, जांणै डील रो आवगो रगत अबार बारै खळकीज जावैला। अचाण-चक घाटी रै झटकै वो सूनै आभै ऊचो भाळयो—इस्माइल रा पेट सूं हाल लाई उफणै। बीबी री भूखी-तिरसी आंख्या च्यारू दिस भटकै। अकबर रै आखै डील राद रिगसता भण असमान सू रादरड़ो राळै। रहमान री लोय तूफाना री झाट झेलै। वो अेकर वळै मीट झुकाय रगत रा कूंडाळिया साम्ही जोयो। होळै-होळै मगसी झाई धुळण लागी ही। वरसा जूनी आवटती अमूझणी आज किणी धमाकै फूटयां ई सरैला।

जुगानजुग सेव्योड़ा सैंसकारां रो हिमाळो उकळता झाळमुख रै अेक ई हिलोळै, किळी-किळी होय खिड़ग्यो। उणरी आख्यां किणी नै भसम करण सारू ताखड़ा ताड़ती लखाई। ज खुदा के भगवान सरब-व्यापी नी होय थलंपा आतरै किणी अलायदी ठोड अेक ई ठूंण लुक्यांड़ो व्है तो ई उणनै भसम करण जोग उणरी आंख्यां वा अखूट लाय ही। दांत किटकिटाय जाणै सुन्नपात रै आकरा वो आवेस जोर झाळूळो होय गाज्यो, 'हूंस, ओ संतान री ओलाद, हूंस ! अबै थारी हूंसी री म्हारै हीयै तुम जित्ती ई काण कोनी। हूंस, खुलै-थाळां हूंस ! संतान री ओ...ला...द...!

मपीणौ

अेकर 'क' गांव में कलेक्टर सा'ब आया। वै दिनूंगा अेक कप चाय अर आधा वटिया री कलेवौ करयौ। रोटी वेळचां पतळा-पतळा पांन जैड़ा दो फलका नीठ अरोग्या। सिझ्या रा ब्याळू ई को करयौ नी। अपचौ व्हैगौ। चाय मे आधौ चिमचौ भैंस रौ दूध हौ, जिणरी चिकणास सू हाजमौ बिगड़ग्यौ।

रात रा हथाई मे इण बात री इज गागरत छिड़गी। आप-आपरै मपीणा परवांण। उतरतौ मिगसर। कऊ रै ओळू ठोळूं लोग खेसला, पटूड़ा अर कावळिया ओढ्योड़ा बैठा हा। तेरस री चानणी रौ झीणौ उजास अर कऊ रै तप रौ मुघरौ पळकौ। जाणै सोना री बीठी मे केसरिया नग जड़्यौ। सांम्ही बैठा लोगां रा मूडा झाळ री लपटा सू पळपळाट करता। जांणै नाडी रा पांणी माथै सूरज रौ प्रतम नाचतौ व्है।

नीबौ बावौ दो-तीन ऊंडा-ऊंडा निस्कारा न्हाकतौ, अेक जाडी कठफाड़ कऊ मे देवतौ बोल्यौ, 'भलां बळोता टाळ कऊ मे तप कद रैवै ? चूल्हा मे ईंधण रै जोर ई आधण उकळै। खात अर पांणी टाळ खेत में साख कद आपौ संभाळै ? करम फूटनै हाथ मे आया, लप धांन खायनै अै काईं कलेक्टरी करैला ? काईं न्याव करैला ? इण काया मे सगळी माया अन्न री ई तौ है। अन्न सूं ईं अकल उपजै। अन्न सू ईं करार बधै। देखौ जमांनौ परवारियौ के आधा चिमचा दूध सूं ईं अपचौ व्हैगौ। गिणिया दिनाऊ तौ आ लोगां नै अन्न रौ भोग लगाणौ पड़सी। इण देस

रा अभाग के अै लोग राज करै !'

हाथ-वसू छिण सूं रपटनै बाबौ माळण वरसां री जूंनी ओळू मे धमाक देदी। नी मथारौ, नी तळ, नी पाणी अर नी छोळ। तौ ई बाबा री छिमक्यां चालू ही। तठा उपरांत अेक सूटी तणै ऊंडा निस्कारा रै सागै जमी माथै जोर सूं हथाळी पटकनै बाबौ धकै कैवण लागौ, 'हूं म्हारै टाबरपणै घड़ी दूध दौडतौ पी जातौ। दिन मे चार वगत रोटयां रौ ठोरौ देवतौ। आथण-स्वार वत्तीस सोगरा मठोठ जातौ। धापणो चीज कांई व्है, मोटयारपणै कदै ई ठा को पडी नी। कड़का करती भूख लागती। टंक रा आठ सोगरा, मेड़ता रै तोल रौ दो सेर दूध, अेक पारी ऊंनी छा टाळ पेट रा सळ ई को नीसरता नी। अस्सी नैडा लिया है, दस-बारै सोगरा तौ राव में चूर आज ई सबोड जाऊं। रांम-रांम देखौ बीसी बिगडी।'

गांगरत मतै ई आपरी ढाळ गुडकण लागी। आप-आपरै मपीणां रौ माप ई सगळा नै खरौ लागै। आसूजी मोची बोल्या, 'लीतरियै गांव रौ मैसू मारा़ज बत्तीमा तोल री पच्चीस सेर खीर डकार जातौ। हाल जीवतौ बैठौ। ठौरमठौर। पक्को साजानी दो सेर घी रौ झरझरतौ सीरौ अबार खा जावै। दांत ई को लगावै नी।'

जतनसिंघजी बोल्या, 'थांरै रांमजी भला दिन दै, देखौ याद नीं आवै, नाव होटां अटक्योड़ो...हां, थांरै जिरै रादळियास रौ लखजी मेडतियौ साबता बकरा नै अेकलो अरोग जातौ। तेरह सेर बाखर में तौ दूजां री पांतो को आवण देतौ नीं। अै बीटण रा समदरसिंघजी मांम टाळ टुकड़ौ ई को तोडै नी। लारला बीस वरसां सूं टेमोटेम तीन सेर मांस रौ जांणै नेम इज है। हाल तांई भगवांन निभायां जावै। आगै रा करम कुण बांचनै देख्या।'

जतनसिंघजी आगै ई की कैवणी चावता पण जोरसिंघजी आपरी वांण मुजब वांनै बिचाळै डकरावता कैवण लागा, 'तीन सेर मांस रौ कांई तौ रावणी अर कांई उणरौ वखाण करणौ। अपारै लखजी मेड़ड़ आखा हिरण रा सूळा दारू रै सागै घुरबण में चट कर जाता। पछै रोटयां रै भेळमभेळ आखौ हिरण होम स्वाह। यूं तीन सेर मांस रौ ई रोवणौ रोवै।' बिचाळै धांसी आयगी। खंखार रौ इचको अेक कोन्ही थूक कैवण लागा, 'म्हारै साथै फौज मे मेरामिया रौ चांदावत केसरसिंघ हौ, टंक रा सदळा-सदळा अस्सी फाफड़ा खाय जातौ। पचास, साठ-साठ धावणिया तौ केई जवांन हा।'

मारूजी दरोगौ बोल्यौ, 'दूजी बातां री तौ म्हनै सोय कोनीं, आपरै हायां ठाकर बिजैसिंघजी नै खाखरां साथै सेर माखण रोजीना सिरावण में जीमावतौ।'

'सेर पक्कौ के कच्चौ।' जोरसिंघजी संका कीवी।

मारूजी कान अपड़तौ बोल्यौ, 'रांमजी झूठ नीं बोलावै, सेर कच्चौ, अगांरै गाव रौ, बत्तीसा तोल रौ। कलेवा पछै आयै ऊन्हाळै दोपारां माळेर व्है जैडा पांच पइ़दी रा लाडू रावळै अरोग जाता। जैडी खुराक वैड़ौ ई करार। जांणौ इज हौ, चिमटी सूं बिजैसाही रिपिया रा आखर भिटाय देता।'

हरको भाई हथाई मे पणकरौ अबोलो रैवै। सगळां मूं पैली आवै अर सगळां मूं पछै जावै। बोलौ-बोलौ कऊ मे तप करतौ रैवै। कदेई कदेई बोलै तौ टेठबदियौ। फोरी-पतळी बात नीं करै। मिठाय-मिठाय मेटाव सू कैवण लागो, 'अै

ढांणी वाळा हइया है नी—वचनजी मैं उगजी, आंरै दादा री बात है। वै दो भाई हा। अेकर वांरै वीसेक आदमियां री लास करी ही। जोग री बात के उणीज दिन रावळे सरसर ही। डइयां रै अेक ई लास्यौ को पूगौ नी। अेक विधवा बैन ही वांरै। वा लांठी खारी में तीन घेळिया खीच, अेक घेळियौ खाटौ अर अेक मोटा तेल रो चाडौ भरनैं लेता पूगी। रेट बीस आदमियां रो वाखर हौ। दोनूं भाई टूका जकौ अेक-अेक जणा री पांती गळकावता गिया नैं खारिया री अेक-अेक पाथ उतारता गिया। बीस मिनखां रौ वाखर आ'र करग्या नैं बीस आदमियां रौ छेत वाढ न्हाखयो।'

चनणोजी नाई ताखौ राख आपरी बारी अटोपली। 'खवासपुरा रै गोवळिया साघ री खुराक तौ सुणीज व्हौला, काईं बताऊं! किण सूं छांनी! महादेवजी रै शरणै आठे री माल सोळै आदमियां रो जीमण अेकलौ निगाळग्यौ। डाकी लारै खाली वासण छोड्या। बस पूगतौ तो वांनै ई को छोडतौ नी। औ जीमावण वाळौ म्हैं खुद जीवनौ बैठौ।'

सिवरांम भाई बोलै कांईं बोदे! कुलळी खमडोळ करतां कह्यौ, 'जद इब तौ बेटा-पोता रोवैं। बैगा सिधावौ तो वांरी दैण मिटै।'

दोनूं बाळगोठिया। माहोमाह खिचर-खमडोळ करयां टाळ रंजत नीं व्हैती। चनणोजी अगूठौ नचावता कैवण लागा, 'थन्नै वाळै पुगाय, तीहरा रा मूंग चाख्यां उपरांत थकै री त्यारी करूंला, म्हारौ सोच मत कर।'

'थारौ सोच तौ थारै जायोडा नै ई कोनी, म्हारी बारी कद आवै?'

भोळची दरोगो उणनैं ओझाड़तां लांबडधकै लियौ। 'वंतळ-बिगाड़ तो थारै माजना रौ सौ-सौ कौस नी लाधैं। कठी री बात कठी उछेरी। नित नाक माथै खायां टाळ नेहचौ नी व्है। अबै बिचाळै भंज पटक्यौ तो थांनै जबरू री आंण है।'

पांणदार बेटा री आण दिरायां पछै सिवरांम भाई रौ पसवाडौ नी फिरतौ। हथाळी में कांकरा कुदावतौ थोडी ताळ माडै माठ झेल्यां बैठौ रैवतौ। पण मोकौ लाग्यां ऊंधी-अंवळी खळकाया टाळ नीं ढबीजतौ। बस परबारी वात ही। भोळचौ आपरौ जाब्तौ करया उपरांत कैवण लागौ, 'आगा क्यूं जावौ, अपारै गांव रा दलजी बाजी, रतनजी दाजी घडी सीरो सागी ठोड बैठा गळै उतारलै। धैनजी दाजी पंद्रै सेर खीर रौ गोवणियो अेकर होड माथै ऊभा-ऊभा ई गळकायग्या।'

तेजा मारज आखतौ होय अजेज आपरी बारी झापी। 'ताखा-माखा करता घणी जेज व्हैगी। मल्ला भाई बारी ई नी आवण दैं। उडीक्यां पार नीं पड़ै। आपरै खपतां दूजा री बारी कुण आवण दै! कणाकला खीर, दूध, घी अर सीरा री गांगरत गावौ। मीठी अर चीगट री चीजां कुण नी खावै? लूखा धांन री मरदाई है। औ ताजूडो तेली दोय कम तीस सोगरा फगत लीली मिरचां रै लगावण कोरा ई मोट जावै। नीं खावतौ ढबै अर नी सूसाड़ा करतौ। वादीलौ बिचाळै पांणी ई को पीवै नीं।'

कऊ री हथाई मोकडूं बैठ्या तेजा-माराज री फोटू खींच इंदर भगवान घल्ता में केमरौ घालतौ ई जोर सूं बोल्यौ, 'माराज इता काईं मोदीजौ। लूखा टिक्कड अर लीली मिरचां है तौ खज ई, अखज तो कोनीं। गढ़सूरिया रौ हुरजी बावरी होड़

किलो गोबर अर घासलेट रो करबो अेक ई सांस पेट री दीवड़ी ऊंघायले ! बिचाळै बिसाई नी खावै। आ तो कोई बात ई व्ही।'

पछै मतै ई जोर सूं ठहाको मारनै हंस्यो। सगळा भेळमभेळ हंस्या। हथाई में नवी चाळ-चोळ जागी। जसजी राईको आगूच सावचेती रै ओळावै माडै बोल्यो, 'इंदर-भगवांन थांरी चूंधी आंख्यां रो म्हांनै तो पतियारो नी व्है। कैंडो सांतरै तेवड़ां रो घट्ट लाग्योड़ो हो। सुण्या भूख भागती। पण अबै इण सूं हेटा मत उतरज्यो, थांनै मांनो जिणरी आंण है। तो रांमजी मगळी दुनिया खानर उम्दा पुरमगारी करै के संताणवै री साल म्हारै तिलां री लास करी ही। ठाकर जूझारसिंघजी आपरै भर-मोटयारपणै हा। पचास दाडमिया, घडी दाळ नै दो सेर घी खायग्या। बूक देयनै छुकलियो पांणी पी जावता, छांट ई नीचै को ढोळता नी।'

राजसिंघजी थोडा-घणा कोगतिया। रिगलां करचां टाळ मानै ई नी। ताळी बजाय हंमता थका बोल्या, 'चौखळा री गांगरत में आं छगजी सेवग नै पांनरग्या ? खाय मे छोरो अर गांव ढिंढोरो। खुद रै मूंडै बयान दो, संको कांई काम रो ! खातां लाज को आवै नी तो अबै कैवतां लाज क्यूं आवै ?'

छगजी सेवग को लचकांणा पड़ग्या। माडांणी थोड़ा मुळकिया। बात नै परोटता थका कैवण लागा, 'खावण-पीवण री लाज कैंडी ! तारां छाई रात है, भगवांन कूड़ नी बोलावै। कोई खवाडतो व्है तो अवार इणी सांयत ब्याळू करचां पछै ई तीन सेर पक्को सीरो खा जाऊं। फोरी-पतळी चीज सारू मूंडो नी बिटाळूं।'

मिवरांम भाई हथाळी रा कांकरा हेटै राळतो बोल्यो, 'सीरा रै घपांपै मूंडो नीं बिटाळथो तो भूखां मर जावोला। आपरै टाबरां नै सीरो खवाड़तां थांरो कुण ई मनवार नीं करैला। भरोसै रैजो मती।'

छगजी सेवग कीं भूंडो नी मांन्यो। 'भरोसो तो म्हैं म्हारी छीयां रो ई नीं करूं। पण तो ई सगळा मिनख थारै जैड़ा सूम नी व्है। कोई खाय राजी व्है। कोई खवाड़ राजी व्है।'

मांगू गुमांई री खुराक साव मोळी ही। टंक रा तीन फलका नीठ भावता। इत्ती ताळ भेळो-भेळो होय मन-माडै खावण-पीवण रा बखांण सुण्या। अबै ढवणो उणरै बस री बात नी ही। सफाई देवतो बोल्यो, 'जे वत्तो धांन बिगाडणो नामून री इदकाई व्है तो नाकुछ ईली नै महाभारत रो भीम ई नी पूगै। ईली मणाबन्द धांन रो पोखाळो करै अर पीच्यां पिदड़को निकळै। मोटा लोग मगज री गुराक खावै। डील री खुराक खातर तो ढोर-डागर उबरता पड़या। बळदां जित्तो बारर परणो किणो मिनख वंदा रै बस री बात कोनी, तो कांई फगत खुराक रै मरोसै बळद मिनख सूं वत्ता व्हैगा ?'

जगरांमसिंघजी नै मांगू रा बडबोल की अटेरा लाग्या। खीजता थका बोल्या, 'बगमो. गुमांई माराज, बगमो। आं पोथी कुतरकां मे की धरपो नीं। दीवा मे तेल रहयां ई चांनणो व्है ! खुराक टाळ आपांण कठै ! बळद खाखर धरै जद हळ तो बारै करार दुनिया पळै। मसीन धुरापुर खराक टाळ ठंठ। इण गुदड भवरिया रै जोड़ै कोई पूरनै तो बतावै ! सात सेर दूध री घणी ऊभो ई घुरड जावै। घणो करी तो बिचाळै सांस ई को लेवै नीं। काळं ई हार जीत सगळानै देयतो।'

नाव तो धूळियो, पण हथाई रो सिणगार। मजमा रो रूप। जगरामसिघजी नै ढावतो कैवण लागो, 'यापड़ा दूध री काई तो हार जीत लगावणी, आंधी राड ई डकार जावै। म्हारै निजरां देखयोड़ी वात। हूनाव गांव रो जेठोजी सीरवी सात घांणी री तिल्ली अेक महीना मे फूलर करायनै सायग्यो। छोटा-मोटा सांड सूं नीं खाईजै। हुस्तंड व्है ज्यूं माच्योड़ो। चाठ रै प्रमांण! रंग जांणै तांवा री जात। निजर लागै जैड़ो। भरपूर बळद रै धीग मेलै तो घरत्यां टिकाय दे। अेकर जोग अैडो ई पीगो। भर चौमासै धणकिया री मांदगी टाळकी जोडी रो अेक बळद दग्यो देग्यो। पाखती नीवी री जात नीं। पांच-सात बोहरां री यहळी चढ़ग्यो। रीस तो धणी ई थाई पण जोर कांई करतो! मनाग्यांना बोहरो नी थरपण रो खण लेय खमखरी खाई अर दूजोडा बळद रै जोडै जुतग्यो। पछै तो केई लोग उलळ-उलळ हुकारा भरया पण अेकर नटया वो नी मांन्यो। गांव रै करसा सू सवाई नेपै पाकी। सुगरी धरती आपरो फरज उतारयो। बळद रै जोडै मिनख रै परसेवा रो औसाण वा कद राखती! दुनिया मे सगळो उजास मिनख री खुराक अर परसेवा रो इज है। अर अठी देखो तो साव क्यारो पीयोडो! समझ नी पड़ै के आं इस्कूलां मे लिखणो-पढ़णो भणावै के कम खावणो सिखावै। देखो जमांनो आयो। आधा चिमचा दूध सूं हाजमो बिगडग्यो। अंडा बाई-बंगा अफसरां नै कुण तो धारैला अर कुण स्तबो मानैला। बोलता नै ई बूक्ष आवै तद किणरो कांई भलो करैला! म्हनै तो हेंप आवै के आं आसंग-बायरा अफसरां नै कोई आपरी बेटी सूंपै कीकर है! दिन रा ई तागियां खावै, जका रात रा कांई चांनणो करैला! अै कागदी जवांन हाथ-पग तो हिलावै कोनी, पछै कठा सूं भूख लागै। सो खतां री अेक फारगती के मैणत रोटी मांगै। इण देस रो कांई ढग-ढाळो व्हैला, भगवांन ई बेली है।'

लाखीणी रात

आई दिन तौ नित-हमेस सिंझ्या रा मगसौ-मगसौ अंधारौ पावरै, पण सुहाग री रात मावांणी लाखां में अेक इज व्है। जगामग तारै-तारै चांद री इमरत बरसावती लाखीणी रात ! आज चंद्रावती माथुर सारू ढोल-ढमकै गाजा-बाजां आ रात आंगण झणकावती अवतरी। माळियौ गुलाब री माळावां सज्योड़ौ। मोरम री घमगोळ बायरा री कळी-कळी खिलगी। लीली झाई पोत्योडौ मधरौ-मधरौ अंधारौ जिणी री मीठी उडीक में कमममावतौ हौ। हीगळू ढोल्या री अलूणी सेज जिणी गळबाथ री उमाई तासडा तोडती ही।

आधी ढळ्यां चंद्रा री उडीक ई लानरगी। बाट निहार-निहार आंख्यां लूरी पडण लागी। बठैई मित-गोठियां री मंडळी, आज री रात पांतरै तौ नीं पडणी ! पण आज री आ लाखीणी रात पांतरै पडै जैडी है ? हींगळू ढोल्या रौ अंवळौ आखी ऊमर नीं छिलै। तद सेजां रौ भरतार चांदबिहारी भटनागर इतौ मवेळौ कीकर करघौ ! आज री रात रौ तौ अेक-अेक छिण अमोलक व्है।

घुड़का री पोडौ भरम स्त्रियां ई सोचती—सेवट अबै तौ आया। मन री लगांम झाल आपरौ आपांण काबू करती। आ कल्पणा री नीं, प्रीत री रात है। अेक छिन रौ तोटौ ई आखी ऊमर नीं पूरीजै। ढोल-दमांमै, गाजा-बाजां रै घूमै आ दबायती ई न्यारी ! अै तोल ई दूजा ! नित दोनूं टंक धावल-पीवण री खाटी पेट री भरणौ तौ भरणौ ई पड़ै, पण गोठ-घूघरी अर होळी-दीवाळी रै डिंगार रा तेवड़

ई न्यारा। वांरो साव ई न्यारो। रात रो अंधारो आपरो भल मांगै, पण सुहाग री इण लाखीणी रात रै चढ़ावा री तो उच्छव ई इदको।

पण दूजै ई छिण खुड़का रो भरम मिट्यां उणरो रूं-रूं लुलयको पड जातो। आपांण पाछो घुड जातो।

कळाई बंध्योड़ी पळकती घड़ी नै वा कित्ती वळा देखी तो ई उणरो आखतो मन नी पतीज्यो। घडी रै परताप उणनै वगत री पूरमपूर सोय व्हैगी तो ई घडी देख्यां टाळ धीजो नी व्हैतो। आज री इण मोत्यां जडी रात ई कांई वै साथी-साईनां री संगत नी छोडैला? इत्ती ताळ कांई तो पीवणो अर कांई सावणो। अर वा ई आज री रात! इमरत री ठौड़ दारू रा वळता घूंट आज री रात कद सोहै! पण वांनै की चेतो व्है तो! आज री रात ई दारू अर दोस्तां री संगत नी छूटै। पछै दूजी काळूटी रातां अर आज री जगामग लाखीणी रात में भेद ई कांई! कदास अठै आवण जोग सरधा ई नी व्है! होटलबाजी रो औ लफड़ो कांई अैडो जरूरी कै आज रै टांणै ई टाळ्यां नी सरतो। उडीक री रळी में मराबोर आंख्यां, खीज आवटण लागी। अेक ऊडा निसास रै सागै वा पूजतो आळस मोड्यो। जांणै मघरा लीला उजास रै आकरो बट लाग्यो व्है। खीज री दाझती मीट वळै घडी जोई—तीन बजण में सात मिनट बाकी। इत्ती रात तो उडीक-उडीक में ढळगी। अबै तो चुटक्यां रै समचै ढळै जित्ती रात नीठ घटै।

अणछक नाळ-चढ़ता पगां रो सुभट भणकारो सुणीज्यो। नसा में धत तांगिया खावतो भणकारो। कैडो अजब सुभाव है! आज री रात दारू री कांई दरकार! इण रात रो तो नसो ई उबरतो पड्यो। कठै ई नसा री धत लाखाणी रात री कांण-मरजाद ई नीं बीसर जावै! आ मोत्यां जड़ी रात पाछी कदै ई नी बावडैला। आपोआप नै संभाळण रै आंकस वा पिंतळ-पिंतळ जावै ही।

चांदविहारी चिपतां ई आडा रै ठोकर मारी। अेक फडको भींद करतो रो भीत सूं भिड्यो। चंद्रावती रै माया में बटीड़ उड्यो। भचकै हळफळाई होय ऊभी व्ही। कोई लाज री खातर नी, रूप-जोबन रै बधावै मूंडै झीणो घूघटो राळ अपूठी ऊभगी। अपूठो रूप दूणी मार करै।

धतोधत चांदविहारी नसा में ऊंडी छिमको मारचोडो हो, तो ई जाग रै किणी खूणै चेता रो रेसो अवस हो के वो पाछो किवाड़ ओडाळ सुयराई सूं चिटकणी दीडी। वो अेकदम उणरी पूठ लारै हो, तो ई तांगियां खावता पगां री इदक सावचेती चंद्रा सूं अंगै ई अछांनी नी रीवी। जांणै उणरी पूठ अेकण सागै पचासूं आंख्या परगट व्हैगी व्है। कलरावती गळ नै काबू राखण री बिरथा भाफळ करतो भारी सुर में बोल्यो, 'हाल तांई जागती उडीकै! गजब! गजब! पण आज री इण ओटाळ रात नींद आवै ई कठै!' की ढबनै वो अेक ग्यांन री बात छमकी, 'उडीक रा आणंद नै रळी रो आणंद नी पूगै।'

भिड़तां ई बधार तो नामी लागो। पण खुदोखुद मूं ग्यांन रै गेलै हालीज्यो कोनी। चंद्रावती रै खांधै धूजतो हाथ नीठ धरीज्यो। जाणै भाखर रो भार उलळ-ग्यो व्है। मांस घटणा रै समचै ई वा थोडी पसवाड़ै सिरकनै ऊभगी। धणी रो हाथ दूजै ई छिण ढील रै जोड़ै लटूमग्यो। वो आपरै खपतां दूणी सावचेती वरतनै

ठीमर बाता करणी चावतो, पण इदक सावचेती री आफळ मतै ई निपग्गा बोल उणरै मूंडै उछळ पड़्या, 'वाह ! लाज री अेडो स्वांग तो आज ई देख्यो। अर वो ई लाखीणी रात ! म्हारा सू ! गाजा-बाजा दवायती रै उपरांत !'

पछै वो आखड़तो चंद्रावती री कड़ियां हाथ घाल कलरायो, 'आज री रात तो सूवण री है अर थूं ऊभी ! ओ पाठ किसा गरू सूं सीख्यो !'

नी चेतो काबू हो अर नी जीभ ! चांदबिहारी वेलतो ई गियो, 'पद्मा तो आज ई की नखरा नी करया ! कांईं वा थारा सू कम मान-मरजाद वाळी है ?'

चंद्रावती री रग-रग, रगत री ठौड़ जांणै तिणगा उछळण लागी। केसां मे अेकण सागै झरणाटो माच्यो। वा बादळा री गाज रै सुर पूछणी चावती — कांईं कह्यो ? अेकर वळै दुसरावो तो जांणू । अेडी लाज-बायरी बात सुणतां ईं लाज आवै। कांईं आज रात ई पद्मा री संगत टाळ थांनै नेहचो नी व्हियो ? धिरकार है ! पण मूंडै चूंकारो तकात नी व्हियो। जांणै हजार अदीठ हाथा उणरै गळै टूंपो लाग्यो व्है। सवाल री धपळको पेट अर गळा रै बिचाळै ई कझळाइजग्यो। वा बीजळी री गरणाटी मुड़नै धणी रै सांम्ही ऊभगी, जांणै झीणै घूंघट म्यानो बूझती व्है।

आपरै ई मूंडै रा बोल जद चांदबिहारी रै कानां रडकिया तो उणरै भेजा री जड़ियां जांणै धड़ूणी लागी। छिण-पलक सारू वो आवगो ई आपरो चेतो बिसरग्यो। पण दूजै ई छिण चंद्रा री मून तरणाटी सूं उणरी भळकी रै जांणै पलीतो लाग्यो। झीणा घूंघटा रै मांय धावहता रूप री झबको पडतां ईं उणरी रीस रै अणियाळी त्यार लागी। ठोडी रो परस करतो डोढ मे कैवण लागो, 'कित्ता ऊंदरा खाय, हाजण बणी ! थू जांणै के म्हनै की वेरो ई कोनीं ! राई-रत्ती थारो खरड़ो जांणूं। बोल, सुणणी चावै कांईं ?'

चंद्रा री खीज ई पूरी खदबदै चढ़्योड़ी ही। अेक ई हचटै वा ठोडी वाळो हाथ झटकणी चावती, पण चांदबिहारी रा बोल तो जांणै उणरो अंस ई सूत लियो। उणरो हाथ आधो ऊठनै, है जठै ई थमग्यो। लीलो मधरो उजास उणरी आंख्यां सांम्ही वतूळिया रै उनमांन घूमण लागो। झुप्योड़ी बत्ती नै देख्यां अेडो लखायो, जाणै धप्प करती बुझगी व्है। उणरी आंख्यां काळो बोळो अंधारो पाथरग्यो। सुध-बुध अंगै ई ढोळै बैठगी। अेक अेडी अलायदी कावळ ठौड़ धमीड उडपो के नीं तो पाछो ओडो देवण री हीमत ही अर नो चुपचाप झेलण रो करार ई हो। वा राद री घूंटियो भरनै माठ कीवी। काठा दात भींचनै इण गत अबोली ऊभी रीवी, जांणै होटां तीव जड़गी व्है।

चांदबिहारी उफणता नसा माथै पाछो नीठ काबू पायो। बरसां सूं पीवण री बान रै पसाव उण माथै दारू असवारी नी गांठती। कदेई कदेई आडो-अवळो अवस टळ जावतो। दारू रो नसो झेलण रो पूजतो आपाण हो। तरणाटी सूं आगै दारू रो ई पमवाड़ो नी फिरतो। पण आज पद्मा री मनवार दर मनवार वो व्हिस्की घणी ई गियो। निन रै मपीणा सू होड़ो के पूण-दूणी चढायग्यो। जे बिगड्योड़ी बान अजेज नी केपटोजी तो अणूतो वेजा व्हैला। झीणो घूंघटो अळगो सेव मिटाय रै मुर कैवण लागो, 'देखूं रावळो मुखड़ो। चांद जेड़ो है के सूरज जेड़ो। यू थारो

उणियारो ई म्हारै वास्तै असेंधो कोनीं, तो ई आज बींद रो आंख्यां तूमार जोवणो चावू। अै कवि कैड़ा बावळा है? गजब रा ठूंठ, जको लुगाई री सूरत नै चाद री ओपमा दीवी। म्हनै तो इण मे कीं तंत दीस्यो नी।'

वो घळै ऊजड़ ढळग्यो। किण वगत गळै कांई बोल उछळ पड़ैला, उणनै कीं बेरो नी हो। कुड़ती-कांचळो हेटै दब्योडा उफांण सांम्ही हाथ करतो कैवण लागो, 'अरे हां, देखू थारा अै इमरत-घट। कित्तो हळाहळ बिस थावा मारै?'

चद्रा रै कीं समझ नी पड़ी के वा कांई करै अर कांई नी करै? कीकर ई धकनी जूंण गांथै जीवणी है, सो माडै निरांत करणी पडसी। माईतां रै घरै ओ पतवायरो रूप अर जोवन नी खटै। अबै तो अठै ई माडी-माठी जूंण ठिरड्यां सरसी। धिन अर सूग नै माईं दाट वा थोड़ी अळगी खिसकगी। चांद-बिहारी तांगिया खावतो, आखड़तो उण सांम्ही बध्यो। भारी गळै नीठ कलरायो, 'आज री लाखीणी रात दुनिया री आवगी लाज-सरम फगत थारै इज पांती आई? बाकी सै छिनाळ है? क्यूं? म्हारी भरवण, परो बगा ओ सकोच। लाज, लाज रै टांणै ओपै। आज आपांनै पूरी छूट है। गाजां-बाजां ग्यात कड़ूबा री दयायती है। आणंद री रळी पूरा मो अपांरी। रात ढळगी जको तो ढळगी। बच्योड़ी हाजरी में। अडीजंत। अैडी मौं न्है के आ सेज अलूणी रै जावै अर ओ माळियो अडांळो। आखी ऊमर ऊजड़ चाल्यो, घणो ई ऊजड़ चाल्यो। पण आज समाज री पूरी कांण-मरजाद निभावण सारू थारो पूरमपूर साथ चाहीजै।'

दूजो कीं पसवाड़ो फुग्तो नीं जांण चंद्रा उणी ठौड़ अवचळ ऊभी रीवी। माळिया-टोळिया के पालापूली करणा मे ई उणनै लाज आई। डिगमिगातो नाव भंवर तालकै छोड दी। गळै मन-परवारो मिठास घोळनी बोली, 'कित्ती ई छूट न्है तो कांई, बींद-बींदणी रै हीयै दुविध्या-संकोच रो होड़ो तो न्है इज। साचाणी, आ रै अतस कीं आळोच-पळोच कोनी?'

चंद्रा रा अै बोल सुण्यां, चांदबिहारी रै मूंछाळा मरद रै जांणै थापी लागी। नसा मे बळै अेक आकरो उफांण भभक्यो, 'हट्ट भेण्या! कांई टाबरा वाळी बात कीवी। लाज-संकोच अर म्हनै! वो ई इण ऊमर मे। अणगिण भेटकां रै उपरांत। थूं म्हारै हत्थै चढ्योडी कोई पैली जिनांनी तो है कोनी, जको लाज-सरम ई करूं। हां, अलबत्ता, पैलड़ी वार म्हनै खासी झिझक व्ही। थारी सोगन!'

माथा री किळी-किळी रै सागै, आखो माळियो ई किणी सुरंग रै धमाकै छीट-छीट व्है जावैला। धणियांणी व्हैतां थकां ई चद्रा रै हीयै धणी रा अै बोल मुळगा ई नीं झरया। आखर कांई हा, बिस बुझ्योडा तीर हा। उणरै परवारो ई उणरो आपो पेलड़ो तुडायग्यो। धणी रै सांम्हां धकै वधती कैवण लागी, 'बस, इत्तो इज लफड़ो है? लाज-सरम रा बेवला नै वगावण खातर इत्ती इज हूंस चाहीजै? पछै म्हैं किण वास्तै लाज रो स्वाग करूं। आप ई म्हारै रूप-जोबन रा पैला जजमांन नी हो?'

चंद्रा रै रगत री रातोड काळी पडण लागी, पछै किणरो डर? कैड़ो डर? रगत री रातोड है जित्तै ई लाज री झाई है। मन मे किणी भांत रो कीं गळैटो बाकी नी बच्यो। उणरो रूं-रूं आपरै मन मतै मुगत अर आपथापी व्हैगो। छेहली कार लोपतो, धणी रो हाथ झाल हीगळू ढोल्या सांम्ही सगतगावती बोली, 'पधारो,

म्हारा मदछकिया मारू, गाजा-बाजां रै डाकै पूरी मौज माणां सो अपारी है। पधारो, पधारो!'

झाड़-फूंक रै छूमंतर अेक ई फटकारै चांदबिहारी रो नसो आतरै उडग्यो तौ ई होस-हवास ठिकाणै नी आया। रगां मांयलो रगत ऊंधो वहण लागो। डील रौ आवगो करार जाणै अपळग इज व्हैगो व्है। माथा मे बाळोड़ी कीड़िया चेंटण लागी। आख्यां रा कोया जाणै आपरो आदू ठायो छोड बारै छिटक पड़ैला। फाटोड़ी-आख्यां वौ चंद्रा रै सांम्ही इण विध जोवण लागो जांणै किणी भूत-पलीत रै टूणै झिलग्यो व्है।

चंद्रा अेक डंक वळै चुभायो, 'पधारो म्हारा गाढा मारू जी, फगत दो पग धकै बधण री जेज! रात रो जोबन ढळण वाळो इज है। नीं आप म्हारै सारू पैला मरद हौ अर नी म्हैं आप खातर पैली कांमणी। पछै कैड़ी लाज, कैड़ो सकाच! पधारो, फगत दो वीद-पगल्या भरण री जेज!'

पण चांदबिहारी भटनागर सारू वै दो पगल्या भरणा ई अगम व्हैगा। लकड़ी रै पाटै गांठड़ी होय गुडग्यो। हीगळू ढोल्यो खासो आंतरै हो। गलाफड़ां सू थूक रा रेला सुरंगै गलीचै ढुळण लागा। जोजरी गळ वौ की न की गरळायो तौ अवस पण वै अधभदरा बोल चंद्रा रै की पानै पड़्या नी। फगत पद्मा रो नाव आधो-दूदो उघड़्यो। वा दांत पीसती गळै रा साबत आखर चबाय लीन्हा।

न्यात-कड़ूंबा री छूट रौ आणद हाका-धाका सातरवाड़ै ढळायो।

आज रै सुहाग री उण लाखीणी रात सू पैला चांदबिहारी भटनागर कुण जाणै कित्ती रूपाळी रमणिया री सेजा रो भरतार बण्यो अर चंद्रावती माथुर कुण जाणै कित्ती सेजा री साथण...! पण आज री लाखीणी रात तमाम न्यात-कड़ूंबा री गाजां-बाजां दवायली अर रळी री छूट उपरांत कोई किणी रौ साथ नी निभायो। लाखीणी रात अेक छदाम सू ई माड़ी व्हैगी।

माळिया रै बारै हरया मे आखी रात नौबत-नगारा रा धड़िंग उडता रह्या। बाग रै लोलै छिबरां अणगिण सुरंगा लट्टू मधरो-मधरो उजास घोळता रह्या। पण माळिया रै मांय...!

बातपोस

म्हारै गांव रा रासीजी बाजी बातां रा ई पूतळा। चोखळै बांजिदा। कुबेर रो खजानो खूटजा पण वारै ओखाणा रो खजानो को खूटै नी। लांबै हाथा, फटकारा देवता अैडा मिठाय-मिठाय बोल काढै, जांणै फूल झडै। डीगो अर पतळो डील। लांबी नस। तीखो नाक। काठी परवाणै फवतो उणियारो। दांतां रो चोको न्यावेक बारै। तावा-बरणो रंग। लट्ठा री ऊंची धोती, बिना फड़का री। लांबी गोळ बाया रो ढीलो कुड़तो। मटिया गोळ फेंटो, डावै पाहै कीं तीखो अर डीगो। डावै कान रा कोकरा रै सधीकै अेक झाड-बोर जित्तो मस्सो। बाजी उणियारै रा फूठरा तो घणा कोनी पण सुहावणा लागै। ऊंचै आयोड़ा धोळा चोका माथै वांरी हंसी अर वारा मीठा बोल अैडा लखावै, जाणै सारदा माता हम बिराजी।

वांरी वंतळ सुणवा नै कोई मारग वेवतो ढब जावै तो पछै भेंस चूघती व्है तो ई पग को ऊठै नी। कदैई कोई बूझै, 'बाजी, थानै अैड़ी ठावकी बातां कठा सूं उकलै, की तो म्हारै ई पल्लै घालो। बाजी मुळकता थका हाथोहाथ फारगती करै, 'अरे लाडी, अकल उधारी ना मिळै, हेत न हाट बिकाय। आप-आपरै हिड़दा री उगतियां है, अै कोई देवण-लेवण री चीजा कोनी। अकल सरीरां ऊपजै, दीन्हा लागै डांम।' बरसतै पाणी री छांटा गिणीजै तो वांरा ओखांणा गिणीजै।

अेकर मुआवजो लेवण खातर वांनै जोधपुर जावणो पड़्यो। चार-पाच दिन काठा काया होय पाछा खाली हाथ आया। पछै क्यू पूछो ! सोर रै कोठार जांणै

तिणग पड़ी। मोटर सूं उतरता ई खळकाई, 'नकटा देव अर सुरड़ा पुजारी। अैड़ा ई बाई बंगा राज चलावणिया अर अैड़ा ई ओटाळ अैलकार। पन्ना भूवा रा पूत अेक-अेक सूं आगळा। इण रूळै राज मे तौ सूक टाळ पान ई को हिलै नी। बात करण रा ई पईसा मांगै! ठेठ लिलाड़ हेटै बूक माडचोड़ी। कीकर धापै! किण-किण नै समझावस्यां, आ तौ कूवै ई भाग रळी। पैला जाणतौ के इण राव मे की न की तौ भळियो कम व्हियो व्हैला। पण डूगरिया रळियामणा, आगा ईसर-दास। कांम पड़ियां ईं परख व्है। इण रुळियार दोटै न्याव कठै? उपासरै कांघसिया रो काईं कांम!'

बाजी बातां रै बिचाळै ई अजांण चांतरा माथै जमग्या। खाख मायलौ मटिया खत्तौ पाखती धरघो। प्याऊ कांनी लाबै हाथ रो लटको करता बाल्या, 'झूमरिया, अेक लोटो तौ भरला, थारो राम भलो करै। बातां-बातां मे ध्यान ई को रह्यो नी, ताळवो खुरदरो पड़ग्यो। साबळ बोलीजै ई कोनी।'

झूमर लपकनै पाणो लायो। बाजी बूक देय धापनै पाणी पीयो। लोटो पाछो झिलावता बोल्या, 'जीवतौ रे मोटयार, हजारी ऊमर व्है थारी।'

छूटयोड़ी बात रो नाको पोवता कैवण लागा, 'जथा राजा नै तथा परजा। अेक ई तारत रा ठीया।' पछै हसता-हसता ई लगोलग पधराई, 'दोनूं ढूगा अेकण ढाळ, जै गोविन्दा जै गोपाळ। ओ तौ हबोहब सूक रो इज आधळ-घोटो है। पछै अैलकार क्यूं ओछो ताणै! रूखा जैड़ा टेटा नै बाप जैड़ा बेटा। मां करै सो धी करै। आ तौ देखादेखी री चलगत है। कैड़ी मोज बणी! बांदरी नै बीछू खायो। जात री राईकांणी नै फेर डाकण, ऊंटां चढ़-चढ़ खाय। अैड़ी वगत आई नी कोई आवै। पांचूं आंगळिया घी मे, माथो कड़ाव मे। मामा रो ब्याव अर मा पुरसगारी, जीमो बेटा रात अंधारी। कुण कैवै ब्याव भूंडो!

'दो-तीन दिहाड़ै तौ नेठाव राख्यो। जाण्यो, कदास डाळी निवैला। पण सापा रै किसी सास! दूखै जिणरै दूखणो अर पाकै जिणरै पीड़। अै बाबू लोग कदै ई किणी रा व्हिया? बाढ़ी आंगळी माथै ई को मूतै नी। जिळोक किण सू साथ पाळै। अै तौ नेम ई धार लियो के सूक टाळ सगै बाप रो ई काम को करणो नी। आंरा सू फेर काईं बण आवै। ऊंदरो रा जाया तौ दरड़ा ई खोदसी। कागलो तौ बीट ई करैला। अै बाबू तौ सुनार लखणा, आपरी मा रा ई हाथळ घाड़ लेवै। म्हारी अकल तकात कह्यो को करघो नी। जमी सूता आकास चाटै। मन मे महाराजा बण्योड़ा। पाघरो ऊपरलो जोर जतावै। काकै री पीयोड़ी, भतीजा नै ऊगै। मिनख नै मिनख ई को मानै नी। फगत आपरी मारघोड़ी नै हलाल गिणै। पण ससार मे बड़ाबड़ी रो खेल है। किणी लांठा अफसर रो टेलीफून आयो। फटाफट कांम व्हैगो। आकरा देव नै सै कोई निवै। म्है तौ चार पांच दिनां मे मती-भोत पतवाणली के साठी जिणरी भैंस। लांठा री सकरांयत है। पईसा री रांर है। लांठा रो डोको डांग फाड़ै। गरीबां री कठै ई दाद-फरियाद कोनी। दूबळो जेठ दवरो बिरोबर।

'पैं तौ सगळा जांणो इज हो के म्हारै इतौ रटाव कठै! बणै झाळ ऊठी। मूंडै-मूंड कह्यो, गायां तौ उछरगी नै पोठा सारै छोडगी। टका री हांडी फूटी, जिणरो सोच नी, पण गिंडक री जात तौ पिछांणीजगी। अबै मोकला मे तौ हूं ईं पाछ को

रापू नी। खुद मरस्यूं पण रांड तो थनै ई कंवाड़ छोडस्यूं। सेवट री लार खुणियां सूधा हाथ जोड़नै कह्यो, 'थायो थारै वेस स्, भिणियां रै खेत बारै काढ़। परणाई थारी छाछ, कुत्ता सू छुडाव। म्हारै मुआवजो को चाहीजै नीं। ऊथळी लारै दायजो ई सही। जद कड़ाही री खीर ई ढुळगी, तद खुरचण चाटया कांई साधो सागै।'

ओळू-दोळू ऊभा मिनखां रा उणियारा झबूकण लागा। कैंडी खरी-खरी सुणाई। तिरसिंघजी रो ई सको नी आवै। वांरी वातपोसी री बेजोड़ लकब सू थोड़ो-घणो ईसको ई व्हियो। सगळा रै ई कण्ठां थूक तो उबरतो पड्यो, पण अंडी उगतियां किणनै उकलै। रासोजो बाजी ई मुळकती मोट घुमाय थकै कंवण लागा, 'देखो आजादी रो रुळियारो मच्यो। नितोताई बेटो जायो, नाळा पैली नाक बढ़ायो। आं लखणां नै बळै आजादी! कुत्तो नाळेर रो कांई करै! इण राज मे तो आधा पोसै नै कुत्ता खावै। जठी देखो, उठीनै ई अल्ला री मा रो चाळीसो। पण कांई करां, किण आगै जाय कूका? भैंस आगै भागवत बाचणी! पण भाई, आप कमाया कामड़ा, किणनै दीजै दोस, खोजीजी री पालड़ी, कांदा लीन्ही खोस। भाटो उछाळनै माथो माड्यो। आपरै हाथा वोट री परची बाळी ही। दोनू गमाई रे जोगड़ा मुदरा नै आदेस! अबै काई कारी लागै? चोर रो मां मटका मे मूडो घाल रोवै।

'नागडा ढोल धुरावता फिरै—गरीबां रो राज आयो। नांमी राज आयो! बावोजी घूणी तारो के वेटा जीव जाणै! गरीबां नै राज कुण सूंपै! लरडी माथै ऊंन कुण छोडै? बकरी रै मूडै मतीरो कुण राखै? फगत चुणावां रै टाणै गरीबां नै चितारै। वानै हाथ जोडै। लालरिया लेवै। खत पपोळै। गरीब छीदा पड जावै। पण वीरा, ओ धन तो धणिया रो है, गुवाळिया रै हाथ तो गेडियो है। इत्ता क्यूं चौडा पड़ो! इत्तो क्यू जोर जतावो! खावण-पीवण नै खेमली, नाचण नै नगराज। वोट दिया उपरात कोई हीग लगाय को बूझै नी। गरज मिटी अर गूजरी नटी। इण राज रा सूना जोड मे खावै सूर, कुटीजै पाडा।

'देखां इज हा के आ बारह बरसां मे कांई खांगा करया? कांई नव री तेरह करी। जको ऊगतो ई को तप्यो नी, आथमतो कांई तपसी। आरी पोथी बाता मे कण थोड़ा अर काकरा घणा। कोरो थूक बिलोवै। पसरी मे पांच सेर कूड बोलै। कोकर पतियारो व्है! भूखो तो धाया पतीजै। पण आरी उडायोड़ी चिड़ियां तो रूखां ई को बैठे नी। आरै गाला मे घोड़ा दौड़ै। पण अै तोतरा घोडा वेगा ई थाकेला।

'आं मदछकियां नै डूगर बळतो दीसै, पगा बळती को सूझै नी। खुद रा दोसण ढाकै, खलकां रा उघाडै। खुद तो गरूजी बेंगण खावै, दूजा नै परमोद बतावै। खेरणी सूई नै हसै। तवो हाडी नै काळो बतावै। परायै धन लिछमीनाथ बण्योड़ा है। थूं म्हारा मूडा मे आगळी दै, म्है थारी आंख मे दूं, जकी बात इज व्ही। थारी आगळी खा जाऊ, थारी आंख फोड दू। कुण ई देस रो भलो को चावै नी। आपआपरी रोटी हेटै सै खीरा देवै। घर-घर सागै अै इज माटी रा चूल्हा। जाणा सब हा, पण दरसावा कोनी। चिड़िया सू किसा सेत-खळा छाना। धांन खावां, कोई धूळ तो नी चाटां। परणीज्या नी तो कांई, जान तो गिया हा। राज करयो नी तो कांई

देखां तौ हां।'

अेकमेक व्हियोड़ा मजमा रै बिचाळै अणछक किणी रै मूंडै मोसा री तीख सुणीजी, 'बाजीसा, आपरै मूंडै अैड़ो हळाहळ कूड़ नी छाजै। ठिकांणा री परधै रै भेळमभेळ पीढ़ी दर पीढ़ी आप रैयत माथै राज करयौ। अर कैड़ो राज करयौ, उणरो जाच म्हांनै है। मरयां उपरांत ई नी भूलां।'

जांणै काळिदर री पूछड़ी माथै पग पड़यौ। रासोजी बाजी रीस में भळ-भट्ट होय अठी-उठी जोवता बाल्या, 'आ लाडै री भूवा कुण है? कदास इणनै जाच कोनी के म्हारी बात बिचाळै ओड़ो देवणिया री कैड़ी काई गत बिगड़ै।'

मोटयार री आतड़ियां रै जांणै आकरो बट लाग्यौ। वळै उणी भांत दाझतौ मुळक रै आखरा बोल्यौ, 'उण दिन म्हारै बाबलिया री गत देख्या आपरै होठां यांम नी लागती तौ उणरी कांण ई मांनतो। सुणी क उण दिन आप ई परधै रै बिचाळै टुग-टुग जोवता रह्या। अेक फूटो आखर ई मूंडै नी काढ़यौ!'

ओड़ो देवणिया मोटयार सू निजर रा भेटका व्हैतां ई बाजी री तरणाटी ढोळै बैठगी। अरे, औ तौ धीसिया डंवाळ रौ बेटो धूळियौ!

बाजी रै उणियारा री रगत ई बदळगी। रीस री राती-चुट्ट झांई दूजै ई छिण मगसी पडगी। जाणै कोई अदीठ कवळी बांरै मूंडै रा बोल झपटनै अलध आंतरै उड़गी व्है। के कठा आगळ झड़गी व्है। पण तौ ई ऊडै अतस बारी बतळ चालू ही। आपोआप ई वै आपरै माय ऊडी छिमकी मारनै चापळग्या हा।

अैड़ो मून तोप रै धमाका सू ई वत्तौ धावड़ै। थोड़ी ताळ उपरांत अेक बळबळतो निस्कारो भरनै कैवण लागा, 'थनै काई धूळ री जाच है! सुणी-सुणाई बाता उलाकतो फिरै। उण रात तौ मा री कूख में थारौ जीव ई नी पड़यौ। मोटयारपणो तौ आज फाटै। सुणणो चावै तौ आज म्हारै मूडै सुण। बरसा लग आवटतौ साच आज थनै पैली वळा सुणावू। देखू, थारै काना रौ गाढ़ कैड़ीक है!

'भावियां री गवाड़ी जलम लियौ तौ काई, थारौ बाप धीसियौ जबर आपधापी हो। टाबरपणै ई उणरै हीयै नी नी व्है जैड़ी बातां उकलती। अंकर रावळी बेगार सू ओखया बैठगी तौ माईतां सू रिसाणा रै ओळावै दसमौ बरस चढ़तां ई बडेरा रो ठायो छोड़ वौ पाधरो अहमदाबाद ढूको। अर आठ बरस ताई नेगम उठै ई जागती आख्या आपरी समम्र परवाण मन-भावता सपना जोवतो रह्यौ। आ ऊमर इज अैड़ी व्है। भरै नी पड़्या तौ काई, म्है ई नींद बिचै जागती आख्यां वां दिनां घणा सपना जोया हा। अबै जागती आख्या तौ अळगा, रात रा ई सपना नीं आवै। बिना सपनां री जूंण मौत बिचै ई माड़ी व्है। ये लोग मन मतै मोदीजो तौ भलां ई, पण थानै आज किणी बात री की जाच कोनी। यें तौ खुदोखुद सारू ई अणधा पांवणा हो। पण उण धीसिया खेला री बात न्यारी ही। अठारवौ बरस उतरतौ-उतरतां अेक दिहाड़ै सपन-मारगू री गळाई, बूढ़ा माईतां री सेवा खातर पाछो गांव आयो। आ इज उणरी मोटी भूल व्हैगी। मीलां रै काळूटै धूंवा में गोटोजती हवा नै गांव रै अबोट बायरा री हूर आई। खरी मजूरी, पवीत परसेवै अर जागती आंख्यां रै सपनां रो परताप के उणरै डील री पसम ई पलटीजगी। जलम देवण वाळा माईता नै ओळखियां उपरांत ई मीठ पतियारो व्हियो। छंटयोड़ा

अंगरेजी हेड-बाळ। सुथराई सूं टाळ काढ़योड़ी । मुलमुल रो धोळो झब्बो अर धोळी-धट्ट झीणी धोती । झूलतो फड़को । डावै हाथ री कळाई बंध्योड़ी घड़ी रै मिस जाणै चांद रो चदरोळयो पळकै। कांनां सोना रा लूंग । मीठी-गट्ट सुहावणी बोली। मुळकती वेळा सालस जोबन री आब जाणै मूंडै झरै। इत्तै मान हाथ वैड़ी धोळी बत्तीसी दूजी निगै नी आई।

'ठिकाणा रो मरजीदान कांमदार चुगली करी तौ ठाकरसा रै अेडी सूं चोटी लग झाळ ऊठगी। वां दिनां जमराज सूं ई इदक ठाकरां रा तौर हा। वै कुमोत मारता। पछै काई खामी ! जथाजाग व्हैणो जको ई व्हियो। लोग-बागां रै दखतां मूत रै पसाव लाटया खांच-खाचनै पाड़ीज्या। लूग अर घड़ी ठिकाणा तालकै। बारदाना रै आथरै घोड़ी मंडाय मोरां सवा मण रो मुग्दर। राम जाणै काई विचार दुधणी रो जायो चूकारो ई नी करचो। काठा दांत भीच तीन घडी तावड़ै उणी गत चौपग्गो बण्योड़ो अवचळ ऊभो रह्यौ। कदास मूंन री मरजाद नै उण सूं वत्तो कुण ई नी कूती। आख्या रै माय रोयो व्है तौ भलां ई, बारै अेक टोरो ई नी पड़ण दियो। सेवट री बाजी कायली आय मूरछा-गत हाय धूळ आंगणै गुड़ग्यो तद उणरी जिद छूटी। पाछो चेतो बावड़ियो जद छान रै ओळू-दोळू अस्ट-पोर आकरो पांहरो। अहमदाबाद जावण रो ताखो ई नी सज्यो। घीसिया रो बाप मगनीजी म्हारै बंट आयोड़ो हो। उणरै नेवरा करयां म्हैं केई वळा थारा बाप नै समझावण खातर गियो। म्हारै टाळ वो किणी आगै आपरो अतस उघाड़नै नी बतायो। म्हैं जाणूं के उणरी आतमा जाणै। कित्तो समझायां फगत अेकर घरवाळी रै माचै ढूको। अकल उबरती व्हैतां थकां ई उणनै मन माडै मरणो पड़चो। कोट वाळा उण कावळ जजाळ उपरांत रेट नवमै महीनै खेण री मांदगी रै परताप उणरी मुगति व्ही। मोत रै किणी सूं ई पोहरो नी लागो। बाप री मोत रै तीजै महीनै थारो जलम व्हियो। अर आज थू मूंडैमूंड ओड़ो नी देय म्हारै धोळां जूतो फटकारै तौ ई रीस नी मानूं। अबै तौ घणो ई लिक-लिक करूं, जचै जिणनै भांडूं, पण उण दिन म्हारै मूंडै खाम कीकर लागी ? कदास वा दिना रै तावड़ा अर हवा री तासीर ई दूजी ही। पण इन्याव अर पाप री घड़ो सेवट फूटया ई सरै। वारो ई फूटयो अर आरो ई फूटैला। आ तौ घटत-बढत री छीया है। ओ तौ चढणो जित्तो ई उतरणो है। म्हारो अेक बात गिणनै गांठ बांधनो के पाणी में भाटा तिरै जित्तै ई तिरै। वगत रै दड़ी-दोटै सेवट वारा सूखा काठ ई डूबा अर आंरा ई डूबैला। ठाडो लोह सदावंत ताता नै खायो अर खावैला। ठीकरी घड़ो फोड़चो अर वळै ई फोड़ैला।

ख्यात
अेक
प्रोफेसर
री

किणी उम्दा सूं उम्दा उपन्यास के किणी नांमी सू नांमी कथा बांचण मे जित्तौ आणद आवै, उण सू कम आणंद सुदरसण री वातां में नी आवै। उणरी जोड़ री वातपोस सोध्यां ई नीठ लाधै। लौकीक रै दिखावटी मायाचार हेटै दटपोडौ असल सार-तंत उणरी निजर सू नी वचै। आंख्या री जोत रै भेळमभेळ जकी झीणी मीट उणनै मिळी, वा उणनै इज मिळी। आज रै जमांनै उणरी आख्यां सारू ओपमा देवणी तेवड़ा तौ नी दिवलौ फबै अर नी खंजन के हिरण रा नेतर ई ओपै। नीं गरुड़-दीठ सू धाको धकै। फगत अेक्स-रे टाळ दूजी किणी ओपमा मे कम निगै नीं आवै।

वो खुद नीं लिखै न लिखावै। सफड़ो समझै। पण उणरी बेजोड़ वातपोसी के तो टाळकी कथा है के नाटक, निबंध अर के तीखो व्यंग। लिखण री मोड़ी-घणी हुटोटी वाळौ, उणरै साथै रह्यां सांतरौ लेखक बण सकै। अैड़ो है म्हाटौ सुदरसण। किणी मासती मांदगी री बात फिटी करां तो अेक आंम आदमी जित्तो दूबळो व्है सकै, उत्तो दूबळो वो है। ऊंचाई के तो पांच फुट सूं आध इंच वेसी के आध इंच कम। रंग विचेटियो, नी गोरो नीं सांवळौ। माथै रा बाळ हदमांत सांगला अर काळा-भमंक। बिना टाट वाळा दो मिनखां रै अमूमन जित्ता बाळ व्है, उत्ता बाळां रो भीड़ो अेकला सुदरसण रै माथै। खासा-भला घूघरिया। माथो ई खासो मोटो। गोळ-मट्टू। मूंडै तेज तो सूरवीरां रै व्है के सिरायतां रै, पण सुदरसण रै उणिसारै

अकल री आव पैल-फटकारै ई अछांनी नी रैवै। डोळ नी फूठरी अर नी कोजी। डोळ मैंडो डोळ। पण हदमात प्रतिभा रै मेळ अेक निरवाळी पतम दीप-दीप करै। दात अणूता ओपता, जाणै खामची कारीगर री खराद उतरया। वंतळ रै बिचाळै जद उणरै पतळै हाठां अेक अवाट, निरमळ मोवनी मुळक सांचरै, तद दुनिया मे उण सूं सिरै आणद दूजो की नी लखावै। जसवत-कॉलज री डिबेट रै टाणै जद वो हामळ भरै, तद उणरी लकब रो रस लेवण सारू गैर-हाजर विद्यारथी ई चलायनै अड़थड़ै। सासता हास-परिहास बिचाळै कुण जाणै कद वो ठीमर वधार रळावै के हसी रै भेळमभेळ आख्या जळजळी व्हिया सरै। कांना सुण्यां टाळ उणरै वखाण रो पतियारो इज नी व्है।

पैलपोत मिनरवा होटल मे उणरै मूंडै प्रोफेसर आर. अेल. सुधांसु रो ओ रासो सुण्यो. जसवंत कॉलेज रै अेक हिन्दी प्राध्यापक रै चरित रो ताणो-वेजो! उणीज ताणा-वेजा नै म्हैं कथा रै सावै ढाळयो। साचै मन कबूल करू तो म्हारी इण कथा सू सुदरसण रै मूंडै ओसरी वा ख्यात घणी मजेदार अर ठावकी ही।

१.. फौज में भरती होवण सारू जित्ती डीगाई रो कायदो है, उण मापै प्रोफ़ेसर आर. अेल. सुधांसु दो-अेक इच वत्ता इज व्हैला, पण सुदरसण नै इण बात रो अणूतो अफसोस है कि वै फोज मे भरती नी होय क्यू बिरथा प्रोफेसर बण्या!

२.. अेकर किणी असैंधा मिनख रै बूझ्यां के वै कांई हलीलो करै तद मोद रै सुर अजेज पड़ूत्तर मिळयो के वै कॉलेज म प्रोफेसर है।

किरपा बिहारी कॉलेज रो अेक अचपळो, दबग अर चात्रग विद्यारथी हो। उणरै काना पड़ूत्तर री भणक की अछेरी लागी। दिखावटी लुळताई रै मिठास बोल्यो, 'माफ करज्यो, आप प्रोफेसर हो के लेक्चरार?'

वै चिपता ई हाबगाब व्हैगा। पण दूजै ई छिण आपो संभाळता बात केवटी, 'दोनूं अेक ई बात है।'

तद किरपा बिहारी नै ई कूड़ी लुळताई रो वेबलो उतारणो पड़यो। मोसा री हंसी उछाळतो सका कीवी, 'तो आपरै भावै प्रोफेसर अर प्रिंसिपल—दोनूं अेक ई बात है।'

जोड़ै ऊभा उण असैंधा मोटयार नै ई माडै हसी आयगी। प्रोफेसर सुधासु रै अेडी सू चोटी लग झाळ ऊठगी। पण गळा रै बारै आच रो लवलेस ई नी आवण दियो। जोरामरदी हसण री आफळ कीवी। घणो दोरो अेक मगसी मुळक वारै होठां नीठ साचरी। 'ओ कॉलेज रो अव्वल मजाकी लकडो है।'

'लकडो नी लड़को।' गरू री भूल सुधार वो धकै कैवण लागो, 'गाडी ग्रान री मूठी बांनगी। म्हारा अभाग के प्रोफेसरा री अैड़ी खेप पानै पडी। भणावण री झाटी कूटतां दस बरस व्हैगा, पण हाल ई लड़का रो ठोड़ लकड़ो ठेलै। बाई कैवतां रांड आवै।'

आपरी बातपोसी रै लटकै सुदरसण उण खिलका रै मपोभप वेसवार लगाय कैवतो, 'अैड़ा अबखी वेळा प्रोफेसरां री लाचारी देखण जोग व्है। वारी रीस कठां

सूं वारै नीं उफणै। आपरी दुविध्या नै सळझावण खातर प्रोफेसर सुधांसु पुलिस रौ थांणेदार बणण खातर सोचता व्हैला। जे वै थांणेदार के इण सूं ई नीचै ओहदै दरोगा व्हैता तो किरपा बिहारी रौ काई गसकौ के अैडो टिगळकी करै। चांमडी में लूण भरवाय देता। घरै चोरी करवाय देता। किणी झूठै मुकदमै फंमाय जेळ भिजवाय देता। आं प्रोफेसरा सू तौ टिकट-कलेक्टर ई घणौ वत्तौ। इछा नी व्हियां, बिना प्लेटफारम रै टिकट, मांय नी वडण दै।' जठा लग म्हनै याद है सुदरसण किरपा बिहारी री कुलंगा नै पूजत्ती भांडी। वैडा बोछरडा विद्यारथियां नै थापी नी मिळणी चाहीजै। वौ खुद चलायनै केई बोछरडा विद्यारथियां नै निरात सूं समझावतौ के गरू री कांण-कुरब नी राख्या समाज री मरजाद घटै। तद किरपा बिहारी जकौ उजर करतौ वौ ई कांनाटाळौ करै जैडो नी हो, 'गरू व्है तौ कांण-कुरब ई राखां? क्यू नीं राखां! अै गरू तौ पूरमपूर पडखाव् है। नी भणण रौ कोड अर नीं भणावण रौ। दूजौ जुगाड नीं सजआ औ ठायौ हेरै। किणी अेल. अेल. बी. पास प्रोफेसर नै उकीलात करयां सौ रिगियां रौ वत्तौ तंत निगै आवै तौ दूजै दिन ई प्रोफेसरी सू इस्तीफौ। किणी मोटा सेठ-साहूकार री पेढी वत्ती पगार मिळै तौ अै ग्यांनी मांणम कॉलेज रौ दिस भाळै ई नी। पोथ्यां नै भलां ई उदई चाटौ। अैडौ किसौ प्रोफेसर है जकौ पुलिस रै डिप्टी सुपरडेंट री तोजी जग्यां प्रोफेसरी लारै सात धोवा धूळ नी वगावै?'

तठा उपरान सुदरसण ताळी रै ठहाकै भेद परगट करतौ, 'प्रोफेसर आर. अेल. सुधांसु आवकारी इन्सपेक्टर अर तहसीलदारी खातर घणा ई तरळा तोडया पण संपट नी बैठ्यां, वै दूजौ जोर ई काई करता। माडै मूडौ ढेर आ चाकरी ग्रकावणी पडी।'

३.. प्रोफेसर सुधांसु री आ ख्यात घडी-घडी सुण्यां उपरांत ई नित नवी लखावती। वैडौ ई रस अर वैडा ई ठहाकां। कदैई कदैई मडळी रै बिचाळै अैडौ भरम व्हैतौ के वै सगळां रै भेळा बैठा थका खुद आ वारता सुणै। साचांणी, वै म्हांरा अदीठ मित व्हैगा हा।

वांरौ चित्रांम ई कम रूडौ नीं हो। सुदरसण रै मूंडै सबदां रै जडाव आंख्यां मांम्हो वांरौ डोळ कुर जातौ। लांबा अर तीखा नाक रौ धणी अकनधांन व्है पण सुदरसण घडी-घडी इचरज करतौ के प्रोफेसर सुधांसु रौ नाक पूजतौ लांबौ अर तीखौ व्हैतां थकां ई वै ठूंठ क्यू है? लिलाड़ चोडौ अर उफस्यौ थकौ। गेवूं वरणौ रंग। संवारा अर भोरणा अणूंता जाडा। काळा-स्याह। दांतां री बत्तीसी, जांणै ताजमहल रा थांमची कारीगर घडनै पजाई व्है। मूंडा रै परवांणै होठ अणूंता पतळा। पण सुदरसण री अवरै राय के इण रूपाळा डोळ रौ धणी 'हंच बैक ऑफ नाट्रेडम' रै 'कोसिमोडो' सूं वत्तौ विडरूप लखावै। सतरै सैंरिड सूं वेसी सुधांसु रै उणियारा मांम्हो नीं भाळीजै। वांरै रूं-रूं मूं अेक बोदो, मळीच अर अमोण सुभाव झांकै। जांणै आसौ डोल इज वणावटी व्है। देख्यां घिन उपजै। सूग आवै।

४.. परचा सुणीजै के प्रोफेसर सुधांसु टाबरां रै मनोविग्यांन में खासा पारंगत है।

डॉक्टर अेस. अेन. भाटिया सू ईं वांरौ ग्यांन चढ़तौ गिणीजै। मूंडे घोड़्यां ग्यांन रौ पोखाळी व्है। *आचरण मे बरत्या उणरै पांण लागै। इण सिरै गुर री हटोटी,* वै मारग बैंवता टाबरां नैं सीख री वातां बतावै। माईता नैं कोड अर उछाव सू घडी-घडी समझावै, 'आप धापनैं भूल करौ। टावरां नैं धुरकारया अंगै ई नी सरै। वै करै ज्यू ई करण दौ। पूरी छूट मिळ्यां ई वैं सुधरैला। टांगडी पजायां आंरै हीयै गळेटा पडै। ज्यांरी चरखी पज्योड़ी टाबर ताजिंदगी नी छूटै। टाबरपणैं जका मांडणा वांरै अतस कुरै, वैं आखी ऊमर नीं धुपै।'

अजाण अर अणभणिया माईत वांरी बाता चित लगाय सुणै। प्रोफेसर सुधांसु नैं इण भेद री सोय व्हियां के वांरौ उपदेस माईता रैं मनाग्यांना झरण लागौ तो वांरौ उछाव सवायौ पांगरै। वै वळै दिखावटी लुळनाई रैं लटकां ताखौ राख कैवण लागै, 'दुख तो इणी बात री छै माताजी के अपारे देस भारत मे विद्या अर ग्यांन रौ जित्तो पसराव व्हैणौ चाहीजै, उत्तो नी है। लोग-बाग तो आं बातां री गिनरत ई नीं करै। फगत टाबरां नैं धरेळणो जाणै। घडी-घडी टाबरां नैं रमतां पालै अर भणाई सारू घोदावै। पण आप इचरज करौला के म्हे तो साम्ही उल्टी सीख बताबू के टाबरां नैं धपाबू रमण दौ। भणाई री ऊमर आयां वैं मतै ई ढांण पड जावैला। टाबरपणैं कम रम्योड़ो बाळ-गोपाळ कदै ई पूजतौ नी पांगरै। देखौ माताजी, अपांनै टाबरां री ऊण इण गत संवारणी के बस...!'

पछै वैं गुमघांम मायो ढेरया टाबर नैं बुचकार लाड सू कैवण लागै, 'जावौ रमौ। जित्तो इंछा व्है। पण तावड़ै नी। रेत सू अळगो। आख्यां रैं जोखम व्है। जावौ बेटा, रमौ।'

रमण री दवायती सुण टाबर बिलखी निजर माईतां साम्ही जोवण लागै। पण वांरौ अलूणो अर लूखौ मन देख टाबर नैं हाबगाब व्हैणौ पडै। तद वैं कोट रैं मायला खूजिया सू अेक आंनो काढ, टाबर साम्ही करै। 'ले बेटा, इणरी मिठाई लीजै। पण तेल री चरकी-फरकी चीजां नी। हाण पुगावै।'

पाखती ऊभौ बाप होळै-सीक पालै, 'नी, प्रोफेसर सा'ब, इणरी कांई जरूरत है, जावण दौ।' पापा रैं सुर रौ मीठौ भणकारौ सुण टाबर लप करती रौ आंनो खोस तनैंया मनावै। पछै प्रोफेसर सा'ब री धवळ बतरीसी रौ कांई पूछणो! हसी ढुळण लागै। माईतां सू जुहार करनै वैं मोदीजता थका बहीर व्है। तठा उपरात खासी ताळ तांई आपरी काळूटी छीया ईं वांनैं सुरंगी लखावै।

साइकिल खाथी चलावण री वांरै आखडी। जोखम रैं सागै जग-हंसाई। मधरा-मधरा पैंडल मारता जावै अर सोचता जावै। होठ भींच्योड़ा। लिलाड मे ताण। अकल रैं पसाव ई तो मांनखो जिनावरां सू ऊंचो गिणीजै। वांरै दोय बेटा अर अेक बेटी। दाई-माई रौ कैवणो के बेटी रैं जापै वैं बहू मार्यां खासा *कडमड़* करया। दाई-माई नैं ई सीख आधी-दूदी किस्ता मे मिळी। मोबी बेटौ मोहनलाल फगत छव बरस रौ व्हैतां थका ईं पाचवी मे भणै। सुधीर तीजी मे। गुड्डी सबसूं छोटी। जद सूं वा तोतलावती बोलण लागी तद सू उणरै हाथां पाटी-बरतौ झिलग्यौ। सावचेती आपरी, किणी रा बाप रो कोनी। वांरी जांण मे जद बोलण री आफळ ई करणी पड़ै तो बारहखड़ी सू सिरी-गणेस करणो सावळ है। दोनूं बेटारं

सीगै आछी सावचेती वरतीजो। बोलणी री बोलणी अर भणाई री भणाई। इग्यारवीं उतरता-उतरतां तीनूं टाबर दसवीं पास व्है जावै तो चाहीजै ई कांई। गुड्डी तो हाल अबूझ बळै, इण खातर अचपळाई, भोळप अर निसंकपणो उणरै डील सूं आंतरै नीं व्हियो। पण दोनूं बेटां री मिड़कल, पिलांदरी अर लुळयोड़ी काया माथै अबार ई बूढापा रा आखर कुरग्या—बुझ्योड़ी हंसी, माढी हूंस अर अपळग उडाण। जांणै दरंग धूंधळा पड़योड़ा जूना चित्रांम व्है। मोहनलाल री आख्यां तो लारलै बरस ई चस्मा रो लबदेड़ो चिपग्यो। चस्मा री टूट-फूट रै डर वो तो रमण रा नांव सूं बिदकै। किणी पोथी में रमण रौ सबद बाच्यां मूंडो मस्कोरै। दूजा रौ रमणो ई उणनै खारो-आक लागै। छोटा भाई सुधीर नै केई वळा पापा री जिम्मेवारी निभावतो रमण सूं बरजै। घर सूं बारै सिधावती वेळा प्रोफेसर सा'ब टाबरां नै लिखण-भणण रौ कांम सूंपण में कदै ई चूक नी करै। पण सुधीर सूं निरी वळा चूक व्है जावै। रांम जांणै ऊमर रै सीगै निसरडाई वधै के घटै। कांम नीं करण खातर मुरगो बणणो कबूल, उरवांणै पगां तावड़ै ऊभणो कबूल, कूटीजणो अर भूखां मरणो कबूल पण आपरी कुबाण नी छोडै। पापा रै बारै जावतां ई मम्मी सूं छांनै-ओलै आंख बचाय छिपना खायां टाळ मानै ई नी।

तीनूं टाबर पापा सूं अणूंता डरपै। सुरक-सुरक करै। होठा कुयोड़ी आधी मुळक थारी निजर रै समचै पाछी मांय! अेकर सुधीर नै लेय जबर खिलको व्हियो। प्रोफेसर चंदरदेव सरमा अर सुदरमण किणी कांम सूं बारै घरै ढूका। बारै बरसाळी में जूंना मुड्डां माथै बैठा तीनूं वंतळ करता हा के मताजोग री बात के सुधीर ताखा-मारवा करतो आठ-पगां आठ-पगां उठै आय वाज्यो। अेकला पापा व्हैता तो वो सपनै ई वैडी वेजा हीमत नी करतो। पण दो अणूंधा मिनखां रै थावस उणरी हूंस रै थापी लागी। किणी रै देखतां पापा टाबरां नै अंगै ई नी ओळाडता। पछै दूणी सजा मिळै जिणरी आंट नी, पण अैड़ै टांणै सुधीर सूं धीजो नी व्हैतो। वागा रै उनमांन गोडां तणो झूलतो कुड़तो। मैलो अर फाटोड़ो। हाथां सींव्योड़ो। मोटा-मोटा टांका। तांमचीणी री कटोरी में दूध अर चूरयोड़ी रोटी। लोह रा मोटा चमचा सूं कदास वो सिरावण करतो हो। ठोडी अर चाळ माथै दूध अर टुकड़ा रळयोड़ा। आंख्यां पूजतो गीड। ऊपरला होठ माथै सेडा रो रेलो। कतरणी सूं गुरड़योड़ो माथो। ठोड-ठोड आगडा। तो ई वो मस्तराम हो। चोज, सुकाछिरी, पाखंड अर दरनां सारू तो आवगी ऊमर धकै पड़ी। अबार कैड़ो आंचो! सुदरमण लाड सूं बुचकार उणनै बतळायो तो टाबर रै होटां माडै मुळक गांचरगी। उछाव अर मोद सूं दो अेक गावंडा धकै सिरक्यो। केई दिनां उपरांत सुदरमण रो जोग सज्यो तो डबको पांतरग्यो। टगमग आंख्यां फाडतो वो सुदरमण रै सांम्हो जोवतो रह्यो। पण ज्यूं ई पापा परेनू मानी रै मागै आंकडा काढी तो अवेत उणरी मुळक थड़ी व्हैगी। मूंकाड भेळी-भेळी होवण लागी। पापा री हेजळी मीट में उण वेळा बैरी ई बीजळी निगै पड़ी ही। तबोडो मारयां पत्थोड़ा दरखू री जिण भांत गत बिगड़ै, उणी भांत उणरै होठां, मुळक री गत बिगड़ी। मुड्डा सूं आधा ऊठ पापा उणनै बुचकारतां कह्यो, 'आवो, माय रमो।' जोग री बात के सुदरमण री निजर बांरी मीट सूं टकराई। रीस रै पसाव पूरमपूर फाटयोड़ी। आंख्यां सूं तिणगां उछळता

डॉक्टर अेस. अेन. भाटिया सूं ई वांरी ग्यान चढ़ती गिणीजै। मूंडै घोख्यां ग्यांन री पोखाळो व्है। आचरण मे बरत्या उणरै पाण लागै। इण सिरै गुर री हुटोटी, वै मारग बैवता टाबरां नै सीख री वातां बतावै। माईतां नै कोड अर उछाव सूं घड़ी-घड़ी समझावै, 'आप धापनै भूल करो। टावरां नै धुरकारचा अंगै ई नी सरै। वै करै ज्यूं ई करण दो। पूरी छूट मिळचां ई वै सुधरैला। टांगडी पजाया आरै होयैं गळेटा पड़ै। ज्यांरी चरखी पज्योड़ी टावर ताजिंदगी नी छूटै। टाबरपणै जका माडणा बारै अंतस कुरै, वै आखी ऊमर नी धुपै।'

अजांण अर अणभणिया माईत वांरी वाता चित लगाय सुणै। प्रोफेसर सुधांसु नै इण भेद री सोय व्हियां के वांरी उपदेस माईतां रै मनाग्यांना झरण लागी तौ वांरी उछाव सवायो पांगरै। वै वळै दिखावटी लुळनाई रै लटका ताखी राख कैवण लागै, 'दुख तौ इणी वात री छै माताजी के अपांरै देस भारत मे विद्या अर ग्यांन री जित्ती पसराव व्हैणी चाहीजै, उत्ती नी है। लोग-बाग तौ आं बाता री गिनरत ई नी करै। फगत टाबरां नै धरेळणी जांणै। घड़ी-घडी टावरां नै रमतां पालै अर भणाई सारू घोदावै। पण आप इचरज करौला के म्हैं तौ साम्ही उल्टी सीख बताबू के टाबरां नै धपावू रमण दो। भणाई री ऊमर आया वै मतै ई ढाण पड जावैला। टावरपणै कम रम्योडी बाळ-गोपाळ कदै ई पूजती नी पांगरै। देखी माताजी, अपांनै टाबरां री जूंण इण गत संवारणी के बस...!'

पछै वै गुमधांम माथी ढेरचा टाबर नै बुचकार लाड सूं कैवण लागै, 'जावौ रमौ। जित्तो इंछा व्है। पण तावड़ै नी। रेत सू अळगी। आख्या रै जोखम व्है। जावौ बेटा, रमौ।'

रमण री दवायती सुण टाबर विलखी निजर माईतां साम्ही जोवण लागै। पण वांरो अलूणो अर लूखी मन देख टाबर नै हाबगाव व्हैणी पडै। तद वै कोट रै मांयला खूजिया सूं अेक आंनी काढ, टावर साम्ही करै। 'लै बेटा, इणरी मिठाई लीजै। पण तेल री चरकी-फरकी चीजां नीं। हांण पुगावै।'

पाखती ऊभी वाप होळै-सीक पालै, 'नी, प्रोफेसर सा'व, इणरी कांई जरूरत है, जावण दो।' पापा रै सुर री मीठी भणकारी सुण टाबर लप करती री आनी खोस तनैया मनावै। पछै प्रोफेसर सा'व री धवळ बतरीमी री काईं पूछणी! हंसी ढुळण लागै। माईता सू जुहार करनै वै मोदीजता थका वहीर व्है। तठा उपरांत खासी ताळ तांई आपरी काळूटी छीया ई वांनै सुरगी लखावै।

साइकिल खाथी चलावण री वारै आखड़ी। जोखम रै सागै जग-हंसाई। मधरा-मधरा पैंडल मारता जावै अर सोचता जावै। होठ भींच्योड़ा। लिलाड मे तांण। अकल रै पसाव ई तौ मानखी जिनावरां सूं ऊंचौ गिणीजै। वांरै दोय बेटा अर अेक बेटी। दाई-माई री कैवणी के बेटी रै जापै वै वहू माथै खासा कड़मड़ करया। दाई-माई नै ई सीख आधी-दूदी किस्ता मे मिळी। मोबी बेटी मोहनलाल फगत छव बरस री व्हैतां थकां ई पाचवी मे भणै। सुधीर तीजी मे। गुड्डी सबसूं छोटी। जद सूं वा तोतलावती बोलण लागी तद सू उणरै हाथां पाटी-बरती झिलग्यो। सावचेनी आपरी, किणी रा बाप री कोनी। वांरी आण मे जद बोलण री आफळ ई करणी पड़ै तौ बारहखड़ी सू सिरी-गणेस करणी सावळ है। दोनूं बेटारै

सीगै आही सावचेती बरतीजी। बोलणो री बोलणो अर भणाई री भणाई। इग्यारवी उतरतां-उतरतां तीनूं टाबर दसवी पास व्है जावै तो चाहीजै ई कांई। गुड्डी तो हाल अबूझ वळै, इण खातर अचाळाई, भोळप अर निसंकपणो उणरै डील सूं आंतरै नी व्हियो। पण दोनूं बेटां री मिड़कल, पिलादरी अर लुखथुकी काया माथै अबार ई बूढ़ापा रा आखर कुरग्या—बुझ्योडी हंसी, मांदी हूस अर अपळग उडाण। जांणै दरंग धूधळा पडयोडा जूना चित्राम व्है। मोहनलाल री आंख्या तो लारलै बरस ई चस्मा री लबछेड़ी चिपग्यो। चस्मा री टूट-फूट रै डर वो तो रमण रा नांव सूं विदकै। किणी पोथी में रमण री सबद बाच्यां मूडो मस्कोरै। दूजां री रमणो ई उणनै खारो-आक लागै। छोटा भाई सुधीर नै केई वळा पापा री जिम्मेवारी निभावतो रमण सूं बरजै। घर सूं बारै सिधावती वेळा प्रोफेसर सा'ब टाबरां नै लिखण-भणण री कांम सूंपण मे कदै ई चूक नी करै। पण सुधीर सूं निरी वळा चूक व्है जावै। राम जांणै ऊमर रै सीगै निमरडाई बधै के घटै। काम नी करण खातर मुरगो बणणो कबूल, उरवांणै पगा तावड़ै ऊभणो कबूल, कूटीजणो अर भूखां मरणो कबूल पण आपरी जुबांण नी छोडै। पापा रै बारै जावता ई मम्मी सूं छांनै-*ओलै आंख बचाय छिपला खायां टाळ मांनै ई नी।*

तीनूं टाबर पापा सूं अणूता डरपै। सुरक-सुरक करै। होठा कुयोडी आधी मुळक वांरी निजर रै समचै पाछी मांय! अेकर सुधीर नै लेय जबर खिलकी व्हियो। प्रोफेसर चंदरदेव सरमा अर सुदरसण किणी काम सूं बारै घरै ढका। बारै बरसाळी में जूंना मुडढां माथै बैठा तीनूं बंतळ करता हा के सताजोग री बात के सुधीर ताखा-माखा करतो आछ-पगां आछ-पगां उठै आय बाज्यो। अेकला पापा व्हैता तो वो सपनै ई बैडी बेजां हीमत नी करतो। पण दो असैंधा मिनखां रै थावस उणरी हूंस रै थापी लागी। किणी रै देखतां पापा टाबरां नै अंगै ई नी ओझाडता। पछै दूणी सजा मिळै जिणरी आंट नी, पण अैडै टाणै सुधीर सूं धीजो नी व्हैतो। वागा रै उनमांन गोडां नणो झूलतो कुडतो। मेलो अर फाटोडो। हाथां सीव्योडो। मोटा-मोटा टाका। तांमचीणी री कटोरी में दूध अर चूरयोडी रोटी। लोह रा मोटा चमचा सूं कदास वो सिरावण करतो हो। ठोडी अर चाळ माथै दूध अर टुकडा रळचोडा। आंख्या पूजतो गीड। ऊपरला होठ माथै सेडा री रेलो। कतरणी सूं गुरड़योडो माथो। ठोड-ठोड आगड़ा। तो ई वो मस्तरांम हो। चोज, लुकाछिपी, पाखंड अर ढपलां सारू तो आवगी ऊमर धकै पडी। अबार कैडो आंचो! सुदरसण लाड सूं बुचकार उणनै बतळायो तो टाबर रै होठां माडै मुळक सांचरगी। उछाव अर कोड सूं दो अेक पावंडा धकै सिरक्यो। केई दिनां उपरांत मुळकण री जोग सज्यो तो ढबणो पातरग्यो। टगमग आंख्यां फाड़तो वो सुदरसण रै सांम्ही जोवतो रह्यो। पण ज्यूं ई पापा घरेलू सांनी रै सागै आंख्यां काढी तो अजेज उणरी मुळक वडी व्हैगी। मूफाड भेळी-भेळी होवण लागी। पापा री हेजळी मीट मे उण वेळा वैडी ई बीजळी निगै पडी ही। तवोडो लाग्यां फूल्योड़ा ढब्बू री जिण भांत गत बिगडै, उणी भांत उणरै होठां, मुळक री गत बिगडी। मुडढा सूं आधा ऊठ पापा उणनै बुचकारतां कह्यो, 'जावो, मांय रमो।' जोग री बात के सुदरसण री निजर वांरी मीट सूं टकराई। रीस रै पसाव पूरमपूर फाटयोड़ी। आंख्यां सूं तिणगां उछळण

री उगति कदास अेड़े ई टांणे उपजी व्हैला।

टाबर डरनै पाछ-पगल्यां थोड़ो लारै सरकग्यो। मांय जावण रो मतो नीं दीस्यो तो पापा वळै आंख्यां तांणी, जांणै कोई जोगी निजर बांधतो व्है। वो धूजतो थको आंख्यां नीची कर ली अर खावण में रुधग्यो। चिमचो पूरो भरनै मूंफाड़ रै गाळै खसोलण री आफळ कीवी, पण हळफळिया हाथ सूं चिमचो हेटै पड़ग्यो। तो ई वो घांटी ऊंची करनै पापा सांम्ही नीं झांक्यो। हीमत साव लातरगी। तद दरजै लाचार वो कटोरी पटकनै माय न्हाससग्यो। जांणै चोर न्हाटो व्है। उण तोतक सूं पापा रै उणियारै जांणै कादो धुतग्यो। वेजां खगडो व्हियो। वै मांय रा मांय भेळा होवण ढूका। मन-माडै हसणो के मुळकणो कित्तो दोरो है, सुदरसण नै कदास उण वेळा ई सावळ जाच पड़ी। आफळ करयां होठ तो अवस छीदा व्हिया पण मुळक नैडी-आगी ई नी वापरी। रोवण-रीकण सूं ई घणी होणी वा आफळ ही। मुळक री आफळ। तो ई गतरस खगडा नै केवटण री जुगत करता थका कैवण लागा, 'औ सुधीर बोछरड़ो है इज घणो। अणूंतो...अणूंतो अचपळो। कैवै जिण सूं ऊंधो कांम करै। कोण्ट्रा मजेस्टिव। कोण्ट्रा सजेस्टिव ! कित्तो वळा समझायो के नौकराणी रै बेटा रा गाभा मत पैर। उणरी कटोरी अर चिमचा रै हाथ मत लगा। पण मरघा ई नी मांनै। जबर वादीलो है। म्हैं तो काठो आंतो आयग्यो। टाबर नै घणो ओझाडणो आछो कोनी। आप की उपाव बतावो तो आजमावूं।'

वै सारी-वारी दोनां रा उणियारा जोवण लागा। इण गत गिदळघोड़ी वात सोरै-मास कद नितरै ! हवा तकात गोटीज्योड़ी लखाई। सांस रो भणकारो ई भारी व्हैगो। सुदरसण सगळो रासो आपरै मथीणै कूत्यो अर समझ्यो। आपरै लटकां-झटकां उणरो बखाण करतो। आंख्यां दीठोडो खिलको जित्तो सूगलो हो, सुणावती वेळा वो उत्तो ई सांतरो व्है जावो। जूझळ री ठोड हंसी री गूंज अर ठट्ठा। उणनै आंख्यां परबारो अदीठ ई सुभट निगै आवतो। उणरो दिढ विसवास हो के उण दिन वांरै वहीर व्हैतां पांण सुधीर री भारणी सागेड़ी उतरी व्हैला। सूग सू मूंडो मस्कोर कैवतो, 'थें किसो सांच मांनोला के सुधीर री वा सेरवांनी मम्मी रै हाथां सीव्योड़ी ही। घर-बरताव गाभां री सिलाई उणनै ई करणी पड़ै। जीवणो जित्तै सीवणो। फूस-वाईदो काढ़यां, चूल्हा-चौका सूं निवडयां, बरतन-वासण मांज्यां, चूकता गाभा धोयां उपरांत कीं न कीं पोळाई तो अवस व्हैती व्हैला। उण पोळाई रो पोखाळो नी करनै वांरी मैडम गाभा सीवै अर टाबरां रा माथा घुरडै तो कांई वेजां वात ? कांम तो मिनखा-देह रो संघीणो है। लुगायां जद इज तो कम मांदी पडै। नीं वांरै कांम रो तोटो अर नी संघीणा रो घाटो। पण घर चलावण जोग कमाई करणी अणूंती दोरी। कमायण वाळां रो जीव जांणै। इण खातर घर-धणी, गवाडी अर मेजां रो भरतार गिणीजै। परमेस्वर री ठौड। जे कांम मे अस्ट-पोर थडणो ई नामून री बात है तो गधा अर बळद नै कुण पूगै ? पण गधो, गधा री ठोड है, बळद, बळद री ठौड़ अर लुगाई, लुगाई री ठौड। घर री लिछमी।'

पण प्रोफेसर सुधांसु घर री लिछमी नै समाज अर देस री लिछमी बणावणी चावै। घर री लिछमणकार लोप्यां ई उणरी मांनता बधैला। वै लोगां री निजर में लुगायां री आजादी अर वांरी भणाई रा जबर हेमायती है। केई पत्र-पत्रिकावां

में इण सीगै वांरा लेख छपै। पण सुदरसण री सूझ-बूझ रै टाळ किणी नै ओ बेरौ कोनी के वै सूवती वेळा घर वाळी सूं आपरा पग दवावाड़ै। इणरौ तौ लावौ अर स्वाद ई दूजौ। बापड़ा हिटलर रै भाग ई इणरौ तत नी जुड़्यौ व्हैला। सिरांतियै माथौ अर पगांतियै पग। छीदा पसरघोडा। अर कंवळै-कंवळै मेंहदी राच्यै हाथां रौ सुहांणौ परस। मधरी-मधरी दाब। प्रोफेसर सुधासु नै उण वेळा तकिया री ठौड़ पूनम रौ चांद हेटै दब्योड़ौ लखावै, अैड़ी सुदरसण री डिढ़ मांनता है।

५.. कुजोग रौ लफडौ कोई पूछनै नी आवै। अेकर सिंझ्या री वेळा, कोई टाबर घरै नी हो। बारै दूध वाळौ हेलौ मारयौ। दूजौ कीं उपाव नी सूझ्यौ तौ खुदौखुद मैडम नै दूध लेवण सारू बारणै आवणौ पडयौ। दूध लियां उपरांत रांम जांणै उणनै कांई कुमत सूझी के वा उघाडै मूंडै, अेक हाथ मे भगोलौ थाम्यां थोडी ताळ बारणै ढबगी। डामर री मटमैली सडक नै निरखती ही के घेर-घुमेर पीपळी नै। कंडा तौ पान लळाक-लळाक लुळै अर फर-फर वायरौ वाजै ! के इत्ता मे साइकिल चढया सा'ब माथै उणरी निजर पड़ी। धणी नै देख्यां आज पैली किणी लुगाई रै काळजै अैडौ डबकौ नी पडयौ व्हैला। बापड़ी खयावळ तौ धणी ई करी, पण भरतार री निजर ई चूकै जैडी नी ही। मांय आया जित्तै नीठ मून राखीज्यौ, जांणै गळौ तिड़ जावैला। चौक में साइकिल झेल्यां-झेल्यां ई रीस मे झाळपूळा होय पग पटकता बोल्या, 'थारौ माथौ तौ नी भंवग्यौ ? कित्ती वळा खराय कह्यौ के थूं दूध लेवण सारू मत जा, मत जा। पण सुणै कुण ! थनै कीं बेरौ ई है के अै अणभणिया गिंवार कित्ता लफंगा अर ओटाळ व्है ? पण थारै की लाज-सरम व्है तौ !'

'टाबर अेक ई घर मे नी हो।'

'ओ ई कसूर म्हारौ ? नित भुळावण देवूं के सिंझ्या रा अेक ई टाबर नै बारै मत जावण दै। थनै कह्यौ अर भाटा नै कह्यौ बिरौबर। पण थूं दूध लेवण सारू गी तौ गी इज क्यूं ?'

'दूध वाळौ हेला मारतौ ढब्यौ ई नी !'

'म्हैं जांणूं आं अधबेरड़ां रा लक्खण ? थनै कोकर समझावूं ! छौ बोबाड़ा करतौ। थारौ कांई लियौ। मतै ई कायौ होय वहीर व्है जातौ। अेक बात वळै कांन देय सुण लै, म्हैं बारै व्हू अर कोई दूझण नै आवै, टाबर घर में व्है तौ जबाब दिराय देणी, नींतर थनै डिच-डिच करण री अंगै ई जरूरत कोनीं। भरोसौ करै जैड़ौ जमांनौ नीं है। म्हारी साख-पेठ रौ कीं तौ चेतौ राख। समझी के नी ?'

मैडम गाबड हिलाय हामळ भरी के समझगी। अबै कदै ई चूक नीं व्है। सुदरसण जोर सूं ठहाकौ लगाय कैवतौ, 'चूक करैला तौ मार खावैला। म्हारौ जीव जागै के मोकौ पड़्या सा'ब मैडम माथै अवस हाथां रौ वट काढ़ता व्हैला।'

६.. कॉलेज सूं छूटयां वै पाधरा हिन्दी भणण वाळी लड़कियां रै घरै ढूकै। आदत है के कमजोरी, चस्कौ है के चाव—सबदां रै इण झीणा भेद रा पड़पंच में कीं सार नी। मुद्दा री बात के वै लड़कां रै बारणै भूल-चूक सूं ई नीं फरूकै अर लड़कियां रै माईतां नै धोक देवण रौ नेम कदै ई नीं टाळै। आप-आपरौ सुभाव अर आप-

आपरी आजादी। पण दिन तौ फगत चोईस घण्टां रौ इज व्है। की वगत कॉलेज में भणाई पेटै खरच व्है। लडकियां रै उठै मांन-मनवार में खामो वगत लागै रौ लागै। इण उपरांत घर री चूकती जिम्मेवारी रौ डाळौ। विद्यारथियां खातर, भणावण री त्यारी रौ नी तौ वगत मिळै अर नीं मन ई करै। खुदोखुद भणण, रौ तौ सपनौ ई खोटौ। भणै के भणावै? कॉलेज छोडयां नीठ भणाई सूं लारौ छूटौ। अर नीं प्रोफेसरां री नवी भणाई विद्यारथियां रै कांम ई आवै। जूंनी भणाई हाल उबरती पड़ी। प्रोफेसरां नै पूरी छूट के वांरी मरजी व्है तौ भणै। विद्यारथियां रै भेळमभेळ अवै भणणौ वांनै छाजै भलां। रवी बाबू री 'काबुलीवाळा' टाळ प्रोफेसर सुधांसु वांरी कोई दूजी रचना नी बांची। तौ ई वांरी जयंती मार्थं पूण घण्टा रौ भासण झाड्यौ, 'गरूदेव अपां रै देस री आतमा है। प्राण अर प्रेरणा है। वांरी रचनावां में अखूट आणंद रौ समंद थावा मारै। आंतरै ऊभै जको डूबै अर डूबै जको तिरै। वांरी रचनावां रै कामण रग-रग में आतमबळ सांचरै। गरूदेव तौ गरूदेव इज है।'

७.. फालतू भणण रा रींझट बिचै वांनै तास, खेलण रौ अणूंतौ कोड। पण अेक लांगड़ी मोटी के लड़कियां टाळ दूनां रै भेळा नी रमै। तीन जणा व्है तौ तीन-दो पांच। च्यार जणा व्है तौ चोकड़ी। सताजोग छव जणां रौ तंत जुडै तौ वानै छकड़ी ई भली-भांत रमणी आवै। अेकर सिरै हॉस्टल मे उन्हाळै री वेळा की विद्यारथी घकै चढग्या तौ वांनै खासौ-भलौ धासौ पीवणौ पड़ग्यौ, 'कॉलेज रा विद्यारथी होय नै तास रमौ? देख्यां उपरांत ई विसवास नी व्है। यांरै हाथां तौ फगत पोथ्या रा पांना छाजै। इण इमारत री की तौ मरजाद राखौ।'

८.. पड़दा जैड़ी कुरीत रौ वै पखौ ई पाळै अर जमनै विरोध ई करै। घरै आकरौ पडदौ अर खलकां रै बारणै प्रगति री बांदरवाळ। जूना विचारां रौ सैंधौ के असैंधौ कोई मिनख आपरी लडकी नै कॉलेज भेजण सारू आळिया-टोळिया करै तौ वै गोता खावण में राई-रत्ती खांमी नीं राखै। नी मानै जित्तै लाई रौ पिंड इज नी छोडै। 'आप सूं अैड़ी आस नी ही। जमांनौ तौ रॉकेट रै वेग घकै बधै अर आप कुरीतां रै खोडै फंदग्योड़ा? सरीर रा मैल ज्यूं आं कुरीतां नै छोडणा सरैला। दौडौ, जमांना रै सागै दौड़ौ। लडकियां नै वांरी मंसा परवांण पूजती भणावौ। फोडा पडै तौ पडै। मरदा सूं ऊंचौ दरजौ, अर सवाई आजादी सूप्यां टाळ इण देस रौ भलै ई निस्तार नीं व्है। अर आप तौ खुद म्हारा सू वत्ता समझदार हौ। सूरज नै तूळी रै चांनणा रौ कांई छिग बतावूं!'

अर बापड़ा सूरज नै तूळी आगै मन-माडै निंवणौ पड़तौ।

९.. खुद रै टाबरां खातर कैंडौ ई छोटौ-मोटौ रमेकडौ कदै ई भूल-चूक सूं नीं मोलायौ, पण लडकियां रै अबूझ भाई-बैनां खातर वै की पाछ नी राखै। चॉकलेटां ले जावै। गोळ्या ले जावै। भांत-भांत रा रमेकडा ले जावै। किणी रा माईत दांम चुकावण री भोळप करै तौ वै अंतस रौ हेज छिनावता समझावै, 'हेत-प्रीत री ठौड़ दुमांत कैड़ी? आप म्हनै परायौ जांणौ? म्हनै टाबर-जात सू हदभांत हेज है।

टाबर रो कांई तो परायो अर कांई घर रो ! उणनै किलोळां करतो जोवूं, उणरी तोतली वाणी सुणूं, धूळ में रमतो निरखूं तो म्हारो हरख ढाब्योड़ो ई नीठ ढबै । कठै वो हरख अर कठै आं नाकुछ चीजां रो मोल !'

इणी रातैनाडै थोडो अळगी भांय आंरी सगी बैन रैवै । आसादेवी । आबकारी मेहकमै अेक अैलकार नै परणायोडी । उणरै बारणै चढ्यां सात महीना व्हैगा । याद ई नीं रैवै । वेळा ई कठै ! अर कदैई होळी-दीवाळी मन-माडै जावणो पड़ै तो सगा भांणजां नै बुचकार तणी बतळावण टाळ दूजी कीं चीज पांनै नी पड़ै ।

१०.. मेहतरांणी नै महीनै दीठ बंध्यो-बंधायो डोढ-रिपियो बगसीस में मिळै । नीं अेक छदांम कम अर नी अेक छदाम बेसी । नीं ठाडो-बासी बचै अर नी मेहतरांणी हर करै । नवा गाभा वगत-सर जूना ई व्है, पण मेहतराणी रै हाथै नी लागै । धोतियां फट-फटाय तैमल रै कांम आवै । तैमल फाट्यां विधवा मां रै गाभां री गरज सारै । उतरयोड़ा पेंट-कोट छोटा भाई रै फिटोफिट पजै । सा'ब रो सुभाव पतवांण्यां मेहतराणी मूडो खील्योड़ो इज राखै ।

११.. टेसण जावती वेळा अणूंतो सेमांन व्हियां, तांगो जचावणा में कम सूं कम बीस मिनट लागै । अेक-अेक पईसो बधै—छव आंना, सवा छव आंना, साढी छव आंना । सुदरसण नीठ आपरी हंसी ढाब बेलियां रै सांम्ही जोय ठीमर सुर मे बूझै, 'थै मनाग्यांना विचार करता व्हौला के प्रोफेसर सुधांसु साग-मंडी भाव-ताव करै के नी ? अेकोअेक माळणियां थानै ओळखै । ओडा रै पांखती ऊभ वै भाव बूझै तो केई माळणियां जवाब ई नी देवै । केई जचै ज्यूं ऊंधा-अंवळा टिप्पा मार दै । वै भली-भांत जांणै के भींडी रो भाव दो टका सेर बतायां ई अै बावूजी धकै गियां टाळ नी मांनै ।'

अेकर अेक अधबूढ माळण आंरा सूं जबर कोगत कीवी । भींडी रो भाव बूझ्यां वा ठीमर सुर में कह्यो, 'भींडी ! भींडी अेक आंना सेर ।'

'कांइ कह्यो, अेक आंना सेर ?' वै इचरज सूं खरायो ।

'हां, बाबूजी, फरमावो कित्ती जोखूं ? सेर, डोढ़ सेर ?'

पण बाबूजी रो मन नी मांन्यो । बोला-बोला धकै वहीर व्हैगा । ओडै-ओडै तपास करयां पतो पड्यो के भींडी तो नो आंना सेर है । डाफां खाय पाछा उणीज माळण रै पाखती आया । जोर सूं हुकम फरमायो, 'दो सेर भींडी तोलजै ।'

माळण चुपचाप भींडी जोख दी । वै झट दो आंना धकै करया तो वा होळै-सीक बोली, 'सवा रिपियो बगसावो ।'

सवा रिपिया रो लेखो सुणतां ई आंरो मूंडो थाप खायग्यो । 'सवा रिपियो ! सवा रिपियो कीकर ? सेर रो आंनो तो दोय सेर रा दो आंना । किणी नै ई बूझलो ।'

माळण नीठ हंसी ढाबती बोली, 'ओ तो उण वगत रो भाव हो बाबूजी ? तद आप तो थारै ई नी कीधो । तीन पईसा री आस में धकै पधारग्या । अबै भाव बधग्यो । सरधा व्है तो लिरावो ।'

१२.. अेकर तीन नरसां वांरै घरै आई। बुगलियां री जात धोळा गाभा ठसायोड़ा। अेक नरस तौ बेजां इज रूपाळी ही। डावै गाल रा काळा तिल सूं रूप रै जांणै पाण लागौ। कित्ती पवीत, कित्ती अबोट अर कैड़ी सुहांणी लागती वा उण वेस मे। बुगलो जांणै अबै उडी, अबै उडी। प्रोफेसर सुधांसु रै मूंडै लाळां सळवळण लागी। उकराळती निजर उणरै सांम्ही जोवता बोल्या, 'फरमावौ, म्हारै माथै आज इत्ती मेहर कीकर व्ही ?'

बिना टंटोळयां ई वांरी नाड परखीजगी। मुळक रै समचै मोती रळावती बोली, 'उम्मेद अस्पताळ री तरफ सूं रेलवै क्लब मे अेक नाटक व्हैला। गरीब जच्चावां खातर। उणरा कीं टिकट आपनै लेवणा पड़सी। प्रोफेसर अर वळै कवि ! इण सूं ऊंचौ मोतबर दूजौ कुण व्है। इणी खातर आप सूं इज बोवणी करणी चावां।'

कावळ आटी पजी। आ रूपाळी बत्तीसी आज खासी मूंघी पड़ती लागै। टर-कायां नीं सरै। लुळताई रै भार दोवड़ा व्हैता थका वै अरज कीवी, 'इण जोधांण नगरी लखपति, किरोड़पति वसै। वांरै सांम्ही म्हारौ कांई ठरकौ। तौ ई आपरौ हुकम नीं टाळूं। फरमावौ।'

तीनूं नरसां मुळकी तौ अेकण सागै, पण जवाब तिल वाळी नरस ई दियौ। आपरै तिल रौ कांमण वा जांणती। 'ज्यूं आपरी मरजी। आप जैड़ा भावुक कवि मरजी सूं देवै, जिणरौ इज तौ मजौ है।'

अंत-लोभी काळजा री पुड़तां छेक तीर पाधरौ ठाणै लाग्यौ। कॉलेज मे भणती आगी-नैड़ी मासी रै मूडै वांरा परवाड़ा सुण्योड़ा हा। इणी खातर वा नरस मजा सबद माथै पूजतौ जोर दियौ।

जांणै थोड़ी ताळ वास्तै किणी दांनी रै मूडा सूं वांरौ आटौ-साटौ व्हैगौ व्है। वांरै मूंडै तौ मरयां ई अै बोल नी नीसरता। 'म्हनै तौ आ ई ठा कोनी के टिकट कित्ता-कित्ता रिपियां रा है ! ऊंचा सूं ऊंचौ टिकट...!'

'फगत पचास रिपियां रौ।' वा इज रूपाळी नरस आखती होय बिचाळै बोली। रिपियां रौ बोल अैड़ौ मीठौ व्है कांई ? अर वौ ई देवण खातर। कठैई जीभ आपरौ बांण तौ नी भूलगी ! प्रोफेसर सुधांसु रै चेता-परबारी ई वांरी जीभ उथली, 'तौ आप म्हनै दो टिकट...।'

'तीन जणियां आई, तीन टिकट तौ लिरावौ। म्हनै लारै क्यूं छोडौ ?'

वै नीठ आपरी देह माथै काबू राख्यौ। मन तौ आपरौ मंसा परवांण भिडता ई विटळग्यौ हो। मूंडा रौ लाळ गिटता बोल्या, 'पैल आपरी ! आपनै टाळयां सरै भलां ! अेकला पधारता तौ पाच टिकट लेवतौ। बोली रौ इमरत म्हैं ओळखूं।'

तेवड़ियो जिण सूं ई नाटक ठावकौ चाल्यौ। इमरत बोली रै समचै थांरौ काळजौ काढ़ती कह्यौ, 'इणी डर सूं अेकली नीं आई। सौ रिपियां रौ वत्तौ फांड़दौ लागतौ।'

'फांड़दौ ! इण में फांड़दा रौ किसी बात ! जे थांरै टांणै ई रिपिया अरथ नीं पलै तौ वांरौ दूजौ महातम ई कांई ! आपरौ गुण मांनूं के म्हनै इण जोग समझ्यौ।'

'जिणरौ जैड़ौ क्षेत्र व्है, उणी माथै समझणौ पड़ै ! गुण मांनै जैड़ी कांई बात !

हाल आपरी साचेली परख कठै व्ही !'

बच्यो-खुच्यो चेतो ई आं बोलां रै फटकारै ठांणै लाग्यो। साचेली परख रा कोडाया वै झटोझट पचास कम दोय सौ रिपिया रूपाळी नरस नै संभळाय दिया। उण साटै वा नरस वांनै अमोलक मुळक सूंपी। पण रिपियां री गळाई वा मुळक हाथ मे झिली कठै ! पाधरी हिवड़ै उतरती इज लखाई। तठा उपरांत चाय कॉफी सारू वै घणा ई नेवरा करया, पण नाटक सपूरण व्हियां वै अेक पलक ई वत्ती नीं ढबी। फीटी हंसी हंसता नेवरा करता रह्या अर वै मुळक रौ छिड़काव करती हाकां-धाकां वहीर व्हैगी। भूल व्हियां पछै पिरासचित करणौ बिरथा है। रिपिया झिलावण रौ आंचौ नी करता तौ वै जावण खातर आंचौ क्यूं करती ! पण वै आचौ करयौ तौ छौ करयौ, प्रोफेसर सा'ब नेठाव रा धणी हा। घर सूं आंतरै ढळ्यां ई वै बुगलियां अदीठ कठै व्ही ! नीद रै सपनां रौ कांई भरोसो, वै जागती आंख्यां निरांत सूं सपनौ जोवण लागा। तीनूं नरसां वांरी खुली आख्यां साम्ही झबूका भरती ही। थोड़ी ताळ उपरांत तिल वाळी रूपाळी नरस राम जाणै कांईं सांनी करी के दोनूं नरसां दूजै ई छिण पाछी अदीठ व्हैगी। पखा री गरणाटी बुगली री धवळपाखां झड़ण लागी सो झड़ती ई गी। समूळी पांखा झड़यां अेक ऊंडा मरम री बीजळी बुगली रै होठां सळावा भरण लागी। अबै नेठाव राखणौ वांरै बस री बात नी ही के अणछक मैडम री बतळावण, मन-जांणी मे भंज पड़्यौ। 'खांणौ त्यार है, जीम लिरावौ।'

सा'ब अेकर तौ सुणी-अणसुणी कर दी। सांम्ही पुरस्या सोवन थाळ रौ लोभ ई कम नी हौ। फगत कवौ तोड़ण री जेज ! पतिवरता जोड़ायत वळै ताकीद कीवी तौ वै जोर सूं धाकल करता कह्यौ, 'आगो बाळ थारौ खांणौ ! कित्ती वळा माजनौ पाड़चौ के अेकलौ सोचूं जणा लिकलिक मत कर। कविता रै कैड़ा उम्दा पोम रौ पोखाळो कर न्हाक्यौ !'

'जीम्यां पछै निरांत सूं...।'

'बोलो बळ ! ऊमर मे फगत अेक ई बात सीखी—जीमणौ, जीमणौ। म्हैं कोई जीमण खातर जीवूं ? अर नी थारै जीमावण मे कीं तंत ई है।'

'फरमावौ ज्यूं बणाय दूं—सीरौ, लापसी, भिणज...।'

'लिछमी, थनै हाथ जोड़ूं, थोड़ी ताळ अेकलौ सोचण दै। थारै पगा पड़ूं।'

धणी रा लखण पिछांणती। रीझावण खातर मुळकती थकी बोली, 'पगां तौ रात रा पड़ज्यो, नी पालूं।'

रीस री झळ मे जांणै घी पड़यौ। धणी री आंख्यां, जगता खीरां माथै निजर पड़तां पांण वा बोली-बोली मांय वहीर व्हैगी। तठा उपरांत प्रोफेसर सुधासु अेकला घणा ई तरळा तोड़चा पण सोवन-थाळ री पुरसगारी पाछौ देठाळौ नीं दियौ। तद मन माडै घरवाळी रै हाथां बण्योड़ी दाळ-रोटी ज्यूं-त्यूं गिटणी पड़ी।

अबै जावतां वांरै हीयै डेढ़-सौ रिपियां रै जूत रौ झरणाट माच्यौ। कवौ गळै उतारणौ दोरौ व्हैगौ। मूंडा रै मांय गोळ-गोळ घूमण लागौ —जांणै वानै चिगावै। कोरो-मोरी मुळक साटै डेढ़-सौ रिपिया कांई भाव पड़ै ! अैड़ी मत कीकर मंवी ! सुनी रांडा रा छळछिदर आगै किणरौ आपांण थिर रैवै ! कानं माथै टरकायां

सोचण सारू कीं वगत मिळतो, पण वा मुळक अर वो तिल आंचो करावै अैड़ा इज हा। मालजादिया रै निरलज्जपणा री कांई पार नी व्है। 'इणां डर सू तो अंकली नीं आई, सौ रिपियां रो फड़िदो वत्तो लागतो।' आ फिटळी जेमातियां नै अर वळै डर! डरावै जका नै अै डरावै, अै किण सू डरै। डेढ़ सौ रिपिया! पूरा डेढ़ सौ रिपिया! कित्ता दोरा कमाईजै! असळेख-असळेख मे जेब कटगी—मुळक री धार! होठा ई होठा रै माय तिलवाळी नरस नै मासका मांयली धणी ई गाळया काढ़ी, तो ई पूजतो नेहचो नी व्हियो। अबै कीकर पाछा वसूल व्है—अै रिपिया, डेढ़ सौ रिपिया। की न की ऊंडी जुगत विचारता वै धाप्या पैली ई चळू करण लागा।

निवाया फलको हाथ मे झेल्या घरवाळी तुरत आपरी बाण मुजब बूझ्यो, 'तबीयत ठीक कोनी कांई, आधेटै ई ऊठग्या!'

'जित्ती भूख ही जीम लियो। माथो मत चाट।'

'माथो के काळजो? नरसा री बजो म्हारै माथै? थे जाणो के म्हैं की समझू ई कोनी!' ऊंडा मरम री मुळक, वा धणी साम्ही जोयो।

मन री चोरी चौड़ै व्हिया वै अजज लचकाणा पड़ग्या। सोरै-सास कीं पड़ूत्तर नीं उकलियो। मनाग्याना मुळक-मुळक री अेड़ी करण लागा। उरमिला री मुळक ई माड़ी कठै! गोरो निछोर रंग। गुलाबी मुराया जोड़ायत री आ धाळो-धट्ट इकराई बत्तीसी। जाणै कसूबल दीवो झुप्यो। खिल्योड़ा गुलाब रै उनमान इणरो जोबन हो। दख्यां हाल ई असेंधा मिनख रो माथो भवै। पण रोजीना रो सेध-पिछाण्यो रूप-जोबन दीसता थकां ई निगै नी आवै। रूप तो ढक्योड़ो अर असेंधो ई आछो। पण सेंधा नै असेंधो मानण री बाण वै बीसरग्या थोड़ा ई है! प्रोफेसर सुधासु नै मनाग्याना खासो-भलो थावस बध्यो।

घरवाळी नै केई दिनां उपरांत धणी रै होठां किणी आगूंच समचा री मुळक निगै आई। मन री वाणी कानां कद सुणीजै!

अणगिण दातां मुळकती रात जाणै आज नवादू अवतरी। इण उपरांत उरमिला रो हरियल वेस! गुलाब रै अतर री सोरम! साचाणी हरियल पानां रै बणाव जाणै गुलाब ई परगट व्हियो।

तिल वाळी नरस नै ओ वेस माड़ो तो नी ओपतो! कुण वत्ती रूपाळी है, उरमिला के तिल वाळी नरस! खुदोखुद रूप री तो की ठरको इज नी व्है! वो तो फगत जोबन री पाखा उडाण भरै। उरमिला रै जोबन नरस वाळो उफाण कठै! दूध वाळो धोळो-धक्क उफाण! धोळा बुगला री तो वा मुळक इज निरवाळी ही।

थोड़ी ताळ उपरांत प्रोफेसर सुधासु रै नैणां अेड़ी तासीर पलटी के उरमिला रो हरियल वेस पळकता तारां रै उनमान ऊजळो व्हेगो। डावै गाल रो ओ तिल ई तो वारै हीयै वेजां चम चाळया हा। अबै डेढ़ सौ रिपिया रो की सोच नी। हाथो-हाथ हजारां री वसूली करनै छोडैला।

अणछक कुरळाट रै समचै बुगली बाथ छुडाय वैठी व्ही। गाल माथै हाथ फेरयो तो लोई सू रगाबग व्हेगो। अरे! आ तो उरमिला! वो ई हरियल वेस। गोरो-निछोर उणियारो। वड़का-तड़का करती माजनो पाड़यो, 'डाकी चाळो तो नी कठायो। दिन-दिन ऊमर बधै के घटै? आ मवादी प्रीत कठै सीख्या? अैड़ो ई कोई

ढाबौ भरे !'

सगळां री हंसी अेक-दूजी मे भिळगी।

सुदरसण भुळावण देवतौ, 'आ हंसण री बात नी, ऊंडौ विचार करण री है। ट्राई टू बी सीरियस। सीरियस।'

म्है ई हंसतौ-हसतौ पड़ूत्तर देवतौ, 'निरभागण उरमिला रौ दुख तौ अणूंतौ साल्है, पण गाल खावण वाळा माथै हंसी आवै।'

'तौ हसौ, दिल खोलनै हसौ। कदेई कदेई हसी रोवण जैड़ी इज व्है।' सुदरसण छात-फोड़ ठहाका रै विचाळै छूट री मेहर करतौ।

पाणी रा छाबका दिया ई लोई नी ढब्यौ। दांत खासा ऊंडा गडग्या हा। सूता-बैठां कैड़ी तूमत व्ही ! पीड़ तौ पाचा-साता मिट जावैला, पण टाबरा री आख्यां चोज कीकर राखीजे ! अचपळौ सुधीर तौ दपूचा लिया टाळ भवै ई नी मानै। 'तड़कै टाबरां नै काई जबाब देवूं, बतावौ। अबै जीभ क्यू चिपगी ?'

'जबाब कांई दवणौ ? तीन-चार दिन घूघटौ मत उघाड़जै। बस...!'

'टाबरा सू घूघटौ राखू ? थारै बस करयां बस नी व्है। पैला दात बस मे राखणा हा। कालेज मे अैड़ी इज प्रोफेसरी करौ।'

प्रोफेसर सा'ब कसूर मे हा, नीतर घरवाळी रा अैड़ा थोक सुणता भलां ! रीस नै दबाय होळै-सीक बोल्या, 'कै दीजै के ऊदरौ खायग्यौ। नीं नी, मिन्नी झरूंटिया भर लिया।'

'थांरा टाबर अैड़ा भोळा कोनी। थांरा ई कांन कतरै जैड़ा है। कीं सोच-विचारनै जबाब बतावौ। म्हारौ तौ काळजौ फड़का चढ़ग्यौ।'

'कांई बतावू, म्हारी तौ अकल ई कीं कह्यौ करै नी। थू जांणै अर थारा टाबर जांणै।'

'सेवट म्हनै तौ की न की ढाकाढूमौ करणौ ई पड़ैला। पण थांनै आज अैड़ी ऊंधी कीकर सूझी ?'

'ऊंधी थनै सूझी के म्हनै ? नवी बीदणी री गळाई हरियल वेस पैरयौ ! गुलाब रौ अंतर लगायौ ! पछै म्हामे चूक काढ़ै !'

चूक तौ हौ जिणरौ ई हौ, पण विद्वान प्रोफेसर सा'ब घरवाळी नै कीं भणक नी पड़ण दीवी। अर नी टाबरा री मा टाबरां नै असल बात री बेरौ पड़ण दियौ। उपाड़ रै नांव लाठी चाती रै मिस माईता रौ चोज तौ चौड़ै नी व्हियौ पण पीड़ माय री माय पाकगी। रोस रै चभीका, नी दिन रा झख अर नी रात रा। पीड़ रै कैड़ौ चोज ! दिन-दिन राद वसी कुळण लागी। तीम रात आंख मे कस ई नीं पड़ची तौ प्रोफेसर सुधांसु रै तळतळावण लागी। किणनै बतावै, कीकर बतावै ? बूझ्यां कांई जबाब देवैला ! पीड़ रै भेळमभेळ गडघोडा दात तौ वत्ता चौड़ै होवण ढूका। सेवट ओतौ आय उणीज नरस री तपास कीवी। घणा लालरिया लिया तद वा नीठ मांनी। सिझ्या रा घरै आय चाती अळगी लेवता ई उण सूं पीड़ रौ भेद अछांनौ नीं रह्यौ। आंख्या काढ़ती बूझ्यौ, 'आप तौ कह्यौ के दूखणियौ व्हियौ ! औ दूखणियौ है ?'

'म्हैं कांई जांणू ?' फीटै सुरै प्रोफेसर सा'ब कह्यौ।

'तौ कोई दूजौ जांणै ?' नरस संका कीवी, 'इणरौ म्यांनौ समझौ हौ के नी ? बिरथा घरवाळी री बदनांमी व्हैला।'

अबकी घरवाळी नै सीव्योड़ा होठ माडै खोलणा पड़्या, 'क्यूं, म्हारी बदनांमी क्यूं व्हैला ? आंरै लखणां इज तौ अै मांडणा उघड़्या ? अबै भोळा वणै !'

नरस चक री राद घोवती बोली, 'अेक भोळा में तौ घाटौ नी ! अै कोई समझदारां रा काम है ? आपनै मोटा विद्वांन अर कवि जांणती !'

'विद्वांन के कवि रै दांत नी व्है ?' प्रोफेसर सुधांसु नरस रै सुभाव रौ रुख जांणण सारू मतलब रा आखर काढ़्या।

'म्हैं तौ जांणती के दांत भोजन चबावण खातर व्है। आज यांरै मूंडै दातां रौ औ नवौ काम सुण्यौ।'

'क्यूं, थांरौ ब्याव नीं व्हियौ ?' प्रोफेसर सुधासु री मैडम होळै-सीक बूझ्यौ।

'जे ब्याव रा अै चित्रांम कुरै तौ म्हनै ब्याव करणौ ई नी।'

'ब्याव कर्‌या टाळ कीकर सरैला !' पीड़ रै चमीकां दांत भींचती वा संका कीवी।

'यै हाल ई ब्याव रौ कोड करौ ? म्हनै तौ इचरज ई इण वात रौ व्है के समझणी लुगाया नै ब्याव करणौ पोसावै कीकर है ?'

'समझणी के रुळपट ?' इत्ती ताळ उपरांत प्रोफेसर सा'ब रै हीयै पाक्योड़ौ ढीम फूट्यौ।

मलम-पट्टी करती-करती नरस आकरी निजर वांरै सांम्ही जोयौ। मुळक री ठौड़ उणरी आख्यां मे रातोड रळयोड़ी ही।

मलम-पट्टी सू निवड़्यां नरस होठ चाबती वोली, 'दो-अेक दिन मोडौ व्है जातौ तौ गाल काटणौ पड़तौ। थूक री ठौड़ यांरै दांतां विस तौ घुळयोड़ौ नीं है ?'

वारौ मूडौ उण वगत देखण जोग हौ। जांणै सूखा खूसड़ा रा अणगिणत झपीड़ उडया व्है। तौ ई लाज-बायरी जीभ चाय सारू फीटी मनवार कीवी।

'म्हैं चाय नी पीवूं।'

'तौ...।'

'व्हिस्की।'

'व्हिस्की ?'

'हां, व्हिस्की।'

'तौ सिझ्या रा पाछा पधारौ।'

'पधारण री तौ ना कोनीं, पण म्हामें अेक मोटी खांमी के मिनखां रै सायै बैठ व्हिस्की पीवूं। छी. छी. म्हारै भरम में बापडी लुगाई रौ गाल खायग्या ? लाज नीं आई ?'

प्रोफेसर सा'ब रौ तौ जाणै अंस इज सूतीजग्यौ व्है। तौ ई मूंडै अजांण मनपरबारौ गचळकौ निकळग्यौ, 'थांनै कीकर ठा पड़ी ?'

'यै इज तौ कह्यौ !'

'म्हैं कह्यौ ?'

'हा, जीम बिचै ई मरदां रै नैणां री वांणी म्हानै वेगी सुणीजै। अैड़ा निकूच

कवाड़ा करो तो आंख्यां माथै आंकस राखणो ई सीखौ। औ तो म्हारो तिल है जको हाल ठांणै बच्योड़ो, नीतर थांरी आंख्यां तो चिपतां ई कुचर न्हाकती। थारा करम-धरम थें जांणौ, म्हारी फीस बगसावौ, मोड़ो व्है।'

प्रोफेसर सुधांसु रै कांनां जांणै सूळ खुभी। आख्यां ऊंची चाढ़ कलरावती वांणी बूझ्यो, 'फ-फ...फीस !'

'हां, फीस। इण में अचंभा री किसी बात ! थारा सू तो बात करण री ई फीस लेवणी चाहीजै। वा छोडू सो ई मेहरबांनी है। घणी मेहरबानी फोडा घालै। म्हारै भरम परणी रै डाचा रो अेवजांनो तो भरणो ई पड़ैला।'

घड़ी-घडी माजनो बलाण्यां साम्ही वत्ती निसरडाई वापरै। जद लुगाई री जात होय नरस किणी भांत रो सकौ नी खावै तो मरद रै खोळचै प्रोफेसर सुधांसु क्यू लिहाज पाळै ? लुगाई रो संको लोप्यां मरद किणी भाव उणनै नी पूगै। आ काई नरस है के बजराक ! बारलै घावां री खेवटघा तो जाणै, पण काळजो चूथण मे पाछ नी राखै। अटकता-अटकता कैवण लागा, 'अेवजानो भेळो रो भेळो निजर कर दूला।'

'थारो कांई पतियारो ! देवीलाल दरजी रै बारणै तख्ती बांची कोनी : उधार प्रेम री कतरणी है। नी उधार राखू अर नी राखण दूं।'

अबकी मैडम धणो नै ओझाड़ता कह्यो, 'क्यू बिरथा झोड़ करो, बाईजी फीस तो लेवैला इज। गुण मानो के फीस सूं लारो छूटै, नीतर किण सफाखांनै मूंडो बतावती। फीस कित्ती है बाईजी ?'

'दूजां सूं पांच अर विद्वान प्रोफेसर सू इक्कीस ?'

बारो सांस ऊंचो चढ्यो, 'इक्कीस ? इत्तो फरक !'

'की फरक कोनी। म्हारी फीस तो पाच इज है। सोळै रिपिया तो कवि री कल्पना रो डंड है।'

धणो ई काळजो बींधीज्यो पण जोर काई करता ! मतलब री बात बूझी, 'कित्ता दिन लागैला ?'

'विस रा जोर परवांण—दस, पंद्रै, बीस ! जित्ता दिन लागै, गिण लीजो। पैला इत्तो ऊंडो विचार करता तो आ नौबत नी बाजती।'

सेवट प्रोफेसर सुधांसु नै पेटा री अपच बात मूडै दरसायां ई झख पड़ी, 'म्हैं आपनै दो-अेक वळा सुदरसण रै साथै...।'

'हा हा, जरूर देख्या व्हौला। आख्यां सूं औ इज बण आवै। म्हैं सुदरसण सूं लव करूं ! फरमावो, वळै ई की बूझणी व्है ?'

'की नी बूझणो। हां, वो नाटक कद व्हैला ?'

'बांचण री आखड़ी नी है तो टिकटा माथै तारीख छप्योड़ी। म्हैं तो सोच्यो के नाटक देखण री बायड मिटगी व्हैला। आपरै नाटक री, नी बैंकेट होड करै अर नी इनस्को। अबै रावळी दवायती व्है तो जावू, कालै इणी वगत आवूला। फीस री खातर धिन्नबाद। सुदरसण रै खास नी अड़ती तो उधार ई कर देती। माफी चावू।'

'इण में माफी री किसी बात। फीस तो आगै-लारै देवणी इज है। पण आप

चलायनैं सुदरसण री बात छेड़ी तो आपनैं सावचेत करण सारू म्हारो फरज समझू । वो ऊंचो कुचमादी अर अव्वल दरजा रो अलाम है । म्हारै खिलाफ गुट रै प्रोफेसरां री फाकी में आपाड़ो । आपरै साथै धोखो नी करै तो म्हारो नांव फिराय दूं ।'

'नांव फिरावो के नीं फिरावो, थांरी मरजी, पण म्हनै धोखा रो अंगै ई डर कोनी । मरदा रै हाथा धोखो तो जांण-अजाण व्हियां ई सरै, पण सुदरसण रो अैड़ो सुभाव कोनी । आप चिंता ई मत करो ।'

'चिंता री बात माथै माडै चिंता व्है, म्हारो सुभाव इज इण गत रो है, जोर कांई करू !'

हा, जोर वाळी बात तो साची इज ही । प्रोफेसर सा'ब रै 'यक्स विलास' किणी रो की जोर नी चालतो । नी घरवाळी रो धणी आगै, नी टाबरा रो बाप आगै अर नी मा रो मोवो बेटा आगै—जको ऊंचो विद्वांन अर खातीलो कवि है । चार बरसां पैली वांरा बाप नै निमोनियो व्हियो । डॉक्टर तो फगत इलाज रा सीरी व्है, बचावण रा नी । बचावणो तो भगवान रै सारै । पण हाल ई कदेई कदेई वारी मां अधारै विलखै । आसू ढळकावै । वा रो सपूत बेटो ज पेंसिल री सुइया [पेननसलिन इंजक्सन] ले आतो तो वै कदास बच जाता । चार के पांच बरस सुहाग रो गाडो गुड़क जातो । सतरै रिपिया अैड़ी कांई लाठी रकम नी ही । बीदणी रै गाल दूखणिया खातर च्यार-सौ-बीस रिपिया खरच व्हिया इज है । पण मां री आता बेटा नै दुरासीस कीकर देवै !

१३.. प्रोफेसर सा'ब रा पिताजी ऊमर रै मापै सवाया बूढ़ा दीसता । वांरै मिड़कल अर ढाळै खखर, रू-रू सू बूढापो झाकतो । मूंडै दांत री जात नी । बाळ धोळा पड़्या टाळ ई साबो छिटकाय दियो । दांवड़ी कमर । चालतो वेळा दोनू पग धग-धग धूजता । गाबड ठाणं नी ढबतो । गाभा ई जूनो फेसन रा—धोती, अगरखी, फेंटो अर कूटदार लिप्तर । भण्या-लिख्या आत नी । पछै अैड़ा डोळ रा धणी रो परिचय देवतां कीकर भूडो नी लागतो ! केई वळा मित-वलिया रै साम्ही बैआ आटी कीकर सुळझाई सो वारो जीव जाणै । बिरोबरी रै ठरका वाळो कोई चलायनै पूछ लेतो के अै बा'सा कुण है तो इण सवाल रो वारै पाखती सीधो पड़ूत्तर नी हो के वै वांरा पापा है । पापा रो गसको अैड़ो व्हे कांई ? वारै टाबरा रा पापा कैड़ाक ओपता है : तीखो नाक । कूठरी बत्तीसी । हिन्दी रा प्रोफेसर । डॉक्टर । कवि । विद्वांन ।

बिजळीघर म काळै गाभा काम करणवाळा छोटा भाई अर बूढी मां रो परिचय देवण मे ई वानै खासी लाज आवै । की बरस पैला वै टाई नी बाध सकता तद वानै केई वळा भेळो-भळो हांवणो पड़घो । बद कमरै अकेला घणी माथा-फोड़ी करी तद कठैई वै अगरेजी खांणो अगरजी ढंग सू खावणो सीख्या । अबै कैड़ा ई छोटा-मोटा मजमा मे छुरी-काटा सू नी बिदकै । इण हटोटी उपरांत ई वै रॉटरी क्लब रा मानीता मेंबर बण्या ।

तिणखा सात सौ रिपिया । कम सूं कम दो-ढाई-सौ री ट्यूसण । पांच-सातेक आलोचना री पोथ्यां अर अेकाध 'पाठ्य-पुस्तक' री रांयल्टी । पत्र-पत्रिकावां री

छुट-पुट आमद । पंद्रै-सौ रिपियां री मेळ-मांढ़ौ खरो । तद इण मरजाद रै ठरका जोग ठागो तो निभावणो ई पड़ै। सफेदपाशी री लाज नै पग-पग माथै जोखम है, इणरी कांण निभावणो छूलाछूली रो खेल कोनी।

१४. प्रोफेसर सुधांसु रै 'यक्स-विलास' कोई चाकर नव दिन सू बत्तो नी टिकै। बिना पगार ई न्हाटग्या सरै। अेक पहाड़ी सूरवार बारह दिन ताई दात भीचनै सोरो दोरो कीकर ई सैंठो रह्यो, पण तेरहवे दिन तो उणरा ई पग छूटग्या। लूखो-वासी रोटी अर वाई अधभदरो। बचै सो भाग री। गाळ्यां, धुरकार अर धसळा, किताक दिन धणी रा ताख उठाइजै। अर अै धाणया रै ई माथै बाधै जेड़ा टाळका धणी। चाकर अेक छिण खातर ई निकमो काई दीस जावै। कांम अर आदत दाना रो पोखाळो। दावड़ो घाटो। काई खास काम नी उपजै जित्तै तिरस घाट ई मूडो बिगाड़ हुकम फरमावै, 'पाणी री गिलास तो भरला! फुरती सू। जाणै अठै इज ऊभो व्हे।' हाथ म गिलास थम्या पैला ई नुक्स त्यार-टच, 'देख तो, सावळ आख्या फाड़नै देख तो खरी—कित्तो रेत धुळघाड़ी है! काल ई माजनो पाड़चो के बरतन-वासण माजनै पूजता धाया कर, पण म्हनै तो थारी अकल इज काटाज्योड़ी लागै। थूं आखै दिन बैठो करै काई है? माख्या मारै? पण माख्या ई मरचाड़ी कठै! गडूरड़ा री गळाई अस्ट-पोर खावण अर सूवण टाळ थारै तीजो काम ई काई! याद राखजै, अै हरांम री राटघा थनै ई फोड़ा घालेला।'

नवो नोकर आख्या फाड़नै जम्याड़ी रेत जावण री आफळ करतो तद वै ओझाड़ता धसळ भरता, 'लगूर रै उनमान थाबड़ो चाढ्या काई ऊभो, पाणी पलटीजै कोनी। जूता फटकारघा टाळ थारी अकल ठाण नी आवै।'

पाणी रा दूजा गिलास ई हाजर व्हे जाती। दो-अेक घूट पीय सोचता के अबै...! अचाणचक हुकम छूटतो, 'इण कोट रा बटण खोलनै उण कोट मे घालदै। आ दरी ऊधी बिछायदै, देख कित्ती मैली व्हियाड़ी। कां सूझै के नी? गुद्दी लारै आख्या व्हे तो ई दासै, पण थू म्हारै भाग रा सूरदास जबर पानै पड़घो। लारला भौ री मागत मांगै?'

सुदरसण रीस रै पुट डोढ़ फेंकतो, 'अै सफेदपोस सिरायत, माथै रा मोड़! चाकर नै पूजतो रांध्या टाळ आनै रजत नी व्हे। मासका मांयली गाळ्या अर ठोकरां अगै ई अछेरा नी लागै। पण आपरै हाथा पाच सेर बोझ ढावण म ई अणूती लाज आवै। खापन-खाप कड़प म सळ भरीजै। मरजाद घटै। कैड़ी अजब भोपा-हफरी है! कैड़ो सूगलो स्वाग है! कैड़ी अपळग मानतावा है!'

१५. 'यक्स-विलास' री कार लोप्या पिछा घोर नास्तिक है। 'अरे, आप भगवान माथै विसवास करो! देवी-देवता मानो! इण विग्यान रै जमानै हाल पूजा-पाठ करो! नी व्हैणो, इण देस रो कल्याण सपनै ई नी व्हैणो। ओ तो डूबणो है जको अेक दिन डूब्या ई सरैला।'

बात सपूरण करघां पैली सुदरसण नै अेड़ी हसी छूटती के नीठ बोलीजतो। 'कदास थानै अगै ई इण बात रो बरो कोनी क हाथी रै भाडक सूड-सूडाळा गणेस-

भगवांन री अ नित दोनूं टंक अंधारै-अंधारै पूजा करै। आरती उतारै।'

१६.. पाच मिनट खोटी होय प्रोफेसर सुधांसु मंगतां नै ओळाड़ै, 'मिनख होय मिनख रै सांम्ही हाथ पसारतां लाज को आवै नी ? भीख मांगणा विचै तो मरणो आछो। लाख जतन करू तो ई म्हारै समझ नी पड़ै के ओ मळीच कांम थांरा सू कीकर बण आवै ! मजूरी करो। पॉलिस करो। हमाली करो पण भीख मत मागो।'

१७.. क्लास मे प्रेमचद रो 'गोदांन' पढावतो वेळा वै महाजनी सभ्यता नै भांडै। रगत चूमण वाळी जिळोका सू सूदखोर बोहरां री ओपमा देवै। वानै करसां री काया रो सूळो बतावै। रीस मे थूक उछाळता गाजै, 'अेक रा इक्कीस वसूल करघा ई साहूकार री बही रो मूळ ज्यू रो त्यू अखै अर नेगम। सूठ री ठोड ऊट अर खोपरा री ठौड़ खोपा रा दाम नांवै माडयां उपरांत ई वांनै संतोख कठै ! अैड़ी हिंसक सभ्यता रो हाल ई आको नी आयो।'

पण आको आवै कीकर जद खुदोखुद विद्वांन कवि ब्याज-बट्टा रो कांम करै। ब्याज ई कोई मोळो-मीठो नी। आकरो। तीन री मिती रो, चार री मिती रो। अर वो ई हाजर माल माथै। माल रै मोल सू आधी रकम देवै। इण सू मोटो फायदो के मुकदमा-पूळो री नौबत नी बाजै। जिणरै सात गरज व्है रकम ले जावै, ब्याज भरै। वै तो किणी रै बारणै जाय थोरा नी करै के वीरा थू उधार लै, म्हारै पाखती रिपिया मोकळ है। क्लास मे भणावण री बात न्यारी, निजू आचरण री वात न्यारी। बोहरा नै उधार देवण री आजादी है। आसांमी नै ब्याज भरण री आजादी है। आजाद भारत मे सै आजाद है। गुलामी रो काळो मूडो अर लीला पग !

१८.. प्रोफेसर सा'ब जनता-जनारदन रो कांण-कायदो राखै। गिणती रो घूसो मांनै। पण जनता अर अकल रै बरगा-बैर। कोई मूडो मानै तो हजार वळा मांनो, झूठो हूंकारो वारा सू नी भरीजै। लरड़ी मे अकल व्है तो जनता मे अकल व्है। दोनू हाथ जोड़ता वै खास लुळताई सू अरदास करै, 'बात तो खारी लागैला, पण है साव साची। साच बूझो तो साची बात इज खारी लागै। अर म्हारा सूं साच कह्यां टाळ ढबीजै नी, आ मोटी खोड़। बानगी रै नमूनै—फगत अेक मिसाल रो मुलायजो फरमावो के जद सरकार रेल रै डिब्बै-डिब्बै काळै आखरां सुभट हिदायत मांडी के उण मे कित्ता आदमियां री मागा है। पण बाचै कुण ! कोई माई री लाल बांचै तो परवा कुण करै, जूतोजो ! सही अरज करू के गुणचाळोस री नफरी वाळा डिब्बा मे नेदू आदमी ! म्हैं खुद गिण्या ! दस सीट वाळा डिब्बा में पचास पचास आदमी। लरड़ियां री गळाई धटाधट भरघा। सांप्रत भेड़ चाल ! अेक जणो डिब्बा मे घुस्यो नी अर लारै हेड री हेड़। आप ई फरमावो, इणनै काई कैवां –समझदारी के मूढ़ता ! म्हारो बस चालै तो नफरी सूं वत्ता जातरियां नै धक्का देय हेटै धरकावू। कांकड रै बिचाळै, रेल ढाबनै। पछै सावळ ठा पड़ै के लरड़ी री गत चाल्यां मिनख मे कैड़ा फोहा पड़ै ! डर बिना प्रीत कठै !'

१९.. वैं रहस्यवादी कवि है अर प्रगतिवादी आलोचक। अणछक, सुदरसण नै जांणै कोई भूल्योड़ी बात याद आयगी व्है। इण गत उछळनै बोल्यौ, 'आंरी कवितावां में तौ रहस्यवाद लबोलब छिलै, पण आंरै नांव मे ई इणरौ तुठार कोनी। पूरौ नांव बतावै जिणनै मूंडै मांग्यौ इनाम! किणी घाडायती नै जीवतौ अपडणा विचै ई वत्तौ इनांम। दाळिद्र अळगौ करणौ व्हे तौ अटकळ लगावौ। अेक...दो...तीन।'

किणी सूं की अटकळ लागी नी। सुदरसण रै मूडै वांरौ पूरौ नांव सुणतां ई आखी मंडळी मे हंसी री बौछाड़ फूटी। प्रोफेसर रांम कटोरी लाल सुधांसु। आखै राजस्थांन आपरी जोड़ रौ औ अेक इज नाव व्हैला!

२०.. जद कद किणी हरख रै मंगळीक टांणै, मिनख हंसै, मुळकै के ठहाकौ मारै, उण अबोट पुळ वौ नीं तौ धाडैत है अर नी चोर। नी हित्यारौ, नी हथमार। हंमी री निरमळ आब—वौ फगत निरापेखी निस्वारथ मांनखौ है। पवीत अर पालर! नीं उणरै अंतस गळेटां रौ लवलेस अर नी गाठ-गुट्ठी रौ गब्दोळौ। हंमी मिनख रै ऊजळा अंतस री इमरत वाणी है। पण प्रोफेसर राम कटोरी लाल सुधांसु री हंमी में सरासर मैल घुळयोड़ौ। ध्यांन सूं जोयां नीठ पतौ पड़ै के वांरी मुळक रौ रंग काळौ है। फगत दांत काढण री लकब हंमी नी व्है। डॉक्टर रांम कटोरी लाल सुधांसु दांत काढ भलां ई मुळकै, खिलखिल हंसै के तावड-तोड ठहाकौ लगावै, उणरै दरसाव, हीयै दपटयोड़ौ सूगलवाड़ौ अर ओछापणौ ई चौड़ै व्है।

२१.. दीखती आंख्यां रै आंकस किणी पातर रै कोठा री दिस मूंडौ करण में वांनै हेंप आवै, पण खासमखास बेलियां रै पतियारै किणी अलायदी ठौड निवत्योडी पातर सूं कैडी ई कुनळी खमडोळ करण मे वै नी चूकै। राग-रंग री धमचक मागा होय नाचै। अेकर रांम जांणै वांरै कांई धत झिली के वै चार भरपूर पैग धबाधब चूंपग्या। दारूनी विद्वांन री कांण राखै, अर नी कवि री। जैडो-तैडौ ई फोरौ-पतळौ ग्यांन हो, फटकारै गुळाच खायग्यौ। वै नंग-धडंग आंगणै पसरग्या। घूमर लेवती सीता री छींया वांरै माथै पडी तौ वै कलरावता बोल्या, 'सीता, प्यारी सीता, थारी छीयां नै अळगी मत लै। म्हैं इण सूं ई आपरौ कांम सार लेस्यूं।'

भरोसा रै खासमखास साथीडां वांरै ग्यांन रौ घूंसौ बाजग्यौ। अेक बाळगोठ्यै कह्यौ, 'विद्वांन अर गावदी में औ इज तौ भेद है। कैड़ी धाकड़ बात सूझी। वाह रे प्रोफेसर! धिन है थारा माता-पिता नै।'

तठा उपरांत ताळी रै तटकारां प्रोफेसर सुधासु गरळावती ढाळ गावण लागा, 'धिन-धिन थारी कारीगरी रे किरतार।' पछै सीता री छीयां सारू निरी ताळ झांपळियां भरता रह्या, 'सीता, म्हारी मावडी, थारी छीयां आंतरै मत लै, म्हारौ धाकौ धक जावैला। सीता, प्यारी सीता, म्हारी मावडी।'

मित मंडळी री हंसी रै घिरोळां, सुदरसण ठीमर सुर में झाडतौ, 'औ है अपांरी सभ्यता रै स्वांग रौ बेबलौ! कळा अर संस्क्रति री बांनगी! उजास सूं डरपां, अंधारै सै कीं छाजै। कथनी अर करणी में कित्ती छेटी पड़गी अर पडती ई जावै! धरम, उपदेस अर नीति रै दपलां अबै घणौ तंत कोनी। दिखावटी आचार-

विवहार, प्रोफेसर सुधांसु कैड़ा नेक, सालस अर विद्वांन गिणीजै, पण घाम तळै कित्तो काळम अेकठ व्हियोडो! रगां रो लोई तकात मगसो पडण लागो। मैला री हांडी, ढकणा रै जोर कित्ता दिन तांई धिधक दपटघोडी राखीजै! बारली माया रै लेखै जको मिनख, जित्तो ई अमीर अर आसूदो है वो आपरी काया अर अंतस रै सीगै उत्तो ई देवाळियो, मलीण अर फीटो है। राजी मत व्हो, प्रोफेसर सुधांसु कोई अेकला गिगन रै तारां हेटै थरकोज्योड़ा कोनीं। वै जणा-जणा रै हीयै छानै-मानै वास करै। अपां सगळा प्रोफेसर सुधांसु रा न्यारा-न्यारा रूप हां। आप-आपरी ओळ अर आप-आपरै ठरका परवांण। कुड़ता रै मांय झांकू तौ ऊडै अतस म्हनै प्रोफेसर रांम कटोरी लाल सुधांसु री छिब कुरघोडी दीसै।'

अणछक कुरसी सूं मचकै ऊभौ होय वो राखदांनी में सिगरेट बुझाय कैवतो, 'म्हारा पितास्त्री, महाराजा अजीत सिंघजी रै बंगळै बागवांनी रो कांम सभाळै। ठारी व्हो, भलां ई बरसात के आंधी-रूळी, वै च्यार बज्यां आपरै हलोलै लागै अर रात रा दस बज्यां पाछा घर रै बारणै ढूकै। रोजीना अट्ठारै घंटा कांम। फगत काम। तद कठैई तीस दिनां उपरात साठ रुपल्ली हाथै लागै। पण वांरै खपता म्हनै कदैई विखा रै गळाकर नीं फरूकण दियो। रिपिया मांग्यां, वै टाळम-टोळ करघा व्है, म्हनै याद नी पड़ै। अर म्हैं नित-हमेस उम्दा रेस्तरां में गप्पां ळळकावू, सिगरेटां फूकू। जग भावता गाभा पैरूं अर कदैई-कदैई तिल वाळी नरस रै जोड़ै व्हिस्की रा दो-चार पैग ई जमावूं!

किणी नैं वेरी व्हो, भलां ई मत व्हो; आंख्यां अर कानां परबारी साच तो आपरी रांमत रमैं री रमैं। कुण जांणतो के सूरज रै तप तेज रात चापळचोड़ी व्है अर रात रै काळूंटै पड़दै सूरज !

परतख प्रीत रा खरडा तो घणा ई लिखीज्या, नी माठ—नीं सेडो, पण अदीठ अजाण प्रेम री वारता तो संताजोग म्हारै इज पांनै पडी। बातपोसी री सिरमोड़ सुदरसण कोड-मोद सूं दूजी बानां तो म्हनै खासी लिखाई, पण बारम्बार घोदायां उपरांत वो कदै ई मांडनै आपरी आ निजू बात नी सुणाई। आळचा-टोळचां रै मिस टरकाय देतो। सोरै-सास फिटक में आवणियो वो बंदो नी। पकावट जांणू कै आपरो रामो बाच्यां वो म्हारै मायं ओमनो ई खासो करैला, पण लेखक री कलम किणी री कांण-लिहाज नीं पाळै, ओ मरम ई वो म्हारां मूं बेसी जाणै। थोड़ा दिन ढीम पाक्योडो रैवै तो छो रैवतो।

तो कांई तिलवाळी नरस रै पसाव म्हनै ओ उकरास लाधो ?

बोर खावण सूं वास्तो है के बोरड़ी सू ?

बोरड़ी री पडतांळ फिटी करो, कांटा भागैला। निरमळ ऊजळै चित नेहचा सूं आ बात बांचो। लिख्यां उत्तो आणंद नीं आयो जित्तो बांच्यां आवैला। इण में सांमो व्है तो म्हैं ओळवा रो झेलू। निसंक ओळवो दीजो।

अकल तो सुदरसण में नीतर ई उबरती पड़ी, तो ई अकल-डाढ रै झरणाटै

अकल बधी के नी बधी, कुण जाणै, पण रीळ रै दरद कीं घाटो नीं हो। अंतस री तमांम सुध-बुध डाढ रै ओळू दोळू अेकठ व्हैगी। घड़ीक सूवै, घड़ीक ऊठै अर घड़ीक न्यारी-न्यारी पोथियां रा पांनां फिरोळै पण तड़फा तोड़तो मन कीं तार्बं आयो नी। कीकर ई दांत भीच वो आखी रात सैंठो रह्यो पण ढळती रात काठो लातरग्यो। जे दांत री ठौड दूजी कैड़ी ई पीड़ व्हैती तो की धारतो नी, पण नवी डाढ़ रौ चटीड़ो कैड़ा ई सूरवीर सू नी सहीजै। तद उणरी तो जिनात ई कांई, वो तो फगत न्यांनो हो—आज रै जमांना-जोग इंटेलेक्चुअल। तो ई आइंस्टीन री थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी इण रीळ रै परताप जैडी अबार हीयै ढूकी वैडी घडी-घडी बाच्यां ई पांनै नी पड़ी। अैडौ लखायो जांणै आइंस्टीन रै आगै वो खुद इणरी खोज कीधी व्है।

अगाढ ऊघ रै पसाव चुटकियां मे ढळण वाळी रात लांठी ई लांठी पसरगी, जाणै ढळणो पातरगी व्है। रात रै करड़-काबरै उजास जुग रा जुग थाल खायग्या, पण नाग-खाधी रात रो अंत नी आयो। वगत री छाती, खूटी ठोरण वाळो अैडो गरू कुण मिळचो? नित-हमेस छांनै-मांनै उडण वाळो वगत इण भात बैसकै कीकर बैठग्यो। चांद री जगामग चादणी अैडी कोजी अर पिलांदरी व्है कांई? तारै-तारै राद री कुळण खिवनी लखाई। आज ई सावळ ठा पड़ी के चिड़िया री लपर-चपर कागला री कांव-कांव सू कम बाडी नी व्है! अर ओ अचपळो सूरज नीठ अेक रात मूडो लुकायां ढवतो, जको आज हजार-हजार सासती राता कठी उधळग्यो? नित-नेमी सूरज री अैडी कावळ पत तो नी जांणी हो। कठैई लंकाव ध्रुव वाळी लांबी लडाक छः माही रात अठी तो नी तिमळगी! अकल रो छातीकूटो ई उणरा सुख सूं कम नी व्है। अकल-डाढ रै चम चाळचां सुदरसण नै नी-नी व्है जैडी अजोगती बातां उपजण लागी। समझ नी पडी के आ नवी अकल री पीड है के नवी डाढ री। डाढ रै न्यावेक घूंटा सूं जद अैडी झरणाट माची तद जापा री पीड़ रो तो लेखो ई कांई! लुगायां व्है अर आ पीड़ झेलै! धिन है वांरी वजर-छाती नै। वळै ई मोल्या मरद वानै अबळा गिणै। जे लुगाई री ठौड मूछाळा-मरद नै जापा री झाट झेलणी पडती तो नव महीनां छोड नव वरस ई उणरै छूटापो नी व्हैतो! ओ तो लुगाई रो इज परचो के वा नवा मांनखा नै कंवळी पांखड़िया आदरै!

खासी ताळ पोथी वांच्यां टाळ सुदरसण नै नीद इज नी आवती। आखरा रै अलेखूं पावडियां-पावडियां रिमाझिमा नीद उणरी आंख्यां थापळती जको घणो दोरो साढो छिटकावतो। पण आज जकी पोथी रो आसरो लेवतो वा खुरदरा भाटा ज्यूं अळखावणी लागती। अकल-डाढ रा चटोडा नी लाओत्से सू भरमीज्या, नीं कन्फ्यूसस, नीं वेद, नी उपनिसद, नी झेन, नी सांख्य, नीं पंचतंत्र, नी कालिदास, नीं भवभूति, नी सेक्सपियर, नी गेटे, नी होमर, नी सिलर, नीं नीत्से, नीं चेखव, नीं कबीर, नी रवी बाबू, नी सरतबाबू, नी ज्विग अर नी कजान जाकिस सू। नी दोस्तवस्की सूं सांधो लागो, नी विक्टर ह्यूगो, नीं बालजाक अर नी गोरकी सूं की गरज सरी। उछाव सूं अेक-अेक पोथी री सरण मांगतो अर आंती आय पाछी ठाणै धर देतो। नवी डाढ रा चभीका पाड़ती अकल किणी री फुतरका जित्तो ई गिनरत नीं करी। वा तो फगत आपरी पीड़ में इज कळपोड़ी ही। अकल रो दरियाव सुदरसण घणा ई तरळा तोड़चा पण पीड़ आगै कीं पसवाड़ो नी फुरचो। के अणछक

उणरी हारघोड़ी मीट वळै अलमारी रा खण टंटोळती अेक किरमिची पोथी माथै अटकी। ठावकी सुवरण कोरणी उणरी मीट झापी के अन्ना करेनिना[1] री अबोट प्रीत। जैड़ी अन्ना री अदब छिब वैड़ौ ई फूठरौ पोथी रौ डोळ। दो-दो रूप भिळ्यां कदास की कारी लागै तौ! डोकरिया टॉलस्टॉय रौ निरवाळौ खत अन्ना रै ओळावै तूठै तौ तूठै। अन्ना रै कांमण री तौ बांनगी इज न्यारी। सिरैपोत ई आ सुध-बुध बावड़ती तौ आखी रात औ बिखौ क्यूं भुगतणौ पड़तौ? अणछक डाढ रा चभीका खिणेक बिसराय सुदरसण री आख्यां किट्टी[2] रै जापा रौ चित्राम भळकियौ। चसमस रीळ रै चटीडां जांणै कोई अमोघ बूटी कार करची व्है। पांनौ-पांनौ पतवाण्योडौ हौ। दूजी फिरोळी मे ई कस्टीज्योड़ी किट्टी आख्या साम्ही टसकती लखाई। लेविन[3] मूंडै-ढाळै कळझळ मे फदचोडौ। घड़ीक किट्टी रै पाखती आवै अर घडीक आतरै टळकै। आंतरै गियां कस्टीज्योडौ परणी रै पाखती जावण सारू मन ताखडा तोड़ै। पण रूबरू ऊमण रौ करार टंवळी खायां पाछौ आतरै न्हाटै। किट्टी घणी नै थावस बंधावण सारू माडै मुळकती, पण मुळक रौ वैड़ौ गाढ नी हौ। चसमस चीस री घाल्यां उणरा चेता रै मठोठी लागती। हाबगाब लेविन घडीक आतरै, घड़ीक सलवै। घडीक सलवै, घडीक आतरै। कदेई की मिस तौ कदेई कीं ओळावौ!

हे भगवान! रळी रै आणंद रा सेवट अै परवाडा उधड़चा। अैडी ठा व्हैती तौ किट्टी री छीयां रै गळाकर ई नी फरूकतौ! आणंद री उण सिरै-समाध मे आ पीड कठै ओटचोडी ही। आणंद में गळबत्या अर बिखा मे आंतरै? खुदोखुद नै अैडौ गुगरौ तौ नी जांण्यौ हौ! पण अैडी पीड़ रै पळेटां झिल्योडी किट्टी रै कोयां धुरकार री ठौड़ वळै हेजळी प्रीत निगै आई—थैं मोटचार इण पीड़ रौ आणंद कांई जाणौ?

डॉक्टर नै बुलावण री खथावळ, लेविन जांणै पांखां रै पसाव उणरै बारणै उडतौ गियौ। पण डॉक्टर तौ हाल सूतौ! अैडी अबखी वेळा ओटाळ नै नींद आई तौ आइज कीकर? अैडी मतलबी दुनिया माथै पटकी ई कठै पड़ै! ओजायला डॉक्टर माथै लेविन नै जाणै जित्तो चडाळी छूटी। उणरी ढील रौ अेक-अेक छिण उणनै बरस रै उनमान बाड़ौ लागौ। किट्टी रै जापा टाळ उणनै की दूजी बात सूझती ई नी ही। अणूता इचरज री बात के लेविन री घांण-मथाण, खुद सुदरसण सारू डाढ रा चभीका पातरै पडग्या। किट्टी रै जापा री पीड मे अकल डाढ़ री रीळ ऊंडी ई ऊंडी झरगी। समझ नी पडै के वौ जापौ किट्टी रै व्हियौ के टॉलस्टॉय रै के लेविन रै। कठै ई खुदोखुद सुदरसण किट्टी रौ ठौड उण टमकतै बिछावणै तौ नी सूयग्यौ? लेविन खातर आखी दुनिया लाय में धू-धू मिळगती ही के उणरै कांनां जच्चा रै टाबर होवण री भणकार सुणीजी। सेवट कोळ रै उनमान रातौ-रातौ टाबर देख्यां हरख री ठौड लेविन रै हीयै खीज आवटी—कें-कें करण वाळी इण वेंतिया लोथ नै वांरै आणद बिचाळै भज पटकण री किसी पंचायती ही? क्यूं, क्यूं उण अमाठ आणंद रौ मठ मारचौ? बाप नै जाणै जित्ती जूंझळ छूटी। पण किट्टी रै समझायां, मुळकिया सेवट उणरी खीज नितरगी। किट्टी रै सांयत वापरतां ई सुदरसण रै सूज्योड़ै मसोडै पाछौ वैडौ ई चभीकौ साल्हियौ। वौ वळै ठेठ सू किट्टी रै जापा रा पाना आपरी मीट पाछा पंपोळण लागौ। किट्टी री पीड़ रै पसाव वौ वळै आपरी

पीड पांतग्यो। लेविन सूं तो घणो मोडो उणरो ब्याव व्हियो। पैला वा व्रोन्स्की[4] सूं प्रीत करती ही। विजोग में लांठी मांदगी ई भुगतणी पड़ी। हां, व्रोन्स्की रै ई अेकर दांतां में अैडी पीड़ जागी ही। सुदरसण पांना फिरोळ दूजै ई छिण वै ओळियां बांचण लागो। पण व्रोन्स्की रै दांतां वो आपांण ई कठै हो के सुदरसण रा चटीडा चेतै उतरता। वो हळफळ हाथां वळै किट्टी री चसमस चौरां मे बिलमग्यो। फगत लुगाई री पीड़ में ईं आखी दुनिया री पीड़ खटै। नीतर अजै तांई सै पोखाळो व्है जातो। खुद चसमस पीड़ में दोवड़ी होय लुगाई सरब दुनिया मे पूजतो आणद पूरै। फगत लुगाई में इज मांनखा री मां बणण रो आपांण है। हीणपुण्या बाप रो काई ठरको, नी कुत्ता नै जोर पडै अर नीं गधा नै। निछेल्यो बाप बणण में कैडी अबखाई ! साव सोरो अर नाकुछ कांम ! तो ब्याव व्हियां सुदरसण नै ई बाप बणणो पडैला। अंतस घिन सांचरी। अैडो नांवगो नीं काढणो। नी परणीजै अर नीं बाप बणै। बाप तो सपनै ई बण्योडो खोटो। हां, अन्ना करेनिना ई तो सेर्योझा[5] री मां ही। लुगाई ही, इणी खातर मां बणी।

उफफ, अबै जावतां माठा सूरज नै ऊगण री ताखो लाघो। सेवट सभागण रात रै ई जापो व्हियो। किट्टी री भांत इत्ती ताळ आ ई कस्टीज्योडी ही। सावळो रात रै सूरज सारीसो वेटो। गोळ-मटोळ। झळ रो पूतळो। उजास रो सोवन थाळ। आयो. सूरज पांखां बारै आयो। आखी दुनिया मे सैचन्नण उजास। कैड़ा तपतेज रो सिरायत है औ बाळ-गोपाळ। जापा री पीड टाळ चांनणो कठै ?

हे रांम, जद मसोडा री सोजन नवी डाढ रै घूंटै अैड़ा चटीड़ा साल्है तो जापा री पीड़ रो कित्तो-कांईं दरद व्हैतो व्हैला। सुदरसण घड़ी-घड़ी इण अेक बात माथै विचार करण लागो।

पीड सुदरसण रै है, डॉक्टर रै तो कोनी। तद सफाखांनै वेगो पूगण री क्यूं खथावळ करैला ? जिणरै पीड़ पाकै, वो भुगतै। चीरो लाग्यां कदास डाढ़ रै भेळमभेळ अकल नै ई बारै आवण सारू मिस लाधै। कैड़ो ई भूंडो-भलो व्है, सफाखाना रै आसरा टाळ नीं सरै। गियां ईं सरसी। मौत आयां मरणो पड़ै तो पीड व्हियां सफाखांनै ढूक्यां टाळ नेहचो नीं व्है।

टॉलस्टॉय री पोथी रै जोह गाल रै चोलडो रूमाल चेप्यां वो उम्मेद अस्पताळ पूगो—अन्ना करेनिना नै पंपोळतो। फिरोळतो। घडी-घडी टॉलस्टॉय री छिब निरखतो। कदास उणरै कामणगारै खत अळझ्यां चटीडा पाड़ती पीड़ की मुळझै तो ! की सांयत वापरै तो ! जापा री पीड रै ढाळै, दातां रै चटीडां खातर कदाम जिनांनै सफाखांनै इणी वास्तै अेक न्यारा कमरा रो सरतन जुड़्यो व्हैला। सुदरसण अेकर वळै आरमपार मीट गडाय टॉलस्टॉय रो खत अर उणरा अघमदरा बाळ निरखण लागो। मिनखा री दुनिया माथै खत वाळां रो थिर धूसो बाजै—डारविन रो, मार्क्स-अेंजिल्स रो, फ्रायड, लेनिन, टॉलस्टॉय, चेखब अर रवी बाबू रो। होची मिन रो। कित्तो ई छोटो हो तो काई, हो तो फोरो-पतळो खत ई ! जोर सूं धमीको हाल्यो। जे केई दिनां आ पीड़ नीं मिटी तो? डॉक्टरां रै कळाप कीं कारी नीं लागी तो? अबकी आ पीड़ मिट्या सुदरसण हथीको खत राखैला। धूसो बाजै के नीं बाजै, खत वाळा टणकेल सापुरसां री जोड़ खुड़ावण मे कांई जोर पड़ै ! पण अेकर

आ बाळण-जोगड़ी पीड़ मिटै तौ खरी ! इण खोडीली पीड़ नै इण अंवळी ठौड़ ई चभीका पाड़णा हा। किणी दूजी ठौड पीड़ व्हियां, नी तौ उण नाकुछ दरद री यारै करतौ अर नी सफाखांना री दिस मूडौ ई करतौ। दांत रौ दरद हदभात कुजरबौ व्है। इण आगै सै दरद माड़ा। साचांणी, निरोगी काया सू सिरै दूजौ की सुख नी। सुख भोगण वाळी काया रै जद तळतळावण व्है तद कीकर सुख रौ साव लिरीजै ? फगत काया निरोगी चाहीजै। दूजा सुख बरसै तौ चोखी बात, नी बरसै तौ चोखी बात। अकल-डाढ़ रौ भचकौ ऊठ्यां, साजी-सूरी काया रौ महातम कैड़ौ वेगौ समझ मे आयौ ! साचांणी, अकल रै पांण तौ लागी ! पण अकल रै वधावा सारू दरद क्यूं जरूरी है ? बिना दरद अकल वधती तौ कांई कसर रैवती ? टॉलस्टॉय तौ अगै ई मांदौ नीं पडयौ। खासौ जतन राखतौ काया रौ। काया है तौ दुनिया रा थाट-बाट है। मुड़दौ के तौ ऊंडौ कबर बूरीजै के रथी में बळै। पण अेक बात अखरै के मुड़दा नै किणी भांत री की पीड़ नी लखावै। नी अकल-डाढ़ री अर नीं घोबा री। कठा सू ई वाढौ, छूंनौ। कीकर ई बाळौ ! योग साध्या कदास पीड़ रौ अेलम नी व्है। जीवती काया नै पीड़ रौ अेलम नी व्है तौ चाहीजै ई कांई ! अवकी इण अकल-डाढ सू निवड्यां अवस योग सीखैला।

कमरा रै मूंडागै थटाथट भीड़ री आस ही, पण कठै—अेक विचियौ ई आखती-पाखती नी दीसै। फगत अेक अधवूढ फरासण खादी रै झिगदळै मसोतै पोचौ लगावती ही। तौ कांई सुदरसण टाळ किणी रै ई दांतां के मसूडा भचकौ नीं ऊठ्यौ ? खैर सल्ला, वेगौ ई निवड़ जावैला। वगत री पोळाई डॉक्टर ध्यांन सूं जोवैला। वेगा री तौ होड इज नीं व्है। भलां, पीड़ वाळा नै निरांत व्है कीकर ? हां, व्रोन्स्की री प्रीत कूख में पूजती पागरयां अन्ना नै ई जापा रै टांणै औ खुड़कौ व्हैगौ के वा दोरी ई वचै। पण डाढ री पीड सूं प्रांण री जोखम तौ नैडी-आगी ई कोनी। जापा री तौ चीस ई निरवाळी। अवळौ आयां मरणौ ई पडै। अन्ना करेनिना नै ई कैड़ौ वेजा डर लागौ ! प्रीत री गैळ बिचै मौत रौ डर लांठौ व्है।

'बाबूजी, थोडा पग ऊंचा लीजो।'

सुदरसण झिझकनै अन्ना री प्रीत वाळौ जापौ आघेटै छिटकाय सांम्ही जोयौ। फरासण वाल्टी में मसोतौ निचोवती बोली, 'वेगा घणा आया ? दांत रौ दरद व्है इज अैड़ौ। झख इज मी पडै।'

सुदरसण पग ऊंचा लिया तौ वा अजेज कांम में मगन व्हैगी। जांणै पोचौ लगावण सूं सिरै दूजौ की कांम नीं व्है। चिपचिपी मैली ठौड़ पोचा रै पांण ई तौ पळकण लागै ! लांठो किरमची पोथी री सुवरण लीगटियां निजर भिड़तां ई सुदरसण रौ ध्यांन बंध्यौ के गीलै मसोतै आंगणै पोचौ लागै तौ ग्यान री पोथ्यां अकल रै पोचौ लागै। कांई अन्ना री गळाई आ फरासण ई हयळेवा रा धणी टाळ किणी सूं प्रीत करी व्हैला ? जरूर करी व्हैला। दुनिया री सै लुगाया रै पवीत अतम अन्ना चापळधोड़ी व्है। धणी तौ फगत घरवास रौ पूतळौ। टाबरा रौ बाप। बंस रौ किरतार। पण घरवास सूं न्यारी प्रीत टाळ लुगाई रै रूप-जोबन चांनणौ इज नीं व्है। उपफ...डाढ री पीड़ आगै सोचण रौ बख इज नीं मिळै। दात भींच फरासण नै बतळावतां बूझ्यौ, 'डॉक्टर साहब कणा आवैला ?'

'डॉक्टर साब !' वा मुळकती कैवण लागी, 'इत्ता वेगा डॉक्टर साब कठै? वै तौ वगतसर ई आवैला—आठ बज्यां। जित्तै पोथी में मन बिलमावौ। हाल तौ सात ई नी बजी !'

सुदरसण चाबी रै रमेकड़ा री भांत हाथ रै झटकौ देय घड़ी जोई—सात बजण मे चार मिनट घटै।

'कांई टेम व्हियौ ?'

'साचांणी, हाल तौ सात ई नीं बजी।' सुदरसण इण गत बोल्यौ जांणै घड़ी सूं इदक उणनै फरासण री बात माथै पतियारौ व्है।

'बाबूजी, घड़ियां रै भरोसै वगत री जाच नी पड़ै।' बाल्टी रै गागड़दै मसोतौ थरकाय फरासण दोनूं हाथ धकै करती कैवण लागी, 'म्हारा तौ हाथ ई घड़ी रा सुइया है। कांम करणा रै समचै अेक-अेक मिनट री सोय व्है। अै घड़ियां रा खीखरा तौ निकमा-ठालां रौ बिलंम है। म्हा मजूर तौ वगत रै गांथै चालां। कांई समझ्या ? म्हारी सीख मांनौ तौ पोथ्यां रा कूटळा में ग्यान सोधणौ बिरथा है। जित्तौ ई सूगलौ कांम करौला, उत्तौ ई ग्यांन बधैला। काम सूं छूत पाळयां गाभा तौ भलां ई धोळा-धक्क व्हौ, अकल तर-तर मैली व्है। कांई समझ्या ?'

सुदरसण नै पैली वळा धोळा पेंट सारू हूंप आई, जांणै उणरै हाथां अजांण कोई लांठो अकरम व्हैगौ व्है। लचकांणो पड़तौ होळै-सीक बोल्यौ, 'इत्तौ वेगौ नी आवतौ तौ अैड़ी अमोलक सीख कद मिळती ?'

'अमोलक सीख !' फरासण खिल-खिल हंसती बोली, 'अैड़ी बातां रा तौ म्हारै पाखती कोठार भरया। सुणता-सुणता थाक जावौला। भगवान मूंडै जीभ दीवी तौ लिक-लिक करण सारू थोड़ी ई दीवी। कांई समझ्या ?'

पोचा रा सिरै कांम आगै उणनै आपरी खिकाळ फोरी लागी तौ वा तुरंत होठां खांम देय पोचौ लगावण मे रुधगी। नी हंसी, नी मुळकी अर नीं सुदरसण सांम्ही पाछौ मूंडौ ई करयौ। सुदरसण उणरी पूठ बांचतौ रह्यौ अर वा कोड सूं फटाफट कांम निवेड, पाखती रा कमरा मे वडगी।

सूज्योड़ा मसूड़ा माथै जीभ रौ परस ई नी सुहायौ। माथा में झरणाट माची। ...जोधपुर जैड़ा लांठा नगर में हाल दांतां रौ सफाखांनौ ई न्यारौ कोनी ! कित्ती जरूरत है ! आंख, कांन अर गळा सूं ई वेसी ! दांता रै पसाव ई तौ काया रै गुड़कौ लागै। जिण दिन किणी मोटा नेता रै दांतां रीळ ऊठैला, उणी दिन न्यारा सफाखांना री नीव लागी नी ! भगवांन करै मोटा-मोटा नेतावां रै नित अेक्सीडेंट व्है, नित नवी-नवी मांदगियां उपजै। चौडी सड़कां बण जावैला। टाळका सफाखांना खुल जावैला। चार लाख आदमियां रै चार लाख बत्तीसी ! कोई न कोई दांत तौ दूखतौ इज व्हैला। पण हाल तौ इण जिनांनै सफाखांनै फगत अेक कमरा सूं ई धाकौ धकै। डॉक्टर हीरानन्द अडवानी दोनूं सफाखांनै काम संभाळै। इग्यारै बज्यां लग उम्मेद अस्पताळ अर अेक बज्यां तांई गांधी अस्पताळ। फगत सफाखाना री नांव बदळयां जनता रौ दुख-दरद नीं मिटै। अै नेता-लोग आपरै दांतां खांणौ चबावै के अकल चबावै ? जैड़ा नेता वैड़ी ई परजै। जनता रै सुभीस्ता सारू किणी नै चेतौ कोनीं। खाली अेक खुणै काळी तख्ती माथै विगत लिख्यां कांई गरज सरै ! कित्ता

जणा बांचणी जाणै ? कीकर ठा पड़ै के किण सफासांनै किती बज्यां पूगणी ?... डाफा खायां की न की कसरत इज व्हैला ! जूतां री बिक्री बधैला ! अनुभव री पूंजी जुड़ैला ! इण देस मे वगत री तुस जित्तौ ई मोल कोनी। जद चवड़ै-धाड़ै मिनख री हित्या कुत्ता विचै ई माड़ी गिणीजै, तद नाकुछ दांता री कुण गिनरत करै ? बत्तीस री ठौड़ इकतीस, तीस के पच्चीस ई सही। नाक, आंख अर कान री गळाई अेक दो व्हैता तो की कदर ई व्हैती ! दात काढ़्या के दात भीच्या किणी रै की जोखम नी व्है। अर जोखम व्हियां टाळ कुण किणरी गिनार करै !

कदास अन्ना रै आपघात रै विलम इण अकल-डाढ़ री दरद की पांतरै पड़ै तो ! जद टॉलस्टॉय जैड़ा पूजवांन लेखक रै असस ई अन्ना री हित्या करता दया-माया नी सांचरी, तद आं मळीच नतावा सू की आस राखणी बिरथा है। पण अन्ना करेनिना री मौत नै कोई हित्यारी ई हित्या मानै तौ मानै। नींतर वा हित्या तौ लाख-लाख जलम अर जुगानजुग जीवण सू घणी सिरै है। अन्ना करेनिना लिखती वेळा उण डोकरिया रै खाळियै किणी लाठी पीड़ री सळीकी ऊठयौ व्हैला, अर उण सळीका रौ ओवद हो—अन्ना करेनिना री रचना। अन्ना रै ओळावै टॉलस्टॉय रै हाथां उण टाणै आखी दुनिया रै दुख, सताप अर कळेस रौ पापौ कटग्यौ व्हैला। घर-धणी सूं विमुख होय व्रोन्स्की सू प्रीत करण वाळी सगत अन्ना तौ जांणै टॉलस्टॉय री काया सू ई अवतरी व्है। डोकरिया री कूख, जलम लेवता ई वा जोध-जवांन अर रूपाळी व्हैगी। वगत री धणियाप रै भरोसै अन्ना रौ रूप-जोबन नी हौ। नी वा काळ रै खोळै जलमी अर नी काळ रै फदै उणरी देह छूटी। अन्ना तौ बिरमाजी रै उनमांन टॉलस्टॉय री देह सूं फूटी। अर धरमराज रौ भांत वौ रेल रै चीलां आपरै हाथा उणरौ गळौ झिगदियौ—जाणै मौत, जीवण सूं इदक जरूरी ही। सुदरसण नै लखायौ के अन्ना रै अतकाळ री पुळ दुनिया री आवगो करुणा, ममता अर हेज टॉलस्टॉय रै अतस घूमर लेवता व्हैला। तमाम दुनिया सू हिंसा, क्रूरता अर डाकी-चाळा रौ नावगो ई ऊठग्यौ व्हैला। हिंसा माथै अहिंसा री वा पैली अर छेहली जीत ही। रेल रै चहीलां अन्ना रै रूप-जोबन अर उणरी प्रीत रौ गळौ रोसण वाळै हाथां तीन लोक रौ सनेह अर हेज अेकठ व्हैगौ व्हैला। रूं-रूं प्रीत साचरगी व्हैला। परतख जलम लियां टाळ ई अन्ना टॉलस्टॉय रै हाथा अमर व्हैगी। मिनखा री दुनिया मे छिण-छिण तळीजती आतमा उण हित्या रै ओळावै सदावत मुगत व्हैगी। टॉलस्टॉय री धीव लाडेसर अन्ना तमाम निरभागी लुगाया री तड़फड़ावती आतमा ही। आपघात रै मिस इण मळीच दुनिया नै छोडयां टाळ उणरी मुगति रौ दूजौ की उकरास नी हौ।

'आ लुगाया री बैंच है...!'

सुदरसण घांटी ताण ऊंची जोयौ—धोळै बुरराक वेस ठस्योड़ी अेक नरस साम्ही ऊभी। गोरी-निछोर। डावै गाल काळौ तिल। खासौ लांठौ। रंग री छिब दूणी खुलगी। भचकै ऊभौ व्हियौ। नरस सूं आगळ चारेक डीगौ। पैली वळा उणनै आपरै कद रौ इत्तौ मोद व्हियौ। नरस री ताखड़ी मीट किरमची पोथी री सुवरण कोरणी मे गडयोड़ी। अजस रै सुर होठ मुळमुळावती बोली, 'अन्ना करेनिना ! वाह ! कैड़ौ उम्दा सस्करण है ! अन्ना री रूपाळी छिब रै जोग।'

छिब तौ नरम री ई माडी नीं ही। जैडौ सुहांणौ वेस, वैड़ौ ई सुहांणौ सुर। सुदरसण री आंख्यां धोळी नरस रौ सुर ई ऊजळौ निगै आयौ। बिचटियो कद। आखौ डील जांणै गुलाब री पसम रै साचै ढळयौ। भंवरां नै तौ साचांणी नरस रै वाळां रौ रंग फळयौ दीसै। भोपणा-भवारा तकात जाडा अर काळा-भमक। लांबी आंख्यां जांणै जोत सारू नी दूजां रै जोवण सारू बणी व्है। पतळा होठ। सुघड़ पळकती बत्तीसी। गुलाबी, नी नी तर-गुलाबी मुरायां। आ दांतां तौ कदास ई किणी भांत रौ दरद व्हियौ व्है! नस पतळी अर खासी डीगी। घूघरियै केसां धोळौ कड़पांण मुगट। जाणै अलघां री उडाण भरती बुगली, अन्ना करेनिना री छिब निरखण रै कोड उतरी व्है।

टॉलस्टॉय री पोथी रै ओळावै, पोथी बांचणिया रौ डोळ कूतणौ ई जरूरी हो। पतळौ छरहरौ डील, पोथ्यां रै आखरां खासौ सूतीज्योड़ौ। रंग नी गोरौ, नी सांवळौ। वाळ हदमांत सागणा अर अणूता जाडा। खासा-भला घूघरिया। माथौ लांठौ अर गोळ-गट्ट। तीखौ नाक, जांणै अकल, माथा री ठौड़ नाक री वाखौ अंगेजियौ व्है। हळका पिरोजी रंग रौ कुड़तौ। वायां चाढ़योड़ी। धोळौ पेंट। कुड़तौ पेंट सू बारै। पगां गुळी-वरणा गौरखसक जूता।

'अन्ना रा विजोग सारू माफी चावूं। लुगाया री इण बैंच टाळ किणी दूजी बैंच माथै विराजौ अर उण सू जाणै जित्ती प्रीत पाळौ, म्हारी ना कोनी।'

सुदरसण नै साचांणी सावळ जाच नी पड़ी के उण वेळा नरस दांतां रै सीगै हंसी के तिल रै पसाव।

'अजांण भूल व्हैगी, माफी चावूं।'

'अजांण भूल खातर माफी मांगण री जरूरत कोनी, पण जांण करनै भूल करौ तौ माफी दोरी ई मिळैला।'

नरस रौ सुभाव इज अैड़ौ हौ के उण सारू इदकाई वरती, की समझ पड़ी नीं। वा तौ इण भांत निसंक वतळ करण लागी जांणै जूनी ओळखाण व्है।

'अेक वात वूझूं, खुदोखुद नै अलेक्सेई करेनिन[6] रै आगै समझौ के फाउट व्रोस्की री ठौड।' अर बिना बूझ्या ई उणरै हाथ सू पोथी लेय अठी-उठी पाना फिरोळण लागी।

कदच टॉलस्टॉय री पोथी रै कोड वा अैड़ी निरवाळी अपणायत दरसावै। अैड़ी नरसां रै महातम ई मफाखाना री मरजाद है। आधी मांदगी तौ वांरी सुहाणी बोली सुण्यां ई सावळ व्है जावै। नरस रै निसंक सवाल रौ पाछौ वैड़ौ ई निसंक पडूत्तर दियौ। 'हाल ब्याव ई कठै व्हियौ, इण खातर व्रोस्की[7] बणण टाळ दूजौ की उपाव कोनी।'

'पण अन्ना री प्रीत रा कोडाया, रेलगाडी[8] रै डिब्बां घणा झाफा खाया तौ कटण-वढण री जोखम खासी है। पूरी सावचेती राखज्यौ।'

'सावचेती राख्यां, अन्ना री प्रीत कठै? जोखम तौ झेल्यां ई सरसी।'

'बाप्प रे...!' इचरज अर जूंझळ रै सुर बोली, 'आखी पोथी रौ पोवाळौ कर न्हाख्यौ। मार लीगटिया ई सीगटियां। निसांण ई निसांण। टॉलस्टॉय री छूटयोड़ी मरम पूरी करण री तेवड़ी दीसै?'

पोथी धकै करी तौ लेवणी पड़ी। 'औ भरम म्हनै सपनै ई कोनी। म्हारो बूतो खराखरी जाणू। डोकरिया रै तो नख री होड ई किणी सू नी व्है। म्हनै अंड़ो कालो जांण्यौ?'

'कालाई री किसी बात? माथो तो टॉलस्टॉय सू ई लांठो दीसै!'

'खुपरी सूं काई व्है?' सुदरसण हसतो थको बोल्यौ, 'माय वैड़ी अकल चाहीजै।'

'हां, अकल री बात तौ खराखरी। नी मोल मिळै नीं उधार।' मुळक रै भेळमभेळ औ सिरै मतर सुणाय नरस कमरा रै माथ वड़गी। सुदरसण नै अंक छण खातर अंड़ो लखायौ के जाणं आपोआप सूं वौ खुद ई अदीठ व्हैगो व्है। पण नरस रै अदीठ व्हियां ई उणरी मुळक अलोप कठै व्ही? काई डील सूं परबारी ही वा मुळक?

ऊमण री सरधा थोड़ी डिगमिगावण लागी तौ वो दूजोड़ी वैंच माथै बैठग्यौ। हाल ताई कोई नवो मरीज नी आयौ। के तो दातां री पीड़ घणी व्है इज कोनी, के लोग-बाग की खास गिनरत नी करै। तद सुदरसण खातर ई औ कंड़ो कुजोग सज्यो! कुजोग? कुजोग कीकर? अकल-डाढ़ री पीड़ नी व्हैती तौ इण मोवनी नरस सू सपनै ई मुलाकात कद व्हैती? इण सफाखानै वो पैलड़ो मरीज तौ आयो कोनी। घणा ई आवै। सवाया के दूणा फूठरा। ओपता। पछै उणरै अंड़ो काई छोगो बाधोड़ो! अलबत, अन्ना करेनिना वाळो इदकाई अचीती है। के तौ अठै सत्यकथा, माया, सारिका, धरमयुग के गुलसन नदा—घणी करौ तौ भगवांन रजनीस रौ खाळाखाळी! अर यू नरसा रा सुभाव ई इण मावै ढळयोड़ा व्है। मरीजा सागै मीठौ बरताव राखै। हसै। मुळकै। निसंक वतळ करै। पण आ नरस टोळी सू टळयोड़ी! सिरै लेखकां री पोथ्या बांचण रौ हदमात कोड। अन्ना करेनिना तौ जाण मूडै याद व्है। अन्ना रै जमानै काई नरसा रौ अंड़ो ई धोळो वेस व्हैतो? अन्ना रै ई तिलवाळी अेक दो नरसा सू काम पड़यौ व्हैला? जापा री अवखी वेळा! व्रोंस्की आपरै हाथा पिस्तौल[9] खाई जणा! नरस रै गुलाबी गाल औ तिल नी व्है तो कैड़ी फबती? इण पीड़ रै वरदांन चार-पांच वळा अठै आवणो पड़यो तौ खामो हेत-इकळास व्है जावैला। नित नवी टाळकी पोथी लावैला। नी नीं, आ नरस अणूती समझवान है। नीत री मसा छानी नीं रैवै। पण अंडा चोज री जरूरत? इण सुगतरी पोथी री होड व्है? इणरै परताप ई इत्ती वतळ व्ही। अन्ना तौ अन्ना इज है। टॉलस्टॉय रै हाथा अंड़ी रचना व्हैगी जको व्हैगी!

नरस री भुळावण रै कुरब पोथी बाचण सारू वो पाछौ झिलग्यौ। रेल मे व्रोंस्की री मां रै साथै अन्ना मास्कौ आई। मां सूं मिळण रै सजोग प्लेट फारम माथै अन्ना अर व्रोस्की रै साम्हैळा री बरकत व्ही। चौनिजरयां रै समचै अेक दूजा री छिब हीयै उतरगी। टॉलस्टॉय रै धीजा अर सयम रौ पार है भलां? छासठ पांनां ताई अन्ना रै नांव रौ भणकारो ई नी पड़ण दियौ। कदास खुदोखुद टॉलस्टॉय नै इण बात रौ बेरौ नी हो के नसा मे धत चौकीदार रौ रेल सू अेक्सीडेंट[10] सेवट अन्ना रै आपघात सारू निमत बणैला। सुदरसण पांनां फिरोळण लागो। सात-सौ निन्नाणवें पानै अन्ना रेल रै चक्कै आपरो जूण अरपित कर दीवी। जाणै टॉलस्टॉय रै चेता

परबारौ सै रासौ रचीज्यौ अर लेखक तौ आपरी निजरां देख्यौ त्यूं टीप्यौ जांणै आखी रचना रौ आतरै ऊभौ मून साखी व्है। उण जमाना रौ आवगौ रूस अन्ना करेनिना रै आखरा जड़ाव री जात जड़चोड़ौ। नीठ पंरवौ टिकै उत्ती ठौड़ नवी डाढ़ रौ उगाड़ है, पण पूरै डील तळतळावण मचगी, उणी भांत अन्ना री प्रीत रै घाण-मथाण तमाम रूस मे दौरप सांचरगी। जांणै अन्ना करेनिना रूस री विराट काया रौ फगत अक मसूड़ौ व्है। न्यारौ व्हैतां थका ई अेकमेख। अेखमेख व्हैता थका ई न्यारौ। साचाणी, आ नवी डाढ़ तौ पकावट अकल री इज आवै। नीतर सुदरसण नैं पैला अैड़ी झीणी बाता कद उकलती ? जलम री पीड़ सौ व्है इज, भला ई जापा री व्हौ, भला ई अकल-डाढ़ री। पीड़ झेल्यां टाळ, खोळै टाबर नी रमाईजै।

पैली मुलाकत मे प्रीत री जोग तौ सजै जिण सू ई सजै। व्रोस्की रै पैली अन्ना कित्ता-काई मोटचारा सू मिळी अर व्रोस्की कित्ता-काई रूपाळी लुगाया सूं भेटका करचा। किट्टी रै सागै स्कटिंग[11] करता चाळ-चोळ व्ही इज ही, पण प्रेम तौ अन्ना सू ई व्हियौ। देखा वगत री बाड़ी नरस री मुलाकात कैंड़ा-काईं फूल खिलै। कैड़ी-काईं जुगत करघा धकला वगत री रामत पैला निरखीजै। होळै-होळै रिगसतौ वगत बमचकरी रै भरणाटे घूमै तौ सै की बावड़ व्है। पण वगत रै आरमपार निरखण सारू मिनख लिलाड़ री आंख्या रै सीगै निपट आघौ है। वगत रै दावणै मिनख री आख्यां जरू व्हियाड़ी। डाढ़ रा अै चमीका सेवट मिटैला रा मिटैला, पण आज उणरै थथापै किणी भाव सायत नी वापरै। आ तौ वगत रै गायै सायत वापरैला जद इज वापरैला। इणी भांत नरस रौ औ निरवाळौ साम्हैळौ कालै, परसू के परलै रोज वगत रै साढ़ै किसी ढाळ ढळैला, जिणरौ आज उकरास नी लाधै। पण अेक बात अखरै के इण सू वत्ती रूपाळी लड़किया सू मिळ्या उणरै अंतस अैड़ी सळवळ कदै ई नी साचरी। नरस रौ भेद नरस जाणै। डाढ़ री पीड़ रौ औ परचौ तौ नी जाण्यौ हौ ! अन्ना री प्रीत रै लावण नरस रौ अतस थोड़ौ-घणौ तौ लावणीजैला। काळौ तिल, दातां री मुळक अर औ रूपाळौ उणियारौ सुभट दीसै ज्यूं अतस रौ चित्राम क्यूं नी दीसै ? अैड़ी निरवाळी आंख सारू मिनख रै खोळघै पूजती खामी ! राम जाणै आ खामी कद पूरीजैला ? सुदरसण अर नरस रै मरघा पूरीजै तौ काईं काम री ? पण अन्ना करेनिना रै पाठ री अैड़ौ महातम तौ नी जाण्यौ ! जित्तौ पाठ करैला उत्ती ई भरै पड़ैला। वौ ठेठ धुरापेड़ सू इण पवीत पोथी नै बाचण लागौ—हेप्पी फेमिलीज आर ऑल अेलाइक; अेवरी अनहेप्पी फेमिली इज अनहेप्पी इन इट्स ऑन वे।

इत्ती ताळ मे बरामदै खासौ-भलौ भीड़ौ व्हैगौ। असवाड़ै-पसवाड़ै उणी बैंच माथै दो-दो आदमी जमग्या हा। लुगायां वाळी बैंच ई आधी भरीजगी। पोथी सू मीट हटाय वौ सगळा रा उणियारा जोया। नाक रा सळ अर दाता रै कसाव सुभट पतौ पड़ै के रीळ रौ दरद पाठा काढ़ै। औ नजारौ देख्यां सुदरसण रै हीयै डाढ टाळ अेक दूजी ई अळखावणी पीड़ लखाई के आ नरस फगत दांत-डाढ़ रौ ई दरद ओळखै के इणनै अंतस रै दूजा-तीजा ओळूवा रौ ई वेरौ पड़ै ?

आज तौ रेट आठ बज्यां ई आठ बजैला। हाल पाच मिनट घटै। जे पांच मिनट पैला आठ बज जावै तौ किसौ प्रळै व्है ? मिनख री अड़ी रै परवाण वगत

परबारो सैं रासो रचीज्यो अर लेखक तो आपरी नि
आखी रचना रो आंतरैं ऊभो मून साखी व्है। उण ...जावण सारू
करेनिना रैं आखरां जड़ाव री जात जड़थोड़ो। ...। दो बरस
डाढ़ रो उगाड़ है, पण पूरैं डील तळतळावण ... ी आंती
धाण-मर्थाण तमांम रूस मे दोरप साचरगी ... मोडो
काया रो फगत अेक मसूड़ो व्है। न्यारो व्हैत
न्यारो। साचाणो, आ नवी डाढ़ तो पक
नैं पैला अड़ो झीणो बाता कद उकलत
री व्हो, भला ई अकल-डाढ़ री। पी

पैली मुलाकत मे प्रीत रो ज
कित्ता-काई मोटचारा सू मिळ
करचा। किट्टी रैं सागैं स्कटि
सू ई व्हियो। देखां वगत र
काईं जुगत करधा धक
वगत बमचकरी रैं भ ... फड़को उघाड़ माय
निरखण सारू मिन ... है।
मिनख री आउया ... ति सू लुगायां वाळो बैंच माथै
आज उणरैं थ ... ठोड़ चेठो उणी ठोड़ बरस दसेक री
वापरैला जर ... रोयां टाबर रो रूप बधै, जवान रो घटै—
पिरसू के ... मां आसू पूछ गाल पंपोळती घणी ई धावस
लाधैं। ... बेटी रा आसू किणी भाव नी ढब्या। मा री ममता
अतस ... घणी वत्तां ही। टाबर रा आंसू किणी री आख्यां संको
ओ ... टी रो उणियारो कित्तो मिळतो हो? काईं दोनां रो सुभाव ई
ह ... पाड़ो व्हैला? मां रैं दाता पीड़ व्हिया आ ई इण गत रोवती?
... कावती? आखयां रा अमोलक मोती के तो बेटी री कसूबल फराक में
... जाता के आगणै रुळ जाता। साम्ही देख्या, देखणी नी आवै। फगत छव-
सात बरस री जेज वळै, रोवण वाळी आही डावड़ी किणी सू प्रीत करैला। मुळकैला।
हंसैला। ब्याव व्हिया जापा री पीड़ टसकैला। इणी भांत छटपटावैला।

'डाक्टर साब आयग्या। डॉक्टर साब आयग्या।' आखै बरामदै होठां ई होठां सळवळ साचरी। सुदरसण घड़ी जोई – डॉक्टर साहब रैं आयां टाळ आठ कोकर बजती? घड़ी रा सूइया तो जाणैं वानै इज उडीकता हा। डॉक्टर साहब तो नीची धूण करया खायी चाल, दीसया जित्तैं-जित्तैं कमरा मे अदीठ व्हैगा। उडीक रो उफाण पोदै बैठग्यो। पण रोवतो डावड़ी रा आंसू नी ढब्या। मा वत्ती छटपटावण लागी। डॉक्टर रो डर ई पीड़ सू कम नी व्है।

डॉक्टर साहब रो माय वडणो व्हियो अर दूजै ई छिण नरस आधो फड़को उघाड़ बोली, 'नबर अेक अर नंबर दो।'

दो आदमी भचकै ऊभा व्हिया जाणैं करेंट लागो व्है। नरस रैं आडा ऊभ मांय जावण सारू पुरमुरिया खावण लागा, जाणैं आपरैं हाथां ई आपरो इलाज करैला। नरस आधो पलका उठाय तीन नबर साम्ही जोयो, जाणैं पिछतावा रो मीट कबूल

करती व्है—जांणू के यें सगळां सूं पैली आया। पण आखता हाथ पसवाड़ौ ई नीं फिरण दियौ। मन-माडै दो नंबर झिलावणा पड़्या। पण अबै जेज ई कांई ? तीजौ नंबर थारौ। बस, हेलौ पाड़ण सारू आई क आई।

बापड़ा कान तौ बोल्या सुणै, पण मन तौ वाणी परबारी सुणै, बोलै !

सांम्ही ऊभा मरीजा री जूझळ पतवाण्या नरस सू बारणै ऊभणो नी आयौ। लारै रा लारै दोनू मरीज झट माय बड़ग्या।

सिंधी डावड़ी रौ रोवणौ अर छटपटावणौ उणी भांत चालू हो।

सुदरसण रा हाथ मे टॉलस्टॉय री अन्ना करेनिना थम्योड़ी। दोना री मरजाद निभावण खातर दोवड़ी जिम्मवारी। पोथ्या रै ग्यान रो थाड़ो-घणो माजनौ तौ व्है ई है। गीता, बाइबल अर कुराण री आण-दुहाई राखण वाळा री गतमत वै जांणै; सुदरसण री गत-मत री तौ पोत ई न्यारो हो। अन्ना री पवीत प्रीत अर टॉलस्टॉय री कलम रै भेळमभेळ उणनै आपौआप री काण ई निभावणी ही। उपाव सूझणा रै समचै ई बुचकारतो मां रै पाखती जाय बूझ्यौ, 'आपरौ कांई नंबर है ?'

'तेरह।' टिकला नै देख्या बिना ई मा जबाब दियौ। नंबरा री काम खराखरी।

'बाया रै अणूती पीड़ है।' सुदरसण सकतौ-सकतौ कैवण लागौ, 'मोड़ी बारी आवैला। म्हारौ नबर लेलो, वेगो इलाज व्हैला।'

'नी नी, अैड़ी की खास बात नी।' मा ऊपरलै मन मोळी-मोळी नटती बोली, 'आपरै ई तौ थाची व्हैला ?'

'आ हा, म्हारै आंचो कोनी। बाया रौ रोवणौ नी देखीजै।'

साचै मन थोरा करता वो हाथ धकै करयो तो मा आपरो टिकलौ उणनै सूप दियौ। मुळक री मून वांणी उणरौ जथा-जाग गुण मान्यौ।

नंबरां रौ आंटो-साटौ समझण जोग हाल बाया री ऊमर नी ही। ऊमर आयां नी नी व्है जैड़ी बातां आप ई सीख जावैला। तो ई वा इण नवै अडदू रोवती ढबगी। फराक सू आंसू पूछ माटचार रै हाथ मांयली मोटी पोथी साम्ही टुगटुग भाळती बूझ्यो, 'पोथी म बाबा है काई ?'

हामळ रौ मीठो-गट्ट पड़ूत्तर सुणता ई मां री खोळो छिटकाय उणरै पाखती ऊभगी। सुदरसण तिरैपात उणनै टॉलस्टांय री फाटू बताई।

'आ...हा, ओ तो दाढ़ी वाळो बाबो।' फदाफद कूदती मां साम्ही मूंडौ करनै बोली, 'कित्ती लांबी दाढ़ी ! मां देख तौ !'

बेटी रै इण नवा बिलम सू मा जाणै-जित्ती राजी व्ही। आधी ढळयां रोवण लागी सो अबार ढबी। तौ इत्तो ताळ मिस करती ?

'ओ बाबौ इज तौ आ लाठो पोथी लिखो।' सुदरसण टॉलस्टॉय रै खत आंगळी फेरतां कह्यो।

'ओ बाबो ?' इचरज सूं आंख्यां फाड़ती बोली, 'आ पोथी तौ अगरेजी मे है ! दाढ़ी वाळा बाबा मे इत्ती अकल व्है काई ? म्हारा भाई रै तो हाल मूंछ्यां ई नी आई, धड़ाधड अगरेजी बाचै।'

आडा रै पाखती पांच-सात मरीजां रो आखतो भीड़ो देख नरस माय ऊभी ई सगळा नै बारी-बारी नबर बांट दिया। लुळताई सूं बोली, 'अठै ऊभा मत रौ,

छोडतो ? ऊंचा ग्यांन रै ठीमर सुर समझावण लागो, 'वारी-सर मांय जावण सारू नंबर रो कायदो है। फगत इण दावा रै कमरै ई औ नंबर वाळो धारो। दो बरस पैली अेक नांढ़ मरीज डॉक्टर सा'ब सूं अणूतो झोड़ करी तो डॉक्टर अडवांनी आती आय औ धारो चलायो। नंबर मिळयां पछै निरांत। मोड़ो आवै जिणरो मोड़ो इलाज। वेगो आवै जिणरो वेगो इलाज। आ इज व्हैणी चाहीजै। नीतर नंबर टाळ कित्तो रीझट व्है। मिनखा नै कांकड़णो छाजै भला ?'

मांय बैठी नरस नवा मरीजा री हाका-हळवळ सुणी तो वारै आय वळै नंबर बांट दिया। ध्यांन लगाय सिंधी री बात सुणता मोटयार सांम्ही जोवती डोढ़ मे बोली, 'ओस्की री गळाई अन्ना सूं जीव धापग्यो दीसै ?'[14]

सुदरसण झेंप मिटावण खातर सफाई देवतो कैवण लागो, 'नी नो, नवी डाढ़ रै चभीका अबार तो क्रिट्री री स्केटिंग मे मन रमावतो हो।'

'ओह, ओस्को री ठौड़ लेविन[15] वणण सारू कोड जागयो ? गुलाब रो फूल तो दाय पड़ै जको ई तोड़लै। पण गिगन रो चांद किणी रै हाथै नी आवै।'

औ गुणको सुणाय नरस मुड़ी मस्कोरती लोह रो जाळी रो फड़को उघाड़ मांय बड़गी। जाणै धरती रै चांद आडो काळो पड़दो तणग्यो व्है।

नंबर हांनै व्हियां तीन-चार सिंधी लुगायां निरांत सूं लुगायां वाळी बैंच मांयै बैठगी। नरस रै आया पैली सुदरसण जिण ठौड़ बैठो उणी ठौड़ बरस दसेक री डावड़ी दांतां रै चटोड़ा छटपटावती ही। रोया टाबर रो रूप बधै, जवांन रो घटै— लुगाई व्हौ भला ई मोटयार। उणरी मां आंसू पूछ गाल पपोळतो घणो ई धावस बधावण री आफळ करती पण बेटी रा आंसू किणी भाव नी ढब्या। मां री ममता बिचै कदास दांता री पीड़ घणी वत्ती ही। टाबर रा आंसू किणी री आख्यां सकौ नी मांनै। मां सूं बेटी री उणियारो कित्तो मिळतो हो ? काईं दोना री सुभाव ई अेक ढाळै ढळयोड़ो व्हैला ? मा रै दांता पीड़ व्हिया था ई इण गत रोवती ? आंसू ढुळकावती ? आख्या रा अमोलक मोती के तो बेटो री कसूवल फराक में अटक जाता के आंगणै रळ जाता। साम्ही देख्या, देखणी नी आवै। फगत छव-सात बरस री जेज वळै, रोवण वाळी आही डावड़ी किणी सूं प्रीत करैला। मुळकैला। हसैला। ब्याव व्हिया जापा री पीड़ टसकैला। इणी भांत छटपटावैला।

'डाक्टर साब आयग्या। डॉक्टर साब आयग्या।' आखै बरांमदै होठां ई होठां सळवळ साचरी। सुदरसण घड़ी जोई – डॉक्टर साहब रै आया टाळ आठ कीकर बजतो ? घड़ी रा सुइया तो जाणै वानै इज उडीकता हा। डॉक्टर साहब तो नीची घूण करयां खाथी चाल, दोल्या जित्तै-जित्तै कमरा मे अदीठ व्हैगा। उडीक रो उफाण पीदै बैठग्यो। पण रावती डावड़ी रा आंसू नी ढब्या। वा वत्ती छटपटावण लागी। डॉक्टर रो डर ई पीड़ सूं कम नी व्है।

डॉक्टर साहब रो मांय वड़णो व्हियो अर दूजै ई छिण नरस आधो फड़को उघाड़ बोली, 'नंबर अेक अर नंबर दो।'

दो आदमी भचकै ऊभा व्हिया जाणै करेंट लागो व्है। नरस रै आडा ऊभ मांय जावण सारू खुरमुरिया खावण लागा, जाणै आपरै हाथां ई आपरो इलाज करैला। नरस आधी पलका उठाय तीन नंबर साम्हो जोयो, जाणै पिछतावा री मीट कबूल

करती व्है—जांणू के यें सगळां सूं पैली आया। पण आखता हाथ पसवाड़ो ई नीं फिरण दियो। मन-माडै दो नंबर झिलावणा पड़चा। पण अबै जेज ई काई ? तीजो नंबर थारो। बस, हेलो पाड़ण सारू आई क आई।

बापड़ा कान तौ बोल्या सुणै, पण मन तौ बाणी परबारी सुणै, बोलै !

साम्ही ऊभा मरीजा री जूझळ पतवाण्या नरस सू बारणै ऊभणी नी आयो। लारै रा लारै दोनू मरीज झट माय बड़ग्या।

सिधी डावड़ी रौ रोवणो अर छटपटावणो उणी भात चालू हो।

सुदरसण रा हाथ मे टॉलस्टॉय री अन्ना करेनिना थम्योड़ी। दोना री मरजाद निभावण खातर दोवड़ी जिम्मवारी। पोथ्या रै ग्यान रो थाड़ो-घणो माजनो तौ व्हे ई है। गीता, बाइबल अर कुराण री आण-दुहाई राखण वाळा री गतमत वै जाणै; सुदरसण री गत-मत रौ तौ पोत ई न्यारो हो। अन्ना री पवीत प्रीत अर टॉलस्टॉय री कलम रै भेळमभेळ उणनै आपोआप री काण ई निभावणी ही। उपाव सूझणा रै समचै ई बुचकारतो मा रै पाखती जाय बूझ्यो, 'आपरो काई नबर है ?'

'तेरह।' टिकला नै देख्या विना ई मां जबाब दियो। नंबरां रौ काम खराखरी।

'बाया रै अणूती पीड़ है।' सुदरसण संकतौ-सकतौ कैवण लागो, 'मोड़ी बारी आवैला। म्हारो नबर लेलो, वेगो इलाज व्हैला।'

'नी नी, अैड़ी की खास बात नी।' मा ऊपरलै मन मोळो-मोळो नटती बोली, 'आपरै ई तौ आचो व्हैला ?'

'आ हां, म्हारै आचो कोनी। बाया रौ रोवणो नी देखीजै।'

साचै मन थोरा करतां वौ हाथ धकै करयो तौ मा आपरो टिकलो उणनै सूप दियो। मुळक री मून वांणी उणरौ जथा-जाग गुण मान्यो।

नंबरा रौ आटो-साटो समझण जोग हाल बाया री ऊमर नी ही। ऊमर आया नी नी व्है जैड़ी बाता आप ई सीख जावैला। तौ ई वा इण नवै अड़दू रोवती ढबगी। फराक सू आसू पूछ माटचार रै हाथ मांयली मोटी पोथी साम्ही टुगटुग भाळती बूझ्यो, 'पोथी म बाबा है काई ?'

हामळ रौ मोठो-गट्ट पड़ूत्तर सुणता ई मा रौ खोळो छिटकाय उणरै पाखती ऊभगी। सुदरसण तिरंपात उणनै टॉलस्टॉय री फाटू बताई।

'आ...हा, ओ तौ दाढ़ी वाळो बाबो।' फदाफद कूदती मां साम्ही मूंडो करनै बोली, 'कित्ती लांबी दाढ़ी ! मां देख तौ !'

बेटी रै इण नवा बिलम सू मां जांणै-जित्ती राजी व्ही। आधी ढळ्या रोवण लागी सो अबार ढबी। तौ इत्तो ताळ मिस करतो ?

'ओ बाबो इज तौ आ लाठो पोथी लिखो।' सुदरसण टॉलस्टॉय रै खत आंगळी फेरतां कह्यो।

'ओ बाबो ?' इचरज सूं आंख्यां फाडती बोली, 'आ पोथी तौ अंगरेजी में है ! दाढ़ी वाळा बाबा मे इत्ती अकल व्है काई ? म्हारा भाई रै तौ हाल मूछ्यां ई नी आई, धड़ाधड़ अगरेजी बाचै।'

आडा रै पाखती पांच-सात मरीजां रो आखतो भीड़ो देख नरस माय ऊभी ई सगळां नै बारी-बारी नबर बांट दिया। तुळताई सूं बोली, 'अठै ऊभा मत रो,

आपरी समझ अर आप-आपरी सोझी ! पण सफाखानां री वंधोकड़ी, नरस री समझ अर सोझी काम नीं आवै, उणनैं तो आपरो फरज निभावणो हो। रजिस्टर में दोनूं मरीजां री विगत उतारी। लड़की रो नांव हो —मोवनी। ऊमर अट्ठारह बरस। दूजोड़ा मरीज रो नांव हो—खेमचंद। ऊमर तयांळीस।

मोवनी, फगत नांव री इज मोवनी ही। उणियारै लांबो-चोडो तत नीं हो। हुचक्यां भरती ताही भूंडी लागै। रोयां दरद मिटै थोडो ई है। जवांनी री मठ मरै जको मवाद में। कोरा पुरजिया माथै आडी-अंवळी लीगटियां मांडती नरस होठां ईं होठां बडबडाई, 'मरजो सूं नंबर बदळै तो म्हारो कांई लियो?'

'कांई फरमायो?' मोवनी रो बाप तिल में आंख्यां गडाय इचरज सूं पूछ्यो।

'ओह...म्हैं बूझ्यो के आपनै कांई नंबर मिळ्यो?'

'बाईस।'

'बाईस?'

'हां, बाईस। ना देवनां-देवतां ईं माडै झिलाय दियो। आदमी तो सालस ई दीसै। पण आज रै भणिया-गुणिया छैलां री नीत रो भगवांन नै ई वेरो नीं पड़ै। बाईजी, जमांनो अैडो आयो के आपरी छोयां रो ई भरोसो कोनी। सै समझूं तो ई वेटी रा डुसक्यां आगै म्हनै ई निवणो पड़्यो। म्हनै तो धोळो-धोळो सै दूध ई निगै आवै, पछै उणरो करम-धरम वो जांणै।'

फरास नैं किणी दूजै कांम रूंघोड़ो जांण डॉक्टर अडवानी नरस सांम्ही देख कह्यो, 'माचिस।'

सावळ सुण्यां उपरांत ई नरस नैं रांम जांणै क्यूं ध्यांन नीं रह्यो। माचिस री ठौड़ रूई झिलावतां हौळै-मीक बोली, 'लिरायो।'

डॉक्टर डावा पग सूं मसीन रो खटको दाब्यो। खरर-खरर करती मसीन चालू व्ही। कांम करतां ईं वै माथो धूण कह्यो, 'रूई नीं माचिस!'

नरस मांय री मांय इण गत फड़फड़ीजी जांणै चोरी करतां सांप्रत अपडीजी व्है। हळफळती तुरंत डॉक्टर नैं रूई झिलाई। नरस नैं आपोआप सूं अैडो डर कदैई नीं लागो, जाणै पैली वळा खुदोखुद सूं साम्हेळो व्हियां उपरांत सावळ ओळखी व्है।

थोडी ताळ पछै ईं वा अजाण आपरै मन-मतै नवा भणता टाबर री गळाई जोड़-बाकी करण लागी। तेरह में नव जुड़्यां बाईस। बाईस मांय सूं तेरह गिया, लारै बच्या नव...नव। तो नव मरीज घळै घटै। पण रांम-जांणै क्यूं आज डॉक्टर सा'ब इतो वगत लगावै? डोढ़ो। दूणो। भलां, मोवनी खातर तीन वळा मसीन चलावण री कांई जरूरत ही? बापड़ा खेमचंद रै मूंडै ई मोड़ा री जूझळ सुमट दीसै। आपोआप सूं आंती आय घड़ी जोई—पूणी नौ बजण वाळो। पैंताळीस मिनट में तेरह मरीज निवड्या तो नौ जणा में पच्चीस मिनट के आध घण्टो लागैला। कदास कीं वेसी ई लागै। अैड़ो सीधो सरळ लेखो वा कदैई नीं करयो। आज टाबर रै उनमांन जोड़-बाकी रै लपचै कैडी अळूझी? ज्यूं-ज्यूं इण हिसाब नै छिटकावण री आफळ करती त्यूं-त्यूं वो वत्तो छिड़तो। वगत सूं पड़पण खातर उणरा मन में अेक अटकळ सूझी। डॉक्टर साहब रै पाखती जाय बूझ्यो, 'थांरी ट्रीटमेंट म्हैं

चालू कर दूं।'

साथै काम करती नरस माथै डॉक्टर नै पतियारो हो, पण आज मतै चलायनै इत्तो कोड कीकर दरसायो ? दवायती रै समचै ई वा मुळकती बोली, 'खेमचंदजी, आप इण कुरसी माथै बिराजो।'

मरीज रो मन डिग्गूं-धिच्छूं दीस्यो तो डॉक्टर कह्यो, 'चिंता मत करो, म्हारै बिचै ई वत्ती हुंस्यार है। फगत डॉक्टरी री छाप कोनी।'

मरीज नै घणी दोरी धीजो व्है। दूजो ओळावो नी मिळ्यो तो माडै कुरसी माथै बैठणो पड्यो।

'डरो मती, दांत पाडूं कोनी। नवो दांत उपजावणो हाथ री बात नी है तो सोरै-सास उखाडणो क्यूं ?' खेमचंद रै कानां मिसरी रै मिठास रो साव आयो। घडी दो घडी आ बोली सुण्यां, दांत री पीड आपै ई सावळ व्है जाती। करकसा घरवाळी अैडी पांनै पडी के अस्टपोर वात-बेबात घोरका करती रैवै। इणी खातर काया रै रूं-रूं मांदगी वापरगी।

आंगळियां—कित्ती कंवळी-कंवळी अर गुलाबी। मुखमुल री जात। नरस री झीणी मीट मरदां री अतस बांचण लेखै खासी पारंगत ही। जवांन व्हो भलां ई बूढो, अमीर के गरीब, भणियो-पढ्यो के गिवार, फूठरो के कोजो, सैंधो के असैंधो—सै अेक माजना रा। ओजरी समेत आखै डील ई जाणै मैलो दपटचोडो। बास तो आवै री आवै। पण आ तो नित री रामांण है, छीजत करचां नी पोसावै।

तो...मोवनी अर खेमचंद रो नांव याद व्हियो ज्यूं रजिस्टर में विगत उतारचां उणरो नांव ई याद व्है जावैला। ऊमर तो लगैटगै ई दीसै, उण सूं अेक बरस बेसी के अेक बरस कम। पूछचां पुखता बेरो व्है जावैला। किणी री ऊमर बूझण रै मंसोबै नरस रै हीयै पैली वळा संकोच रो खुडको जाग्यो। अणूतो संकोच ई कांई कांम रो। जांणै आपोआप रै सांम्ही आपरा मन नै खरावती व्है—हां हां, उणरो इलाज आपरै हाथां करैला। डॉक्टर साहब सूं केई वळा चूक व्ही। पण नरस नै डॉक्टर री चूक बतावण रो हक नी व्है।

डॉक्टर री सांनी रै समचै आखतो फरास तुरंत फड़को उघाड़ हेलो मारचो, 'नंबर पंद्रै अर सोळै।'

दूजै ई छिण दो मरीज धक्क करतो रा मांय आया। कित्तो आंचो बळै ! धीजो तो आं भला मिनखां रै नैडो-आगो ई कोनी। अर अेक वो लाट सा'ब अन्ना री प्रीत मे इज बावळो व्हियोडो। नंबर उपरात नंबर बदळै। कदास अबै तो सुध-बुध ठांणै आई व्हैला। दरद सूं आंती आय, कित्तो वेगो आयो ! फरासण सूं ई पैला। दिन ऊगतां पांण। आखी रात पसवाडा पलटचा दीसै। तद दातारी रो ओ नामून कांई भाव पडै ! आपरै साथै ई, किणी नै इण गत रो इन्याव करण सारू कांई हक है ! मिनख री दातारी में साच रो पळोतण वत्तो व्है के नामून रै वळा रो ? पण आ तो समझ-समझायां उपरांत दातारी रो अैडो धूंगार तो आज ई देख्यो। अैडी नाकुछ निपगी बात तो किणी रै चेतै ई नी उपजै। आपरी वळत आगै दूजां री लाय किणनै सूझै ?

'नंबर मिलावो नंबर।' बरसाळी में अड़वड़ता मरीजां री ताकीद सुणीजो।

नरस रै कांनां जांणै टांटिया छिड्या व्है। नाक अर लिलाड में सळ ताण जाळी रा फड़का सांम्ही खिणेक जोय, फरास नै मुळकतो सांनी करी। वो हड़बचो मार आखी मूठी भरी अर बीडी रौ ढेहलौ कस खांच कमरा सूं बारै ढळग्यो। उण सारू की नवादी के अजोगती बात नी ही। सांस लेवती मसीन खातर नी तौ की जूंनो व्है अर नी की नवो। गेडै रै गेडै मरीज निवड़तां पांण वो निसंक धकला दो नंबर खातर हेलौ पाड़तौ। जांणै सरकस रौ चात्रंग बांदरी करतब दिखावतौ व्है। खटको दबावता पांण मसीन चालू व्है जाती। अर मसीन रै साथै डॉक्टर रा हाथ, पग अर आंख्यां रुध जाती। मिनख री आ कैडी अजोगती आफळ के वौ मसीनां नै मिनख री गादी सूपणी चावै अर मिनख नै मसीन रै सींगै ढाळणी चावै। मसीन रै साचै ढळण वाळी नरस रै पुरजां आज पैली बळा झणझणाट माची। बरस बीतग्या आपोआप री साळ-संभाळ करचां नै। अर आज संभाळ कीवी तौ अंतस रै उजाड उणरा घै छिलग्या। कळ रै उनमांन बरतीज्यां मिनख-जमारा री अगै ई सारथकता कोनी।

अेक-अेक मरीज निवड्यां नरस रै हीयै जांणै कोई अबखौ भार उतरतौ व्है। हर वगत वा डॉक्टर सूं पैला आपरौ मरीज निवेड़तौ। उन्नीस नंबर रै समचै तौ जांणै उणनै आपरौ सपनो संपूरण व्हैतो लखायो। सांप्रत आंख्यां निरखैला, नांव बूझैला, आपरै हाथां उणरौ इलाज करैला।... ...पण अबकी बारै ऊभ हेलौ मारण सारू संकोच लखायो तौ वा फरास नै संकती-संकती आदेस करचो।

'नंबर इक्कीस अर बाईस।'

दो री ठौड जाणै हजार-हजार आंख्यां वा बारणा सांम्ही जोवण लागी। पण अै तौ दोनूं ई मरीज दूजा। इण बिचै आंख्यां नी व्हैती तौ आछो हो। आखो कमरौ किणी विस्फोट रै धमाकै उछळग्यो व्है। ट्यूब लाइट रौ खळिदो अर मसीन री किळो-किळो व्है जांणी है। सैं की उछळग्यो। खिंडग्यो। अपूठी ऊभ वा जोर सूं आंख्या मीच ली। थोड़ी ताळ उपरांत डरतां-डरतां आंख्यां खोली तौ कमरौ भणण-भणण घूमतौ लखायो। रंगत घणी दोरी ठावै आई। आपो-आप सूं लड़णौ अगूतौ दूभर!

'सिस्टर।'

नरस पूठ फोर जोयो। अमोलक सिंघवी रै होठां मुळक उफणती दीसी तौ उणनै ई माड मुळकणौ पड़यो। बेजां फूठरी। छव फुट डींगौ। मोत्या रंग। पिरोजी आंख्यां। नरस झट ऊठनै पाखती आई तौ वो सवायो डींगो लखायो। अमोलक सिंघवी लुळताई सूं पूछ्यो, 'तौ मिझ्या रा कायलांणं चालणौ के अठै हॉस्टल में गोठ राखणी। म्हारी जांण मे कायलांणं...।'

'नीं अमोलक बाबू, म्हनै इण जिम्मेवारी सूं बगसो। म्है तौ म्हारी ई जिम्मेवारी ओढ नीं सकी। पूछ-पूछ काई व्हैगी। कोई की कैवै, कोई की मायो लडावै। दो बज्यां हॉस्टल मे आप खुद रूबरू पूछलो। अबार नी आवतां तौ म्हैं फोन करण वाळी इज ही।'

'आप उठै ई मिळोला?'

'नीतर कठै जाऊ? दूजी ठौड़ ई किसी! कबूड़ां नै कूवौ अर नरसां नै हॉस्टल।'

चार साल पैला सेठ हीराचंद सिंघवी नरसां खातर नामी हॉस्टल बणायौ। दिल रौ दोड़ौ पड़्यां, नरसां री तीमारदारी रै परचै वै देवलोक सिधावता-सिधावता टाबरां रै भाग वळै इण मिरतूलोक रौ वासौ अंगेजियौ। नीतर वै तौ पूरमपूर तेवड़ली ही। साजा-सूरा हवेली में पूगता ई प्रिंसिपल नै फोन करचौ के नरसां खातर सरधा-जोग हॉस्टल बणावणौ चावै। सरधा में की खांमी नी ही तौ हॉस्टल मे क्यू खांमी रैवती। छठै महीनै ई नांघळ व्हैगौ। गाजा-वाजा, घूंम धडाकै। सेठजी रौ पाछौ मायौ ई नी दूख्यौ। जैड़ौ दातार बाप वैडौ ई सपूत बेटौ। आयै साल बाप री बरस-गांठ रै टांणै चूकती नरसा नै गोठ देवै। अबकी कायलांणै जीमावण री तेवड़ी। पण नरसां रा जित्ता माथा उत्ता ई मत। अबार सिस्टर रै पाखती छेहलौ पड़ूत्तर जाणण सारू आयौ। कैवण खातर बाप री मांदगी रौ ओळावौ तौ है ई, पण नरसा री संगत बेटौ अणूतौ राजी व्है, जांणै गोपियां रै झूलरै किसन-भगवांन रास रमै। इण सिस्टर नै तौ ब्याव सारू मूंडैमूंड बूझ्यौ, पण वा किणी भाव राजी नी व्ही। पण अमोलक सिंघवी रै अंतस उणरौ प्रीत मे दुराजौ नी पड़्यौ। अेकाध डॉक्टर ई काळा तिल रै कामण सिस्टर नै आपरै मन रौ अगम भेद चौड़ै करचौ पण उणरै लूखै अंतस किणी सारू की भेद नी हौ, तद कांई दरसावती ! नटली तौ ई मुळक रै उछाव। तद उणी अलूंणै मन आज आ नवादी धाण-मथांण कैड़ौ घिरोळौ खावण लागौ ? वा साथणिया री समझ माथै हसती। खिखरां करती। अत्रै वै मोसा देवैला। इत्ता बरस आपरौ डोळ कीकर अगोचर रह्यौ ? बारली छींया तौ दीसती पण मांयली छीया आज ई निगै आई। ठा नी पड़ी के आपोआप सू हारी के जीती ? कठै ई सात-समंदर पार अन्ना री आतमा उणरी रग-रग मे तौ नी घुळगी ? अबार-अबार थोड़ी ताळ पैला पिरोजी कुड़ता वाळा मोट्यार सूं किण भांत निसंक वंतळ कीवी, पण अबै तौ जाळी रै बारै झाकण तकात री, सरधा ई ढोळै बैठगी। मरदां सू मिळण में कैड़ी लाज ? कांई संकोच ? जिण बात सारू आज दिन तांई वास्तौ नी पड़्यौ सो आज अेक असैंधा मरीज नै अबै अेकर ई आडौ उघाड़ै मन-मतै जोवण री हीमत नी व्है। जाणै रगत री ठोड़ रग-रग में लाज वहण लागी।

बाईस नंबर रै प्रमांण उण छिब रै आगै अेक बूढा बिसनोई री इलाज करती वेळा नरस रै हीयै जाणै सेवळी पजगी व्है : धोळौ पेंट, पिरोजी कुड़तौ, आधी बायां चढ़योड़ी, इदभांत काळा अर सांगणा केस, हाथ मे टॉलस्टॉय री अन्ना करेनिना। किरमची गत्ता माथै अणूती फूठरी सुवरण कोरणी। मोट्यार रौ नी नांव जांणै, नी धांम। उणरी ठोड़—साळूरांम बिसनोई। ऊमर चोपन बरस। धोळी धोती, धोळौ कुडतौ। धोळी माथौ, धोळौ खत। हाथ में गेडी। हेटला डावा जवाड़ा री छेहली डाढ़ तीन दिन सूं कुळै। नी दिन रा झख, नी रात रा। छिण खातर ई आख नी झपी। रांम जांणै उणरै किसै दांत के किसी डाढ रीळ ऊठै ? कद सू ? हा...हा, नवी डाढ़ रै ऊभीकां री बात करी तौ ही ! तौ पिडां रै अकल-डाढ़ आवै ! अकल री बांनगी तौ दीसै ई है ! पण भेळमभेळ म्हारी अकल क्यू मारीजी ? पोथी री गांगरत नी गाय, उणरै नांव अर दरद री पूछताछ करती तौ सावळ ही। तौ ई... तौ ई अैड़ौ अंवळी घांण-मथांण थकां नरस साळूरांम बिसनोई री सुयराई सू इलाज करचौ। डोकरा नै अैल ई नी आवण दी। ऊंडै अंतस अेक सवाल री भीवगोटौ

ऊठग्यो—'बाईस नंबर रो टिकली उणरा...उणरा हाथ सूं अंगेजियो इण खातर। मरीज दूजो व्हियो तो कांई नंबर तो सागी इज है ! ऊं-हूं...कोरा-मोरा नबर री तोल नी पाळीजै। महातम तो फगत नांव अर सूरत रो व्है। सूरत...? जागतो मन अजेज ठूठीज्यो—नरस नैं मरीज री सूरत सू कांई लीजै-दीजै। उणनैं तो फगत मांदगी सू सरोकार है। नी, नी, टिकला बापड़ा री कांई बिसात के जिण खातर वा दुभांत बरती। वा तो सैं मरीजा रै साथै अेड़ो ई सांतरो बरताव राखै। नरसां रै कुण तो नैड़ो अर कुण आंतरै ? लारलै पखवाड़ै ई कदास चौथी के पांचवी वळा अन्ना करेनिना नैं चाव सू बांची। जित्ती वळा बांची उत्ती वळा ई नवी पोथी लागी। केई अगम-भेद चौड़ै व्हिया अर वळै व्हैला। जिणरी माठ कदेई नी आंणी। हॉस्टल में जावतां पांण पाछी बांचैला। जे कीकर ई ओ सिरै सस्करण उणरै हाथै लागै तो चाहीजै ई कांई ! फगत टॉलस्टॉय री पोथी रै कांमण उण सूं अपणायत दरसाई, नीतर प्रेम के प्रीत रो तो वा गेलो ई नी जांणै। बात अर बात रो नांव। कैड़ा निपग्गा पपाळ में झिली। कदेई कदेई दांत रै चटीड़ा री गळाई, खासकर लुगायां रै हीयै अजाण वतूळियो जागै। उण कांनी घणो ध्यांन नी देवणो।

बाबो कुरसी छोड ऊभण लागो तो नरस बैटी रै उनमांन आपरै होठां पवीत मुळक छितराय बूझ्यो, 'क्यूं बाबा, को तकलीफ तो नी व्ही ?'

'बाया, थारो रांम भलो करै।' माथै पोरयो धरतां बाबो कैवण लागो, 'थारै हाथ री अेड़ो हुनर, अेकर तो झेर आयगी। तीन दिन रो ओजगो हो। उणियारो देखतां पांण धावस बंधग्यो। आसीस देवूं जित्ती थोड़ी है।'

'बडेरां री तो आसीस ई चाहीजै।'

बाबो गेडी लेय जावण लागो तो अचांणचक नरस रै आखै डील सरणाटो सांचरयो—अेडी सूं चोटी लग के चोटी सू अेडी लग, को सावळ बेरो पड़यो नीं। हळफळाई उणरो लारो करती होळै-सीक बूझ्यो, 'बाबा, थांनैं किसो नंबर मिळयो?'

अणपढ बाबो बेमीलो अणूतो हो। तीन के चार जणां नैं टिकलो बताय नंबर बूझ्यो। जीवै जित्तै नीं भूलै। याद राखण मारू घणो मसालो ई कठै हो ? अपूठो फुग्यो तो नरस रो काळो तिल खिवतो निगै आयो। उण में मीठ गडाय बोल्यो, 'गुणचाळीस !'

नरस रै हीयै कोई डबको पड़यो व्है। निसास छोडती खरायो, 'गुणचाळीस ?'

'हां बाया हां—गुणचाळीस ! अणपढ भलां ई व्हू, भोळो आथ ई कोनी। तीन-चार जणां नैं बूझ्यो।'

बाबो जमाना री ठोकरां खायोड़ो हो। नरस नैं कीं आळोच-पळोच करतां देखी तो ठीमर-सुर में कैवण लागो, 'बाया, अेक बात री भुळावण देवूं, याद राखजै। अै धोळा हाट-बजारां मोल नी मिळै। घणो तपियां काळा रो धोळो रंग व्हियो। उपाड़-माथ्या अधवेरड़ा री अंगै ई पत कोनी, भरोसो मत करजै। सपना में परकाम देवैला। आंनै दांतां रो इलाज थोड़ो ई करावणो, की न की मिस चाहीजै। आंख्यां सेकण री नीत नीं व्हैती तो नंबर थोड़ो ई बदळतो। म्है तो जमाना री रग-रग जांणूं। पण थूं हाल आ लफंगां री नाड़ नीं ओळखै। आंनै जवांनी रो ताव चढ़योड़ो। जद किणी सफाखानै दूजो ओखद नीं है तो पछै अठै क्यूं रांचै ! थूं किसी आंणै

कोनी ! काळा नाग रो भरोसो कर लेणो पण काळा माया री नी। समझी के नी समझी ?'

हां, नरस खातर हाल ओ समझणो घटै के काळो नाग वत्तो खतरनाक व्है के घोळो नाग? अबूझ नरस री तो अकल ई कह्यो नी करचो। जे सरूपोत अंडा काळा सुभाव री जाच व्हैतो तो...नी नी, नरस रो ओ धरम नी है। वा तो दुस्मण रा ई इणी गत हीडा करैला। करम सो ई धरम। पण बाबा रो काळो मूडो व्हियां ई उणरै हीयै सांयत वापरी। उफणती रीस नैं कीकर दाटी सो वाही जांणै।

तीन, तेरह, बाईस अर गुणचाळीस ! इण ऊमर रै सधीकैं कैड़ा अजोगता आक गळै पडया ? नरस ज्यू-ज्यू वानैं पातरण सारू जतन करती त्यू-त्यू खोड़ीला आक उणरै गळै झरणाट मचावण लागा।

बिना कासी-करवत ई उणनैं अंडो लखायो के उणरी देह, उणरा मन अर उणरी आतमा रा दो फाड़ा व्हैगा। अेक फाडो धुरकारतो—छि: छि: नाकुछ टिकला खातर इत्ती आळोच-पळोच, इत्ती घांण-मथांण ! सोजी रो लवलेस ई कोनी। दूजो फाडो जोह बंधावतो के संसार में छोटो-मोटो की नी व्है। छोटो सो ई मोटो अर मोटो सो ई छोटो। जिण परमेस्वर रै नांव इत्तो धबक बेठचोड़ी, उणरो तो की सरूप इज कठै ! बीज कित्तो छोटो व्है अर भाखर कित्तो लांठो ! पण भाखर नी बधै, बीज बधै। कैड़ी ई मोटी दातारी रा छिलका छोल्यां फगत मळीचवाड़ो ई निगै आवैला। धरमादा रै सीगै थरप्योडा अै मिंदर, धरमसाळ, सफाखाना अर स्कूल इत्याद सैं की काळी माया रो ऊजळो नांमून है। कठै अै अमोलक टिकला—तीन, तेरह, बाईस अर गुणचाळीस—अर कठै अै नाकुछ बिडला-मिंदर।

दोनू फाडां रै बिचाळै माहोमाह अचीतो महाभारत मंडग्यो। तो ई अेकर लोह री जाळी रो फडको उघाड़ प्रीतम नै जोवण री हीमत नी व्ही। वो अन्ना करेनिना रो किसो मरम उघाड़तो व्हैला ? आ कैडी भूरकी ? कैड़ो फटकार ? परतख झांकी री बात तो अळगी जे सपनैं ई उणरो झबको पडचो तो वा थरहर धूजण लागैला। पण कमरा में अवतरियां आंख्यां मीच उणरो उणियारो अदीठ थोडो ई करी-जैला ? डॉक्टर के नरस रो विसवास अटोप्यां उणरो इलाज ई राजी-खुसी करणो पड़े। ओ तो नरस रो धरम है। पण वो मत-वायरो माय आवै तो खरी।

गेडै रै गेड़ै फरास बांग देवतो अर दो-दो मरीज मांय आवता।

'तैतीस अर चौतीस।'

पण आज तो डॉक्टर साहब बेजां वगत लगावैं ! अबै तो फगत पाच नंबर घटै। माय आयां ई सरसी। बरसाळी अर कमरा रै बिचाळै लोह री जाळी रो फड़को उघड़तां ई उणरी झाकी दीसैला—पीतांबर। बांसरी। मोर मुगट। नी नी, घोळो पेंट। पिरोजी कुड़तो। सुवरण कोरणी किरमची पोथी। टॉलस्टॉय री अमर धीव—लाडेसर अन्ना करेनिना, नी जलम रै सीगै जलमी अर नीं मरण रै सीगै मरैला...!

के अणछक नरस रै कांनां किड़कती गाज सुणीजी, 'सिस्टर, इग्यारै बजण वाळी है। बच्योड़ा नंबर भेळा करलो। जल्दी।'

मौत री दध-बतळावण अंड़ी इज व्हैती व्हैला ! कुण जांणै ?

नरस अचीती मुळक रै ओलै अंतस री लाय लुकावती बोली, 'डॉक्टर साहब, अबै...अबै तौ फगत पांच-सात नंबर घटै।'

हाथां रै भेळमभेळ डॉक्टर मुळक उजाळतौ बोल्यौ, 'पैला घड़ी में वगत तौ देख! इत्तौ मोड़ौ कदै ई नी व्हियौ।'

वाळणजोगड़ी घड़िया रै खींखरां वगत री सोय कद व्है? पण मिनख तौ वगत री ठौड़ घड़ियां रौ इज पतियारौ करै।

डॉक्टर रौ अनुभव नीमण हौ। हाथ पूंछतौ-पूंछतौ कैवण लागौ, 'जिणरै वेसी पीड व्है वौ सात बज्यां पैली अठै रांचण लागै। इत्ता मोड़ा आवणिया सिझ्या रा पाछा आवै तौ ई की अबखाई कोनीं।'

नरस तौ लुगाई ही। उणरी देह में लुगाई रौ इज काळजौ हौ। बारणा कानी वधण री अंगै ई सगती नी ही। पण फरास रै तौ मरद रौ काळजौ हौ। 'मरीज घणा ई कड़मड करचा तौ ई वौ हाकांधाकां नंबर अेकठ करनै फटाक टेबल माथै राळचा। काया रौ तमांम करार नरस दोनूं कांनां मे ऊर दियौ तौ ई उणनै अन्ना करेनिना वाळा मोटघार री धांणी नी सुणीजी। आंख्यां रै उनमांन निरभागी कांन ई तिरसा रैगा। पीड़ सारू फगत अकल-डाढ़ रौ इज ठेकौ कोनीं। विना पीड़ रा चमीका घणा दौरा सहीजै!

किणी अदीठ... ...अदीठ सपना रै आंकस नरस टेबल रै पाखती पूगी। गुणचाळीस नंबर रौ मगसौ टिकलौ हाथ मे लेय कांई निरखण लागी सो वाई जांणै। पण अेक बात अखरै के उण वेळा सूरज नै ई टिकला रै भाग ईसकौ व्हियौ व्हैला! सूरज भगवान मे अकल रौ इत्तौ उजास व्हियां टाळ अंधारौ कीकर लोपतौ?

जांणै कांई सोच जाळी रौ फड़कौ उघाड़ती वेळा डॉक्टर लारै मुड़नै नरस कांनी जोयौ। 'अरे! आं टिकलां में कांई सोधै? थनै ई तौ वगतसर पूगणौ है। तबीयत सावळ कोनी कांई?'

'नी नी, तबीयत तौ बिलकुल ठीक है। आई, अबार आई!'

साचांणी, नरस रै होठां पूजती मुळक ही। पण कदैई वदैई लुगायां आंसू मी ढळकाय होठा मुळकै। अेक बात वळै के वैडी मुळक रौ धपळकौ लाय सूं ई जबरौ व्है। पण देखण जोग वैडी दीठ चाहीजै। डोळा रै भरोसै औ धपळकौ नी दीसै।

टप-टप री टापां तागौ गुड़कतौ हौ। नरस नै की अंदौ गतरस चेत व्हियौ जाणै वा घोडा री ठौड़ तांगै जुत्योड़ी है। आपोआप नै उकराळ कांई म्यानौ बूझती सो वाही जांणै।

अणछक पिरोजी कमीज वाळा मोटघार सूं उणरी निजर बीधीजी। आंख्यां आडी अधारी आवती नीठ बची। झांवळां ई झांवळां तिरता ठौड़-ठौड़ मेई चित्रांम: धोळौ पैंट। सांगणा बाळ। अेक हाथ में अन्ना करेनिना थांम्योडी। दूजोडौ हाथ गाल माथै। सड़क रै डावै पसवाड़ै टुळक-टुळक चालतौ थकौ। निरख आंधी व्हैती तौ ई औ नजारौ उणनै सुमट दीस जातौ। वौ तौ जाणै उणरी देह रौ इज आधौ फाड़ौ व्है।

सगळा सूं पैली आयौ अर बिना इलाज बोलो-वोलो आपरै मारग टुरग्यौ। किणरौ चूक? नी उणरौ, नीं नरस रौ। नरस नै उणरी पीड रौ पूरमपूर अंदम है।

पण उणनै नरस रै सळीका री की सोय है के नी ? पूछ्यां टाळ पतौ कीकर पड़ै ? कुण बूझै ? क्यू बूझै ? नी वौ नरस रौ नांव जांणै अर नी नरस उणरौ नांव जांणै। खुदोखुद तौ आपरा नाव जाणता इज व्हैला। माहोमाह दिहावळा होय गम्योडा तौ कोनी ! तद आपोआप रौ नांव जाणण खातर क्यू भूल पड़ैला ? नरस नै लखायौ के इत्ता बरस री जूण तौ फगत अेक लांठो भरम हो। उणरौ जलम तौ आज ई व्हियौ। अर जलमणा रै समचै ई वा पूरमपूर जवांन व्हैगी।

सिझ्या रा पाछो आवैला के नी ?

सुदरसण मीट उंचाय साम्ही जोयौ तौ तागा में नरस जावती दीसी। धोळौ वेस। मोवनी मूरत। तिल जोवण सारू मसा तौ घणी ई जागी, पण निगै नी आयौ। हो तौ डावा गाल माथै ! पकावट डावा गाल माथै।

टप-टप री टापां आतरौ तर-तर बधतौ गियौ। वौ पाळौ हो अर नरस तांगा में ही। नी नी, नरस पाळी अर वौ तांगा मे !

'तीन, तेरह, बाईस अर गुणचाळीस !'

'कांई फरमायौ बाईजी ?' तांगा वाळौ लारै मुड़नै बूझ्यौ।

नरस रै उणियारै लाज री झांई पूळगी। झिझक रै समचै अजेज बात केवटी, 'म्हैं...म्हे बूझती के थारौ नांव काई है ?'

'इस्माइल।'

किणरौ नाव जांणणौ हो अर किणरौ जांण लियौ ?

'इस्माइल, तांगौ तेज नी चालै काई ?'

'क्यू नी चालै ? अबार लौ।' चाबक रा दो-अेक सटीड़ उड्या तागौ वेग सू गुड़कण लागो। उण वेग रौ परतख साखी हो सुदरसण। उणरै कानां टापा री टपा-टप ई बधण लागी। पण वौ तौ आपरी चाल, उणी भात अेक-अेक पावंडो धकै चालतो हो।

नरस वळै गुणमुणाई, 'तीन, तेरह, बाईस अर गुणचाळीस। अन्ना करेनिना। लियौ टॉलस्टॉय !' जांणै कोई अमोघ मंतर सारै। पण अबकी घोड़ा री तेज टापां अर तागा री खड़खड़ाट रै बिचाळै उण मंतर रौ भणकारौ तागा वाळा रै कांनां नी पड़चौ।

छेती वळै खासी बधगी। अर तर-तर बध्यां ई जावै ही। पण तौ ई काळी सड़क रै डावै पसवाड़ै चालतो पिरोजी कमीज वाळौ मोट्यार नरस नै हाल निगै आवतो हो। आकरी मीट गडायां ई अन्ना करेनिना री पोथी नी दीसी सो नी दीसी।

चालता-चालतां अणछक वौ रूख री छीया तळै क्यू ढबग्यौ ? हाथ गाल हेटै उणी भात दियोडो। कदास पीड़ बधगी दीसै। वळै जोर सू गुणमुणाई, 'तीन, तेरह, बाईस अर गुणचाळीस।' अंडो उड़क-धुडक पावड़ो तौ आज पैली कुण ई लुगाई नी धोख्यो व्हैला। कुण जाणै काई मोच वा मूडो फोर घोड़ा री तण्योडी कनौती साम्ही अेकटक जोवण लागी ! घोडै जुत्योडो तागौ टपाटप रै भणकारै छिण-छिण गुड़कतो हो। तर-तर छेती बधावतां, टप-टप री टापां रै समचै !

काग
मुनि

अेक ही भोळी-ढाळी कमेड़ी। पीपळी रै अेक घेर-घुमेर हरियल रूंख माथै जिणरी जरूरत-परवाण अेक छोटो-सीक आळो। आयै साल उणी ठोड़ ईंडा देवती। हदभात हेज, सनेह अर ममता रै कोड वानै सेवती। पण मा रै पसाव ई दुनिया मे सै मनचीतो नी व्है। अभाग री अवळी मार के उणी पीपळ री खोखाळ अेक साप रो थिर वासो। काळो, हित्यारो अर जाळो। नैन्हा बिचियां रै पांखां आवण लागती अर वांनै डकार जातो। कमेड़ी रगत रा आसू राळती। गळगळै कंठा बिचिया नीं खावण सारू अरदास करती। पण सांप नै आसुवां सू काई वास्तो अर थोणती सूं कांई सरोकार! विस घुळी मुळक रै ओळावै कैवतो, 'हाय-हाय! मोटी भूल व्हैगी, अबै थारा बिचियां रै सांम्हो नीं भाळूं। थू रो मत! म्हारो हीयो भरीजै। देख, औ नांमी ठायो छोड थू किणी दूजै वासै मत ना जाजै। बाज-सिकरां सूं थारै बिचिया री रुखाळी करूंला। है नी? बोल करूंला के नीं?'

अभ्यागत कमेड़ी नै माडै हुंकारो भरणो पड़तो। कमेड़ी कह्यां पाछै कांई! निपट अबूझ अर भोळी। बारम्बार जमराज रो पतियारो कर लेती अर वो अधबेरड़ो बारम्बार धोखो करतो।

सेवट दरजै-लाचार होय वा आपरो वासो ई छिटकाय दियो। कांई करती जद सूरज-चांद ई उणरै आंसुवां सू आख्या फोर ली! अळगी भांय, सिळगता सूरज रै बाव झेलण वाळा अेक जंगी बड़ला माथै वा नवो आळो ठायो। कुण जाणै, कित्ता

सूना पंछियां रौ आसरौ हो, उण बडला रै हरियल पानां ? पछै कमेडी रै बिचियां खातर कैंडी जोखम ! नेगम निरभै पांच ईंडा दिया, मोत्यां नै ई मात करै जैड़ा ! पण मा रौ जीव तौ अस्ट-पौर सुरक-सुरक करतौ। वा रात-दिन सुजाग रैवती। नी पलक झपाई अर नी चुग्गा री जोखम झेली। निरणी-तिरसी पांखां रै परताप ईंडा लुकायोडा राखती। पण वगत पूरमपूर साथ निभायो उणरौ। ईंडा री ठौड़ आळा मे पाच बिचिया आंख्यां खोली। गुलाब री जात कवळा अर गुलाबी। मां रौ हरख पान-पान में लूमण लागो। नित सूरज री उगाळी वांनै मोत्यां रौ चूण चुगावै। मीठा गीत सुणावै। वगत रै कामण बिचियां री गुलाबी देह पांखां रा सिळू फूटा।

हित्यारा सांप नै इणी पुळ री उडीक ही। खेरौ करतां-करतां सेवट उणी बड़लै आय बाज्यौ। रीस मे वट खावतौ आळै चढ्यौ। कमेड़ी गुणमुण हालरियौ गावती ही। बिचियां री आधी पलका मीच्योड़ी अर आधी खुली। कदास वै सूवण रौ ई लावौ लेवता अर सुणण रौ ई। अचांणचक सांप री फुफकार सुण वा सुट्ट व्हैगी। मीठी ढाळ जाणै बीजळी पडी। राम जाणै किण अजाण खुडकै बिचियां री आंख्यां पूजती खुलगी। पण मौत रै झूमता फुण रौ डोळ देखतां पाण दस री दस आंख्यां पाछी मीचीजगी। मरण सू ईं हजार गुणा माड़ी गत व्हैगी मायड री। अवचळ आख्यां टग-मग जोवण लागी। पण सांप कीकर अबोलौ रैवतौ ! छिलता हरख नै लुकाय रीस रौ स्वांग लाय बोल्यौ, 'म्हारा सू छांनै आई ? जलम-बावळी ! भलां, मौत री मार कठै नी पूगै ? बोल, अबै कीकर बचैला ?'

बापडी कम्मू री तौ बिसात ई काईं, किणी रै मूडै सांप रै उण सवाल रौ की पड़ूत्तर नी हो। पण भोळी-ढाळी कमेडी विखा री अंवळी वेळा ई किणी अथाग ध्यान मे डूबी ही। जांणै कोई सिद्ध रिसी री आतमा उणरौ आसरौ झेल्यौ व्है। अर उठी साप आपरै इज दंद-फंद मे झूमतौ हौ। कमेड़ी सू मीट सांध बोल्यौ, 'वाह वाह, अबकी बिचिया तौ ताही फूठरा दिया। खावण रौ जबर आणद आवैला।'

चू-चू करता बिचिया चापळनै माठ झेली। आंख्या खोलण री हीमत इज नीं व्ही। अर मा केई वळा मौत आगै आंसुवा रौ गाढ पतवाण्योडी ही। अबकी डरतां-घाबरता उणनै लाज आई ! सेवट मरणौ तौ है ही। पांखां रै जोर मौत सू आंतरै नी उडीजै। गाढ राख्या की कारी लागै तौ। लाचारी रौ स्वांग भरनै बोली, 'जे आज म्हारी आतां वाळौ तौ आपनै अणूतौ पाप लागैला।'

'क्यू ?'

'औ ई बेरौ कोनी आपनै ? आज सोमोती अमावस है। बरत नी राख्यौ ?'

'आं हा, थू राख्यौ ?'

'वाह ! भलां म्हैं कीकर नी राखती ? आ कोई पूछण री बात है ?' अबै ज्यूं रावळी मरजी। म्हैं पालू कोनी। पण बिचियां रै दात लगावता ई आपरी फीदी-फीदी बिखर जावैला।'

'साचाणी ?'

'आपरै सांम्ही कूड़ बोलण रौ ठरको है म्हारो। अर वौ ई सोमोती अमावस रै टांगै। कालै आपरी दाय पड़ै जद पधार जाजो।'

'छेवास, वगतसर नांमी याद दिराई, नीतर अणखाधी री मरती।'

मौत नै ई मरण रौ डर लागौ। वळतां बोली, 'पण अेक बात रौ पूरौ चेतौ राखजै। डुसुड़-डुसुड़ रोया खावण रौ स्वाद नी आवै। देख, रोजै मत ना, हैं...।'

'आप फरमावौ तो नी रोवूं। कालै पधारोला के नी ?'

'अेक बावळी मे तौ घाटौ नी ! आ कोई पूछण री बात है ?' अर वौ सांप आकरी मीट बिचिया नैं जोवतौ हेटै उतरग्यौ। खासी आंतरै उणरी बांबी ही।

साप रै अदीठ व्हिया कमेड़ी बिचियां री संभाळ कीवी। सैं जीवता हा। अेकर तौ उणनै विसवास ई नी व्हियौ के परतख आयोड़ी मौत टळगी ! भला आसू ढुळकायां-के लालरिया लियां हित्यारा क्यूं पसीजै ? विखा री वेळा अकल अर हीमत रै पसाव बात बणी, धकै ई बणैला। कमेड़ी नैं पैली वळा अकल रौ उजास निगै आयो। पैला तौ डर री घाल्यां अकल तौ चापळ जाती।

भोळी कमेड़ी आंख्या मीच सोचण लागी। निरी ताळ कीं उपाव नी सूझ्यौ। आंख्यां उघाड सोचण लागी। पण अकल माथै जांणै भाटौ इज पडग्यौ व्है। तौ कालै बिचिया नी रुखाळीजै ? पांखा फड़फड़ाय वा आपोआप सू सवाल कर्यौ। क्यू नी रुखाळीजै ! आज कीकर रुखाळ्या ?

'क्राव-क्राव। क्रांव।'

ऊपर डाळी माथै बैठा कागला री बोली सू कमेडी रौ ध्यान तूटौ। गावड़ ताण ऊंचौ जोयौ। काळौ-स्याह रंग। अचपळी आंख्यां। चौकस निजर। तीखी टूच। आखी दुनिया जिणरी अकल बखाणै। आपरी अकल माड़ी व्है तौ दूजां सू सला-सूत विचारण मे कैंड़ी आट ! वगत नी किणी री कांण राखै अर नी किणी खातर ढबै। नी कमेड़ी सारू अर नी सरप सारू। फुरर सू उड़ परी कागला रै पाखती बैठगी। उणनै वीरौ कैय बतळायौ। अंतस री अखूट तळतळावण बिना रोयां दरसाय दी। अबै आंसुवां सू उणनै अणूती सूग होवण लागी।

कागला री अकल मे तौ की खांमी नी ही। तुरत अटकळ विचारली। पण सोरै-सास जल्दी बतावण री इंछा नीं व्ही। वौ जरूरत सूं ज्यादा बुद्धिमांन हौ। थोडी ताळ छौ नेवरा करतौ। क्रांव-क्रांव करतां बोल्यौ, 'थोड़ी अकल तौ थूं ई भिड़ा। अंत बिचिया थारा है। म्हैं कठा लग दूजा रै बिचियां री साळ-सभाळ राखूला ? सोच, थनै ई भगवांन अकल सूंपी है।'

'म्है पूजती सोच-विचारनै आपरी सरण आई। जकौ सोचणौ हौ, अेकठ ई सोच लियौ। रावळी होड़ किणी सू नी व्है। भगवांन आपनै अणूती अकल बगसी।'

'हा, अकल तौ बगसी, पण रूप कठै बगस्यौ। रग काळौ-किट्ट। बोली अळखावणी।' कागलौ अेक ऊडौ निसास भरनै बोल्यौ, 'हां, रूप...रूप तौ थारौ है।'

'रूप ! रूप सू काई खांगा व्है ?' वा तरणाटी रै सुर बोली, 'जिण रूप रै भरोसैं आपरा बिचिया नी रुखाळीजै, लांपो लागै उणरै। कित्ती...कित्ती पोथ्या भरी है, रावळै बखाण। जद-कद किणी माथै पटकी पडी, आप सदावंत उणरी सहाय कीवी। नी किणी नै ओझाड्यौ अर नी आळघा-टोळघा करघा।'

'हां, आळघा-टोळघा करण रौ तौ म्हारौ सुभाव ई कोनीं। अंगै ई सोच मत

कर, म्हैं तौ फगत प्रस्ताव बात छेड़ी ।' कागलौ अजाण ई पोगा चढ़ग्यौ । लटा-पोरी रौ सोरै-सास वेरौ नीं पड़ै, साचैला गुण प्रमांण झरै । गुमेज रै गाढ़ हंसतां-हंसता कैवण लागी, 'म्हैं तौ आधी बात सुणतां ईं अटकळ विचारली । थोड़ी चाळ-चोळ कीवी, भूडौ मत मानजै । कित्ती रूपाळी है थू ? थुथकी न्हाकै जेड़ी । पण कांम पटघां, म्हारै पाखती थोडी ई आवैला ।'

'क्यू नी आवूला ? किणी रौ गुण भूलू, औ म्हारौ सुभाव कोनी । जरूर आवूला । कूज-कूज रावळौ मन बिलमावूंला ।'

'बस बस, थारै मूडै दो मीठा बोल सुणणी चावतौ । दूजी किणी बात री हर कोनी । थारी भावज कागली रै कांनां भणकारौ ई पड़ग्यौ तौ म्हनै जीवतौ तळ न्हाकैला । सुण, अेक नोळचौ म्हारौ गाढ़ौ मित है । अबार ई उण सू वतळ करनै आयौ । पैला सोय व्हैतौ तौ सागै ले आवतौ । पण काई आंट कोनी, पाछा चाला । म्हनै वीरौ कैय वतळायौ, चातग थू ईं कम नी है । म्हानै तौ दुनिया बिरथा भाडै । कांव-कांव ।'

नोळचा रौ तौ नाव ई मोटौ । सुण्या जोह बंधै । दुस्टिया रौ जलम-दोखी । हरख रै उछाव नाचण लागी । पैला डर री घाल्यां आपौ बिसरगी, अबार आणंद रै उमाव सुध-बुध पांतरगी के बिचियां रौ बचाव करणौ है । गळौ फुलाय कूजण लागी । हरख री गैळ नाचण ढूकी ।

भोळी कम्मू री इण भोळप, कागलौ ई चेतौ बिसरग्यौ । नीठ-नीठ आकस राख खोळै सुर बोल्यौ, 'माठ कर, कम्मू माठ कर, म्हारौ मन चळ-विचळ होवण लागौ । चाल, अबै अेक पलक री ई जेज मत कर । कठै ई आंतरै टुरग्यौ तौ हेरणौ भारी व्हैला । नोळचा री फुरती नै कुण पूगै ? अर थू अबार ई मगन व्हैगी ! भरै पडघां पैला फदफदाटौ आछौ कोनी ।'

कागला रै चेतावतां ईं कमेड़ी रा होस खत्ता व्हैगा । आफळ करचा उपरांत ई कागला रै साथै उडांण नीं भरीजी । जांणै पांखा खिरगी व्है । आख्यां सूं लाचारी टपकण लागी । कागलौ आळा रै चोफेर चकारा देवतौ बोल्यौ, 'अढ़ब सुभाव है थारौ ई । खिणेक नाचै, खिणेक विलखै । पांख पसार अर म्हारै साथै उड ।'

अर दूजै ई छिण वा कागला रै सांढ़ै उडण लागी, जाणै बिचियां समेत आवगौ बड़लौ वांरै जोडै उडै । हवा रौ रेसौ-रेसौ हरख रै पसाव झूमण लागौ । धूप पळ-पळाट करण लागी । कागला रै अंतस उजास रौ कस घुळण लागौ । पांखा रै फट-कारै हांकरतां नोळचा रै वासै पूगा । मित रौ आखतौ हेलौ सुणता ईं वौ अजेज वारै आयौ । कागलौ सगळी गांगरत गाय छेहला बोल सुणाया, 'भगवांन री आस छोड आ थारै दरीखानै आई । फगत थारै परताप साप री डाढ सूं इणरा बिचिया बचै तौ बचै । भगवान सारू जेड़ी कमेडी वैड़ौ सांप ! सै बिरोबर । कैडी अंवळी समझ है उणरी । पछै अबूझ लोग उणनै क्यू सिवरै ? सांप अर कमेड़ी दोनूं बिरो-बर । घणा रंग है । भगवांन री आ झीणी समझ म्हारै तौ अंगै ई रस नीं बैठै । कांव-कांव ।'

वळती वेळा कागलौ अर कमेड़ी गिगन मे नी उड्या । नोळचौ घड़ी-घड़ी धोदावतौ रह्यौ तौ ई छती पांखां वै उणरौ साढ़ौ नी छोड्यौ । धरती माथै पंजां

रा खोज मांडता जोड़ै चालता रह्या। कैंडो आणंद आयो ! धरती माथै मरजी सूं चालणो कित्तो सुखदाई है। तीनूं न्यारा-न्यारा जीव। अेक पसवाड़ै नोळचो। कागला रो गाढो मित। हित्यारां रो काळ। झावरियो पूंछ। फुरती रो अवतार। तीर रै फाळ ज्यूं अणियाळा पंजा। तीखौ-तच्च मूंडौ। लांबी मूंफाड। गाळ-गोळ आंख्यां। जांणै पापिया रो खेरौ करण सारू आ जोत मिळी। दूजै पसवाड़ै— भोळी-ढाळी कमेडी, कवळी पांखा, सांवळी आंख्यां, ओपती टूंच। रूपाळी छिब। दोनां रै बिचाळै कागलो, मोद में फाटतो थको। अकल रा उजागर कागला रा कोई बिरथा बखांण थोड़ा ई करै? जठै भगवान री अकल अड़ै, उठै कागला री अकल कांम सारै। कमेडी नैं वगतसर नोळचा रो नांव कैंडोक सुझायो! अेकर मित कानी भरपूर निजर जोय कागलो डग-डग हंसियो। हंसती वेळा कागला रो डोळ ई दीप-दीप करण लागो। हंसतो-हसतो बोल्यो, 'नाक राखण सारू दुनिया कित्ता कळाप करै। अेक ओ नोळचो, लाबा-ओछा नाक रो अंगै ई सोच नी। चिणा रै उनमांन साव छोटो नाक, पण करतब लाठा। जुलमिया रो जम-दूत। हाथी रो नाक कित्तो लांबो, धरत्यां टिरै, पण आपरो पेट भरण टाळ दूजा की लोतर कोनी। आपरो गुजरांण तो कीडी-गीडोळा ई करै।' वो घड़ीक नोळचा नैं निरखै, घडीक कमेडी सांम्ही जोवै। कमेडी नैं निरख-निरखाय पाछो नोळचा सांम्ही भाळै। पण आज कमेड़ी री छिब निरख्या जीव धापै ई नी। लायण ओसांण रै अवळै भार दबती लखावै। आंख्यां री कसूंबल आब सुभट खिवै—कागला री ख्यात, जग चावौ नामून। छिल छिल छिलकै सिरै आणंद। मौत अर जीवण रो असली मरम आज ई सावळ समझ में आयो। मौत माटा रै उनमांन अवचळ व्हे अर जीवण अलंघा री उडांण भरै। टिव-टिव करै। धरती माथै चालै—ठुमुक-ठुमुक।

जे उणरी जोडायत रो अैंडो रूप अर अैंडो सुभाव व्हैतो! अस्टपौर झिकाळ करै। उणनैं तो झिक-झिक सूं ई वेळा कोनी। कागलो जाचक दीठ कमेड़ी सांम्ही जोयो। तठा उपरांत नोळचा सांम्ही डोळो तांण कैवण लागो, 'प्रीत अर बिसवास रो तो स्वाद ई निरवाळो। थूं मानै, नीं मांनै, म्हारै अंतस उजास रो रंग पळकण ढूको। कठै ई बारलो रंग ई धोळौ-धवक नी व्हे जावै - हंसा रो गळाई, बुगलां रै उनमांन। सालस कमेडी री सगत रै कामण म्हारो तो सुभाव ई बदळग्यो। कांई बताबूं? कीकर बतावूं?'

'कीं बतावण री जरूरत कोनी।' नोळचो छिगरावतो बोल्यो, 'जदीज तो दुनिया थारी पत नी मानै। बारै बिचै ई वत्तो काळो है थारो अंतस। सांप रै उनमान छळगारो। विस री पोटळी। छि'।'

मित री अचीती ओझाड़ मुण्यां कागलो फीटो पडग्यो। कुरा-कुरां रै ओळावै गळो साफ करतां बोल्यो, 'हित्यारा साप रै जोडै करयो थूं म्हनैं? म्हैं तो दरजं-लाचार दिल री प्रीत दरसावतो। कठै सांप अर कठै म्हैं? थारी अकल तो नीं मारीजी?'

'म्हारी चिंता छोड। म्हारी अकल पूरमपूर ठांमै है, नीं सूळी, नी काटीजी। बता, थारी गळाई जे म्हैं ई ओ हक जतावण लागू तो कमेड़ी री कांई गत व्हैला? किणी नैं ई आपरो कसूर निगै नी आवै। नी सिंघ नैं, नी जरख नैं, नीं साप नैं अर

नीं कागला नै। थनै ई घाव टूंचण में आणंद आवै। प्रीत रौ कूडौ स्वाग मत कर। किणी री लाचारी रौ लाभ उठावणौ सबसूं लाठौ जुलम है, काईं समझ्यो ?'

'सै समझू। भली-भांत समझू। म्हनै काईं समझावै ?' कागलो इण लकब बोल्यौ जांणै कोई मिनख उणनैं आ सीख घोखाई व्है। 'लाचारी री लागडी नी व्है तौ इण डोळ रा धणी कागला साम्ही कोई फूटी आंख ई नी जोवै। म्हांनै तौ फगत लाचारी री अबखी वेळा ई कोई चितारै, पछै लाभ क्यूं नी उठावां !'

कमेडी रै काळजै रीळ ऊठी। अटकती-अटकती बोली, 'कीकर विसवास दिरावूं के म्हैं वैडी कोनी। आपरौ गुण मरघा उपरांत ई नी पातरूं। भावज रै दैण व्हिया नी आपरौ चोखौ लागै नी म्हारौ। वा कंवैला ज्यूं मान जावूला। बस। म्हारा नेक-नांमी धणी नै समझावण रौ जिम्मौ म्हारौ। म्हैं उण सूं की चोज नी राखू।'

कागलौ मंसा परबारौ ई जोर सूं हस्यौ। हंसतां-हसता ई कंवण लागौ, 'देख, थू सावळ ध्यान लगाय देख, इणरी भोळी वांनगी। जित्ती भोळी दीसै, उत्ती भोळी है कोनी। कंडौ पासौ फेंक्यौ ? भावज नै मार गोळी। नोळघा रौ न्याव म्हारै वास्तै लोह री लीक। औ मरघां ई ऊंधी वात नी करै। थूं इणनै ओळखै कोनी, म्हैं ओळखू। इणरै साच रौ डंको साप तकात मानै, समझी ? थूं कबूल करै तौ बोल ?'

कमेडी घांण-मथाण में पजगी। हांमळ भरण सारू घणी ई तेवड़ी, पण बोल गळा में रुधग्या। पण अेन वगत नोळचौ बात केवटली। कागला नै ओझाड़तौ बोल्यौ, 'मूरख, मादा नै अंडौ म्यानौ बूझै ? इणरी ठौड़ म्है कबूल करू। पण म्हनै थारै नटण रौ खुड़कौ है।'

'नी नी, म्हैं मरघा ई नी नटू। पण थू सोच-विचार न्याव निवेड़जै। की झीणौ अळूझाड है। म्हारा घण हेताळू मित, म्हारा गाढा बेली।'

'म्हनै ई मंतरै।' नोळचौ मरम हूदी मुळक राळतौ बोल्यौ, 'थारी बाण मरघा ई नी छूटै।'

तीनू अेकण सागै हंस्या। हंसी रै उछाव चाल दुगणी व्हैगी। गिगन में उडण री आणंद न्यारौ, धरती माथै चालण रौ कोड न्यारौ। औ हृदभांत हरख ई विचिया रै जीवता बचण री खुसी सूं कम कोनीं। पण अणूता इचरज री बात के दोनू खुसियां रै दोटै कमेडी माय सूं बारै लग फड़फड़ीजगी। नोळचा रै सांम्ही जळजळी आंख्यां जोवती बोली, 'आं हां, म्हैं कदै ई किणी रै कांम नी आवू अर म्हनै आपरै औसांण रौ भार उखण्या-उखण्या मरणो पड़ैला। साचांणी, औ दुख म्हारै काळजै वेजां साल्है।'

टप-टप ढळकता आंसुवां में आणंद वत्तौ हौ के सताप, कुण जांणै ? वां अनोखा आंसुवां नैं आपरी जीभ सूं पूछतां नोळचा री आंख्यां डब-डब भरांणी। गळगळै सुर बोल्यौ, 'पांखां अछेही असमांन नै नापण वाळी पाखां व्हैतां थका थू म्हारी साढौ करै, औ औसाण किसो कम है ? सांप नै मारणौ तौ म्हारौ सुभाव है, पण थूं कुदरती सुभाव नै उथाप म्हारौ साथ निभायौ। इण कागला रौ इणी खातर इत्तौ लाड राखू। उडण रा लोभ नै दबाय औ म्हारै साथै घूमै। छती पांखां पाळौ चालै।'

इण बात री महातम अणूंतो लांठो है। ऊंडो विचार करयां ओ मरम समझ में आवै। सांम्ही म्हनैं थारो गुण मांनणो चाहीजै। यू तो साचांणी अणूती भोळी है।'

बातां-विगतां में की वेरो नी पड़चौ अर भाय पार व्हैगी। पण काळिंदर तो कालै आवैला—कालै। हाल खासो दिन अर आखी रात आडी पड़ी।

ओ अंदी अर माठो वगत कीकर होळै-होळै रिगसै ? कठै ई बैसके बैठग्यो तो ! जे अेक पलक मे दिन आथमियां रात ढळ जाती ! कैड़ो आणंद, आवतो ! पण वगत किण-किण री कांण राखै ? आपरी ढाळ ढळतो रह्यो। रोजीना री गळाई सांझ राची, तारां जड़ी रात अवतरी, चांद पावस्यो। वगत परवांण रात ढळी अर सूरज ऊगो। ऊगता सूरज री उजास अैड़ो सोवणो कदै ई नी लाग्यो। आज रो ओ सूरज तो जांणै कमेड़ी खातर अंधारी ओवरी बारै नीसरचो व्है।

उठी सांप री खातर ई रात घणी दोरी कटी। उणनै ई रात रा काळूटा कळंक माथै अणूती रीस आई। फुफकार भरतां केई वळा अंधारा नै डस्यो, तद कठैई वो आपरो आसण छोड्यो।

मौत रै सांप्रत उणियार सांप री अैड़ी आकळ उडीक तो कद कुण करी व्हैला ! तीन जोड़ी आख्यां चारूं कूट छेकती ही। तिरंपोत कागला री निजर काळिंदर माथै अटकी। फुण ऊंचो करयां धो भरणाटै भाजतो आवै हो। कदास मौत नै ई आपरै मरण रो वेरो नी व्है। गोड माथै चढ़तां ई उणनै कमेड़ी री कूज री भणकारो पड़चो। उमाव रै सुर बोल्यो, 'कौल परवाणै, वगत-सर टांणो सज्यो के नीं, बोल ?'

'हा, म्हैं बाट जोवती इज ही। मोटा सिरायत आपरै कौल-वाचा सूं कद टळै ?'

कमेड़ी री भोळप उणनै अणूती आछी लागी। आळा रै गलबै आय पूछ्यो, 'आज तो पाप नी लागै ?'

'आं हां, आज पाप री किसी लांगड़ी, सोमोती अमावस तो कालै ही। आपरी भूख मिटचा म्हनैं अणूतो पुन्न व्हैला। आप तो नाग-देवता हो। धिन घड़ी, धिन भाग के म्हारा बिचिया आपरै कांम आवै।'

'वाह ! जैड़ी मीठी बोली, वैड़ी ऊंडी समझ। ओ गुण लाखां मे नीं लाधै। विरथा रोवण-रीकण में की तंत नी। सेवट अेक दिहाड़ै थारै बिचियां री मौत अखरै। काल मरो भला ई आज मरो।' आळै मौत री छीया राळतां साप कह्यो, 'पछै सुभ-कारज मे ढील क्यूं ?'

'ढील ! ढील रो तो नाव ई खोटो। पण थू सदावत अमर ई रैवैला, क्यूं ?' नोळचा री किड़कती गाज सुण्यां सांप रा धैं छिलग्यां। जाणै संजीवी री दाब लागी। डोळा बारै नीसरग्या। अरिंद करता हेटै धरकाय उणरै लारै रो लारै कूदचो। नोळचा री फुरती निजर रै वेग गिणीजै। अपरबळी नाग-देवता री चूरती सांकळ ठौड-ठौड मूं खोळी होय खुलगी। लटपट-लटपट लटापोरियां करण लागो। पण मौत माथै कैड़ी मेहर ?

नोळचो गुमेज री निजर कमेड़ी सांम्ही जोयो तो उणरी रंगत निरवाळी निगै आई। हरख, आणद के खुसी रै अलूणै सबदां दरसाईजै अैड़ो उमाव नीं हो। अेक

कमेडी रै ओळावै, हजार कमेड़ियां रौ झलरौ निगै आयौ। पिरथी थप्यां पछै ई इत्तौ हरख किणी अेक जीव अेकठ नी व्हियौ व्हैला। नोळघा रै डील जाणै कागला अर कमेड़ी री पांखां चिपगी व्है। अवार हर करतां ई अलंघा री उडांण भरण लागैला। दोनू जणा अमाठ हरख री मीट कागला साम्ही जोयौ। किणी अवचळ समाध में इण गत गम्योड़ौ दीस्यौ जांणै उण खोळयै जीव रौ घाटौ पड़ग्यौ व्है। साप्रत काठ रौ काग। पळकतौ काळौ रंग— अंड़ौ लखायौ जांणै कोई मुनि समाध *लगायां निरजीव व्हैगौ व्है।*

पण तड़फा-तोड़ती मौत में हाल जीव बाकी हो। किणी टूंणै-टोटकै अघ-गावळी मौत पाछी सजीवण व्हैगी तौ? नोळचा रै न्यावेक डील जांणै बीजळी खिवी। काळिदर री पूछ झाल वड़ला री जडा विछाट, उणरी कूटियां काढ़तौ कैवण लागौ, 'अेक दिहाडै मरण अखरै। काल मरौ, भला ई आज मरौ। पछै सुभ-कारज में ढील क्यू? बोल. बोल...[1] फूफाडौ के चूकारौ तौ कर!'

पण सांप वापड़ौ काई फूफाडौ के चूंकारौ करतौ! आपरी मौत रौ अेलम ई कठै हो? फगत दूजां रै लेखै मौत विचारतौ। वौ तौ सदावंत अमर है। आ सपनै ई कद सोची के नाकुछ कीड़ियां उणरै दोळा व्है जावैला अर उण सू चुळीजै ई कोनी।

देखतां-देखतां मौत रौ पापौ कटग्यौ। टळवळ-टळवळ अणगिण कीडियां अेकठ होवण लागी। काळिदर री लेवड जीमण सारू कीडिया री तीण[1] मांनै जैंडी बात ई कठै? पण कुदरत किणी रै मांनण, नी मानण री अगै ई काण नी राखै। कागला री जोत अणछक आ कैंडी-काई नवी तासीर भळकी। कीड़ियां उणनै काळिदर रै प्रमांण निगै आई अर काळिदर उणनै कीडी सू ई छोटौ। अठी फूंफाडा भरती काळी मौत लांबी-लड़ाक मरघोड़ी पडी ही अर उठी भोळी-ढाळी कम्मू रै कांमण उणरै हीयै प्रीत रौ अणहद नाद कूंजण लागौ। मौत अर प्रीत! प्रीत अर मौत! अेक ई फूल री दो पाखड़ियां! किसी पांखड़ी सिरै अर किसी माडी? कागला रै काळस साचाणी घोळौ रंग घुळण लागौ।

कागला री रंगत में किणी भांत रौ फरक निगै नी आयौ तौ मित रै हीयै डबकौ पड्यौ। वतळायां बोलै ई नी। अवचळ आंख्यां अेकण ठोड थिर व्हैगी। नी उणरी टूंच हिली अर नी सांवळी पांखड़ियां। वारम्बार धोदाया नीठ कागला री समाध टूटी। नोळचौ आपरौ न्याव सुणावण खातर अणूतौ आखतौ दीस्यौ तौ कागलौ ठीमर सुर मे कह्यौ, 'जे थारी ठोड़ कोई दूजौ म्हारै ध्यांन भंज पटकतौ तौ जांणै जैड़ी करतौ, पण थारै आगै म्हारौ पसवाडौ नीं फिरै। सौ खतां री अेक फारगती के अबै दूजां रै न्याव म्हारौ कांम नी सरै। म्हनै ई म्हारौ न्याव थापणौ पड़सी। हाजमौ तौ आपरौ इज कार करै, भलां ई खाणौ पचावण सारू व्हौ, भलांई ध्यांन। सोचण दै भाया, पूजतौ सोचण दै। बुद्ध-भगवांन री भांत म्हारौ निरवांण फगत म्हारै इज आसरै है!'

उफणती मुळक नै ढाबणौ नोळघा रै वस री बात नीं ही। माडै मुळकतौ बोल्यौ, 'कोई नवी चाल तौ नीं सूझी? यूं, म्हारौ मित खरौ है, पण थारौ विसवास कोनीं।'

'अबै किणी दूजा रै विसवास म्हारी जोह नीं बंधै। म्हारै माथै म्हारो विसवास ई अखूट रैवणो चाहीजे।' नोळ्या री हंसी कागला रो काळजो छेकती हो। तो ई डिढ़ सुर में समझावण लागो, 'हंसै तो थारी मरजी ! साचाणी, कमेड़ी री प्रीत अर सांप री मौत सू म्हारी आंख्यां नवो चांनणो व्हियो। पण...इण उजास री माठ फगत म्हैं इज हूं। ग्यांन, अनुभव अर अेलम तो आपरो इज गुण करै। थू ई बता, दूजा री आख्यां किणी नै ई सूझै ? म्हारो माथो आज जबर चकरी चढ्यो ! बिरथा धोदायां म्हारी मत नी बदळै। सोचण दै म्हारा बाप, सावळ सोचण दै।'

अर भोळी-ढाळी कमेडी आपरो डोळ खराखरी समझली। फगत दो गुर सीख्योड़ा। दुख में रोवणो अर खुसी में कूंजणो अर नाचणो। कागलो सोचतो रह्यो अर वा उणरै ओळूं-दोळू कूजती रीवी ! नाचती रीवी !

अंतरपुट [परिशिष्ट]

लिखते हुए मुझे शर्म आती है। पर पन्नालाल जो है, उसे इस पर अभिमान है। अतुलनीय गर्व है। और है उसके जीवन का चरम आदर्श। जिसे प्राप्त करने के लिए वह प्रति क्षण वेकल है। साथ ही मुझे अपनी इस शर्म पर भी गौरव है।

दिल्ली स्टेशन के सामने की सड़क से सटी फुटपाथ पर वह लाल किले की ओर मुंह किये चल रहा था। सांझ का अंधेरा घिरने ही वाला है। चिन्ता की एक क्षीण रेखा उसके चेहरे पर उभर आई।

वह सुबह घर से निकला था, अब शाम होने आई। दिन के उजाले ने सांवली करवट भी बदल डाली, पर आज वह कुछ भी नहीं कर सका। सहसा पन्नालाल मन ही मन बड़बड़ा उठा—*तो आज मेरी डायरी का पृष्ठ खाली ही रहेगा? नही* नही, यह नही हो सकता। गुरुजी को छूकर की गई प्रतिज्ञा...!

इतने में पन्नालाल ने देखा—सामने ही एक साइकिल रिक्शा आ रहा है। देखते ही पहिचान लिया कि रिक्शे वाला कौन जात है?

रिक्शे वाले के पास जाकर उसने पूछा, 'क्यों रे, दरियागंज ले चलेगा?'

रिक्शे वाले ने हँसने की कोशिश की पर वह हँस नही सका। फिर भी धीरे-से बोला, 'क्यो नही, जरूर ले चलूंगा। बैठिये बाबू साहब।'

और बाबू साहब अन्दर बैठ गये। पीठ को सहारा देते हुए बोले, 'चल जल्दी चल, आठ आने दूगा।'

रिक्शे वाले ने धीरे से कहा, 'जो आपकी मरजी। मेहरवानी है बाबू साहब की। आप जैसो की दया पर ही तो... ...।'

पन्नालाल ने झिड़की के स्वर में कहा, 'अरे, जल्दी भी चल जरा, बेकार की बातें बनाये जा रहा है।'

रिक्शे वाले ने प्रत्युत्तर में कुछ और जोर लगाया। पर वह चुप भी न रह सका। गरदन को तनिक पीछे करके बोला, 'आज आपके सिवा रिक्शे मे और कोई नही बैठा बाबू साहब।'

बाबू-साहब ने तनिक उत्सुकता से प्रश्न किया, 'क्यो रे, फिर दिन भर क्या करता रहा?'

रिक्शे वाले ने प्रच्छन्न वेदना युक्त एक हलका-सा निश्वास भरते हुए क्षीण स्वर मे कहा, 'रजिया आज चार दिन से बीमार है। खुदा जाने बचेगी या नही?'

पन्नालाल ने कुछ आगे झुककर जल्दी से पूछा, 'रजिया! रजिया कौन?'

रिक्शे वाले ने गरदन घुमाकर कहा, 'मेरी बच्ची है।' कुछ रुक कर बोला, 'मैं तो मरद हूँ, ज्यादा चिंता नहीं करता। पर उसकी मां रो-रोकर दरिया बहाये *दे रही है। औरत जात जो ठहरी।* उसे रोता देख, मेरा भी दिल भर आता है।'

पन्नालाल ने कुछ हलकापन महसूस किया। रिक्शे वाले को खामोश देख कर प्रश्न किया, 'तेरा नाम क्या है रे?'

रिक्शे वाले ने इस बार सामने गरदन किये ही ऊँचे स्वर मे कहा, 'मुझ खाक-सार को नजीर कहते हैं।'

और उसी क्षण नजीर को सहसा एक भूली हुई बात याद हो आई। वह भीतर ही भीतर किसी अज्ञात आशका से सिहर उठा। साथ ही उसने रिक्शा तेज करने

के लिए और जोर लगाया। कुछ देर चलने के बाद उसने अलक्ष्य ही में धीरे-से कहा, 'आखिर खुदा सब देखता है। अब रजिया के लिए दवा ले आऊँगा। नही तो आठ आने के लिए उसकी जान ही चली जाती।'

नजीर की यह बात भले ही अलक्ष्य में क्यो न कही गयी हो, पर पन्नालाल के कानों ने सब सुना ही। उसके चेहरे पर किसी अज्ञात आनद की रेखाएँ उभर आई।

चाँदनी चौक की अपार भीड से निकल कर रिक्शा काफी खुली सड़क पर आ गया था। भीड़ भी बिखरी-बिखरी-सी थी।

नजीर ने अपनी रजिया और रजिया की माँ के अविरल आँसुओ का स्मरण करके समूची शक्ति से जोर लगाया।

उसके साँवले शरीर पर पसीने की तरलता चमक उठी। शरीर के भीतर अपरिमेय खुशी की लहर व्याप्त हो गई। अब कोई चिंता नही। कुछ ही समय बाद उसकी मुट्ठी मे अठन्नी आयेगी। वह सीधा देवराज चोपड़ा की दुकान पर जायेगा। जहाँ असख्य शीशियाँ काच की अलमारियों में सजी पड़ी हैं। समस्त रोगों का उपचार। अपनी आंखों से हमेशा देखता है, पर खरीद नही पाता। काश ! देखने भर से बीमारी दूर हो जाती ! खरीदना तो उसके बस की बात नही। सीधा उनकी दुकान जायेगा। अठन्नी सौंप कर कहेगा, 'अब तो दवा दीजिये, दिन भर की कमाई आपके हवाले कर रहा हूँ।'

रिक्शे वाले ने अपनी शक्ति के परे और जोर लगाया। वह मन की नजर से साफ देख रहा था—रजिया मरणासन्न पड़ी है। उसकी देह पर सर झुकाये माँ चुपचाप आँसू बहा रही है।

पर अब दवा देखते ही उसकी खुशी का ठिकाना नही रहेगा। रजिया जरूर बच जायेगी। इस बार नजीर ने बाबू-साहब को लक्ष्य करके कहा, 'भाई जान, इस दुनिया में अब इंसानियत रही ही नही। चोपड़ा साहब के सामने कितना गिड़गिड़ाया, आरजू मिन्नत की, पर सब बेकार। पैसा ही सब-कुछ है। इंसान के आँसुओं की कोई कद्र नही। उन्होंने साफ मना कर दिया कि पहले पैसे लेकर आऊँ, फिर दवा की बात करूँ।'

नजीर का गला भर आया। विगलित स्वर मे कहने लगा, 'आज कल धरम-मजहब का अजीब भूत लोगो के सर पर सवार हो गया। इंसानियत को आग लगा दी—धरम ने, मजहब ने। भाड़ में जाये ये सब। इसान तो कुत्ते से भी गया-गुजरा हो गया। क्या बताऊँ...!'

'कुछ भी बताने की जरूरत नही।' बाबू साहब ने घुड़की पिलाते हुए कहा, 'मुझे उपदेश दे रहा है ! रिक्शा तो तेज चलता नही और धरम-मजहब से कुश्ती लड़ रहा है। चल जल्दी चल।'

नजीर ने शक्ति के परे और अधिक जोर लगाया। उसके पास बेकार बातें करने का समय ही कहाँ है ? पन्नालाल की घुड़की सुनते ही चुप हो गया। उसे तो रजिया की दवा के लिए आठ आने के पैसे भर चाहिए। जिसके बल पर वह मौत से जीवन का सौदा करेगा। आजकल तो जीवन भी बिकने लगा है दुकानों मे। पैसा नही है तो मौत दबोच लेगी। इस अठन्नी मे रजिया की जिन्दगी है—उसका साँस, आँखें

और उसकी मुस्कराहट। अब मौत की क्या बिसात कि बाप से उसकी बेटी को छीन ले ? कैसा दृढ़ विश्वास है बाप का अपनी बेटी के प्रति।

उसने और जोर लगाया। रही-सही ताकत भी झोंक दी। नजीर को अपनी ताकत का यह एहसास नहीं था। बड़ा गुमान हुआ उसे। रिक्शा हवा से होड़ करता उड़ रहा था। अपने गर्व को व्यक्त करने की कमजोरी से बाधित होकर नजीर ने कहा, 'तमाम दिल्ली में इतना तेज रिक्शा कोई चला ले तो रिक्शा चलाना छोड़ दूं।'

काली-काली सड़क पर फिसलता हुआ रिक्शा साइकिल व तांगों को पीछे छोड़ता सरपट जा रहा था। जितना जल्दी हो सके वैद्यराज की दुकान पर पहुंचना है। अठन्नी देकर अपनी बिटिया का जीवन खरीदना है उसे।

इंसान का शरीर पाकर नजीर बिलकुल मशीन में ढल गया था। पांव, हाथ, आंखें, कान, मांस-मज्जा सभी कुछ कल के पुर्जों की तरह निर्विघ्न काम कर रहे थे। दरियागंज के पीतवर्णा थाने के पास आते ही उसने रिक्शा धीरे करते हुए पूछा, 'भाई जान, आपको कहां उतरना है। जहां फरमायें, छोड़ दूं ?'

जवाब नहीं मिलने पर उसने पीछे मुड़कर देखा और उसी क्षण मानो उसकी देह पर बिजली गिरी हो। रिक्शा खाली था। बेहोशी की हालत में पुतलियां घुमा कर देखा—भाई जान कहीं नजर नहीं आये। उसने बार-बार आंखें बंद कीं और खोलीं, पर खाली रिक्शा हर बार खाली ही नजर आया।

पर पन्नालाल की डायरी का पृष्ठ खाली नहीं रहेगा। उसका दिन निष्फल नहीं गया। गुरुजी को छूकर की गई प्रतिज्ञा आज फिर सार्थक हुई।

कमेड़ी
अर
सांप
२.

अेक ही भोळी-ढाळी कमेड़ी। पीपळी रै अेक घेर-घुमेर रूंख माथै जिणरौ आळौ। आयै साल उणी ठौड़ ईंडा देवती। हृदमांत हेज, सनेह अर ममता रै कोड वांनै सेवती। रुखाळी करती। कुजोग री बात के उणी पीपळ री खोखाल अेक सांप रौ थिर वासौ। काळौ, हित्यारौ अर जाळी। नैंन्हा बिचियां रै पांखां आवण लागतौ अर वांनै डकार जातौ। कमेड़ी रगत रा आसू राळती। गळगळै कंठा बिचिया नीं खावण सारू अरदास करती। तद वौ विस घुळी मुळक रै ओळावै कैवतौ, 'अबकी मोटी भूल व्हैगी, अबै थारा बिचियां रै सांम्ही नी माळू। थू रो मत। म्हारौ हीयो भरीजै। देख, किणी दूजै वासै मत जाजै। बाज-सिकरां सू थारै बिचिया री रुखाळी करूला, है नी!'

कमेड़ी तौ कमेड़ी इज ही। जलम-जात भोळी अर अबूझ। बारंबार सांप रौ भरोसौ कर लेती अर सांप बारंबार धोखौ करतौ।

सेवट दरजै-लाचार होय वा आपरौ वासौ ई छिटकाय दियौ। काई करती जद सूरज-चाद ई उणरै आंसुवा सू आंख्यां फोरली। अळगी भांय अेक दूजै पींपळ नवौ आळौ ठायौ। मोत्यां रै उनमान पांच ईंडा दिया। दिन-रात रुखाळी करती। निरणी-तिरसी पांखां रै परताप ईंडा लुकायोड़ा राखती। पण वगत पूरमपूर साथ निभायौ उणरौ। आळै पांच बिचिया ऊगांणा। गुलाब री जात कवळा अर गुलाबी। मा रौ हरख पांन-पांन मे लूमण लागौ। मोत्यां रौ चूण चुगावै। मीठा गीत सुणावै।

वगत रै कांमण बिचियां री गुलाबी देह पाखां रा सिळू फूटा।

हित्यारा साप नै इणी पुळ री उडीक ही। खेरो करतां-करता सेवट उणी पीपळ आय बाज्यो। रीस में वट खावतो आळै चढ्यो। कमेड़ी गुणमुण हालरियो गावती ही। अचांणचक सांप री फुफकार सुण वा सुट्ट व्हैगी। मींठी ढाळ जाणै बीजळी पड़ी। मरण सू ई हजार गुणा माड़ी हालत व्हैगी उणरी। अबचळ आंख्यां उण सांम्ही टगमग जोवण लागी। पण साप कीकर अबोलो रैवतो। छिलता हरख नै लुकाय रीस रो स्वांग लाय बोल्यो, 'म्हारा सू छांनै आई ? जलम-बावळी ! मौत री मीट अठै नी पूगै ? बोल, अबै कठै जावैला ? वाह वाह, अबकी बिचिया तो लाही फूठरा दिया। खावण रो जबर आणद आवैला !'

चू-चूं करता बिचिया चापळनै माठ झेली। सांस कानी देखण री हीमत इज नीं व्ही। अर मा केई वळा मौत आगै आसुवा रो तूमार जोयोड़ो ही। अबकी डरतां-घाबरता ई उणनै लाज आई। सेवट मरणो तो है ही। पाखां रै पसाव मौत सू आंतरै नी उडीजै। गाढ़ राख्यां की कारी लागै तो ! लाचारी रो स्वांग भरती बोली, 'जे आज म्हारी आंतां बाळी तो आपनै अणूंतो पाप लागैला।'

'क्यू ?'

'आहो ठा कोनी आपनै ? आज सोमोती अमावस है। आप वरत नी राख्यो ?'

'आ हा, थू राख्यो ?'

'वाह ! भला म्है कीकर नी राखती ? आ कोई पूछण री वात है ! अबै ज्यू *रावळी मरजी। म्हैं पालू कोनी। पण बिचियां रै दांत लगावतां ई आपरो फीदी-* फीदो बिखर जावैला।'

'साचांणी ?'

'आपरै सांम्ही कूड़ बोलण रो ठरको है म्हारो। अर वो ई सोमोती अमावस रै टांणै। काले आपरी दाय पड़ै जद पधार जाजो।'

'छेवास ! वगत-सर नांमी याद दिराई, नीतर अणसाधी रो मरतो।'

मौत नै ई मरण रो डर लागै। वळतां बोली, 'पण अेक बात रो पूरो चेतो राखजै। डुसुड-डुसुड़ रोयां खावण रो स्वाद नी आवै। देख, रोजै मत ना...हैं !'

'आप फरमावो तो नीं रोवूं। काले पधारोला के नी ?'

'अेक वावळी में घाटो नी ! आ कोई पूछण री वात है।' अर वो सांप आकरी मीट बिचियां नै जोवतो हेटै उतरग्यो। खामी आतरै उणरी थांबी ही।

सांप रै अदीठ व्हिया कमेड़ी बिचियां री संभाळ कीवी। सै जीवता हा। अेकर तो उणनै विसवास ई नी व्हियो के परतख आयोडी मौत टळगी। मर्ला आंसू ढुळ-कायां के लालरिया लियां हित्यारा क्यू पसीजै ? विखा री वेळा अकल अर हीमत रै पसाव बात बणी, घकै ई बणैला। कमेड़ी नै पैली वळा अकल रो उजास निगै आयो। पैला तो डर री मार्ल्यां अकल चापळ जाती।

मोळी कमेड़ी आंख्या मींच सोचण लागी। निरो ताळ की उपाव नीं सूझ्यो। आंख्यां उघाड़ सोचण लागी। पण अकल मायै जांणै भाटो इज पड़ग्यो व्है। तो काले बिचिया नी रुखाळीजै ? पांखां फड़फड़ाय वा आपो-आप सूं सवाल करयो। क्यू नीं रुखाळीजै ? आज कीकर रुखाळ्या ?'

'क्राव, क्रांव। क्राव।'

ऊपर डाळी माथै बैठा कागला री बोली सू कमेड़ी रौ ध्यांन तूटौ। गाबड़ ताण ऊंची जोयौ। काळौ-स्याह रंग। अचपळी आख्यां। चौकस निजर। तीखी टूच। आखी दुनिया जिणरी अकल बखांणै। आपरी अकल माड़ी व्है तौ दूजां सू सला-सूत विचारण मे कैंडी आंट! वगत किणी सारू नी ढबै। नी कमेडी सारू अर नीं सांप सारू। फुरर सू उड़ परी कागला रै पाखती बैठगी। उणनै वीरौ कैय बतळायौ। अंतस री अखूट तळतळावण बिना रोयां दरसाय दी। अबै आसुवा सू उणनै अणूंती सूग होवण लागी।

कागलौ तुरत अटकळ विचार ली। पण सोरै-सास जल्दी बतावण री इंछा नी व्ही। वौ जरूरत सू ज्यादा बुद्धिमांन हौ। थोडी ताळ छौ नेवरा करती। क्राव-क्रांव करतां बोल्यौ, 'की अकल तौ थूं ई भिड़ा। अत बिचिया थारा है। म्है कठा लग दूजा रै बिचियां री साळ-सभाळ राखूला। सोच, थनै ई भगवान अकल दी है।'

'म्हैं पूरमपूर सोच-विचारनै आपरी सरण आई। रावळी होड़ किणी सू नी व्है। भगवांन आपनै अणूती अकल बगसी।'

'हां, अकल तौ बगसी, पण रूप कठै बगस्यौ?'

'रूप! रूप सू काई खागा व्है!' वा तरणाटी रै सुर बोली, 'जिण रूप रै भरोसै आपरा बिचिया नी रुखाळीजै, लांपौ लागै उणरै। कित्ती...कित्ती पोथ्यां भरी है, रावळै बखाण! जद-कद किणी माथै पटकी पड़ी, आप सदावंत उणरी सहाय कीवी। नीं किणी नै ओझाड़्यौ अर नी आळया-टोळया करचा।'

'हां, आळया-टोळया करण री म्हारी सुभाव ई कोनी।' कागलौ अजाण ई पोम्यां चढग्यौ। गुमेज री मुळक छितरावतौ बोल्यौ, 'म्हैं तौ आधी बात सुणता ई अटकळ विचार ली। थोड़ी चाळ-चोळ कीवी, भूंडौ मत मांनजै। सुण, अेक नोळचौ म्हारौ गाढौ मित है। अबार ई उण सू बंतळ करनै आयौ। पैला सोय व्हैती तौ साथै ले आवतौ। पण काई आंट कोनी, पाछा चालां। म्हनै वीरौ कैय बतळायौ, चात्रंग थूं ई कम नी है। म्हांनै तौ दुनिया बिरथा भांडै। क्रांव-क्राव।'

नोळचा री बात सुणतां ई कमेड़ी सगळी बात समझगी। हरख रै उछाव नाचण लागी। पांतरगी के बिचियां रौ बचाव करणौ है। गळौ फुलाय कूजण लागी।

'थूं तौ अबार ई मगन व्हैगी।' कागलौ मीठौ भाजनौ पाड़तां कह्यौ, 'चाल, अबै अेक पल री जेज करणी जोखम रौ कांम है। आतरै टुरग्यौ तौ हेरणौ भारी व्हैला। भरै पड़चां पैला फदफदाटौ छाजै कोनी।'

कागला रै चेतावतां ई कमेडी रा होस खत्ता व्हैगा। पण पाखा रै परताप भांय लाघता फटकारै नोळया रै वासै पूगा। मित री आवतौ हेलौ सुणतां ई वौ अजेज बारै आयौ। कागलौ सगळी गांगरत गाय छेहला बोल सुणाया, 'भगवांन री आस छोड आ थारै दरीखांनै आई। फगत थारै कळाप साप री डाड़ सूं इणरा विचिया बचै तौ बचै। भगवान री खातर जैड़ी कमेडी वैड़ौ सांप! सै बिरोबर। कैंड़ी अंवळी समझ है उणरी! पछै अबूझ लोग उणनै क्यू सिवरै? सांप अर कमेड़ी दोनूं बिरोबर! घणा रंग है। कैंड़ी झीणी समझ है भगवांन री। म्हारै तौ अंगै ई रस नीं बैठै। क्रांव-क्रांव।'

वळती वेळा कागलो अर कमेड़ी गिगन में नी उड्‌घा । छती पांखां, धरती माथै पंजां रा खोज माडता नोळया रै जोड़ै चालता रह्या । जबर आणंद आयो। बातां-विगतां में की वेरो नी पड़चो अर भाय पार व्हैगी ।

पण कािळदर तौ काळै आवैला, काले !

औ अंदी अर माठो वगत कीकर होळै-होळै रिगसै ! कठै ई बैसके बैठग्यो तौ ! जे अेक पलक मे दिन आथमियां रात ढळ जाती ! कंड़ो नांमी कांम बणतो ! पण वगत किण-किण री काण राखै ? आपरी ढाळ ढळतो रह्यो । रोजीना री गळाई सांझ राची, तारां जड़ी रात अवतरी, चांद पावस्यो । वगत परवांण रात ढळी अर सूरज ऊगो । ऊगता सूरज री उजास अैड़ो सोवनो कदै ई नी लाग्यो ।

उठी साप री खातर ई रात घणी दोरी कटी । उणनै ई रात रै काळूंटै कळंक माथै अणूंती रीस आई । फुफकार भरतां केई वळा अंधारा नै डस्यो, तद कठैई वो आपरी ठायो छोडचो ।

सिरैपोत कागला री निजर कािळदर माथै अटकी । फुण ऊंचो करयां, भरणाटै भाजतो आवै हो ।

गोड माथै चढ़तां ई उणनै कमेड़ी री कूज रो भणकारो पड़यो । उमाव रै सुर बोल्यो, 'कौल परवांणै, वगतसर टांणो साज्यो के नीं, बोल ?'

'हां, म्हैं बाट जोवती इज ही । मोटा सिरामत आपरै कौल-वाचा सू कद टळै ?' कमेड़ी री भोळप उणनै अणूंती आछी लागी । आळा रै गळबै आय बूझ्यो, 'आज तो पाप नी लागै ?'

'अां हां, आज पाप री किसी लांगड़ी ? सोमोती अमावस तौ काले ही । आपरी भूख मिटयां म्हनै अणूंतो पुन्न व्हैला । आप तौ नाग-देवता हौ । धिन घड़ी, धिन भाग के म्हारा बिचिया आपरै कांम आवै ।'

'वाह ! जंडी मीठी बोली, वैंडी ऊंडी समझ । औ गुण लाखां में ई नी लाधै । बिरथा रोवण-रीकण में कीं सार नी । सेवट अेक दिहाड़ै थारै बिचियां री मौत अखरै । काल मरी भलां ई आज मरो ।' आळै मौत री छीयां राळतां सांप कह्यो, 'पछै, सुभ कारज में ढील क्यूं ?'

'ढील ! ढील री तौ नांव ई खोटो । पण थू तौ सदावंत अमर ई रैवैला क्यूं ?' नोळया री किड़कती गाज सुण्यां सांप रा धै छिलग्या । हेटै उतरण खातर फुण मोडचो ई हौ के नोळया री मूंफाड़ झिलग्यो । जांणै संडासी री दाब लागी । डोळा बारै नीसरग्या । झरिद करता हेटै धरकाय लारै रौ लारै कूदयो । अपरबळी नाग-देवता री चूकती सांकळ ठोड-ठोड़ सू खुलगी । लटपट-लटपट लटापोरपां करण लागो । पण मौत माथै कंड़ी मेहर ? कािळदर री पूछ झाल पीपळ री जड़ां पिछाटचो । कूटियां काडतो कैवण लागो, 'अेक दिहाड़ै मरण अखरै ! काल मरी भला ई आज मरो । पछै सुभ कारज में ढील क्यू ? बोल...बोल...! फूंफाड़ो के धूकारो तो कर ।'

पण साप बापड़ो काईं फूफाड़ो करतो ! आपरी मौत रो उणनै अेसम ई कठै हो ! फगत दूजा रै लेखै मौत विचारतो । वो तौ सदावंत अमर है ! सपनै ई कद गोची के नाकुछ कीड़िया उणरै दोळा व्है जावैला अर उण सूं धुळीजै ई कोनीं !'

कमेड़ी अर सांप

१.

अेक ही भोळी-ढाळी कमेड़ी। अेक घेर-घुमेर पीपळी माथै उणरौ वासौ। वा सालो-साल उण पीपळी माथै इंडा देवती। घणै कोड अर घणी ममता सूं इंडा सेवती पण कुजोग री बात के उण पीपळी री अेक खोखाल मे अेक काळिंदर वास करतौ। बिचियां रै पांखां आवती जित्तै वौ दुस्ट सरप सगळा बिचियां रौ सफायौ कर देवतौ। कमेड़ी छबरां-छबरा आंसू ढुळकायनै उणरा पग पकडती। उणसू वीणती करती तद सांप कैवतौ, 'अबकी तौ भूल व्हैगी, अबै कदै ई थारा बिचिया नी खावूं। यूं दूजी ठोड़ कठैई मत जा। म्हैं सिकरा सूं थारा बिचियां री रिछया करूंला। कमेड़ी कह्यां पछै कांई! वा भोळी-ढाळी फेर उण सरप माथै भरोसौ कर लेती अर सरप आयै साल उण सूं छळ करतौ।

सेवट आंतां बळियोडी कमेड़ी आंती आय, उण पीपळी रौ वासौ छोड दियौ। अळगी भांय जायनै अेक दूजी पीपळी माथै आळौ घालियौ। पांच मोती व्है जैड़ा इंडा दिया। रात-दिन सेवै। दाणौ चुगण नै ई को जावै नी। दिन पूरा व्हिया इंडां सूं गुलाब रै फूलां जैड़ा पांच बिचिया निकळिया। कमेडी घणी ई हरखी अर घणौ ई कोड मनायौ। बिचियां नै मोत्यां रौ चूण चुगावै। पाखां आवण ढूकी जित्तै काळिंदर कमेड़ी रौ केड़ौ करतौ उठै ई आय पूगौ। बापड़ी कमेड़ी ठेठ मयारै इंडा दिया तौ ई साप तौ आळा कनै आय कह्यौ, 'म्हारा सूं छांनै उडनै आई, बोल अबै कठै जावैला? अबकी बिचिया तौ नामी फूठरा दिया, खावण रौ साव आय

जावेंला।'

सांप री फुफकार सुणनै बिचिया तो बापड़ा चापळनै भेळा व्हैगा। कमेड़ी चारूं मेर उडती, चकारा देवती घणा ई कळझळ करचा पण सांप फुफकारां भरतो उणनै की दाद दीवी नी। वा घणी ई रोई, घणा ई तल्ला तोड़िया, घणा ई कळाप करचा पण साप आगै उणरो काईं जोर ! काळ रै हीयै दया-माया रो काईं कांम ! सेवट फुफकारता सरप सूं वा छेहली वीणती करनै कह्यो, 'म्हारै आज सोमोती अमावस रो वरत है। आज रै दिन म्हारी आंतां मत बाळ। अणूंतो पाप लागैला। काले मन करै जणा बिचियां नै खाय जाजै।'

सोमोती अमावस रै पाप सूं काळिंदर कीं डरचो। वोल्यो, 'कोई बात नीं, थारो मन है तो म्हैं आज निरणो ई रै जास्यूं। पण काले आंरी खैर नी है। रोवणा-रीकणा मत करजै, खावण रो आणंद नी आवै। कमेड़ी बापड़ी काईं करती, माडै हुंकारो भरणो पड़चो। सांप बिचियां रो गुलाबी रंग देखतो, मुळकतो अेक खोखाल में वड़ग्यो।

कमेड़ी रो जोर आख्यां माथै। आळै छवरां-छवरां रोवण लागी। रोवती ढबै ई नी। संजोग री बात के उडतां-उडतां अेक कागलो आयनै पाखती री डाळ माथै वैठो। कमेड़ी नै इण भांत रोवता देख बूझ्यो, 'बाई, कांई बात व्ही, रोवै क्यूं ? म्हारा सूं थारो कळपणो देखीजै नी, व्हो जकी बात बता।'

कमेड़ी डुसक्या भरती बोली, 'अेक दुस्टी सरप आयै साल म्हारा बिचिया डकार जावै। अबकी दूजी पीपळी माथै इंडा दिया तो वो म्हारो केड़ो करतो अठै ई आय पूगो। आज तो सोमोतो अमावस रै पाप रा डर सूं मांनग्यो, पण काले तो तड़कै ई सगळा बिचिया खा जासी। करूं तो कांई करूं ! रोवणा माथै जोर सो आपरा करमां नै रोवूं।'

कमेड़ी रो कळपणो देख कागलो घणो ई दुखी व्हियो। पण कोरा दुख सूं कमेडी रै कांई साधो लागै ! सांप नै मारण री मनाग्यांना अटकळ सोचण लागो। अकल रा उजागर कागला नै तुरंत अेक अटकळ सूझी। कमेड़ी रा आसूं पूछ कैवण लागो, 'म्हारी बाई, बोली ढब। सांप नै हाकरतां मराय दूंला। अकल रा बळ आगै, बापडा सरीर रै बळ रो कांई ठरको ! काळजो मत बाळ। ध्यान देय म्हारी बात सुण।'

कागलो कमेड़ी माथै पंजो फेर कैवण लागो, 'अेक नेवळा नै निवतनै अठै बुला। सांप अर नेवळा रै बरगां-वैर। साप नै देख्योड़ो ई नी छोडै।'

बात कमेड़ी रै हीयै ढुकी। झट ओढ़णा रै पल्ला सूं आंसू पूछ्या। कागला नै बिचियां री भुळावण देय कैतां पाण उडी। कोई बीसेक खेतवा उडी व्हैला के अेक बिल रै पाखती नेवळो फदाफद कूदतो निगै आयो। सरणाट हेटै उतरी। नेवळा सूं रांमा-सांमा करनै बोली, 'नेवळा वीर, आज म्हैं सूरज पूजस्यूं। थनै निवतण आई। म्हारै वासै घालणो पड़सी।'

नेवळो राजी-खुसी कमेड़ी रै सागै व्हीर व्हैगो। वासै आय कमेड़ी कागला अर नेवळा खातर घणा ई तेवड़ करचा। नी नीं व्है जेड़ो सरवरा कीवी। नेवळो अणूंतो राजी व्हियो। कह्यो, 'बाई, कदेई कांम पड़ै तो चितारजै।'

कमेड़ी आ वात सुणतां ई ठळाक-ठळाक रोवण लागी। बोली, 'म्हारा वीरा, आज विखा में ई थनै याद करचौ। थारै टाळ अबै म्हारौ कोई रिछपाळ कोनी, म्हारी सहाय कर। अेक काळिदर आयै बरस म्हारा बिचिया खावै। म्हारौ बूतौ कोनी के उण सू पड़पू। आती आय अळगी भाय दूजी पीपळी ईंडा दिया, पण वौ खेरौ करतौ अठै ई आय पूगौ। उणरै दाता तौ स्वाद लाधोड़ौ। म्हारा अै कवळा-कवळा बिचिया वौ सूरज री उगाळी डकार जावैला। हाडा-भाई रै उपाव थनै इण काळ रौ पापौ काटण सारू निवत्यौ। फगत थारौ भरोसौ है। ठाडै काळजै आसीस देवूला।'

धकै की कैवणी नी आयौ तौ कमेड़ी नेवळा रा पग झाल अरड़ा-अरड़ां रोवण लागी। नेवळै कह्यौ, 'बाई, किणी बात री चिंता मत कर। औ तौ अेक सरप है, अैड़ा सैंस सरप ई थारै बिचिया रो बाळ ई बाकौ नी कर सकै। तडकै उणसू भेटका तौ होवण दै।'

कमेड़ी बापड़ी पूरी डरचोड़ी ही। नेवळा री बात माथै पूजतौ विसवास व्हियां ई उणरौ डर मिटचौ कोनी।

वौ दुस्टी सरप तौ दिनूगा पैली ई दातण-कुरळा करनै कमेड़ी रै आळै आयौ ई। जोर सूं फुफकारा भरतौ अेकण सागै पांचू बिचिया नै खावण री तेवड़ी के नेवळौ भच-देणी उणरी घाटी अपड़ली। साप रा डोळा बारै आयग्या। नेवळौ झरिंद करता साप नै हेटै थरकायौ। अर लारै रौ लारै खुद नीचै आयौ। साप लटपट-लटपट करतां पाछौ पीपळी माथै चढण लागौ के नेवळौ फेर पूछ झालनै नीचै ताण्यौ। अठी-उठी झटका देय, इण भांत फफेड़चौ के ठोड़-ठोड़ सूं सांप री सांकळ खुलगी। अेकण ठोड़ लटापट करण ढूकौ।

नेवळौ रीस मे विकराळ होय कैवण लागौ, 'घणा दिन व्हिया बापड़ी कमेड़ी रौ पेट बाळता नै ! चंडाळ थारै हीयै थोडी-घणी दया-माया कोनी। टणकाई व्है तौ म्हारा सू बाथेड़ी कर।'

नेवळा सू पड़पै जित्तौ सांप री ठरकौ कोनी हौ। वौ लटपट करतौ रह्यौ अर नेवळौ उणरी फीदी-फीदी बिखेर दी। अलेखू कीड़िया उणरै दोळा व्हैगी। सांप सूं तौ पछै चुळीज्यौ ई कोनी। कमेड़ी खुसी मे गूंजण लागी। कागलौ हरख मे बावळौ होय कांव-कांव करण लागौ। कमेडी नेवळा नै गळै लगाय बोली, 'म्हारा वीर, जीवू जित्तै थारौ गुण नी भूलू। म्हारा बिचिया थारौ नाव जपैला।'

तद सू उणोज पीपळी माथै कमेड़ी आयै बरस ईंडा देवै। निरभै निसंक वानै सेवै। बिचिया नै हालरियां री ढाळ हुलरावै। मोत्या रौ चुण चुगावै। सालौसाल कागला अर नेवळा नै निवतै। बत्तीस तेवड़ करनै कोड सू जीमावै।

१९४९, हिन्दी साप्ताहिक 'ज्वाला' में छपी, 'हम सभी मनुष्य हैं' रै स्तंभ सीगे, लेखक—'एक मानव' रै नांव सूं। पाछी राजस्थानी मे 'राडी-रोवणो' नाव देय, नवै रूप सिरजी, ४ फरवरी १९८२ ॥ छेहली पिछांण : अगस्त १९५०, हिन्दी में लिखी। 'प्रेरणा' में छपी मई-जून १९५३, 'सुलेमान का घोड़ा' रै नांव सू। पाछी 'छेहली पिछांण' रै नवै नांव सिरजी राजस्थानी मे, १८ अप्रेल, १९८२ ॥ मशीणो : अगस्त १९६०, राजस्थानी रै मासिक-पत्र 'वांणी' रै बांनगी अंक में छपी 'देखो जमांनो आयो' रै नांव सू। पाछी 'मशीणो' रै नवै नांव सिरजी मार्च १९८२ ॥ लाखीणी रात . सितंबर १९४९, हिन्दी में लिखी। 'रूपम' में छपी, १५ अगस्त १९५८, 'चंद्रा की सुहाग रात' रै नांव सूं। पाछी 'लाखीणी रात' रै नवै नांव सिरजी, ३ मई १९८२ ॥ बातपोस : अगस्त १९६० मे छपी, 'वांणी' रै बांनगी अंक में, 'नकटा देव अर सुरड़ा पुजारी' रै नांव सूं। पाछी 'बातपोस' रै नवै नांव सिरजी, ५ फरवरी १९८२ ॥ ख्यात अेक प्रोफेसर री : मई १९५४, 'प्रेरणा' में छपी, 'प्रोफेसर आर. एल. सुधांशु' रै नांव सू। पाछी राजस्थांनी में 'ख्यात अेक प्रोफेसर री' नांव देय, नवै रूप सिरजी, २६ अप्रेल १९८२ ॥ अदीठ : सितंबर १९५०, हिन्दी में लिखी। 'प्रेरणा' मे छपी जुलाई १९५४, 'दांत का दर्द' रै नांव सू। पाछी राजस्थानी मे 'अदीठ' रै नवै नाव सिरजी ७ मई १९८३ ॥ काग मुनि : 'वातां री फुलवाड़ी' रै दूजै भाग सारू लिखी, सन् १९६०, 'कमेड़ी अर सांप' रै नांव सू। इणी सागै नाव दूजो मसूदो लिख्यो, १० मई १९८३। तीजी वळा 'काग मुनि' रै नांव १५ मई १९८३ में लिखी। दिल्ली सूं छपण वाळा 'पराग' रै सितंबर, १९८३ अंक मे 'कमेड़ी और सांप' रै नांव सूं आ बात सुरगवासी सरवेस्वरदयाल जी सक्सेना प्रकासित कीवी, हिन्दी मे।

अदीठ कथा रा पद-पाठ

१. रूस रै सिरै लेखक लेव निकोलायेविच तॉलस्तॉय [१८२८-१९१०] री टाळको उपन्यास—अन्ना करेनिना। पांच बरस [१८७३-१८७७] मे संपूरण व्हियो। मोडर्न लाइब्रेरी न्यू यॉर्क सू प्रकासित कोन्सटेन्स गेरनेट रै अंग्रेजी अनुवाद रो हवालो ॥ २. पूरो नांव—येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना, किट्टी। उपन्यास रो टाळमो नारी चरित्त ॥ ३. पूरो नाव कोन्स्तानतीन द्मीत्रियेविच लेविन, कोत्स्या। किट्टी रो धणी। तॉलस्तॉय री नीतियां रै ढाळै मांनीतो चरित्त ॥ ४. काउंट अलेक्सेई किरोल्लोविच व्रोन्स्की, अल्योशा। अन्ना करेनिना रो प्रेमी ॥ ५. अन्ना करेनिना रो बेटो ॥ ६. अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच करेनिन। अन्ना करेनिना रो धणी ॥ ७. काउंट अलेक्सेई किरोल्लोविच व्रोन्स्की। अलेक्सेई करेनिन री बहू अन्ना करेनिना रो प्रेमी ॥
८. अन्ना करेनिना काउंट व्रोन्स्की री प्रीत सू हतास होय सेवट रेलगाडी रै चीलां आपघात करयो ॥ ९. काउंट व्रोन्स्की, अन्ना करेनिना री प्रीत सूं आंती आय अेकर आपघात सारू हाथां पिस्तोल खाई। पण बचग्यो ॥ १०. काउंट व्रोन्स्की री मा रै सागै अन्ना करेनिना पीटर्सबर्ग टेसण आई तद पैली वळा व्रोन्स्की सू साम्हेळो व्हियो। संजोग री बात के उणी वेळा दारू में धत चोकीदार रेल रै चीलां हेटै आय कटग्यो। अन्ना करेनिना रै आपघात री आगूच भणक ॥
११. येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना किट्टी नै स्केटिंग रो अणूंतो चाव हो। काउंट व्रोन्स्की, अन्ना करेनिना सूं पैला स्केटिंग रमता किट्टी सूं प्रीत करतो हो ॥
१२. पूरो नाव दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, डोली। अन्ना करेनिना रै बडा भाई स्तेपान अर्कादेविच ओब्लोन्स्की, स्तीवा, री बहू। फ्रांसीसी मास्टरनी सूं धणी री प्रीत रो वेरो पड़्यां डोली अणूती भिमरी ॥ १४. १३ नंबर री चूक पड़गी। अन्ना करेनिना री हदभांत प्रीत सूं काउंट व्रोन्स्की सेवट आंतो आयग्यो। मिळण खातर ओळावा लेवण लागो ॥ १५. अन्ना करेनिना रै सांम्हेळा उपरांत काउंट व्रोन्स्की किट्टी सूं मुळगो ई नातो तोड़ लियो। विजोग रै उण धामलै किट्टी जबर मांदी पड़ी। लेविन पाछी प्रीत दरसाई तो किट्टी सूं उणरो ब्याव व्हैगो।